भुलिउ सख समको काम ते क्या किया वेगि
दे याद करि मरि निपूतो।
दास सुन्दर कहै सब सुख तो लहै भो तुही भो
तुही बोल तूती ॥

२

राक तू राकतू बोल मैना।
अवल उस्तादके कदमको खाक हो इहि
रसबुगजार सब छोड़ फैना।
यार दिलदार है माहि तू याद करि है तुझो
पास तू देख नैना ॥
जान का जान है जिन्दका जिन्द है सुख न कछु
समुझ देना।
दास सुन्दर कहै सकल घटमें रहै राक तू राकतू
बोल मैना ॥

३

घरी घरी घटत छोजत जात छिन छिन भीजतही
गिरि जात माटीको सो ढेल है।
मुकतिके द्वारे आइ सावधान क्यों न होइ बार बार
चढ़व न लिया को सो तेल है॥
कर ले सुकृत हरि भजन अखण्ड नर याही में
अन्तर परैया में ब्रह्म मेल है।
मनुष्य जन्म यह जीत भावै हार अब सुन्दर कहत
यामे जुआ को सो खेल है॥

४

देखतही देखत बुढ़ापो दौर आयो है।
यौवन को गयो राज और सब भयो साज आपनो
दुहाई फेरि दमामो बजायो है॥
लकुटि हथियार लिये नयननि को ढाल दिये
श्वेत वार भये ता को तम्बुसो तनायो है।
दशन गये सुमानो दरवान दूरि किये जोगरो परो
सु और बिछोना बिछायो है॥
सीस कर कम्पत सु सुन्दर निकास्यो रिपु देख तहां
देखत बुढ़ापो दौरि आयो है॥

५

खीच तुचा कटि है लटको कबहुं पलटे
अजहुं रत बामो।
दन्त सबे मुखके उखरे नखरे नगरा सुखरो
खर कामो॥
कम्पत देह सनेह सुदम्पति जम्पति है धन कों
निसि जामो।
सुन्दर अजहु भौन तज्यो न भज्यो भगवन्त
सुलोनहरामो॥

६

देह घटी पग भूमि मंडे नहि औ लठिया
पुनि हाथ लई जू।
आंखि हु नाक परे मुख तें जल शीश हले कटि
खींच नई जू॥
ईश्वर कों कबहु न सम्हारत दुःख परे तब आइ
दई जू।
सुन्दर तो हु विषय सुख वाञ्छत चोरि गये पै बागे
न गई जू॥

७

पाइ अमोलक देह इहै नर क्यों न विचार करे
दिल अन्दर।
काम हु क्रोध हु लोभहु मोहहु लूटत है दशहुं
दिशि इन्दर॥
तु अब वाञ्छत है सुरलोक हि कालहु पाइ परे
सुपुरन्दर।
छाड़ि कुबुद्धि सुबुद्धि हृदय धरि आतम राम भजे
किन सुन्दर॥

८

इन्द्रिनके सुख मानत है शठ याही ते बहुतें
दुःख पावे।
ज्यों जल मे झष मांस हि लीलत स्वाद बंध्यो
जल बाहिर आवे॥
ज्यों कपि मूठि न छाड़त है रसनावश वन्द पर्यो
बिललावे।

सुन्दर क्यों पहिले न सम्हारत जो गुड़ खाइ
सुकान विधावै ॥

९

कौन कुबुद्धि भई घट अन्तर तु अपनो प्रभु सौं
मन चोरै।
भूलि गयो विषया सुख मैं शठ लालच लागि रह्यौ
अति थोरै॥
जा कोउ कञ्चन छार मिलावत लेकर पाथर
सौं नग फोरै।
सुन्दर या नरदेह अमोलिक तीर लगी नवका
कित बोरै॥

१०

देखत के नर शोभित है जैसे आहि अनूपम
केरि कौ खंभा।
भीतर तौ कछु सार नहीं पुनि ऊपर छालक
अम्बर दम्भा॥
बोलत है पर नाहिं कछू सुधि ज्यौ बयार तें
बाजत कुम्भा।
हसि रहै कपि ज्यौ छिन माहि सो याही तें
सुन्दर होत अचम्भा॥

११

देखतके नर दीसत हैं पर लच्छण तो पशुके सबही हैं।
बोलत चालत पोवत खात सोवै घर मे बन जात
सही है॥
प्रात गये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नित
भार बही हैं।
और तो लच्छण आई मिले सब एक कमी
सिर सींग नही हैं॥

१२

प्रेत भयो कि पिशाच भयो कि निशाचर सी
जित ही तित डोले।
तू अपनो सुधि भूलि गयो सुख तें कछु औरको
और ई बोले॥
सोई उपाई करे जु मरे पचि बन्धन तौ कबहूं
नहि खोले।
सुन्दर जानत मै हरि पावत सो तन नाश कियो
मति भोले॥

१३

पेट तें बाहिर होत ही बालक आइ के
मात पयोधर पीनो।
मोह बढ्यो दिनही दिन और तरुणभयो तिय
कौ रसभीनो॥
पुत्र कलत्र वंध्यो परिवार सु ऐसोहो भांति गए
पन तीनो।
सुन्दर राम को नाम विसारि सु आपही आप कौ
बन्धन कीनो॥

१४

मात पिता सुत भाई वंध्यो युवतीके कहे कहा
कान करे है।
चोरी करे वटपारो करे किरषो बनिजो करि
पेट भरे है॥
सीत सहे शिर घाम सहे कहे सुन्दर सो श्रम
माहि मरे है।
वांधि रह्यो ममता सबसों नर ताही ते पास
वंध्योई फिरे है॥

सिन्धुभैरवी—तिताला

तेरे ही चातुरी तोहि ले बोरै।
तू ठगके धन और कौं लावत तेरे हतों घर
औरई फोरै।
आलि लगें सगरी जरि जाइ सु तू दमरो दमरो
करि जोरै॥
हाकिमको डर नाहिं न सूझत सुन्दर एकहि
बार निचोरै।
तू खरचे नहि आप हि खाइ सुतेरो ही चातुरी
तोहि ले बोरै॥

मनहरणछन्द—तिताला

करत प्रपञ्च इन पञ्चनके बस पर्यो परदारारत
भय आनत बुराई कौं ।
परधन हरे परजीवनकी करत घात मद्य मांस
खात लवलेस न भलाई कौ ॥
छोईगो हिसाब तब मुखतें न आवै ज्वाब सुन्दर
कहत लेखा लेत राई राई कौ ।
इहां तौ करे विलास यमको न मानें त्रास यों मति
जानें उहां राज पोपाबाई कौ ॥

२

दुनिया कौं दोरता है औरत कौ लोरता है
ओ जुद कौ मोरता है वटोई सराईका ।
मुरगी कौ मोसता है बकरो कौ रोसता है
गरीबों कौ खोसता है वे महर गाईका ॥
जुलम कौ करता है धनो सो न डरता है
जो जगकौ मरता है खजाना बलाईका ।
होइगा हिसाब जब आवेगा न ज्वाब कछु सुन्दर
कहत गुनहगार है खुदाईका ॥

३

कर कर आयो जब खर खर काख्या नाल भर भर
बाजा ढोल घर घर जान्यो है ।
दर दर दोरी जाइ नर नर आगे दोन वरवकृत न
नेक अलसान्यो है ॥
सर सर सोधे धन तर तर तोरे पात जर जर काटत
अधिक मोह मान्यो है ।
फर फर फूल्यो फिरे डर डर पै न मूढ़ हर हर
हंसत न सुन्दर सकान्यो है ॥

४

जनम सिरानो जाइ भजन विमुख शठ काहे को
भवन कूप बिन मौच मरि है ।
गहत अविद्या जानि सुकनलनो ज्यों मूढ़ करम
विकार मत नहीं नेकु डरि है ॥
आपु हि तें जात अन्ध नरकन बार बार अजहूं न
सङ्क मन माहि अब करि है ।
दुःखको समूह अवलोकि के न त्रास होइ सुन्दर
कहत नागपाश नर परि है ॥

५

जग मग पग तजिसजि भजि राम नाम कामक्रोध
तनमन घेरि घेरि मारिये ।
झूठ मूठ हठ त्यागि जागि भागि सुनु पुनि गुनी
ज्ञान ध्यान बार बार वारि डारिये ॥
गहि ताहि जाहि शेष ईस सीस सुरनर और बात
हेत तात फेरि फेरि जारिये ।
सुन्दर दरद खोइ धोइ धोइ बार बार सार सङ्ग रङ्ग
अङ्ग हेरि हेरि धारिये ॥

दुमिलाछन्द

जोगीया—तिताला

हठयोग धरो तन जात भयो हरिनाम बिना
मुख धूरि परै ।
सठ सो गहरो छिन गात किया चरि घास
दिना भुख पूरि जरै ॥
भट भोग परो गन खात धिया अरि काम कि ना
सुख भूरि मरै ।
मठरोग करो धन घात हिया परि राम बिना
दुःख दूरि करै ॥

जोगिया—यत्

गुरुज्ञान गहे मति होइ सुखो मन मोहत
जं तब काज सरै ।
धुरि ध्यान रह्यो पति खाइ सुखो रन लोह बजी तब
खाज परै ॥
सुरतान बड़े हति दोइ रुखो तन छोह सजी
अब आज मरै
पुर थान लहे मति होइ दुःखो जन बोहर
जे जब राज करै ॥

चंकाल चिवनी प्रदवछन्द

मन्दिर माल विलाइत है गज जट दमामे दिमा
इक दो है ।

तात रु मात लिया सुत बान्धव देखधौं पामर
होत बिछोहै ॥
झूठ प्रपञ्च सौं राचि रह्यो सठ काठकी पूतरो
ज्यौं कपि मोहै ।
मेरो हो मेरो करे नित सुन्दर आंखि लगे कहि
कौनको कोहै ॥

२

ये मेरे देश बिलाइत है गज ये मेरे मन्दिर
ये मेरो थाती ।
ये मेरे मात पिता पुनि बान्धव ये मेरे पूत सु
ये मेरे नाती ॥
ये मेरी कामिनी केलि करें नित ये मेरे सेवक हैं
दिन राती ।
सुन्दर वैसे हि छाड़ि गयो सब तेल जर्यौ बुझि
जात ज्यौं बाती ॥

आशावरी—तिताला

भूलि कहै नर मेरो हो मेरो ।
तैं दिन चार विश्राम लियो सठ तेरे कहैं
कछु ह्वै गई तेरो ॥
जैसेही बाप ददा गये छाड़ि सु तैसे हो तू त्यजि है
पल फेरो ।
मारि है काल चपेट अचानक होइ घरी महि
राखको ढेरो ॥
सुन्दर ले न चले कछु सङ्ग सु भलि कहै नर
मेरो हो मेरो ॥

२

के यह देह जराइके छारि किया कि किया
कि किया कि किया है ।
के यह देह जिमो महि राखि दिया कि दिया
कि दिया कि दिया है ॥
के यह देह रहै दिन चारि जिया कि जिया
कि जिया कि जिया है ।
सुन्दर काल अचानक आइ लिया कि लिया
कि लिया कि लिया है ॥

३

सन्त सदा उपदेश बतावत केश सबै सिर सेत भरा है ।
तु ममता अजहू नहिं छाड़त मौतहु आइ
सन्देश धरा है ॥
आज कि काल चले उठि मूरख तेरेही देखत
के ते गए मर है ।
सुन्दर क्यों नहि राम सम्हालत या जग में कहो
कौन रहै ॥

४

देह सनेह न छाड़त है नर जानत है नर है
थिर रेहा ।
छीजत जात घटै दिनही दिन दीसत है घटका
नित छेहा ॥
काल अचानक आइ गहै कर ढाहि गिराइ
करै तन खेहा ।
सुन्दर जानि यहै निहचै धरि एक निरञ्जन
सौं कर नेहा ॥

५

तू कछु और विचारत है नर तेरो विचार
धरोई रहै गो ।
कोटि उपाइ करै धनके हित भाग लिखो
तितनोई लहै गो ॥
भोर कें सांझ घरी पल मांझ सुकाल अचानक
आई गहै गो ।
राम भजो न कियो कछु सुकृत सुंदर यौं पछिताइ
कहै गो ॥

आशावरी

भूलि गयो हरिनाम कौं तू शठ देखि धौं कौन
संयोग बन्यो है ।
काल अचानक आइ गहै कर पेखि धौं झूठो
सो तानो तन्यो है ॥
छार करै सब चामकौं लूटे जुआदि कौं ऐसेही
जीव हन्यो है ।

कोऊ न होत सहाइ को छूटै अनादि को सुन्दर
यातें सनगी है ॥

२

बीति गए पिछले सबही दिन आवत हैं अगलो
दिन नेरे ।
काल महा बलवन्त बड़ो रिपु साधि रह्यो
सर ऊपर तेरे ॥
एक रोमहि मार गिरावत है लागत ताहि नही
कछु बेरे ॥
सुन्दर संत पुकारि कहै पुनिह्र तोहि कहीं
अब टेरे ॥

३

सोइ रह्यो कहा गाफिल होइ कै तो शिर ऊपर
काल दहारे ॥
धामस धूमस लागि रह्यो शठ आइ अचानक
तोहि पछारे ।
ज्यों बन मे मृग कूदत फांदत चित्रक ले नख सों
उर फारे ॥
सुन्दर काल डरे जिहि को डर ता प्रभुको कहि
कौन संभारे ।

४

चेतत क्यों न अचेतन ऊंघत काल सदा शिर
ऊपर गाजे ।
रोकि रहे गढ़के सब द्वारन तू तब कौन
गली ह्वै भाजै ॥
आइ अचानक केस गहे जब पाकरि कै पुनि
तोहि भुला जे ।
सुन्दर कौन सहाय करै जब मुण्डही मुण्ड
भरा मर बाजे ॥

५

तू अति गाफिल होइ रह्यो शठ कुञ्जर ज्यों
कछु सङ्क न मानै ।
नेकु नहीं तनमें अपने बल मत्त भयो विषया
सुख ठाने ॥
खेलत खात सबै दिन बीतत नीति अनीति
कछू नहीं जाने ।
सुन्दर केहरि काल महारिपु दन्त उपारि
कुम्भस्थल भानै ॥

६

मात पिता युवती सुत बान्धव आइ मिल्यो
इनसों सम्बन्धा ।
स्वारथके अपने अपने सब हैं सो इहि जानत
नाहि न अन्धा ॥
कर्म्म विकर्म्म करै तिनके हित भार धरे नित
आपने कन्धा ।
अन्त विछोह भयो सब सों पुनि याही तें सुन्दर है
जग धन्धा ॥

मनहरनछंद

चौताला

करत करत धन्ध कछुवो न जानै अन्ध आवत
निकट दिन आगि लो चपाक दे ।
जैसे बाज तीतरकों दाबत अचानक जैसे बक
मछरी कों लीलत लपाक दे ॥
जैसे मच्छिकाको घात मरी करत आइ जैसे साप
मूषाकों ग्रसत गपाक दे ।
चेतरे अचेत नर सुन्दर सम्हारि राम ऐसे तोहि
काल आइ लेइगो टपाक दे ॥

२

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन
माल मैं तो बहु विधि भारो हों ।
मेरे सब सेवक हुकम के दपेटे माहि मेरो जुवती
कों मैंतो अधिक पियारो हों ॥
मेरो वंश ऊचो मेरे बाप ददा ऐसे भयो करत
बड़ाई मैं ता जग उजियारो हों ।
सुन्दर कहत मेरो मेरो करि जामे शठ ऐसे नहो
जानै मैंतो कालही को चेरो हों ॥

टोरी

जबतें जनम धरो तबही तें भूलि पस्यो बालापन
माहि भूल्यो समुझो न दुखमें।
यौवन भयो है जब कामवस भयो तब युवती सो
एकमेक भूलि रह्यो सुखमें॥
पुत्रउ पौत्र भए भूल्यो तब मोह बाँधि चिन्ता करि
करि भूल्यो जाने नही दुःख में।
सुन्दर कहत शठ तीनो पन माहि भूल्यो भूल्यो जाइ
परो काल व्यालहीके मुखमें॥

चौताला

उठत बैठत काल जागत सोवत काल चलत फिरत
काल काल डर धस्यो है।
कहत सुनत काल खातउ पियत काल काल ही
के गाल मांहि हर हर हस्यो है॥
तात मात बन्धु काल सुत दारागृह काल सकल
कुटुम्ब काल काल जाल फस्यो है।
सुन्दर कहत एक राम विनु सबै काल कालहीको
क्रत कियो अन्त काल ग्रस्यो है॥

२

जबते जनम लेत तबही तें आयु घटे मायतो कहत
पूत मेरो बड़ो होत जात है।
आज और काल और दिन दिन होत और दौरो
दौरो फिरत खेलत अरु खात है॥
बालापन बीत्यो जब यौवन लग्यो है आइ यौवनहु
बीते बूढ़ो डोकरा दिखात है।
सुन्दर कहत ऐसे देखतही बुझि गयो तेल घट
गयो जैसे दीपक बुझात है॥

गुजरी—चौताला

सब कोउ ऐसे कहैं काल हम काटत हैं काल तो
अखण्ड नाश सबको करत है।
जाके भय ब्रह्मा पुनि होत हैं कम्पमान जाके
भय असुर सुर इन्द्र उ डरत है॥
जाके भय शिव अरु शेष नाग तीनो लोक कोउ
कलप बीति लोमस उ परत है।
सुन्दर कहत नर गर्व क्या गुमान करै तू तो शठ
एकई पलक में मरत है॥
काल सो न बलवन्त कोउ नहि देखियत सबको
करत अन्तकाल महा जोर है।
कालही को डर सुनि भाग्यो मूसा पैगम्बर जहां
जहां जाइ तहां तहां वाको मार है॥
काल है भयानक भयभीत सब कोए लोक स्वर्ग
मर्त्त्य पाताल में कालही को सोर है।
सुन्दर काल को काल एक ब्रह्म है अखण्ड वासो
काल डरै जोई चल्यो उह वोर है॥

२

बरषा भए तैं जैसे बोलत भंभीरी सुर खण्डन
परत कहुं नेकहु न जानिए।
जैसे पूंगी बाजत अखण्ड सुर होत पुनि ताहु में न
अन्तर अनेक राम जानिए॥
जैसे कोई गुड़ी को चढ़ावत गगन माहि ताहु
कीतो ध्वनि सुनि तैसेही बखानिए।
सुन्दर कहत ऐसे काल को प्रचण्ड वेग राति दिन
चल्यो जाहि अचरज मानिए॥

३

माया जोरि जोरि नर राखत जतन कर कहत है
एकदिन मेरे काम आइ है।
तोहि तो मरत कछु वार न लागै शठ देखत हो
देखत बबूला सो विलाइ है॥
धन तो धरोई रहै चलत न कौड़ो गहै रोतोई
हाथन जैसे आया तैसे जाइ है।
करिले सुकृत यह विरिया न आवै फेरि सुन्दर कहत
पुनि पोछे पछिताइ है॥

४

बावरोसो भयो फिरै बावरोही बात करै बावरे
जौ देत वाया लागत वौरानो है।
माया को उपाय जानै मायाको चातुर ठानै
माया मैं मगन अति माया लपटानो है॥

यौवनको मदमातो गिनत न कोऊ नातो काम वस
कामिनीके हाथ न विकानो है ।
अतिही भयो विहाल सूझत न माथे काल सुन्दर
कहत ऐसो और का दिवानो है ॥

५

झूठो धन झूठो धाम झूठो कुल झूठो काम झूठो
देह झूठो नाम धरि कै बुलायो है ।
झूठो तात झूठो मात झूठो सुत दारा भ्रात
झूठो हित मान झूठो झूठे मन लायो है ॥
झूठो लेन झूठो देन झूठे मुख बोलेबैन झूठे झूठे
करे फैल झूठेहीको धायो है ।
झूठेहा मे रातो भयो झूठेहो मे पचि गयो सुन्दर
कहत सांच कबहू न आयो है ॥

चौतारा

झूठे हाथी झूठे घोड़ा झूठे आगे झूठा दोरा झूठा
बन्धा झूठा छारा झूठा राजारानी है ।
झूठो काया झूठो माया झूठे झूठे धन्दा लाया
झूठा मुवा झूठा जाया झूठो याको वानो है॥
झूठा सोवे झूठा जागे झूठाझूठे झूठा भागे
झूठा पीछे झूठा आगे झूठे झूठो मांनो है।
झूठो लोया झूठा दीया झूठा खाया झूठा पीया
झूठा सौदा झूठे कीया ऐसा झूठा प्रानो है ॥

२

झूठ सौ बढ़यो है लाल ताहो ते ग्रसत काल काल
विकराल व्याल सबही को खात है ।
नदीको प्रवाह चल्यो जात है समुद्र माहि तैसे
जग कालहीके मुखमें समात है ॥
देह सो ममत्व ताते कालको भय मानत है ज्ञान
उपजे ते वह कालज बिलात है ।
सुन्दर कहत परब्रह्म है सदा अखण्ड आदि अन्त
मध्य एकसो ठहरात है ॥

इदवछंद

चौतारा

काल उपावत काल खवावत काल मिलावत है
गहि माटी ।
काल हलावत काल चलावत काल सिखावत है
सब पाटी ॥
काल बुलावत काल झुलावत काल सुलावत है
वन घाटी ।
सुन्दर काल मिटे तबही पुनि ब्रह्म विचार पढ़े
जब पाटी ॥

देह आत्मा विछोह

इदवछंद

बोलत हो सु कहां गयो पक्षी ।
वे श्रवना रसना मुख वैसेही वैसेही नासिका
वैसेही चक्षी ।
वे कर वे पग वे सब द्वार सु वे नख सीख हैं
रोम असंखी ॥
वैसेही देह परो पुनि दीसत एक विना सब
लागत खंखी ।
सुन्दर कोउ न जान सको यह बोलत हो सु कहां
गयो पक्षी ॥

चौतारा

खेल गयो एक खेल सो ख्यालो ।
बोलत चालत पीवत खात सौंचतहै तुमको
जैसे मालो ।
लेतहु देतहु देखत रीझत तोरत तान बजावत तालो॥
जामहि कर्म्म विकर्म्म किये सब है यह देह परो
सब ठालो ॥
सुन्दर सो कतहू नहि दीखत खेल गयो एक खेल
सो ख्यालो ॥

२

मात पिता युवती सुत बान्धव लागत है सबकों
अति प्यारो ।
लोक कुटुम्ब रोख हित राखत होइ नहीं हमतें
कहुं न्यारो ॥
देह सनेह तहां लगि जानहु बोलत है सुख
शब्द उचारो।

सुन्दर चेतन शक्ति गई जब वेग कहैं घर माहि
निकारो ॥

२

रूप भलो जबही लगि दीसत जौ लगि बोलत
चालत आगै।
पीवत खात सुनै अरु देखत सोइ रहै उठिकै
पुनि जागै ॥
मात पिता भैया मिलि बैठत प्यार करै युवती
गल लागै।
सुन्दर चेतन शक्ति गई जब देखत ताहि सबै
डर भागै ॥

चौताला

मनहरन छंद

कौन भांति करतार कियो है शरीर यह पावकके
मध्य देखो पानी की जमावनी।
नासिका श्रवण नैन वदन रसन बैन हाथ पांव
अङ्ग नख सिख की बनावनी।
अजब अनूप रूप चमक दमकऊ सुन्दर है शोभित
अति अधिक सुहावनी ॥
जाही छिन चेतन शकति जब लीन होइ ताही
छिन लगत सबनको भयावनी ॥

२

मृतका की पिण्ड होत ताहि मे युगति भई
नासिका नयन मुख श्रवण बनाये हैं।
सीस हाथ पांव अरु अङ्गुली विराजमान अङ्गुलीकै
आगै पुनि नखऊ लगाये हैं ॥
पेट पीठ छाती कण्ठ चिबुक अधर गाल दसन
रसन बहु वचन सुहाये हैं।
सुन्दर कहत जब चेतनाशकति गई वहै देह
जारि बारि छार करि आये हैं ॥

३

देह तो प्रकट है ज्यो की त्योही देखियत नैनके
झरोखे माहि झांकत न देखिये।
नाकके झरोखे माहि नेक न सुवास लेत कानके
झरोखे माहि सुनत न लेखिये ॥
मुखके झरोखे मैन वचन उचार होत जीभहु को
षट्रस स्वाद न विशेषिये।
सुन्दर कहत कोऊ कौन विधि जानै ताहि कारो
पीरो काहू द्वार जातो हू न पेखिये ॥

४

माय तौ पुकारि छाती कूट कूट रोवत है बापहु
कहत मेरो नन्दन कहां गयो।
भैयाहू कहत मेरी बांह आज टूटि गई बहन
कहत मेरो बीर दुःख है दयो ॥
कामिनी कहत मेरो सीस शिरताज कहां उन
ततकाल हाथ मे साधौरा हैं लयो।
सुन्दर कहत ताहि कोऊ नहि जानि सकै
बोलत हुतो सुयह छिन मे कहां गयो ॥

५

रज अरु बीरजको प्रथम संयोग भयो चेतनाशकति
तब कौन विधि आई है।
कोऊ एक कहै बीज मधही कियो प्रवेश किनहू
तो पञ्चमास पीछे कै सुनाई है ॥
देह को वियोग जब देखतही होइ गयो तब
कोऊ कहो कहां जाइ कै समाई है।
पण्डित ऋषीश्वर तपीश्वर मुनीश्वरहु सुन्दर कहत
इह किनहू न पाई है ॥

६

तबही लौं ज्ञात सब होत हैं विविधि भांति जब
लगि घटमाहि चेतन प्रकाश है।
देहके असक्त भये क्रिया सब थकि जाति जब लगि
स्वास चलै तब लगि आस है ॥
स्वासहु थकी है जब रोवन लगे है तब सब
कोऊ कहैं यह भयो घट नास है।
काहू नहीं देखो किहिं ओर कौन कहां गयो
सुन्दर कहत यह बड़ोई तमास है ॥

७

देह तो स्वरूप जौलो तौलो है अरूप माहि सब
कोउ आदर करत सनमान है।
टेढ़ी पाग बांधि बार बारही मरोरे मोंछ बांहऊ
मकोरे अति धरत गुमान है॥
देश देशही के लोग आइ के हजूर होंहि बैठ
के तखत पै कहावै सुलतान है।
सुन्दर कहत जब चेतनाशकति गई वहै देह
ताकि कोउ मानत न आन है॥

तृष्णाको अङ्ग—इन्द्रववछन्द

देशी टोड़ी—चौताला

नयननि कि पलही पल में छिन आध घरी
घटका जु गई है।
याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई
तब राति भई है॥
आज गई अरु कालहि गई परसों तरसों कछु
और ठई है।
सुन्दर ऐसेही आजु गई तृष्णा दिनही दिन
होत नई है॥

२

कनही कनकों विललात फिरे शठ याचत है
जनही जनकों।
तनही तनकी अति सोच करै नर खात रहे
अनही अनकों॥
मनही मनकी तृष्णा न मिटी पुनि धावत है
धनही धनकों।
छिनही छिन सुन्दर आयु घटी कबहू न गयो
बनही बनकों॥

३

जौ दश वीस पचास भए शत हो हि हजारन
लाख मगैगो।
कोटि अरव्व खरव्व असंख्य पृथ्विपति होनकी
चाह जगैगो॥
स्वर्ग पाताल कों राज करों तृष्णा अधिको अति
आगि लगैगो।
सुन्दर एक सन्तोष विना शठ तेरी तो भूख न
क्योंह भगैगो॥

४

लाख करोर अरव्वनि नील पद्मनि है
तहां लाख खाटो।
जो रही जोर भण्डार भरे सब औरही सु जमी
तर डाटो॥
तौहु न तोहि सन्तोष भयो शठ सुन्दर तैं तृष्णा
नहि काटी।
सूझत नाहि न काल सदा शिर मारि है धाप
मिलाइ है माटी॥

५

भूख लिए दशहूं दिश दौरत ताहि तें तूं कबहूं
न अघै है।
भूख भण्डार भरे नही कैसेऊ जो धन मेरु
कुवेर लौ पैहै॥
तू अब आगे हि हाथ पसारत ताहो तें हाथ
कछू नहि ऐहै।
सुन्दर क्यों न सन्तोष करै नर खातही खात
कितोइक खैहै॥

सारङ्ग—चौताला।

भूख नचावत रङ्क हि राजहि भूख नचाइ के
विश्व विगोई।
भूख नचावै इन्द्र सुरासुर और अनेक जहां
लगि जोई॥
भूख नचावै है अध ऊरध तीनहु लोक गये
कहा कोई।
सुन्दर जाई तहां दुःखही दुःख ज्ञान विना न कहूं
सुख होई॥

२

पेट पसारि दियो जितही तित तैं यह भूख
किती एक धापो।

और न ठार कछू नहो आवत मैं बहु भांति भलो
विधि मापो ॥
देखत देह भयो सब जीरन तू नित नूतन
आहि अघापो ।
सुन्दर तोहि सदा समुझावत है तृष्णा अजहूं
नहि धापो ॥

३

तीनहुं लोक अहार कियो फिर सात समुद्र
पियो सब पानी ॥
और जहां तहां ताकत डोलत काढ़त आंखि
डरावत प्रानी ।
दांत दिखावत जीभ हलावत याहो ते मैं यह
डाइन जानी ।
सुन्दर खात भए कितने दिन है तृष्णा अजहूं न
अघानी ॥

४

पांउ पाताल परे गयो निकसो सीस गयो
असमान अघोरो ।
हाथ दशों दिशकों पसरे पुनि पेट भरे न
समुद्र सुमेरो ॥
तिनहु लोक लिये मुख भीतर आंखहु कान बंधे
चहुं फेरो ।
सुन्दर देह धर्खो अति दीरघ है तृष्णा कछु
छेहन तेरो ॥

५

वाद वृथा भटके निशि वासर दूरि कियो
कबहू नहि धोषा ।
तू हतियारिनि पापनि कोढ़िनि सांच कहौं मति
मानहि रोषा ॥
तोहि मिले तब ते भयो बन्धन तू मरि है
तबही है मोषा ।
सुन्दर और कहा कहौं तोहि हे तृष्णा
अब तो करि तोषा ॥

६

क्यों जगमाहि फिरे भ्रख मारत स्वारथ कौन
परे जिहिं जोले ।
ज्यों हरिहाय गऊ नहिं मानत दूध दुहो कछु
सोपु ठढोले ॥
तू अति चञ्चल हाथ न आवत निकसो जाइ
नहो सुख बोले ।
सुन्दर तोहि कह्यो वेर केतीक हे तृष्णा अब तू
मति डोले ॥

७

तू कोउ कान धरो नहि नेकहू बोलत बोलत
पेटहि पाक्यो ।
हौं कोउ बात बनाइ कहौं जब तें तब पोसतहो
सब फांक्यो ॥
केतिक द्योस भए परमोदत तैं अब आगेहो
कों रथ हांक्यो ।
सुन्दर सोख गई सबही चलि हे तृष्णा कहि
कैं तोहि थाक्यो ॥

८

तू भरमाइ प्रदेश पठावत वादि वृथा मरि
जाइ अकाजा ।
ते सब लोक नचाए भली विधि भाण्ड किए
सब रंकरु राजा ॥
फेरि न मोहिं देखावता तू सुख दूर हो दूर हो
भागरे जा जा ।
सुन्दर तोहि दुखाइ कहो अब हे तृष्णा तोहि
नेक न लाजा ॥

पेटकी अङ्ग—इन्द्रवबछन्द

सारङ्ग—चौताला

पांव दिये चलने फिरने कहुं हाथ दिये हरि
कृत्त करायो ।
कान दिये सुनिये हरिको यश नयन दिये तिन
मार्ग दिखायो ॥

नाक दियो सुशोभित ता करि जोभ दई हरि को
गुण गायो।
सुन्दर साज दियो परमेश्वर पेट दियो परि
पाप लगायो ॥

२

कूप भरे अरु वापि भरे पुनि ताल भरे वरषा
ऋतु तीनो।
कोठी भरे घट माठ भरे घर हाट भरे सबही
भरि लीनो ॥
खन्दक खार बुखार भरे परि पेट भरे न बड़ो
दर होनो।
सुन्दर रीतो हो रीतो रहै यह कौन खड़ा
परमेश्वर कीनो ॥

मनोहरछन्द—चौताला

कीधों पेट चूल्हा कीधों भाठो किधों भार याहि
जोई कछु झोंकिए सोई जर जात है।
कीधों पेट थल कीधों बांबी किधों सागर है जितो
जल परे तितो सकल समात है ॥
किधों पेट दैत्य किधों भूत प्रेत राचस है
खांउ खांउ करे कहुं नेक न अघात है।
सुन्दर कहत प्रभु कौन पाप लायो पेट जब तें
जनम लियो तब ही तें खात है ॥

२

विघ्न हु तो विघ्नहि करत अति बार बार तनमन
पुनि तनक न कबहूं अघायो है।
घटत भरत क्योंही घटोई सो रहत नित सिर
विराहु मैं तो कछुव न खायो है ॥
देह दे कहत हि कहत जनम बीत्यो पिण्ड
पिण्ड काजे निशिदिन लबचायो है।
मुगदल गिलत गिलत तनहि ठस होइ
सुन्दर कहत वपु कौन पाप लायो है ॥

२

काजी पेट काज कोतवालके अधीन होत कोतवाल
सो तो सरदार आगे लीन है।
सरदार दीवानके पीछे लगा डोले पुनि दीवानहु
जाइ पादशाह आगे दीन है ॥
पादशाह कहै या खुदा मुझे और दीजै पटही
पसारे नहि पेट वश कौन है।
सुन्दर कहत प्रभु क्योंहूं नहि पेट भरे एक पेट
काज एक एक को अधीन है ॥

मधुमास—चौताला

तैं तो प्रभु दियो पेट जगत नचायो जिन
पेट काज घर घर द्वार द्वार फिर्‍यो है।
पेट हीके लिए हाथ जोरि आगे ठाढ़ो होइ
जोई जोई कह्यो सोई सोई उन कर्‍यो है ॥
पेट हीके लिए पुनि मेघ शीत घाम सहै पेट हीके
लिये जाइ रण माहि गर्‍यो है।
सुन्दर कहत यह पेट सब किए भाण्ड
और गैल छूटि परो पेट गैल पर्‍यो है।

२

पेट सो न बली जाके आगे सब हार चले
राव अरु रङ्क एक पेट जीत लिये है।
कोउ बाघ मारत विदारत है कुञ्जर को
ऐसे शूरवीर पेटकाज प्राण दिये है ॥
यन्त्रमन्त्र साधत आराधत श्मशान जाइ
पेट आगे डरत निडर ऐसे हिये है।
देवता असुर भूत प्रेत तीनो लोक पुनि
सुन्दर कहत प्रभु पेट ज़ेर किये है ॥

२

प्रात ही उठत जब पेट ही को चिन्ता तब
सब कोउ जात हैं आपने अहार कों।
कोउ अन्न खात पुनि आमिष भखत कोउ
कोउ घास चरत चरत कोउ दार कों ॥
कोउ मोती फल कोउ वास रस पयपान कोउ
पवन पीवत भरत पेट भार कों।

सुन्दर कहत प्रभु पेट ही भ्रमाए सब
पेट तुम दियो है जगत होनवार कौं॥

बड़हंस—चौताला

पेटके कारण जीव हते बहु पेट ही मांस भखे
औ सुरापी।
पेट हि ले करि चोरी करावत पेट ही की
गठरी ले कापी॥
पेट ही पाश गरे मह डारत पेट ही डारत
कूपहु वापी।
सुन्दर काहे को पेट दियो प्रभु पेट सो और
नहीं कोउ पापी॥

२

औरन कौं प्रभु पेट दियो तुम तेरे तो पेट कहूं
नहि दीसे।
ये भटकाय दिये दशहूं दिश कोउक रांधत
कोउक पीसे॥
पेटहीके हित दौरे फिरें सब खाये विना
अंग ही अंग टीसे।
सुन्दर आप न खाहु न पीवहु कौन करै इन
ऊपर रीसे॥

मनोहरछन्द—चौताला

काहे कौ काहूके आगे जाइ कै अधीन होइ
दीन दीन वचन उचार मुख कहते।
जिनके तो मद अरु गर्व गुमान अति
तिनके कठोर बैन कबहूं न सहते॥
तुम्हारे ही भजन सौं अधिक लय लीन अति
सकल को त्यागि कै एकान्त जाय गहते।
सुन्दर कहत यह तुमही लगायो पाप
पेट न होतो तो प्रभु बैठ हम रहते॥

२

पेटहीके वश रङ्क पेटहीके वश राजा पेटहीके
वश और खान सुलतान है।
पेटहीके वश योगी जङ्गम सन्यासी शेष
पेटहीके वश वनवासी खात छन है॥
पेटहीके वश ऋषि मुनि तपधारी सब
पेटहीके वश सिद्ध साधक सुजान है।
सुन्दर कहत नहीं काहूको गुमान रहे
पेटहीके वश प्रभु सकल जहान है॥

चिन्ताको अङ्ग

सारङ्ग—चौताला

दोहु निचिन्त करे मति चिन्तहि चञ्चु दई
सोई चिन्त करेगो।
पांव पसारि पर्यो किन सो बहु पेट दियो सोई
पेट भरेगो॥
जीव जिते जलके थलके पुनि पाहन में
पहुंचाइ धरेगो।
भूखही भूख पुकारत है नर सुन्दर तू कहा
भूख मरेगो॥

२

धीरज धारि विचार निरन्तर तोहि रच्यो सो तो
आपुहि ऐहै।
जेतक भूख लगी घट प्राण हि तेतक तू अन
पासहि पैहै॥
जो मनमें तृष्णा करि धावत तौ तिहुं लोक न
खात अघैहै।
सुन्दर तू मत शोच करे कछु चञ्चु दई सोई
चूनहु देहै॥

३

नेक न धीरज धारत है नर आतुर होइ दशों
दिश धावै।
ज्यौ पशु खेंच तुरावत वन्धन जो खगि नीर न
आवहि आवै॥
जानत नाहि महामति मूरख जा घर द्वार
धनी पहुचावै।
सुन्दर आपु कियो मढ़ भाजन सो भरि है
मति शोच उपावै॥

४

भाजन आपु गढ़ो जिन ते भरि हैं भरि हैं
भरि हैं भरि हैं ज।

गावत है जिनके गुणकों ढरि हैं ढरि हैं ढरि हैं
ढरि हैं जू ॥
सुन्दरदास सहाय सोई करि हैं करि हैं करि हैं
करि हैं जू ।
आदिहु अन्तहु मध्य सदा हरि हैं हरि हैं
हरि हैं हरि हैं जू ॥

५

काहे को दौरत है दशहूं दिश तू नर देख कियो
हरि जूको ।
बैठि रहै दुरिके मुख मूंदउ घालिके दांत
खवाइ हैं टूको ॥
गर्भ थवै प्रतिपाल करो जिन होई रहो तब तू
जड़ मूको ।
सुन्दर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदय
विश्वास प्रभूको ॥

६

जा दिनतै गर्भवास तज्यो नर आइ अहार लियो
तब ही को ।
खात हो खात भए इतने दिन जानत नाहिं
न भुख कहीको ॥
दौरत धावत पेट दिखावत तू शठ कोट सदा
अनही को ।
सुन्दर क्यों विश्वास न राखत सो प्रभु विश्वम्भर
सब हीको ॥

भीमपलाश—चौताला

खेचर भूचर जे जलके चर
देत अहार चराचर पोषे ।
वे हरि जू सबकों प्रतिपालत जो जिहि भांति
तिसो विधि तोषे ॥
तू अब क्यों विश्वास न राखत भूलत है कत
धोखे हो धोषे ।
तोहि तहां पहुचाइ रहे प्रभु सुन्दर बैठि
रहे किन वोसे ॥

मनोहरछन्द—चौताला

काहे को वपुरा भयो फिरत अज्ञानो नर तेरो
तो रिज़क तेरे घर बैठे आइ है ।
भावे तू सुमेर जाहि भावे जाहि मारु देश
जितनोक भाग लिखो तितनोक पाइ है ॥
कूप मांझ भरि भावे सागरके तीर भरि जितनोक
भाड़ो नीर तितनोहो समाइ है ।
ताही ते सन्तोष करि सुन्दर विश्वास धरि जितनो
रच्यो है घट सोइ अमराइ है ॥

२

काहेको फिरत नर दीन भयो घर घर देखियत
तेरो तो अहार एक सेर है ।
जाको देह सागर में सुन्यो शत योजनको ताहु को
तो देत प्रभु यामों नहीं फेर है ॥
भूख्यो कोउ रहत न जानिये जगत माहि कीरो
अरु कुञ्जर सपनहो कों देर है ।
सुन्दर कहत तू विश्वास क्यों न राखे शठ बार बार
समुझाइ कह्यो केतो वेर है ॥

३

तेरे तो अधीरज तू आगिलो हो चिन्ता करे
आज तो भख्यो है पेट काल्ह कैसो होइ है ।
भूखोई पुकारे अरु दिन उठि खातो जाइ अति हो
अज्ञानी जाकी मति गई खोइ है ॥
ताको नहिं जाने शठ जाको नाम विश्वम्भर
जहां तहां प्रकट सबन देत सोइ है ।
सुन्दर कहत तोहि वाको तो भरोसो नाहिं
एक विश्वास विना याहो भांति रोइ है ॥

४

देखि धों सकल विश्व मरत भरनहार चुंचक
समान चुनि सबहो को देत है ।
कीट पशु पची अजगर मत्स्य कच्छ पुनि उनके
न सोदा कोज न तो कछु खेत है ॥

पट होके काज राति दिवस भ्रमत शठ मैं तो जान्यो
नीके करि तू तौ कोउ प्रेत है।
मनुष्य शरीर पाइ करत है हाय हाय सुन्दर कहत
नर तेरे सिर रेत है॥

५

तू तो भयो बावरो उतावरो फिरत अति प्रभुको
विश्वास गहि काहे न रहत है।
तोरो तोरि जो कहे सु आइ है सहज माहि यौंही
चिन्ता करि करि देह को दहत है॥
जिन यह नख सिख साजिके सवांरो तोहि अपने
किये को वह लाजको वहत है।
काहेको अज्ञानी कछु सोच मन माहिं करै भूखो
तू कभो न रहे सुन्दर कहत है॥

६

जगत में आइ ते विसारो है जगतपति जगत कियो
है सोई जगत भरत है।
तेरे चिन्ता निशिदिन और हो परो है आइ
उद्यम अनेक भांति भांति के करतहै॥
इत उत जाइके कमाइ करि लाउ कछु नेक हू
अज्ञानो न धोरज धरत है।
सुन्दर कहत एवा प्रभुके विश्वास विनु वाद क्यों
तृथा हो शठ पचिके मरत है॥

७

देह तो मलिन अति बहुत विकार भरो ताहु
माहि जरा व्याधि सब दुःखरासो है।
निद्राहु पेट पीर कबहुंक सोस वांह कबहुंक
आंखि कान मुख में व्यथासो है॥
औरहु अनेक रोग नख सिख पूरि रहे कबहुंक
श्वासा चले कबहुंक खांसो है।
ऐसो या शरीर ताहि आपनो के मानत है सुन्दर
कहत या में कौन सुखवासो है॥

८

जा शरीर माहि तू अनेक सुख मानि रह्यो ताहि
तू विचार या में कौन वात भलि है।
मेद मज्जा मांस रग रग माहिं रक्त पूरि पेटहु
पिटारोसो तामें ठौर ठौर मलि है॥
हाड़निसो मुख बनो हाड़ हि के नैना नाक हाथ
पांव सोज सब हाड़ हो को नलि है।
सुन्दर कहत याहो देखि जिन भूले कोउ भोतर
भङ्गार भरो ऊपर ते कलि है॥

इन्द्रवज्रछन्द—चौताला

हाड़को पिञ्जर चाम मढ़ो सब माहिं भरयो
मल मूत्र विकारा।
थूक रु लार परे मुखते पुनि व्याधि बहे सब
औरउद्वारा॥
मांसकी जोभ सो खाइ सबै कछु नाहिंने ताको है
कौन विचारा।
ऐसे शरीर में पैठिके सुन्दर कैसेके कोजिये
सोच अचारा॥

मनोहरछन्द

मालकोश—चौताला

थूक रु लार भरयो मुख दीसत आंखि में गोड़रु
नाकमें सेढ़े।
और हुं द्वार मलीन रहै नित हाड़के मांसके
भीतर वेढ़े॥
ऐसे शरीर में वास कियो तब राकसे दोशत
ब्राह्मण टेढ़े।
सुन्दर गर्व कहा इतने पर काहे को तू नर
चालत टेढ़े॥

२

जा दिन गर्भ संयोग भयो जब ता दिन बूंद
छिपाइतो ताहीं।
द्वादश मास अधोमुख झूलत बूड़ि रह्यो पुनि
वो रस माहीं॥
ता रज वोरजका यह देह सु तू अब चालत
देखत छाहीं।
सुन्दर गर्व गुमान कहा सुनु आपनो आदि
विचारत नाहीं॥

नारीनिन्दाको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

कामिनी को देह मानो कहिये सघन वन यहां
कोउ जाइ सो तो भूलि कै परत है।
कुञ्जर है गति कटि केहरि को भये जामें वेणी
कालोनागिनि भखन को धरत है॥
कुच है पहार जहां कामचोर रहैं तहां साधिकै
कटाच्छवाण प्राणको हरत है।
सुन्दर कहत एक और डर अति तामि राक्षस वदन
खांउ खांउ ही करत है॥

२

विष हीको भूमि माहिं विष हीके अङ्कुर भये नारि
विषवेलि बढ़ी नखन में देखिये।
विष हीके जर मूल विष हीके डार पात विष हीके
फल फूल लागे जु विसेखिये॥
विष हीके तंतु पासा उरझि गए आटो मारी सब
नर वृच्छ पर लपटी ही लेखिये।
सुन्दर कहत कोऊ एक तरु वचि गए तिन कतो
कहूं लता लागी नहीं देखिये॥

३

उदर में नरक नरक अधद्वारनिमें कुचनिमें
नरक नरक भरी छाती है।
कण्ठमें नरक गाल चिबुक नरक ग्रीव मुखमें नरक
जीभ लार हु चुचाती है॥
शीर्ष में नरक कान नयन में नरक वहै हाथ पांउ
नख सिख नरक दिखाती है।
सुन्दर कहत नारी नरकको कुण्ड यह नरक में
जाइ परै सो इनको पच्छपाती हैं॥

४

कामिनीको अङ्ग अति मलिन महा अशुद्ध
रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार है।
हाड़ मांस मज्जा मेद चाम सौं लपेट राखे
ठौर ठौर रकतको भरे ही भण्डार है॥
मूत्र पुरीष आंत एक मेक मिलि रही औरउ
उदर मांहि विविधि विकार है।
सुन्दर कहत नारी नख शिख निन्दारूप ताहि जो
सराहे सो तो बड़ो ई गंवार है॥

कुण्डलिया

रसिक प्रिया रसमञ्जरी अरु शृङ्गारहि जानि।
चतुराई करि बहुत विधि विषय बनाई आनि॥
विषय बनाई आनि लगत विषयनिका प्यारो।
जाके मदन प्रचण्ड सर है नख सिख नारो॥
ज्यौं रोगी मिष्टान्न खाय रोग हि विस्तारो।
सुन्दर यह गति होइ सुनो रसिक प्रियारो॥

२

रसिक प्रियाके सुनत ही उपजै विविधि विकार।
जो यामैं चित देत है वहै होत नर ख्वार॥
वहै होत नर ख्वार बार तो कछुवो न लागै।
सुनत विषयकी बात लहरि विष हीकी जागै॥
जो कोउ ऊंघत हुतो लह्यो पुनि सेज बिछाई।
सुन्दर ऐसो जान सुनत है रसिक प्रिय भाई॥

परनिन्दकको अङ्ग

आपने न दोष देखे परके अवगुण पेखे दुष्टको
स्वभाव उठि निन्दाई करत है।
जैसे काहू महल सवांरि राख्यौ नीकै करि
कीरी तहां जाइ छिद्र ढूढ़त फिरत है॥
भोर होते सांझ लगि सांझ होते भोर लगि
सुन्दर कहत दिन ऐसे ही भरत है।
पांउके तरेकी तो न सूझै लागि मूरखको और सौं
कहत शिर ऊपर बरत है॥

इन्दवछन्द—चौताला

घात अनेक रहै उर अन्तर दुष्ट कहे मुखतै
अति मीठी।
लोटत पोटत व्याघ्र हो ज्यौ नित ताकत है
पुनि ताहीको पीठी॥

ऊपर ले छिरके जल आनि सुहेठ लगावत
जारि अंगीठी।
यामहि क्रूर कछू मति जानहुं सुन्दर आपनी
आंखिन दीठी॥

२

आपने काज संवारनके हित औरको काज
बिगारत जाई।
आपनो कारज होहु न होउ बुरो करि और को
डारत भाई॥
आप हु खोवत और हु खोवत खोइ दुहूं घर
देत बहाई।
सुन्दर देखत ही बनि आवत दुष्ट करै नहीं
कौन बुराई॥

३

ज्यों नर पोषत है निज देह हि अन्न विनास
करै तिहि बारा।
ज्यों अहि और मनुष्य न काटत वाही नहीं कछु
होइ अहारा॥
ज्यों पुनि पावक जारि सबै कछु आपहु नाश भयो
निरधारा।
ज्यों यह सुन्दर दुष्ट स्वभाव ही जानि तजो किन
तीन प्रकारा॥

४

सो पइसें सुनही कछु ताल कवीकु लगै सुमलो
करि मानो।
सिंह हु खाहि तौ नाहिं कछू डर जो गज मारे तो
नाहिं न हानी॥
आगि जरो जल बूड़ि मरो गिरि जाइ गिरो
कछु भय मति आनो।
सुन्दर और भले सब ही दुःख दुर्जन सङ्ग भलो
जिन जानो॥

मन चञ्चलको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

हटकि हटकि मन राखत जू छण छण सटकि
सटकि चहुं ओर अब जात है।
लटकि लटकि ललचाइ लोल बार बार गटकि
गटकि करि विषय फल खात है॥
झटकि झटकि तार तोरत करमहीन भटकि
भटकि कहुं नेक न अघात है।
पटकि पटकि सिर सुन्दर जु मानो हार फटकि
फटकि जाइ सो धौ कौन बात है॥

२

पलही में मरि जात पलही में जीवत है
पलही में परहाथ देखत बिकानो है।
पलही में फिरे नरखण्ड ब्रह्माण्ड सब देखो
अनदेखो सो तो याते नहि छानो है॥
जातो नहि जानियत आवत न दीखे कछु ऐसो
सो बलाय अब ता सौं पार पानो है।
सुन्दर कहत याकी गति हु न लखि परे मनकी
प्रतीति कोऊ करे सो दिवानो है॥

३

घेरिये तौ घेरो नही आवत है मेरो पूत
जोइ परबोधिए सु कान न धरत है।
नीति न अनीति देखे शुभ न अशुभ पेखे पलही में
होती अनहोती हु करत है॥
गुरुको न साधुको न लोक वेद हूको शङ्क काहुकी
न माने न तो काहुतें डरत है।
सुन्दर कहत ताहि धोयिये सु कौन भांति मनको
स्वभाव कछु कह्यो न परत है॥

४

काम जब जागे तब गनत कोउ शांक आने
सब जोय करि देखत माधो है॥
क्रोध जब जागे तब नेक न संभारि सके ऐसो
विधि मूलको अविद्या जिन साधो है।
लोभ जब जागे तब तपत न क्यों हीं होइ
सुन्दर कहत इन ऐसो विधि स्वाधो है॥
महा मतवारो निशि दिनही फिरत रहे
मन सो न हम कोऊ देख्यो अपराधी है॥

देखिवे कों दौरे तो अटकि जाइ वाही ओर
सुनिवे कों दौरे तो रसिक सिरताज है ॥
सूंघवे कों दौरे तो अघाय न सुगन्धकरि खाइवें कौं
दौरे तो न अघाये महाराज है ।
भोग हु कों दौरे तो तृपत नहीं क्यौंहु छोइ सुन्दर
कहत याही नेंक हु न लाज है ॥
काहूकी कह्यो न करे आपुनी ही टेक परे
मन सो न कोउ हम जानो दगाबाज है ॥

५

देखे न कुठौर ठौर कहत कहत और लीन आइ
होत हाड़ मांस उरगत में ।
करत बुराई सर ओसर न जानें कछु धक्का आइ
देत राम नाम सो लगत में ॥
वाहे सुर असुर बहाए सब वेष जिनि सुन्दर कहत
दिन घालत भगत में ।
औरउ अनेक अन्तराय ही करत रहे मन सो न
कोउ है अधम या जगत में ॥

६

जिन ठगे शङ्कर विधाता इन्द्रदेव मुनि आपनोउ
अधिपति ठग्यो जिनें चन्द्र है ॥
और योगी जङ्गम सन्यासी शेष कौन गने सब ही को
ठगत ठगावे न सुछन्द है ।
तापस ऋषि सुर सकल पचि पचि हारे काहुके
न आवे हाथ ऐसो यामें बन्द है ।
सुन्दर कहत वश कौन विधि कीजे ताहि मन सो न
कोउ या जगत मांहि रिन्द है ॥

७

रङ्कको नचावे अभिलाष धन पाइवेकों निशिदिन
सोच करि ऐसे ही पचत है ॥
देवता असुर सिद्ध पन्नग सकल लोक कीट पशु
पन्नी कहु कैसे के बचत है ।
राजा ही नचावे सब भूमि ही को राज्य लेव
औरउ नचावे जोई देह सरचत है ।
सुन्दर कहत काहु सन्तको कहो न जाइ मनके
नचाए सब जगत नचत है ॥

इन्द्रवज्र—चौताला

केतिक द्योस भए समुझावत मानत नाहीं बड़ो
मन भोंडू ।
भूलि रह्यो विषया सुखमें कछु और ना जानत है
शठ दौंड़ ॥
आंखि न कान न नाक विना शिर हाथ न पांव
नहीं सुख पोंड़ ।
सुन्दर ताही गहे कोउ क्यों करि निकसि ही
जाइ बड़ो मन लोंड़ ॥

२

दौरत है दशहूं दिशको शठ वाय लगी तबतें
भयो बेंड़ा ।
लाज न कान कछू नहिं राखत शील सुभावको
फोरत मेंड़ा ॥
लालच लागि गयो मन विखरौट डोलत है ज
अठारह पेंड़ा ।
सुन्दर सीख कहा कहि देइ भिदे नहिं वाण छिदे
नहिं गेंड़ा ॥

३

श्वान कहूं कि शृगाल कहूं कि विड़ाल कहूं
मनको मति तैसी ।
ठेठ कहूं किधौं डोम कहूं किधौं भांड़ कहूं कि
भण्डाइ दे जैसी ॥
चोर कहूं बटपार कहूं ठगतार कहूं उपमा
कहूं कैसी ।
सुन्दर और कहा कहिये अब या मनको गति
दीसत ऐसी ॥

४

के वेर तू मन रङ्क भयो शठ मांगत भीख दशो
दिश डूल्यो ।
के वेर तू मन छत्र धरो सिर कामिनि सङ्ग
हिंडोलनि झूल्यो ॥

के वेर तू मन चीण भयो अति के वेर तू सुख
पाइरु फूल्यो ।
सुन्दर के वेर तोहि कह्यो मन कौन गलो किहि
मारग भूल्यो ॥
५
इन्द्रिनिके सुख चाहत है मन लालच लागि
भरम शठ यौं हो ।
देखि मरीच भस्यो जल पूरण धावत है मृग
मूरख ज्यौं हो ॥
प्रेत पिशाच निशाचर डोलत भूख मरै नहि
धावत क्यौं हो ।
वायु वघूरनि कौन गहै कर सुन्दर दौरत है
मन त्यो हीं ॥
६
कौन स्वभाव परो हठि दौरत अमृत छाड़ि
चचोरत हाड़े ।
ज्यौं भ्रमको हथनी दृग देखत आतुर होइ
परै गज खाड़े ॥
सुन्दर तोहि सदा समुझावत एकहु सीख लगै
नहिं राड़े ।
वाद वृथा भटकै निशि वासर रे मन तू भ्रमको
किन छाड़े ॥
७
है सब की सिरमौर ततचण जो अभिअन्तर
ज्ञान विचारे ।
जो कछु और विषय सुख वाञ्छत तौ यह देह
अमौलिक हारे ॥
छाड़ि कुबुद्धि भजै भगवन्तहि आपु तरै पुनि
और हि तारे ।
सुन्दर तोहि कह्यो कितनो वेर तू मन क्यौं नहि
आपु संभारे ॥
८
जो मन नारीको ओर निहारत तौ मन होत है
ताही की रूपा ।

जो मन काहु सौं क्रोध करै जब क्रोध भये हो
जाइ तद्रूपा ॥
जो मन माया ही माया रटै नित तौ मन बूड़त
मायाके कूपा ।
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तौ मन होत है
ब्रह्मस्वरूपा ॥

मनहरनछन्द—चौताला

कबहुंक हंसि उठै कबहुंक रोइ देत कबहुं बकत
काहू अन्तहु न लहिये ।
कबहुंक खाय तो अघाय नहीं काहू करि कबहुं
कहै मेरे कछु नहिं चहिये ॥
कबहुं आकाश जाइ कबहुं पाताल जाइ सुन्दर
कहत ताहि कैसे कर गहिये ।
कबहुंक आइ लागी कबहुं उतरि भागी भूत
कैसे चिह्न करै ऐसो मन कहिये ॥
२
कबहुं तो पांखको परेवा कै देखावै मन कबहुंक
धूरिके चामर कर लेत है ।
कबहुं तो गोटिको उछारत आकाश ओर कबहुंक
राते पीरे रङ्ग श्याम सेत है ॥
कबहुं तौ आंब को उगाइ करि ठाढ़ो करै कबहुं तो
सीस धड़ जुदे कर देत है ।
बाजीगरको सो खेल सुन्दर करत मन सदाई
भ्रमत रहै ऐसो कोई प्रेत है ॥

हमीर—चौताला

कबहुंक शाह होत कबहुंक चोर होत कबहुंक
राजा होत कबहुंक रङ्क है ।
कबहुंक दीन होत कबहुं गुमानो होत कबहुंक
सूधो होत कबहुंक वङ्क है ॥
कबहुंक कामी होत कबहुंक यती होत कबहुंक
निर्मल होत कबहुंक पङ्क है ।
मनको स्वरूप ऐसो सुन्दर स्फटिक जैसो कबहुंक
सुर होत कबहुं मयङ्क है ॥

२

हाथी को सो कान कीधों पीपरको सो पात
कीधौं ध्वजा को उड़ान कहूं स्थिर न रहत है।
पानी को सो घेर कीधौं पौन उरझौर कीधौं चक्रको
सो फेर कोउ कैसेंकै गहत है॥
अरहट माल किधौं चरखा को ख्याल किधौं फेरी
खात बाल कछु सुध न लहत है।
धूम को सो धाव ता को राखिबे को चाव ऐसो
मन को स्वभाव सो तो सुन्दर कहत है॥

३

सुख मानै दुःख मानै सम्पत्ति विपत्ति मानै
हर्ष मानै शोक मानै मानै रङ्क धन है।
घटो मानै बढ़ो मानै शुभ रु अशुभ मानै लाभ मानै
हानि मानै याही तें कृपन है॥
पाप मानै पुण्य मानै उत्तम मध्यम मानै नीच मानै
उच्च मानि मेरो यह तन है।
स्वरग नरक मानै बन्ध मानै मोक्ष मानै सुन्दर
सकल मानै तातें नाम मन है॥

४

जोई जोई देखि कछू सोई सोई मन आहि
जोई जोई सुनै सोई मन ही को मर्म है।
जोई जोई सूंघै जोई खाय जो स्पर्श होइ जोई जोई
करै सोज मन ही को कर्म है॥
जोई जोई चहै जोई त्यागै जोई अनुरागै जहां जहां
जाइ सोई मन ही को भ्रम है।
जोई जोई कहै सोई सुन्दर सकल मन जोई जोई
कल्प सु मन ही को धर्म है॥

५

एक ही विटप विश्व ज्यों को त्यों ही देखियत
अति ही सघन ताके पत्र फल फूल है।
आगिले झकोरत पात नए नए होत जात ऐसे
याही तरु को अनादि काल मूल है॥
दश चारि लोक लौं जहां तहां पसरि रह्यो अब
पुनि ऊरध सूक्ष्म अरु स्थूल है।
कोउ तो कहत सत्य कोउ तो कहै असत्य सुन्दर
सकल मन ही को भ्रम भूल है॥

६

तो सो न कपूत कोउ कतहुं न देखियत तो सो न
सपूत कोउ देखियै न और है।
तू ही आप भूलि महा नीच हुते नीच होत तू ही
आप जाने तें सकल सिरमौर है॥
तू ही आप भ्रमै तब भ्रमत जगत देखे तेरे स्थिर
भए सब ठौर ही को ठौर है।
तू ही जीव रूप तू ही ब्रह्म है प्रकाशवन्त
सुन्दर कहत मन तेरो सब दौर है॥

७

मन हीके भ्रमतें जगत यह देखियत मनही को
भ्रम गये जगत विलात है।
मन हीके भ्रम जेवरी में उपजत सांप मनके विचारै
सांप जेवरी समात है॥
मन हीके भ्रमतें मरीचिका को जल कहै
मन हीके भ्रम सीप रूपो सो दिखात है।
सुन्दर सकल यह दीसै मन हीको भ्रम मन हीको
भ्रम गए ब्रह्म होइ जात है॥

८

मन ही जगत रूप होइ करि विस्तारै मन ही
अलख रूप जगत सों न्यारो है।
मन ही सकल घट व्यापक अखण्ड एक मन ही
सकल यह जगत पियारो है॥
मन ही प्रकाशवन्त हाथ न परत कछु मनके
न रूपरेख हव ही न वारो है।
सुन्दर कहत परमार्थ विचारै जब मन मिटि जाइ
एक ब्रह्म निज सारो है॥

चानकको अङ्ग
कायानट—चौताला

जोई जोई छूटबे को करत उपाय अज्ञ सोई सोई
दृढ़ करि बन्धन परत है।

योग यज्ञ जप तप तीर्थ व्रतादि और झंपा पातलेत
जाइ हिवारे गरत है ॥
कानउ फराइ पुनि केसउ लुचाइ अङ्ग विभूति
ज लगाइ शिर जटा ज धरत है।
विन ज्ञान पाए नहीं छूटे हृदयकी ग्रन्थि सुन्दर
कहत यों हो भ्रमकी मरत है ॥

२

जप तप करत धरत व्रत जत सत वन वचक्रम
भ्रम कष्ट सहत तन।
वलकल वसन असन फलपत्र जल कसत रसन
रस तजत वसत वन ॥
जरत मरत नर गरत परत सर कहत लहत
हयगण दल वन घन।
पचत पचत भवभय न टरत शठ घट घट
प्रकट रहत न लखत जन ॥

३

योग करे यज्ञ करे वेदविधि त्याग करे जप करे
तप करे यों हो आयु खूटि है।
यम करे नेम करे तीर्थ और व्रत करे पुहमी अटन
करे वृथा श्वास टूटि है ॥
जीवेको यतन करे मनमें व्यसन धरे पचि पचि
यों हो मरे काल सिर कूटि है।
और उ अनेक विधि कोटिक उपाय करे सुन्दर
कहत विन ज्ञान नहिं छूटि है ॥

४

बुधि कर हीन रज तम गुण छाड़ रह्यो वन वन
फिरत उदास होइ घरते।
कठिन तपस्या धरि मेघ शीत घाम सहे कन्दमूल
खाइ कोउ कामनाके डरते ॥
अति हो अज्ञानी और विविध उपाय करे निज रूप
भूलि करि बंधे जाइ परते।
सुन्दर कहत शठ ऊधों ओर देखे सुख हाथ माहिं
आरसो न फेरे मूढ़ करते ॥

५

मेघ सहे शीत सहे शीषपर घाम सहे कठिन
तपस्या करि कन्द मूल खात है।
योग करे यज्ञ करे तीर्थ और व्रत करे पुनि नानाविध
करे मनमें सिहात है ॥
और देवी देवता उपासना अनेक करे आवनिको
होंस कसे आक डोड़े जात है।
सुन्दर कहत एक रविके प्रकाश विना जुगनाको
ज्योति कहा रजनी विलात है ॥

नट—चौताला

कोऊ फिरे नांगे पाय कोऊ गुदरी बनाइ देहको
दशा दिखाइ आई लोक धूर्यो है।
कोऊ दूधाधारी होइ कोऊ फलाहारी तोय कोऊ
अधोमुख झूलि झूलि धूम घूट्यो है ॥
कोऊ नहीं खाइ नोन कोऊ मुख गहे मौन
सुन्दर कहत यों हो वृथा भुस कूट्यो है।
प्रभु सों न प्रीति माहि ज्ञानहु सों परचय नाहिं
देखो भाई आंधरेने ज्यों बजार लूट्यो है ॥

अड़ाना—चौताला

आसन मारि संवारि जटा नख उज्वल अङ्ग
विभूति चढ़ाई।
यह हमको कछु देइ दया करि घेरि रहे
सब लोग लुगाई ॥
कोउक उत्तम भोजन लावत कोउक लावत
पान मिठाई।
सुन्दर लेकरि जात भयो सब मूरख लोगनि यह
सिधि पाई ॥

२

ऊर्द्ध पाय अधोमुख ह्वै करि घूंटत धूमहि
देह झुलावे।
मेघ हु शीत हु घाम सहे सिर तीन हु काल
महादुःख पावे ॥
हाथ कछू न परे कबहूं कन मूर्खको कस
कूटि उड़ावे।

सुन्दर देखि विषय सुखको घर डूबत है अरु
झांझन गावै ॥

२

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि खेह लगाइके
देह संवारी ।
मेघ सह्यो अरु शीत सह्यो पुनि धूप समे
पञ्चागिन धारी ॥
भूख सहे रहे रूख तरे परि सुन्दरदास सहे
दुःख भारी ।
डासन छाड़ि के कांसन ऊपर आसन मारि पै
आश न मारी ॥

३

जो कोउ कष्ट करै बहु भांतिन जात अज्ञान
नहीं मन केरो ।
ज्यों तम पूरि रह्यो घर भीतर कैसे हु दूरि न
होइ अंधेरो ॥
लाठिनि मारिये ठेलि निकारिये और उपाय
करे बहुतेरो ।
सुन्दर शूरप्रकाश भयो तब तो कतहूं नहि
देखिये नेरो ॥

४

धार बह्यो स्वर्ग धार ह्यो जल धार सह्यो
गिरिधार गिरी है ।
भार रुंध्यो धन भारथ ह्व करि भार लह्यो
शिरभार परी है ॥
मार तप्यो वह्नि मार गयो यम मार दई
मन तो न मरी है ।
सार तज्यो षट् सार पढ़ो कहि सुन्दर कारज
कौन सरी है ॥

कायानट—चौताला

ज्यों कोउ कोस कह्यो नहिं मारग तेलकले
घरमें पशु जोये ।
ज्यों बनिया गयो बीस के तीसको बीसहु में
दमड़ नहिं होये ॥
ज्यों चौबे छबेको चल्यो पुनि होइ दुबे दो
गांठके खोये ।
तैसे हो सुन्दर और क्रिया सब राम विना
निश्चय नर रोये ॥

२

जो कोउ राम विना नर मूरख औरनके गुण
जोभ भनेगो ।
आन क्रिया गढ़ते गढ़वा पुनि होत है भेरि
कछू न बनेगो ॥
ज्यों हथ फेर दिखावत चावर अन्त तो धूरि की
धूरि बनेगो ।
सुन्दर भूल भई अतिशय करि सूतको मैंस
पड़ाइ जनेगो ॥

३

होइ उदास विचार विना नर गेह तजो वन
जाइ रह्यो है ।
अम्बर छाड़ि बघम्बर ले करि कै तप कानन
कष्ट सह्यो है ॥
आसन मारि सवासन ह्वै सुख मौन गह्यो
मन तो न गह्यो है ।
सुन्दर कौन कुबुद्धि लगी कहि या भवसागर
माहिं वह्यो है ॥

४

भेष धरो पर भेद न जानत भेद लहे बिनु
खेदहि चै है ।
भूख हि मारत नींद निवारत अन्न त्यजे फल
पत्रनि खै है ॥
और उपाय अनेक करे पुनि ताहि तें हाथ
कछु नहिं ऐ है ।
या नरदेह वृथा शठ खोवत सुन्दर राम विना
पछिते है ॥

५

आपने आपने थान मुकाम सराहनको सब
बात भली है ।

यज्ञ व्रतादिक तीरथ दान पुराण कथा जु
अनेक चली है ॥
कोटिक और उपाय जहां लगि ते सुनिके
नर बुद्धि छली है।
सुन्दर ज्ञान विना न कहूं सुख भूलनिकी बहु
भांति गली है ॥

६

कोउक चाहत पुत्र धनादिक कोउक चाहत
बांझ जनायो।
कोउक चाहत धातु रसायन कोउक चाहत
पारद खायो ॥
कोउक चाहत यन्त्रनि मन्त्रनि कोउक चाहत
रोग गमायो।
सुन्दर राम विना सबही भ्रम देखहु या जगको
डहकायो ॥

७

कोउ भया पय पान करे नित कोउक खात है
अन्न अलौना।
कोउक कष्ट करे निशि वासर कोउक बैठि
के साधत पौना ॥
कोउक वाद विवाद करे नित कोउक धारि
रहे सुख मौना।
सुन्दर एक अज्ञान गए बिनु सिद्ध भयो नहिं
दीसत कौना ॥

८

कोउक अङ्ग विभूति लगावत कोउक होत
निराट दिगम्बर।
कोउक खेत कषाइक बोवत कोउक काथ रङ्गे
बहु अम्बर ॥
कोउक बलकल सीस जटा नख कोउक ओढ़त है
जु बघम्बर।
सुन्दर एक अज्ञान गए बिनु ए सब दीसत
आहि अडम्बर ॥

९

आप होके घट में प्रकट परमेश्वर है ताहि छाड़ि
भूले नर दूर दूर जात है।
कोई दौरे द्वारकाको कोई काशी जगन्नाथ
कोई दौर मथुरा को हरिद्वार न्हात है ॥
कोई दौरे बदरी को विषम पहाड़ चढ़े कोई
तो केदार जाइ मन में सिहात है।
सुन्दर कहत गुरुदेव देंहि दिव्य नयन दूरो होके
दूरि में जु निकट दिखात है ॥

वागेश्वरी—चौताला

कोउक जात प्रयाग बनारस कोऊ गया
जगन्नाथ हि धावे।
कोऊ मथुरा बदरी हरिद्वार सु कोऊ भया
कुरुक्षेत्र हि न्हावे ॥
कोउक पुष्कर ह्वै पंच तीर्थ दौर ई दौर के
द्वारका आवे।
सुन्दर वित्त गड्यो घर माहि सु बाहिर ढूंढ़त क्यों
करि पावे ॥

२

आगे कछू नहिं हाथ परो पुनि पोछे बिगारि
गए निज भौना।
ज्यों कोउ कामिनि कान्त हि मारि चली सङ्ग
और हिं देखि सलोना ॥
कोऊ गयो तजि के ततकाल कहे न बने जु रहो
सुख मौना।
तैसे हो सुन्दर ज्ञान विना सब छाड़ि भए नर
भांड़के दोना ॥

३

काहे को तू नर भेष बनावत काहे को तू दश ह्वै
दिशि डूले।
काहे को तू नर कष्ट करे अति काहे को तू
सुखतें कश्चि फूले ॥

काहे को और उपाय करे अब आन क्रिया कर
के मति भूले।
सुन्दर एक भजै भगवन्त हि तौ सुखसागर में
नित भूले ॥

विपरीतज्ञानको अङ्ग—मनोहरछन्द

बागेश्वरी—चौताला

एक ब्रह्म मुख सों बनाइ करि कहत है अन्त
करत तौ विकारनसो भरो है।
जैसे ठग गोबर सों कूपा भरि राखत है सेर पांच
घृत लेके उपर ज्यों करो है ॥
जैसे कोउ भांड़े माहिं प्याज को छिपाइ राखे
चौथरा कपूरको ले मुख बांधि धरो है।
सुन्दर कहत ऐसे ज्ञानो है जगत माहिं तिन को
तो देखि करि मेरो मन डरो है ॥

२

देह सो ममत्व पुनि गेह सो ममत्व सुत दार सो
ममत्व मन माया में रहत है।
थिरता न लहै जैसे कन्दुक चौगान माहिं कर्मनिके
वश परो धक्का को वहत है ॥
अन्तःकरण सु तो जगत सो रचित तेरो सुख सो
बनाय बात ब्रह्मको कहत है।
सुन्दर अधिक मोहि याहो तै अचमृभा आहि भूमि
पर परो कोउ चन्द को गहत है ॥

३

मुख सो कहत ज्ञान भ्रम मन इन्द्रिय प्राण मारगके
जल में न प्रतिविम्ब लहिये।
गांठ में न पैसा कोउ भयो रहै साहूकार बातनि
हो मुहर रुपैया गनि गहिये ॥
सुपने में पञ्चामृत जोमि कै तू पूत भयो जागी तैं
परम भूख खाइबे का चहियै।
सुन्दर सुभट जैसे कायर मारत गाल राजा भोज
सम कहा गांगू तेली कहिये ॥

४

संसारके सुख निशों आसक्त अनेक विधि इन्द्रिय
उ लोलुप मनका बहुत गरो है।
कहत है ऐसे मैं तो एक ब्रह्म जानत हों ताही तें
छोड़ि शुभकर्मनि को ररो है ॥
ब्रह्मको न प्राप्ति पुनि कर्म सब छूटि गए दुहुन
तें भ्रष्ट होइ अध बोच बरो है।
सुन्दर कहत ताहि त्यागिये श्वपच जैसे याही
भांति ग्रन्थन वसिष्ठ जु करो है ॥

५

ज्ञान कोसो बात कहे मन तो मलिन रहे वासना
अनेक भरो नेक न निवार है।
जैसे कोऊ आभूषण अधिक बनाय राखे कलई
ऊपर करि भीतर भङ्गार है ॥
ज्योंहो मन आवे त्योंहो खेलत निशङ्क होइ ज्ञान
सुनि शीर्ष लयो ग्रन्थन विचार है।
सुन्दर कहत वाके अटक न कोऊ आहि जाई
वाको मिलो आय ताहीको बिगार है ॥

६

हंस श्वेत बक श्वेत देखिये समान दोऊ हंस मोती
चुगै बक मछरो को खात है।
पिक अरु काक दोऊ कैसे करि जाने जाय
पिक अम्ब डार काक करं कहि जात है ॥
सिन्धो अरु स्फटिक पाषाण सम देखिये वह तो
कठोर वह तो जलमें समात है।
सुन्दर कहत ज्ञानो बाहर भीतर शुद्ध ताको पटतर
और बातनको बात है ॥

वचनविवेकको अङ्ग—मनोहरछन्द

केदारा—चौताला

जाके घर ताजो तुरकोनि को तबेलो बंधो ताके
आगे फेरि टट्वा नखाइये।
जाके खासा मलमल सिरो साफ़ ढेर परे ताके
आगे आनि करि चोसई रखाइये ॥

जाको पञ्चामृत खात खात सब दिन बीते
सुन्दर कहत ताहि रावरी चखाइये।
चतुर प्रवीण आगे मूर्ख उच्चार करे सूरजके आगे
जैसे जैंगना दिखाइये ॥

२

एक वाणी रूपवन्त भूषण वसन अङ्ग अधिक
विराजमान कहियत ऐसी है।
एक वाणी फाटे टूटे अम्बर उढ़ाए आनि ताहु
माहि विपरीत शुनियत तैसी है ॥
एक वाणी मृत कहि बहुत शृङ्गार कियो लोगन
को नीको लगे सन्तनको वैसी है।
सुन्दर कहत वाणी दू विधि जगत माहि जाने
कोउ चतुर प्रवीण जाको जैसी है ॥

३

राजाको कुंवर जो सुरूप के कुरूप होइ ताको
तसलीम करि गोद ले खिलाइये।
और काहु रैयत के सुरूप होइ शोभनीक ताहु
को तो देखि करि निकट बुलाइये ॥
काहुको कुरूप कारो कूबरो है अङ्गहीन वाको
और देखि देखि माथइ हलाइये।
सुन्दर कहत वाके वाप ही को प्यारो होइ यौंही
जानि वाणी को विवेक ऐसे पाइये ॥

४

बोलिए तो तब जब बोलिवेको सुधि होइ न तो
मुख मौन करि चुप होइ रहिये।
जोरिये उ तब जब जोरिवोउ जानि परे तुकछन्द
अरनूपताका में लहिये ॥
गाइये उ तब जब गाइवे को कण्ठ होइ श्रवणके
सुनतही मन जाइ गहिये।
तुक भङ्ग छन्द भङ्ग अर्थहु मिले न कोउ सुन्दर
कहत ऐसी वाणी नहीं कहिये ॥

५

एकनकी वचन सुनत अति सुख होइ फूलसे
भरत हैं अधिक मन भावने।
एकनके वचन असम मानो वरषत श्रवणके सुनत
लगत अनखावने ॥
एकनकी वचन कण्टक कटुक विषरूप करत
मरम छेद दुःख उपजावने।
सुन्दर कहत घट घट में वचन भेद उत्तम मध्यम
अरु अधम सुनावने ॥

६

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं
तिनके तो बचन सुहात कहि कोन को।
कोकिला उ सारी पुनि सुआ जब बोलत है
सब कोऊ कान दे सुनत रव रौन को ॥
ताही तें सुवचन विवेक करि बोलियत यौंही
आकवाक कहि तोरिये न पौन को।
सुन्दर समुझि कें वचन को उचार करें नाहि
तो चुप ह्वै पकरि बैठ मौन को ॥

७

प्रथम सो हिये विचार ढोल सो न दीजे डार
ताही तें सुवचन सम्हारि करि बोलिये।
जाने न कुहेत हेत भावे तैसो कहि देत कहिये
ता तब जब मन मानि तोलिये ॥
सबही को लागे दुःख कोउ नहि पावे सुख बोलि
के वृथाही तातें छातो नहीं छोलिये।
सुन्दर समुझि करि कहिये सरस बात तबही तो
वदन कपाट गहि खोलिये ॥

८

और ता वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे
तिनके तो बोलिवे में ढङ्गहु न एक है।
कोउ रात दिवस वकतही रहत ऐसे जैसो
विधि कूप में वकत मानो भेक है ॥
विविधि प्रकार करि बोलत जगत सब घट घट
मुख मुख वचन अनेक है।
सुन्दर कहत तातें वचन विचारि लेहु वचन तो
वहै जामें पाइये विवेक है ॥

बिहाग—चौताला

जैसे हंस नीर को त्यजत है असार जानि
सार जानि छीरको निरालो करि पीजिये।
जैसे दधि मथत मथत घृत काढ़ि लेत और रहो
मह्यो सब छाड़ि छाड़ दीजिये॥
जैसे मधु मच्छिका सुवास को भ्रमर लेत तैसे ही
विचार करि भिन्न भिन्न कीजिये।
सुन्दर कहत ताते वचन अनेक भांति वचन
में वचन विवेक करि लीजिये॥

२

प्रथम ही गुरुदेव मुखते उचार कह्यो वेद तो
वचन आय लगे निज हिये हैं।
तिनको विवेक करि अन्त:करण माहि अति ही
अमोल नग भिन्न भिन्न किये हैं॥
आप को दरिद्र गयो पर उपकार हेत नगहि
नीगल करि उगलि नग दिये हैं।
सुन्दर कहत यह वाणी यों प्रकट भई और कोऊ
सुनि कर रङ्क जीव जिये हैं॥

३

वचन ते दूरि मिले वचन विरुद्ध होय वचनं तें
राग बढ़े वचन ते दोख जू।
वचन ते ज्वाला उठे वचन ते शीतल होइ वचन तें
मुदित सुख वचनही तें सोख जू॥
वचन तें प्यारो लगे वचन ते दूर भगे वचन तें
मुरिझाइ वचन तें पोख जू।
सुन्दर कहत यह वचन ही को भेद ऐसो वचन तें
बन्ध होत वचन तें मोख जू॥

४

वचन तें गुरुशिष्य बापपूत प्यारे होत वचन तें
बहुविध होत उत्पात हैं।
वचन ते नारी अरु पुरुष सनेह अति वचन तें
दोऊ आप आप में रिसात हैं॥
वचन ते सब आइ राजाके हजूर होहि वचन तें
चाकरउ छोड़ि के परात हैं।
सुन्दर सुवचन सुनत अति सुख होइ कुवचन
सुनत ही प्रीति घट जात हैं॥

५

एक तो वचन सुनि कर्महो में बद्धि जाहि करत
बहुत विधि स्वर्गको उमेद है।
एक है वचन दृढ़ ईश्वर उपासना में तिन में तो
सकल ही वासनाको छेद है॥
एक है वचन ता में एक ही अखण्ड ब्रह्म सुन्दर
कहत यौ बतायो अन्त वेद है।
वचन अनेक ही प्रकार सब देखियत वचन विवेक
किये वचन में भेद है॥

सोरठ—चौताला

वचन ते योग करै वचन ते यज्ञ करै वचन ते तप
करि देह को दहत है।
वचन तें वन्दन करत है अनेक विधि वचन तें
त्याग करि वनमें रहत है॥
वचन ते उरझे अरु सुरझे वचन ही तें वचन ते
भांति भांति सङ्कट सहत है।
वचन ते जीव भयो वचन ते ब्रह्म होत सुन्दर वचन
भेद वेद यों कहत है॥

निर्गुण उपासना अङ्ग—इन्द्रवज्रछन्द

सोरठ—चौताला

ब्रह्मा कुलाल रचे बहु भाजन कर्मनिके वश
मोहन भावे।
विष्णुहु सङ्कट आइ सहे गर्भ काहु को रक्षक
काहु सतावे॥
शङ्कर भूत पिशाचनिके बहु पानि कपाल
लिए बिललावे।
याही तें सुन्दर तिरगुण त्यागि सुनिर्मल एक
निरञ्जन ध्यावे॥

१

कोटिक बात बनाइ कहै कहा होत भया सबही
मन रञ्जन।

शास्त्रसमूह अरु वेद पुराण वखानत है अतिशय
लुक अञ्जन ॥
पानी में बूड़त पानी गहे कत पार पहुंचत है
मति भञ्जन ।
सुन्दर तौ लगि आंधे को जेवरी जौ लों न
धावत एक निरञ्जन ॥

३

मञ्जन सो जु मनोमल मञ्जन सज्जन सो जु
कहे गति गूझै ।
गञ्जन सो इन्द्रियगण गञ्जन रञ्जन सो
जु बुझावै अबूझै ॥
भञ्जन सो जु भञ्यो रसमाहि जु विह्वजन सो
कतहू न अरूझै ।
व्यञ्जन सो जु बढ़े रुचि सुन्दर अञ्जन सो जु
निरञ्जन सूझै ॥

४

जो प्रभु सौं उत्पत्ति भई यह सो प्रभु है उर
इष्ट हमारे ।
जो प्रभु है सबके सिर ऊपर ता प्रभुकों हम हू
सिर धारे ॥
रूप न रेख अलेख अखण्डित भिन्न रहे सब
कारज सारे ।
नाम निरञ्जन है तिन को पुनि सुन्दर ता प्रभुकी
बलिहारे ॥

५

जो उपजै विनसै गुण धारत सो सब जानहु
अञ्जन माया ।
आवै न जाइ मरै नहि जीवत अच्युत एक
निरञ्जन राया ॥
ज्यों तरुतत्त्व रहे रस एक हो आवत जात फिरे
सब छाया ।
सो परब्रह्म सदा शिर ऊपर सुन्दर ता प्रभु सों
मन लाया ॥

खम्माच—चौताला

जो उपजो कछु आहि जहां लगि सो सब नाश
निरन्तर होई ।
रूप धस्यो सुर हेतु हि निहवल तोनहुं लोक गणे
कहा कोई ॥
राजस तामस सात्त्विक जे गुण देखत कालग्रसे
पुनि वोई ।
आपु हिं एक रहे जु निरञ्जन सुन्दरके मन
मानत सोई ॥

२

देवनके शिर देव विराजत ईश्वरके शिर ईश्वर
कहिये ।
लालनके शिर लाल निरन्तर खूबनिके शिर खूब
सुलहिये ॥
पाकनिके शिर पाक शिरोमणि देखि विचारि
वहै दृढ़ गहिये ।
सुन्दर एक सदा शिर ऊपर और कछू हम
कौ नहि चहिये ॥

३

शेष महेश गणेश जहां लगि विष्णु विरिञ्चि हुके
शिर स्वामी ।
व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनावृत बाहिर भीतर
अन्तःयामी ॥
वोर न छोर अनन्त कहे गुण याही तें सुन्दर है
घन नामी ।
ऐसो प्रभु जिनके शिर ऊपर क्यों परि है तिनको
कहि खामी ॥

पतिव्रताको अङ्ग—इन्दवचछन्द

खम्माच—चौताला

आनको ओर निहारत हो जैसे जात पतिव्रत
एक व्रतीको ।
होत अनादर ऐसो हो भांति जु पीछे फिरे पुनि
सूर सतीको ॥

नैक हो में हरवो ह्वै जात खिसै अर्धविन्दु जु
योगी यतीको ।
राम हृदै तें गए जन सुन्दर एक रती विनु
एक रतीको ॥

२

जो हरिकों त्यजि आन उपासत सो मतिमन्द
फज़ीहत होई ।
जो अपने भरतारहिं छोड़ि भई व्यभिचारनि
कामिनी कोई ॥
सुन्दर ताहि न आदर मान फिरै विमुखो आपनि
पति खोई ।
डूबि मरै किन कूप मंझार कहा जग जीवत है
शठ सोई ॥

३

एक सही सबके उर अन्तर ता प्रभुकों कहि
काहि न गावैं ।
सङ्कट माहि सहाव करै पुनि सो अपनो पति क्यों
विसरावैं ॥
चारि पदारथ और जहां लगि आठहुं सिद्धि
नवों निधि पावैं ।
सुन्दर छार पद्यो तिनके मुख जो हरि कों त्यजि
आनहि धावैं ॥

४

पूरणकाम सदा सुखधाम निरञ्जन राम है
सर्जन हारो ।
सेवक होइ रह्यो सबको नित कुञ्जर कीटहिं
देत अहारो ॥
भञ्जन दुःख दरिद्र निवारण चिन्त करै नित
सांझ सवारो ।
ऐसे प्रभू त्यजि आन उपासत सुन्दर ह्वै
तिनको मुख कारो ॥

५

होइ अनन्य भजै भगवन्त हि और कछू उर में
नहि राखे ।
देवी औ देव जहां लगि हैं डर कें तिन सों कहुं
दीन न भाषे ॥
योगहु यज्ञ व्रतादि क्रिया तिन कों नहि तो
सुपने अभिलाषे ।
सुन्दर अमृत पान कियो तब कहिये कौन
हलाहल चाखे ॥

मनोहरछन्द—चौताला

काहेकों फिरत नर भटकत ठौर ठौर डागरको
ढोर देवी देव सब जानिये ।
योग यज्ञ जप तप तीर्थ व्रतादि दान तिनहु को
फल सोउ मिथ्याई वखानिये ॥
सकल उपाय तजि एक राम नाम भजि याहि
उपदेश सुनि हृदै माहि आनिये ।
ताहिते समुझि करि सुन्दर विश्वास धरि
और कोउ कहै कछु ताको नहि मानिये ॥

२

पति ही सो प्रेम होइ पति ही सो नेम होइ
पति ही सो चेम होइ पति ही सो रति है ।
पति ही है यज्ञ योग पति ही है रसभोग
पति ही है जपतप पतिही को यति है ॥
पति ही है ज्ञान ध्यान पति ही है पुण्यदान
पति ही है तीर्थ स्नान पति ही के मति है ।
पति विन पति नाहि पति विन गति नाहि
सुन्दर सकल निधि एक पतिव्रति है ॥

३

जलको सनेही मीन विछुरत तजै प्राण मणि विना
अहि जैसे जीव नहीं लहिये ।
स्वाति वुन्दके सनेही प्रकट जगत माहि
एक सीप दुसरो सु चातक उ कहिये ॥
रवि को सनेही पुनि कमल सरोवर में शशि को
सनेही उ चकोर जैसे रहिये ।
तैसे ही सुन्दर एक प्रभु सों सनेह करि और कछू
देखि काहु ओर नहि वहिये ॥

अङ्गविरह उराहनेको अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

पीवको अन्देसो भारी तो सों कहों सुनि प्यारी
तोरि गए सो तो अजहुं न आये हैं।
मेरे तो जीवन प्राण निशि दिन वहै ध्यान सुख सों
न कहुं आन नयन झरलाये हैं॥
जबतें गये बिछोह कल न परत मोहि तातें हूं
पूछत तोहि किन बिरमाये हैं।
सुन्दर बिरहनीके सोच सखी बार बार हमको
बिसारि अब कौनके कहाये हैं॥

२

हम कौं तो रन दिन शङ्का मन माहि रहै उन
की तो बात निसिं ठीक हू न पाइये।
कबहूं सन्देशो सुनि अधिक उछाह होइ कबहुंक
रोइ रोइ आंसुन बहाइये॥
औरनके रस वश होइ रहै प्यारे लाल आवनकी
कहि कहि हम को सुनाइये।
सुन्दर कहत ताहि काटिये जु कौन भांति जौन
रुख आपनेइ हाथ सो लगाइये॥

३

मो सौं कहै और सो ही वासौं कहै और सो ही
जासो कहै ताही के प्रतीति कैसे होत है।
काहूकी समास करे काहूको उदास फिरे काहूके
तौं रस वश एकमें कपोत है॥
दगाबाजी द्विविधा तो मनकी न दूरि होइ
काहूके अंधेरो घर काहूके उदोत है।
सुन्दर कहत जाके पीर सो करे पुकार जाको
दुःख दूरि गयो ताके सई वीत है॥

४

हिये और जिये और लिये और दिये और किये
और कौनउ अनूप पाटी पढ़े है।
मुख और बैन और नयन और सैन और तन और
मन और यन्त्र माहि कढ़े है॥
हाथ और पांव और सीसहु श्रवण और नख
शिख रोम रोम कलइ सों मढ़े है।
ऐसो तो कठोरता सुनी न देखी जगत में सुन्दर
कहत काहू वज्रहीके चढ़े है॥

५

भई हों अति बावरी विरह घेरो चावरी चलत हूं
हां बावरी परोंगी जाइ बावरी।
फिरति हों उतावरी लगत नहीं ताव री सुवाहीको
बतावरी चलो है जात तावरी॥
थके हैं दोउ पावरी चढ़त नहीं पावरी
पियारो नहीं पावरी जहर बांटि प्यावरी।
दौरत नहीं नावरी पुकारिके सुनावरी सुन्दर
कोउ नावरी बूड़त राखे नावरी॥

शब्दसारको अङ्ग

जयजयवन्ती—चौताला

भूल्यो फिरे भ्रम तें करत कछु और और करत
न ताप दूरि करत सन्ताप कौं।
दक्ष भयो रहै पुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत
परदच्छिणा न दक्षणा दे आप कौं॥
सुन्दर कहत ऐसे जाने न युकति कछु और आप
जपे न जपत निज जाप कौं।
बालक यों युवा भयो वय वीते वृद्ध भयो वपुरूप
होइ के बिसरि गयो बाप कौं॥

इन्द्रवज्रछन्द—चौताला

पान उहै जु पियूष पिवे नित दान उहै जु
दरिद्र हि भाने।
कर्ण उहै सुनिये यश केशव मान उहै करिये
मन माने॥
तान उहै सुरताल रिझावत ज्ञान उहै
जगदीश हि जाने।
बाण उहै मन वेधत सुन्दर ज्ञान उहै उपजे न
अज्ञाने॥

२

शूर उहै मनको वश राखत क्रूर उहै रन
माझ लजी है।
त्याग उहै अनुराग नहीं कहूं मार्ग उहै
मन मोह तजी है॥
प्रज्ञ उहै निज तत्त्व हि जानत यज्ञ उहै
जगदीश यजी है।
रक्त उहै हरि सौं रति सुन्दर भक्त उहै
भगवन्त भजी है॥

३

चाप उहै कसिये रिपु ऊपर दाप उहै
ललकार हि मारे।
छाप उहै हरि छाप दई शिर थाप उहै थप
और न धारे॥
जाप उहै जपिये अजपा नित आप उहै
निज आप विचारे।
बाप उहै सब को प्रभु सुन्दर पाप हरे
अरु ताप निवारे॥

४

भौन उहै भय नाहि न जा महि गौन उहै
फिर होइ न गौना।
बौन उहै वमिये विषया रस रौन उहै प्रभु सो
नहि रौना॥
मौन उहै जु लिए हरि बोलत लौन उहै
सब ओर अलौना।
सौन उहै गुरु सन्त मिले जब सुन्दर शङ्क रहै
नहिं कौना॥

५

कार उहै अविकार रहे नित सार उहै जो असार
हि नाखे।
नाद उहै सुनिके मनरञ्जन ज्ञान उहै जो सत्य
हि राखे॥
प्रीति उहै जु प्रतीति धरे उर नीति उहै जु
अनीति न भाखे।
तन्तु उहै लगि अन्त न टूटत स्वाद उहै रस
सुन्दर चाखे॥

६

श्वास उहै जु उसास न छोड़त नाश उहै फिर
होइ न नासा।
पाश उहै शत पाश लगी यम पाश कटे
प्रभुके नित वासा॥
वास उहै गृहवास तजी वनवास नहीं जिहि
ठाहर वासा।
दास उहै जू उदास रहे हरिदास सदा कहि
सुन्दर दासा॥

७

श्रोत्र उहै श्रुतिसार सुने नित नैन उहै निज
रूप निहारे।
नाक उहै हरि नाक हि राखत जीभ उहै
जगदीश उचारे॥
हाथ उहै करिये हरिको क्रत पांव उहै
हरिको पथ धारे।
शीर्ष उहै करि श्याम समरपण सुन्दर यौं सब
कारज सारे॥

८

सोवत सोवत सोइ गयो सब रोवत रोवत
के वेर रोयो।
गोवत गोवत गोइ धर्‍यो धन खोवत खोवत
तैं सब खोयो॥
जोवत जोवत वीत गये दिन बोवत बोवत ले
विष बोयो।
सुन्दर सुन्दर राम भजो नहि ढोवत ढोवत
बोझ हिं ढोयो॥

९

देखत देखत देखत मारग बूझत बूझत
बूझत आयो।
सूझत सूझत सूझ परो सब गावत गावत
गोविन्द गायो॥

सोधत सोधत शुद्ध भयो पुनि तावत तावत
कञ्चन तायो।
जागत जागत जाग पर्यो जब सुन्दर सुन्दर
सुन्दर पायो॥

शूरतनको अङ्ग

बहरी—चौताला

सुनत नकारे चोट विकसे कमल मुख अधिक
फूल्यो माइ इन तन में।
फेरे जब सांगो तब कोउ नहि धीर धरे कायर
कम्पायमान होन देखि मन में॥
टूटि के पतंग जैसे परत पावक माहि ऐसे
टूटि परे बहु सांवतके गन में।
मारि घमसान करि सुन्दर जुहारे स्वामी सोई
शूर वीर रोपि रहे जोइ रन में॥

२

हाथ में गह्यो है खङ्ग मारिवे कौं एक पग तनमन
आप नो समरपण कीनो है।
आगे करि मीचकौं परो है जाके रण बीच
ढूकि टूकि होइ के भगाय रन दीनो है॥
खाइ लौन स्वामी को हरामखोर कैसे होइ
नामजाद जगत में जीत्यो पन तीनो है।
सुन्दर कहत ऐसो कोउ एक शूरवीर शत्रिको
उतारि कैं सुयश जाइ लीनो है॥

३

पांव रोपि रहे रण माहि रजपूत कोउ हय गज
गाजत जुरत जहां दल है।
बाजत जुझाऊ सहनाई सीध राग पुनि सुनत ही
कायरको छूटि जात कल है॥
झलकत बरछी तरछी तरवार वहे मार मार
करत परत खलभल है।
ऐसे युद्ध में अड़िग सुन्दर सुभट सोई घर माहि
सूरमा कहावत सकल है॥

४

अशन वसन बहु भूषण सकल अङ्ग सम्पत्ति
विविध भांति भरो सब घर है।
श्रवण नकारो सुनि छिनक में छोड़ि जात ऐसे
नहिं जानि कछु आगे मोहि मर है॥
मन में उछाह रण मांहि टुक टुक होइ निरभय
निशङ्क वाके नेकहु न डर है।
सुन्दर कहत कहूं देह को ममत्व नाहि सूरवांके
देखियत शीर्ष विनु धर है॥

५

जुझवे को चाव जाकों ताकि ताकि करे घाव
आगे धरि पांव फिरि पीछे न संभारि है।
हाथ लिये हथियार तीक्षण लागायो धार वार
नहिं लागी सब पिशुन प्रहारि है॥
चोट नहिं राखे कछु लोट पोट होइ जात चोट
नहिं चूके सीस रिपु को उतारि है।
सुन्दर कहत ताहि नेकहु न सोच पोच ऐसो
शूरवीर धीर भीर जाइ मारि है॥

६

अधिक आजानुवाहु मन में उछाह किये दियो
गजराज सुख वर्षत नूर है।
काढ़े जब करवाल बाल ठाढ़े होइ तब अति
विकराल पुनि देखत करूर है॥
नेक न उसास लेत फौज को फटाय देत खेत नहिं
छाड़े मारि करे चकचूर है।
सुन्दर कहत ताको कीरति प्रसिद्ध होइ सोई
शूरवीर धीर स्वामिकी हजूर है॥

सिन्धु—चौताला

ज्ञानको कवच अङ्ग काहू सो न होइ भङ्ग टोप
शीर्ष झलकत परम विवेक है।
छोके ताजो असवार लियो शमशेर सार
आगे ही को पांव धरे भागने को टेक है॥

छूटत वन्धक बाण वोतै जहां घमसान देखि कै
　　पिशुन दल मारत अनेक है।
सुन्दर सकल लोक माहि ता का जेजेकार ऐसो
　　शूरवीर कोउ कोटिन में एक है॥

२

शूरवीर रिपु की नमूनी देखि चोट करै मारै
　　तब ताकि ताकि तरवार तीर सो।
साधु आठो याम बैठो मनहो सौ युद्ध करै जाकै
　　मुंह माथो नाहीं देखिये शरीर सो॥
शूरवीर भूमि पर दौरि करै दूरि लगै साधुनिको
　　पकरि राखे धरि धीर धी।
सुन्दर कहत तहां काहू को न पांव टिकै साधुका
　　संग्राम है अधिक शूरवीर सौ॥

३

खेंच कर डोकमान ज्ञान कै लगायो वाण मारै
　　महाबलो मन जगत जिन रानो है।
ताके अगवानो पञ्च योद्धा उ कतल किये
　　और रह्यो सह्यो सब अरिदल मानो है॥
ऐसो कोउ सुभट जगत में न देखियत जाकै आगे
　　काल हू कंपाय कै पराहनो है।
नोति ब्रह्मवादको चलावत है आठो याम
　　सुन्दर कहत भक्त शूर जग जामो है॥

४

काम सो प्रबल महा जोतै जिन तीनो लोक
　　सो तो एक साधुकै विचार आगै हारो है।
क्रोध सो कराल जाके देखत न धारे धोर सो
　　उ साधु चमा के हथियारसों विदारो है॥
लोभ सो सुभट साधु तोष सो गिराय दियो मोह
　　सेनापति साधु ज्ञान सों प्रहारो है।
सुन्दर कहत ऐसो साधु कोउ शूरवीर ताकि
　　ताकि सबहो रिपुन दल मारो है॥

५

मारे काम क्रोध जिन लोभ मोह पीस डारे
　　इन्द्रिय कतल करि कियो रजपूतो है।
मारो मदमत्त मन मारो अहङ्कार मीर मारे
　　मद मत्सरउ ऐसो रण रूतो है॥
मारो आशा तृष्णा जिन यापनी सापनी दोउ
　　सबकों प्रहार निजपदई पहुतो है।
सुन्दर कहत ऐसो साधु कोउ शूरवीर वैरो सब
　　मारिकै निचिन्त होइ सूतो है॥

वसन्त—चौताला

किये जिन मन हाथ इन्द्रिन को सब साथ घेरि घेरि
　　आपने हू नाथ सों लगाये हैं।
औरउ अनेक वैरो मारे सब युद्ध करि काम क्रोध
　　लोभ मोह खोदकै बहाये हैं॥
किये हैं संग्राम जिन दिये हैं भगाय दल ऐसे
　　महा सुभट जे ग्रन्थनि में गाये हैं।
सुन्दर कहत और शूर यौंहो खपि गये साधु
　　शूरवीर वेद जगत में आये हैं॥

२

महामत्त हाथो मन राखो है पकरि जिन
　　अति हो प्रचण्ड जामें बहुत गुमान है।
काम क्रोध लोभ मोह बांधे चारो पांव पुनि
　　छूटनै न पावै नेक प्राण फीलवान है॥
कबहुं तो करै ज़ोर सावधान सांझ भोर
　　सदा एक हाथ में अङ्कुस गुरुज्ञान है।
सुन्दर कहत और काहूके न वश होइ ऐसो कौन
　　शूरवीर साधुके समान है॥

साधुको अङ्ग

बहार—तिताला

प्रीति प्रचण्ड लगै परब्रह्महि और सबै कछु
　　लागत फीको।
शुद्ध हृदय मति होइ सुनिर्मल द्वैतप्रभाव
　　मिटै सब जीको॥
गोष्ठोज्ञान अनन्त चलै जहां सुन्दर जैसे
　　प्रवाह नदो को।

ताहि तो जानि करी निशिवासर साधुको सङ्ग
सदा अति नीको ॥

२

जो कोउ जाइ मिले उनसो नर होत
पवित्र लगे हरिरङ्गा ।
द्वैत कलङ्क सबै मिट जात जु नीचई जाय
के होत उतङ्गा ॥
ज्यों जल और मलीन महो अति गङ्ग मिले होइ
जात है गङ्गा ।
सुन्दर शुद्ध करै ततकाल सो है जग माहि
बड़ो सतसङ्गा ॥

बहार—यत

ज्यौ लट भङ्ग करै अपने सम ता सन भिन्न कहे
नहि कोई ।
ज्यौ द्रुम और अनेक हि भांतिन चन्दनके
ढिग चन्दन होई ॥
ज्यौ जल क्षुद्र मिले जब गङ्गहि होत पवित्र
वहै जल सोई ।
सुन्दर जाति स्वभाव मिटे सब साधुके सङ्ग ते
साधु हि होई ॥

बहार—चौताला

जो कोउ आवत है उनके ढिग ताहि सुनावत
शब्द सन्देसा ।
ताहि के तैसो हो औषधि खावत जाहि के
रोग हिं जानत जैसो ॥
कर्म कलंक हो काटत है सब शुद्ध करै पुनि
काञ्चन तैसो ।
सुन्दर वस्तु विचारत हैं नित सन्तन को जु
प्रभाव है एसो ॥

२

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित सन्त
समागम कीजे ।
अन्तर मेटि निरन्तर ह्वै करि ले उनको
अपनो मन दीजे ॥

वे सुख द्वार उचार करैं कछु सो अनयास
सुधारस पीजे ।
सुन्दर सूर्य प्रकाशत है उर और अज्ञान
सबै तम छीजे ॥

बहार—यत

जा दिन तैं सतसङ्ग मिल्यो तब ता दिन तैं
भ्रम भाग गयो है ।
और उपाय थके सबही जब सन्तन सोहम ज्ञान
दयो है ॥
पोत पधारहि ज्यों करि कूवत एक अमोलिक
लाल लयो है ।
कौन प्रकार रहै रजनी तम सुन्दर सूर्य
प्रकाश भयो है ॥

बहार—चौताला

सन्त सदा सबको हित वाञ्छत जानत हैं
नर बूड़त काढ़े ।
दे उपदेश मिटाइ सबै भ्रम ले करि ज्ञान
जहाजहि चाढ़े ॥
ये विषया सुख नाहि न छाड़ित ज्यों कपि
मूढ़ गहे शठ गाढ़े ।
सुन्दर यों दुःखकों सुख मानत हाट हि हाट
विकावत आढ़े ॥

२

सो अनयास तरे भवसागर जो सतसङ्गति मैं
चलि आवे ।
ज्यो कणिहारण भेद करै कछु आइ चढ़े
तिहिं ताव चढ़ावे ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र म्लेच्छ चांडाल हि
पार लंघावे ।
सुन्दर बार कछू नहीं लागत या नरदेह
अभयपद पावे ॥

१

ज्यों हम खांहि पिवें अरु ओढहिं तैसेहि
ए सब लोक वखाने ।

ज्यो जल में शशिके प्रतिविम्ब हि आप
समा जलजन्तु प्रमाने ॥
ज्यौं खग छांह धरापर दीसत सुन्दर पच्छी
उड़े असमाने ।
त्यौं शठ देहनके छत देखत सन्तनकी गति
क्या कोउ जाने ॥

जंगला—चौताला

जो खपरा कर लै घर डोलत मांगत भीखहिं
तौ नहिं लाजे ।
जो सुख सेज पटम्बर अम्बर लावत चन्दन
तो अति साजे ॥
जो कोउ आइ कहे सुख ते कछु जानत ताहि
वयारसी बाजे ।
सुन्दर संशय दूरि भयो सब जो कछु साधु
करे सोइ छाजे ॥

२

कोउक निन्दत कोउक वन्दत कोउक आइके
देत है भच्छण ।
कोउक आइ लगावत चन्दन कोउक डारत
धूरि ततच्छण ॥
कोउ कहे यह मूरख दीसत कोउ कहे यह
आहि विचच्छण ।
सुन्दर काहु सौं राग न द्वेष न ए सब जानहु
साधुके लच्छण ॥

३

तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले
युवती सुखदायी ।
राज मिले गज वाजि मिले सब साज मिले
मनवाञ्छित खायो ॥
लोक मिले सुरलोक मिले विधिलोक मिले
वैकुण्ठहि जायो ।
सुन्दर और मिले सब हो सुख दुर्लभ साधु
समागम भायो ॥

मनोहरछन्द—चौताला

देवहु भएते कहा इन्द्रहु भएते कहा विधिहु
के लोक तें कहा जो आइयतु है ।
मानुष भए तें कहा भूपति भए तें कहा द्विजहु
भए तें कहा पार जाइयतु है ॥
पशुहु भए तें कहा पच्छिहु भए तें कहा पन्नग
भएते कहो क्यों अघाइयतु है ।
छूटिवेकों सुन्दर उपाय एक साधुसङ्ग जिनको
कृपाते अति सुख पाइयतु है ॥

२

इन्द्राणी शृङ्गार करि चन्दन लगायो अङ्ग वाहि
देखि इन्द्र अति कामवश भयो है ।
शूकरी हु कर्दमके चहल में लोट करि आगे जाइ
शूकरको मन हर लयो है ॥
जैसो सुख शूकर को तैसो सुख मघवाको तैसो
सुख नर पशु पच्छिन कौं दयो है ।
सुन्दर कहत जाकौं भयो ब्रह्मानन्द सुख सोइ साधु
जगत जनम जीत बयो है ॥

३

धूलि जैसो धन जाके शूलसे संसार सुख भूल जैसो
भाज देखे अन्त कसी यारी है ।
पाप जैसो प्रभुताई सांप जैसो सनमान बड़ाइ हु
वीछुनी सो नागनि सो भारी है ॥
अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधि लोक
कीरति कलङ्क जैसो सिद्धि सोट डारो है ।
वासना न कोउ वाको ऐसो मति सदा जाको
सुन्दर कहत ताहि वन्दना हमारो है ॥

४

काम हो न क्रोध जाके लोभ हो न मोह ताके
मद हो न मत्सर कोउ न विकारो है ।
दुःख हो न सुख मामें पाप हो न पुण्य जाने हरष न
शोक आने देहहो तें न्यारो है ॥

निन्दा न प्रशंसा कर राग हो न दोष धरे लेन हो न
देन ताके कछु न पसारो है।
सुन्दर कहत ताकी अगम अगाध गति ऐसो
कोउ साधु सो तो रामजीको प्यारो है॥

पीलू—चौताला

आठों याम यम नेम आठों जाम रहे प्रेम आठों
याम योग यज्ञ कियो बहु दान जू।
आठों याम जपतप आठों याम लियो व्रत आठों
याम तोरथ करत है न्हान जू॥
आठों याम पूजाविधि आठों याम आरति हु
आठों याम दण्डवत् सुमिरण ध्यान जू।
सुन्दर कहत तिन किया आठों याम सब सोइ
साधु जाके उर एक भगवान जू॥

पील—यत्

जैसे आरसीको मैल काटन सैकलगर मुख में
न फेर कोउ रहे वाको पोत है।
जैसे वैद्य नेन में सलाक मेलि शुद्ध करे पटल गिराति
तहां ज्यो को त्योंहो जोत है॥
जैसे वायु बादर बखेरके उड़ाइ देत रवि तो
प्रकाश माहि सदा उदोत है।
सुन्दर कहत भ्रम सङ्ग में विलाइ जात साधुहोके
सङ्गति स्वरूप ज्ञान होत है॥

२

मनका दादुर जीव सब जिवाए जिन वरषत
वाणी सुख मेघ कोसो धार कौं।
देत उपदेश कोउ स्वारथ न लवलेश निशिदिन
करत हैं ब्रह्महो विचार कौं॥
औरउ सन्देहन मिटावत निमिष माहि सूरज
मिटावत है जैसे अन्धकार कौं।
सुन्दर कहत हंस वासो सुखसागरके सन्तजन
आए हैं सु पर उपकार कौं॥

३

होरा हो न लाल हो न पारस न चिन्तामणि औरउ
अनेकन कहो कहा कोजिये।
कामधेनु सुरतरु चन्दन नदो समुद्र नौका जहाज
बैठि कबहूं क कोजिये॥
पृथ्वी अप तेज वायु व्योम लौं सकल जड़ चन्द्र सूर्य
शीतल तप्त गुण लोजिये।
सुन्दर विचार हम सोधि सब देखे लोक सन्तनके
सम कहो और कहा दोजिये॥

पीलू—तिताला

जिन तन मन प्राण दोन्हो सब मेरे हेतु और
उ ममत्व बुद्धि आपनि उठाई है।
जागत हुं सोवत हुं गावत है मेरे गुण मेरोइ
भजन ध्यान दूसरो न काई है॥
तिनके तो मैं पोछों फिरत हों निशिदिन
सुन्दर कहत मेरो उनतें बड़ाई है।
वे हैं मेरे प्रिय मैं हूं उनके अधोन सदा सन्तनको
महिमा तो श्रीमुख गाई है॥

२

प्रथम सुयश लेत शोलहु सन्तोष लेत चमा
दयाधर्म लेत पाप तें डरत है।
इन्द्रिनकौं घेरि लेत मनहुं कों फेरि लेत योगको
युकति लेत ध्यान ले धरत है॥
गुरु को वचन लेत हरि जूको नाम लेत आत्माकौं
सोधि लेत भौजल तरत है।
सुन्दर कहत जग सन्त कछु लेत नहिं सन्तजन
निशिदिन लेवोइ करत है॥

झंझौटी—तिताला

सांचो उपदेश देत भलो भलो शोख देत समता
सुबुद्धि देत कुमति हरतु है।
मारग दिखाय देत भावहु भकति देत प्रेमको
प्रतोति देत अभय भरतु है॥
ज्ञान देत ध्यान देत आत्मा विचार देत ब्रह्मको
बताइ देत ब्रह्म में चतुर है।
सुन्दर कहत जग सन्त कछु देत नाहिं सन्तजन
निशिदिन देवोइ करतु है॥

२

जगत व्यवहार सब देखत है ऊपर को
अन्तःकरण कौन नेक पहिंचानि है ।
छादनके भोजनके हलन चलब कछू और कोउ
क्रिया के तो सोइ वो वखानि है ॥
आपनेइ गुणनि आरोप अज्ञानी नर सुन्दर कहत
तातें निन्दाइ कौ ठानि है ।
भाव में तो अन्तर है राति और दिन जैसो
साधुको परीचा कोउ कैसे करि जानि है ॥

३

कूप में को मेड़का तो कूपको सराहत है
राजहंस सौं कहे कितोक तेरो सर है ।
मसका कहत मेरो सरभर कौन उड़े मेरे आगे
गरुड़को कितिएक जर है ॥
गुबरेंड़ा गोली कौं ढुराइ करि माने मोद
मधुप कौं निन्दत सुगन्ध जाको घर है ।
आपनि न जाने गति सन्तन कौं नाम धरे सुन्दर
कहत देखो ऐसो मूढ़ नर है ॥

४

कोउ साधु भजनी कोऊ लवलीन अति कबहूं
प्रारब्ध कर्म धक्का आइ दयो है ।
जैसे कोउ मारग में चलतें अखट परे फेरि करि
उठे तब उभे पथ लयो है ॥
जैसे कोउ चन्द्रमाको पूर्णकला चीण होइ सुन्दर
सकल लोक द्वितीया कौ नयो है ।
देवको देवात न गयो तो कहा भयो वोर पातरि
को मोल सु तो नाहीं कछू गयो है ॥

५

वहो दागाबाज़ वहो कुष्ठो कलङ्क भयो वही
महापापी वाके नख शिख कोच है ।
वही गुरुद्रोही गऊ ब्राह्मणको हननहार वही
आत्माको घाती हिंसा वाके बीच है ॥
अघको समुद्र वही अघको पहार वही सुन्दर
कहत वाको बुरी भांति मोच है ।
वही है मलेच्छ वही चण्डाल बुरे तें बुरो सन्तनको
निन्दा करे सो तो महा नीच है ॥

६

परि है वज्राङ्ग ताके ऊपरि अचान चक्र धूरि
उड़ि जात कहूं ठाहर न पाइ है ।
पोछे के उकुग महा नरक में परे जाइ ऊपर तें
यमहु को मार वह खाइ है ॥
ताके पीछे भूत प्रेत स्थावर जङ्गम योनि सहेगो
सङ्कट तब पीछे पछिताइ है ।
सुन्दर कहत और भुगते अनन्त दुःख सन्तन कौं
निन्दे ताको सत्यानाश जाइ है ॥

७

ताहो कौं भक्ति भाव उपजि है अनायास जाको
मति सन्तन सौं सदा अनुरागी है ।
अति सुख पावे ताके दुःख सब दूरि करे और उ
काहू को जिनि निन्दा मुख त्यागो है ॥
संसारको पाश काटि पाइ है परम पद सन्त
सङ्ग हो तें जाको ऐसो मति जागो है ।
सुन्दर कहत ताको तुरत कल्याण होइ सन्तन को
गुण गहे सोई बड़ि भागो है ॥

८

योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतादि दान साधन सकल
नहिं याको सर भरि है ।
और कोउ देवो देव उपासना अनेक भांति शङ्का
सब दूरि करि मन ते निडरि है ॥
सबहो के शीर्षपर पाउ दे मुकति होइ सुन्दर कहत
सो तो जनमि न मरि है ।
मनवचक्रम करि अन्तर न राख कछू सन्तनको
सेवा करे सोइ निस्तरि है ॥

भक्तिज्ञानमिश्रित अङ्ग

सिन्धु—तिताला

बैठत राम हो उठत राम हो बोलत राम हो
राम रह्यो है।

जीमत राम हो पीवत राम हो धीमति राम हो
राम गह्यो है ॥
जागत राम हो सोवत राम हो जीवत राम हो
राम कह्यो है ।
देत हु राम हो लेत हु राम हो सुन्दर राम हो
राम लह्यो है ॥

२

श्रोत्र हु राम हो नेत्र हु राम हो वक्त्र हु राम हो
राम हो गाजे ।
शीर्ष हु राम हो हाथ हु राम हो पांव हु राम हो
राम हो साजे ॥
पेट हु राम हो पीठ हु राम हो रोम हु राम हो
राम हो बाजे ।
अन्तर राम निरन्तर राम हो सुन्दर राम हो
राम विराजे ॥

३

भूमिहु राम हो आप हु राम हो तेज हु राम हो
वायु हु रामि ।
व्योम हु राम हो चन्द्र हु राम हो सूरज राम हो
सीतल घामि ॥
आदि हु राम हो अन्त हु राम हो रोम रोम
राम हो राम हो थामि ।
सुन्दर रामसों पूरि रह्यो जग राम बनावत है
सब कामि ॥

४

देख हु राम अदेख हु राम हो लेख हु राम
अलेख हु रामि ।
एक हु राम अनेक हु राम हो शेष हु राम
अशेष हु रामि ॥
मौन हु राम अमौन हु राम हो गौण हु राम हो
मौन हु रामि ।
बाहिर राम हो भीतर राम हो सुन्दर राम हो है
जगजामि ॥

५

दूर हु राम नगीच हु राम हो देश हु राम
प्रदेश हु रामि ।
पूरब राम हो पश्चिम राम हो दक्षिण राम हो
उत्तर धामि ॥
आगें हु राम हो पीछे हु राम हो व्यापक
राम हो है वनग्रामि ।
सुन्दर राम दशोदिश पूरण स्वर्गहु राम
पताल हुं रामि ॥

६

आपहु राम भी पावक राम हो भञ्जन राम
संवारण रामि ।
दृष्ट हु राम अदृष्ट हु राम हो दृष्ट हु राम
करे सब कामि ॥
वर्णहु राम अवर्ण हु राम हो रक्त न पीत न
श्वेत न श्यामि ।
शून्य हु राम अशून्य हु राम हो सुन्दर राम हो
नाम अनामि ॥

अङ्ग विपर्य अङ्ग

सिन्धु—तिताला

१

श्रवण हु देख सुनै पुनि नयन हु जिह्वा
सूंघ नासिका बोल ।
गुदा खाय इन्द्रिय जल पीवे विन हो हाथ सुमेर
हि तोल ॥
ऊंचे पाइ मूंड़ नीचे कहुं विचरत तीन
लोक में डोल ।
सुन्दर दास कहे शुनि ज्ञानी भली भांति या
अर्थ हि खोल ॥

२

अन्धा तीन लोक को देखे बहरा सुनै बहुत
विधि नाद ।
नकटा वास सवास को लेवै गूंगा करे बहुत
सम्वाद ॥

टूंटा पकरि उठावै पर्वत पङ्गुल करै नृत्य आह्लाद।
जो कोउ याको अर्थ विचारै सुन्दर सोई पावै स्वाद॥

३

कुञ्जर को कीरी गिलि बैठी सिंह हिं खाइ
अघानो स्याल।
मछरी अग्नि माहि सुख पायो जल में
रहती बहुत बेहाल॥
पङ्गु चढ़ौ पर्वत के ऊपर मृतकहिं देखि
डरानो काल।
जाको अनुभव होइ सु जाने सुन्दर ऐसा
उलटा ख्याल॥

४

बुन्द हौ माझ समुद्र समानो राई माहि
समानो मेर।
पानी माहि तुम्बिका बूड़ी पाहन तिरत
में लागी बेर॥
तीन लोक में भया तमाशा सूरज कियो
सकल अंधेर।
मूरख होइ सु अर्थ हिं पावै सुन्दर कहै
शब्द में फेर॥

५

मछरो बगुला को गहि खायो मूसे खायो
कारो सांप।
मृगी पकरि बिलैया खाई ताको मुये गयो सन्ताप॥
बेटो अपनी मां गहि खाई बेटै अपनो खायो बाप।
सुन्दर जो या अर्थ हिं बूझै सो पण्डित सो
जाने आप॥

६

देव माहिते देवल प्रगट्यौ देवल माहिते
प्रगट्यौ देव।
शिष्य गुरु हिं उपदेशन लाग्यो राजा करै
रङ्कको सेव॥
बन्ध्या पुत्र पङ्ग एक जायो ताको घर खोवनको टेव।
सुन्दर कहै सो पण्डित ज्ञाता जो कोउ याको
जाने भेव॥

काफी—तिताला

कमल माहिं ते पानी उपज्यो पानी माहि तें
उपज्यो सूर।
सूरमाहि शीतलता उपजी शीतलता मैं
सुख भरपूर॥
ता सुख की क्षय होइ न कबहूं सदा एक रस
निकट न दूर।
सुन्दर कहै सत्य वह यों हीं या महिं रतो
न जानहु कूर॥

२

हंस चढ़ौ ब्रह्माके ऊपर गरुड़ चढ़ौ पुनि
हरिको पीठ।
बैल चढ़ौ है शिवके ऊपर सो हम देख्यौ
अपनी दीठ॥
देव चढ़ौ पातीके ऊपर जरख चढ़ौ
डायन पै नीठ।
सुन्दर एक अचम्भा हुवा पानी माहि जलै अङ्गीठ॥

३

कपड़ा धोबी को गहि धोवै माटी बपुरी
गढ़ै कुम्हार।
सुई बिचारी दरजी हि सीवै सोना तावै
पकरि सुनार॥
लकरी बढ़ई को गहि छीलै खाल सु बैठो
धवै लोहार।
सुन्दर दास कहै सो ज्ञानी जो कोउ या को
करै विचार॥

४

जा घर माहि बहुत सुख पायो ता घर माहि
बसे अब कौन।
लागी सबै मिठाई खारी मीठो लागो एक
वह लौन॥

पर्वत उड़े रुई थिर बैठी ऐसो कोउ एक
माजो पौन ।
सुन्दर कहे न माने कोऊ ता तें पकरि
बैठ मुख मौन ॥

५

रजनो माहि दिवस हम देख्यौ दिवस माहि
हम देखो रात ।
तैल भरो सम्पूरण ता में दीपक जरे जरे
नहि बात ॥
पुरुष एक पानी में प्रगटो ता निगुराको कैसो जात ।
सुन्दर सोई लहे अर्थ को जो नित करे पराई तात ॥

६

उनयो मेघ घटा चहुं दिसि तें वर्षण लग्यो
अखण्डित धार ।
बूड़ो मेरु नदी सब सूखी झर लाग्यो
निशिदिन एक सार ॥
कांसा परो बीजुली ऊपर कियो सर्व कुटुम्ब संहार ।
सुन्दर अर्थ अनूपम या को पण्डित होइ सो
करे विचार ॥

७

बाड़ी माही छालो निपज्यो छालो माही
निपजो खेत ।
हंस हि उलटि श्याम रङ्ग लाग्यो भ्रमर उलटि
कर ह्वा सेत ॥
शशि हू उलटि राहु को ग्रासो सूर्य उलटि करि
ग्रास्यो केत ।
सुन्दर सो गुरु को त्यजि भाग्यो निगुरा सेती
बांध्यो हेत ॥

८

अग्नि मंथन करि लकड़ी काटो सो वह लकड़ी
प्राण अधार ।
पानि मंथ करि घोव निकास्यो सो घृत खेवे
वारंवार ॥
दूध दही को इच्छा भागी जाको मथत
सकल संसार ।
सुन्दर अब तो भये सुखारे चिन्ता रहो न
एक लगार ॥

९

पल माहि झोलो गहि राखो योगो भिक्षा
मांगन जाय ।
जागे जगत सोवई गोरख ऐसा शब्द सुनावै आय ॥
भिक्षा परे बहुत विधि ताको सो वह भिक्षा
चेल हिं खाय ।
सुन्दर योगो युग युग जोवै ता अवधूतको
दूरि बलाय ॥

१०

निर्दय होइ तरे पशुघातक दयावन्त बूड़े भवमाहि ।
लोभी लगे सबन को प्यारो निर्लोभी का
ठौर हि नाहि ॥
मिथ्यावादो मिले ब्रह्म को सत्य कहे ते
यमपुर जाहि ।
सुन्दर धूप माहि शीतलता जलत रहे ते बैठे छाहि ॥

११

माय बाप तजि धी उमदानी पर्वत चलो
खसमके पास ।
बहू बेचारो बड़ी बख्तावर जाके कहे
चलत है सास ॥
भाई मलो खरो हितकारी सर्व कुटुम्बको
कियो नास ।
ऐसी विधि घर बसो हमारो सुख सों सोवे
सुन्दर दास ॥

१२

परधन हरे करे परनिन्दा पर धीको राखै
घर माहि ।
मांस खाइ मदिरा पुनि पीवे ताहि मुक्ति को
संशय नाहि ॥

अकरम गहे कर्म सब त्यागी ताको सङ्गति
पाप नसाहि ।
ऐसो करै सो सन्त कहावै सुन्दर अवर उपजि
मरि जाहि ॥

१३

बढ़ही चरखा भलो संवारो फिरने लाग्यो
नीको भांत ।
बहू सास को कहि समुझावे तू मेरे ढिग
बैठो कात ॥
नेन्हो तार न टूटे कबहूं पूनो घटे दिवस नहिं रात ।
सुन्दर विधि सो बुने जुलाहा खासा निपजै
ऊंची जात ॥

१४

घर घर फिरे कुमारी कन्या जने जने सों
करती सङ्ग ।
वेश्या सो तो भई पतिवरता एक पुरुषके लागो अङ्ग ॥
कलियुग माहो सतयुग थापो पापो उदय
धर्म को भङ्ग ।
सुन्दर कहे सु अर्थ हिं पावे जो नीकें करि
त्यजि अनङ्ग ॥

१५

विप्र रसोई करने लाग्यो चौका भीतर बैठो आइ ।
लकरी माहो चूल्हो दीयो रोटी ऊपर तवा चढ़ाइ ॥
खिचरी माहो हंड़िया रांधी सालन आक
धतूरा खाइ ।
सुन्दर जीमत अति सुख पायो अब के भोजन
कियो अघाइ ॥

१६

टेल उलटि नायक कों लादो वस्तु माहि
भरि गोन अपार ।
भलो भांति को सौदा कोया आप हि
सन्तरया संसार ॥
नायकनी पुनि हर्षत डोले मोहि मिल्यो
नीको भर्तार ।
पूंजी जाइ शाह कों सौंपो सुन्दर सिर ते
उतरो भार ॥

१७

वणिक् एक बनिजो कों आयो परे ता बरा
भारो भेठ ।
भलो वस्तु कछु लीन्हीं दीन्हीं खैंच गठरिया
बांधो एठ ॥
सौदा कियो चल्यो पुनि घर कों लेखा कियो
घर तले बैठ ।
सुन्दर शाह खुशो अति ह्वो बैल गयो पूंजो में पैठ ॥

१८

पहरायत घर मुस्यो शाह को रखा कर नि
त्यागो चोर ।
कोतवाल काठो करि बांध्यो छूटे नहीं सांझ
अरु भोर ॥
राजा गांव छोड़ि कर भाग्या हुवो सकल
जगत में शोर ।
प्रजा सुखो भई नगर में सुन्दर कोई जुलम न जोर ॥

१९

राजा फिरे विपत्ति को मारो घर घर टुकरा
मांगि भीख ।
पाय पयादो निशिदिन डोले घोरा चालि
सके नहीं वीख ॥
आक अरंडुको लकरो चौंखे छाड़े बहुत
रसभरी ईख ।
सुन्दर कोउ जगत् में विरलो या मूर्ख कोल विसोख ॥

२०

पानी जरे पुकारे निशिदिन ताको अग्नि
बुझावे आइ ।
हूं शीतल तू तप्त भयो क्यों वारंवार कहे समुझाइ ॥
मेरी लपट तोहि जो लागी तौ तू भी शीतल
है जाइ ।
कबहूं जरनि फेरि नहि उपजे सुन्दर सुख में
रहे समाइ ॥

२१

खसम परी जोरूके पीछे कह्यो न मानै भोंड़ी रांड़।
जित तित फिरै भटकती योंही तैंतो कियो
जगत में भांड़॥
तौ ऊ भूख न भागी तेरी तू गिल बैठो सारी मांड़।
सुन्दर कहै सीख सुनि मेरी अब तू घर घर
फिरबो छांड़॥

२२

पंथी मांहि पंथ चलि आयो सो वह पंथ लख्यौ
नहि जाइ।
वाही पंथ चल्यौ उठि पंथी निर्भय देशमें
पहुंच्यौ आइ॥
तहां दुकाल परै नहीं कबहूं सदा सुभिच्छ
रहै ठहराइ।
सुन्दर दुखी न कोऊ दीसै अछय सुख में रहै समाइ॥

२३

एक अखेटी बन में आयो खेलन लाग्यौ
भली शिकार।
करमें धनुष कमर में तरकश सावज घेरे वारंवार॥
मारौ सिंह व्याघ्र पुनि मारौ मारौ बहुत
मृगनिकी डार।
ऐसे सकल मारि घर लायो सुन्दर राज हि
कियो शुहार॥

२४

शुकके वचन अमृत मय ऐसे कोकिल धार रहै
मन माहि।
सारौ सुनै भागवत कबहूं सारस तोऊ पावै नाहि॥
हंस चुगै मुकता फल अर्थं हि सुन्दर
मानसरोवर न्हाहि।
काग कवीश्वर विषयी जीते ते सब दौरि
करं कहि जाहि॥

२५

भ्रष्ट होंहि द्विज भ्रष्ट क्रिया करि कष्ट किये
नहि पावै ठौर।
महिमा सकल गई तिन केरी रहत परग
नित रस सरमौर॥
जित तित फिरत नहीं कछु आदर तिन की
कोउ न घाले कौर।
सुन्दर दास कहै समुझावै ऐसो कोउ करो
मति और॥

२६

शास्त्र वेद पुराण पढ़े किन पुनि व्याकरण
पढ़े ते कोइ।
सन्ध्या करै गहै षट्कर्म हि गुण अरु काल
विचारे सोइ॥
ऐसो काम तबही बनि आवै मनमें सब तजि
राखे दोइ।
सुन्दर दास कहै शुनि पण्डित राम नाम बिन
मुक्ति न होइ॥

अपने भावको अङ्ग

धनाश्री—तिताला

एक ही आपुनो भाव जहां तहां बुद्धिके जोरतें
विभ्रम भासै।
जौं यह क्रूर तौ क्रूर उहां पुनि याके खिजेते
उहां पुनि खासै॥
जो यह साधु तौ साधु उहां पुनि याके हसेते
उहां पुनि हासै॥
जैसोइ आपु करै मुख सुन्दर तैसोइ दर्पण
माहि प्रकासै॥

मनीहरछन्द—चौताला

जैसे श्वान काचके सदन मध्य देखि और भूंकि
भूंकि मरत करत अभिमान जू।
जैसे गज स्फटिक शिला सौं अरि तोरै दन्त
जैसे सिंह कूप मांहि उझकि भुलान ज॥
जैसे कोउ फेरी खात फिरत सुखेवै जग तैसे
ही सुन्दर सब तेरोई अज्ञान जू।
आपही को भ्रम सो तो दूसरो दिखाई देत आपु
को विचारे कोउ दूसरो न आन ज॥

कामानट—चौताला

नीच उच्च बुरो भलो सुजन दुर्जन पुनि पण्डित
　　मूरख शत्रु मित्र रङ्क राव है।
मान अपमान पुनि पाप सुख दुःख दोउ स्वरग
　　नरक बन्ध मोच्छ हुको चाव है॥
देवता असुर भूत प्रेत कीट कुञ्जर औ पशु अरु
　　पच्छी श्वान शूकर बिलाव है।
सुन्दर कहत यह एकहि अनेक रूप जोइ कछु
　　देखिये सु आपनोइ भाव है॥

२

याही के जागत काम याही के जागत क्रोध
　　याही के जागत लोभ याही मोह माता है।
याकी याही बैरी होत या की याही मित्र होत
या की याही सुख देत याकी याही दुःखदाता है॥
याही ब्रह्मा याही रुद्र याही विष्णु देखियत
　　याही देव दैत्य तत्त्व सकल सन्दाता है।
याही की प्रभाव सो तो याही को दिखाइ देत
　　सुन्दर कहत यह आत्मा विख्याता है॥

३

याही कोतो भाव याहि शङ्का उपजावत है
याही की तो भाव याही निशङ्क करत है।
याही की तो भाव याकों भूत प्रेत होइ लागे
　　याही की तो भाव याही कुमति हरत है॥
याही कोतो भाव याकों वायु को बघूरा करे
　　याही को तो भाव याही थिरकै धरत है।
याही की तो भाव याको धारमें बहाय देत
　　सुन्दर याही को भाव याही लेत रत है॥

मलार-सहाना—यत्

आव ही को भाव सु तो आपकों प्रगट होत
　　आप ही आरोप करि आप मन लायो है।
देवी अन्य देव कोउ भावकों उपासि ताहि
　　कहे में स्त्रीपुत्रधन इनहीते पायो है॥
जैसे श्वान हाड़कों चखोर करि माने मोद
　　आपही को मुख फिरि लोहू चाट खायो है।
तैसे ही सुन्दर यह आपु ही चैतन्य आहि
　　आपुने अज्ञान करि और सो बंधायो है॥

इन्द्रवयच्छन्द—यत्

नीचते नीचरु उच्चते ऊपर आगेते आगे है
　　पीछेते पीछो।
दूरिते दूरि नगीचतें नीरे हि आड़ेते आड़ो है
　　तीछेतें तीछो॥
बाहिर भीतर भीतर बाहिर ज्यों कोइ जाने
　　त्यों ही करि ईछो।
जैसोइ आपुनो भाव है सुन्दर तैसोइ है दृग
　　खोलिकें बीछो॥

२

आपुने भावतें सूर्यसो दीसत आपुने भावते
　　चन्द्र सो भावे।
आपुने भावतें तार अनन्त जू आपने भावते
　　विद्युलतावे॥
आपुने भावतें नूर है तेज है आपुने भावते
　　ज्योति प्रकासे।
तैसोही ताहि दिखावत सुन्दर जैसो ही होत है
　　ताहीको आसे॥

३

आपुने भावतें सेवक साहिब आपुने भाव
　　सबै कोउ धावे।
आपुने भावतें अन्य उपासत आपने भावतें
　　भक्ति हु पावे॥
आपुने भावतें दुष्ट संहारत आपुने भावतें
　　बाहिर आवे।
जैसोइ आपुनो भाव है सुन्दर ताही कों
　　तैसोइ होइ दिखावे॥

४

आपुने भावते दूर बतावत आपुने भाव
　　नजीक बखानो।
आपुने भावतें दूध पिवायो जु आपुने भावतें
　　बीठल जानो॥

आपुने भावते चारि भुजा पुनि आपुने भावते
सींग सो मानो।
सुन्दर आपुन भावको कारण आपु हो
पूरणब्रह्म पिछानो ॥

५

आपुने भावते होइ उदास जू आपने भावसों
प्रेम सो रोवे।
आपुने भाव मिल्यो पुनि जानत आपुने भावते
अन्तर जोवे ॥
आपुने भाव रहे नित जागत आपुने भाव
समाधिमें सोवे।
सुन्दर जैसोइ भाव है आपुनो तैसोइ आपु
तहां तहां होवे ॥

६

आपुने भावतें भूलि परो भ्रम देह स्वरूप भयो
अभिमानो।
आपुने भावतें चञ्चलता अति आपुने भावतें
बुद्धि थिरानो ॥
आपुने भावतें आपु विसारत आपुने भावते
आतम ज्ञानो।
सुन्दर जैसोइ भाव है आपुनो तैसोइ होइ
गयो यह प्रानो ॥

स्वरूप विस्मरण अङ्ग

मलार—चौताला

जा घटको उवहार है जैसि हि ता घट चेतन
तैसोइ दीसे।
हाथी की देह में हाथी सो मानत चीटो की
देहमें चीटो कीरीसे ॥
सिंहको देह में सिंह सो मानत कौसकी देह
में मानत कीसे।
जैसे उपाधि भई जहां सुन्दर तैसोइ होइ
रह्यो नख सीसे ॥

२

जसेही पावक काठके योगते काठ सो होइ
रह्यो इकठोरा।
दीरघ काठमें दीरघ लागत चोरे से काठमें
लागत चोरा ॥
आपुतो रूप प्रकाश करे जब जारि करे
तब औरको औरा।
तैसोइ सुन्दर चेतन आपु सु आपु कों नाहि न
जानत चोरा ॥

मनोहरछन्द—चौताला

अजर अमर अविनाशी अज स्वप्रकाश कहत
सकल जनश्रुति अवगाहे ते।
निर्गुण निर्मल अति शुद्ध निरवन्ध नित्य ऐसोउ
कहत और ग्रन्थनिके थाहेते ॥
व्यापक अखण्ड एकरस परिपूरण है सुन्दर
सकल रमि रह्यो ब्रह्म ताहेते।
सहज सदा उदोत या होतें अचम्भो होत
आपुहोको आपु भूलि गयो सोतो काहेते ॥

२

जैसे मीन मांसकों निगलि जात लोभ लगि
लोहकौ कण्टक नहि जानत उमाहेते।
जैसे कपि गागरि में मूंठ बांधि राखे सट
छांड़ नहो देत सु तो स्वादहिके वाहेते ॥
जैसे वक नारियल चञ्चमारि लटकत सुन्दर
सहत दुःख देखि याहि लाहेते।
देहको संयोगइ इन्द्रिनिके वश परो आपहीकों
आपु भूलि गयो सुख चाहेते ॥

इन्द्रवज्रछन्द—तिताला

ज्यो कोउ मद्य पिये अति छाकत नाहि
कछू सुध है भ्रम ऐसो।
ज्यो कोउ खाय रहे ठग मूरिहि जाने नहीं
कछु कारण तैसो ॥

ज्यों कोउ बालक शङ्क उ पावत कम्प उठे
भय जानत भैसो ।
तैसो ही सुन्दर आपुकों भूलि सुदेखहु चेत न
मानत कैसो ॥
२
ज्यो कोउ कूप में झांकि अलापत वैसो ही
भांति सो कूप अलापै ।
जो जल हालत है लगि पौन कहे भ्रमतै
प्रतिविम्ब हो कांपै ॥
देहके प्राणके जे मनके क्षत मानत है सब
मोहोको व्यापै ।
सुन्दर पेंच परो अतिशय करि भूलि गयो
भ्रमते भ्रम आपै ॥
३
ज्यों द्विज कोउक छाड़ि महामति शूद्र भयो करि
आपुको मान्यो ।
ज्यों कोउ भूपति सोवत सेज सुरङ्क भयो
सुपने महि जान्यो ॥
ज्यों कोउ रूपको राशि अत्यन्त कुरूप कहे
भ्रम मेचक आन्यो ।
तैसे हो सुन्दर देह सो ह्वै करि या भ्रम आप हो
आपु भुलान्यो ॥
४
एकइ व्यापक वस्तु निरन्तर विश्व नहीं
यह ब्रह्म विलासे ।
ज्यों नर मन्त्रनि सों दृग बांधत है कछु और हो
और हो भासे ॥
ज्यों रजनो महि बूझि परे नहीं जो लगि
सूरज नाहि प्रकासे ।
त्यों यह आपुन आपु न जानत सुन्दर हो रह्यो
सुन्दर दासे ॥

मनोहर छन्द—तिताला

इन्द्रिनिको प्रेरि पुनि इन्द्रिनके पोछे परो आपुनो
अविद्या करि आपतन गह्यो है ।
जोइ जोइ देहकों सङ्कट कछु परे आइ सोइ सोइ
मानि आपु याते दुख सह्यो है ॥
भ्रमत भ्रमत कहुं भ्रम को न आयो उर चिरकाल
बीत्यो पै स्वरूप को न लह्यो है ।
सुन्दर कहत देखो भ्रमको प्रबलताई भूत
निमें भूत मिलि भूत ह्वै रह्यो है ॥
२
जैसे शुक नलिनोन छाड़ि देत चङ्गलते जाने
काहु और मोहो बांधि लटकायो है ।
जैसे कपि गुञ्जनिको ढेरि करि मानै आगि
आगे धरि तापै कछु शोत न गमायो है ॥
जैसे कोउ दिशा भूलि जात हुतो पूरबको उलटि
अपूटो फेरि पश्चिमको धायो है ।
तैसे हो सुन्दर सब आपु हो को भ्रम भयो
आपु हो को भूलि करि आप हो बंधायो है ॥
३
जैसे कोउ कामिनोके हिये परि चुसे बाल
सुपनेमें कहे तेरे पुत्र काहु ह्यो है ।
जैसे कोउ पुरुषके कण्ठ विसे हुतो मणि ढूंढ़त
फिरत कछु ऐसो भ्रम भयो है ॥
जैसे कोउ याव करि बावरो वकत डोले और हो
को और कहे सुधि भूलि गयो है ।
तैसे हो सुन्दर निज रूपकों विसारि देत
ऐसो भ्रम आपु हो को आपु करि लयो है ॥
४
दोन होन चोण ह्वै जात क्षण क्षण माहि
देहके सुयोग पराधोन सो रहत है ।
शोत लगे घाम लगे भूख लगे प्यास लगे
शोकमोह मानि अति खेद को लहत है ॥
अन्ध भयो पङ्गु भयो मूक हु वधिर भयो ऐसो
मानि मानि भ्रम नदोमें वहतु है ।
सुन्दर अधिक मोहि याहो तें अचमभो आहि
भूलि के स्वरूप कों अनाथ सो कहतु है ॥

५

जैसे कोउ सुपनेमें कहे मैं तो ऊंट भयो जागि
करि देखे उहे मानव स्वरूप है।
जैसे कोउ राजा पुनि सोइ के भिखारी होइ
आंखि उघरे ते महा सुपनिको भूप है॥
जैसे कोउ मैचक सों कहे मेरो सिर कहां
मैचक गए तें जाने सिर तो तद्रूप है।
तैसे ही सुन्दर यह भ्रम करि भूल गए आपु
भ्रमके गएतें आप अति अनूप है॥

६

जैसे कोउ पोसतीको पाग परी भूमि पर
हाथ लेके कहे एक पाग मैं तो पाई है।
जैसे शेख चिल्लीहु मनोरथके कियो घर कहे
मेरो घर गयो गागरी गिराई है॥
जैसे काहु भूत लग्यो वकत है आवबांव
सुध सब दूरि भई औरे मति आई है।
तैसे ही सुन्दर यह भ्रम करि भूल्यो आपु भ्रमके
गएतें यह आत्मा सदाई है॥

७

आप ही चैतन्य यह इन्द्रियनि चैतन्य करि
आपु ही मगन होइ आनन्द बढ़ाया है।
जैसे नर शीतकाल सोवत निहालो वोढ़ आपु ही
तपत करि आपु सुख पायो है॥
जैसे बाल लकड़ी को घोरा करि डाक चढ़
आपु असवार होइ आपु ही कुदायो है।
तैसे ही सुन्दर यह जड़को संयोग पाइ आपु
सुख मानि मानि आपु ही भुलायो है॥

जयजयवन्ती—यत

कहूं भूल्यो कामरत कहूं भूल्यो साधुयत कहूं
भूलो गृह मध्य कहूं वनवासी है।
कहूं भूलो नीच जानि कहूं भूलो ऊंच मानि कहूं
भूलो मोह व्याधि कहूं तो उदासी है॥
कहूं भूलो मौन धरि कहूं बकवाद करि कहूं
भूलो मक्के जाइ कहूं भूलो कासी है।
सुन्दर कहत अहङ्कार हीते भूलो आप एक आवै
रोज अरु दूजी बड़ी हांसी है॥

२

मैं बहुत सुख पायो मैं बहुत दुःख पायो मैं अनन्त
पुण्य किये मेरे पोते पाप है।
मैं कुलीन विद्यावन्त पण्डित प्रवीण महा मैं तो
मूढ़ अकुलीन हीन मेरो बाप है॥
मैं हों राजा मेरो आन फिरे चहुं चक्र मांहि मैं
तो रङ्क द्रव्यहीन मोहि तोसे ताप है॥
सुन्दर कहत अहङ्कार हीतें जीव भयो अहङ्कार
गये यह एक ब्रह्म आप है॥

३

देहइ पुष्ट लगे देहइ दूबरा लगे देहही को
शीत लगे देहही कों तावरी।
देह ही सुरूप लगे देह ही कुरूप लगे देह ही
यौवन लगे देह वृद्ध ज्यावरी॥
देह ही को तीर लगे देह हा को तुपक लगे
देह को कृपाण लगे देह ही को घावरी।
देह ही सो बांध्यो हेत आपु विषे मान लेत
सुन्दर कहत ऐसो बुद्धिहीन बावरी॥

इन्द्रवज्रछन्द

सुधमलार—चौताला

आपुही चैतन्य ब्रह्म अखण्डित सो भ्रमतैं
कछु आन परेखे।
ढूंढ़त ताहि फिरे जितही तित साधत
योग बनावत भेखे॥
औरउ कष्ट करै अतिशय करि परितत्त्व
आतमतत्त्व न पेखे।
सुन्दर भूलि गयो निज रूप ही है करकङ्कण
दरपण देखे॥

२

सूत गरै महि मिलि भयो द्विज ब्राह्मण हो
करि ब्रह्म न जान्यौ।
क्षत्रिय हो करि छत्र धर्यो शिर हय गज पैदल
सौ मन मान्यौ॥
वैश्य भयो वपुको वय देखत झूंठ प्रपञ्च
वाणिज्य हो ठान्यौ।
शूद्र भयो मिलि शूद्र शरीरहो सुन्दर आप नहीं
पहिचान्यौ॥

३

ज्यौं रविकों रवि ढूढ़त है कहुं ताप मिले
तन शीत गवाऊं।
ज्यौ शशिकौं शशि चाहत है पुनि शीतलता करि
ताप बुझाऊं॥
ज्यौ कोउ सांझ भये नर टेरत है घर में
अपने घर जाऊं।
त्यौं यह सुन्दर भूलि स्वरूप हि ब्रह्म कहे
कब ब्रह्महि पाऊं॥

४

आपन देखत है अपनो मुख दरपण काठ-लग्या
अति थूला।
औ हग देखत हो रहि जात भयो तबही
पुतरो पर फूला॥
छाय अज्ञान रह्यौ अभि अन्तर जानि सके
नहीं आतम मूला।
सुन्दर यों उपज्यौ मन के मल ज्ञान विना
निज रूप हि भूला॥

५

दीन भयो बिललात फिरे नित इन्द्रिनिके
वश छोलक छोले।
सिंह नहीं अपनी बल जानत जम्बुक ज्यौं
जितही तित डोले॥
चेतनता विसराइ निरन्तर लै जड़ता भ्रम
गांठन खोले।
सुन्दर भूलि गयो निज रूपहि देह स्वरूप
भयो सुख बोले॥

६

मैं सुखिया सुख सेज सुखासन हय गज भूमि
महारजधानी।
हूं दुखिया दिन रैन मरौं दुःख मोहि विपत्ति
परो नहीं छानी॥
हूं अति उत्तम जात बड़ो कुल हूं अति नीच
क्रिया कुलहानो।
सुन्दर चेतनता न सम्भारत देख स्वरूव
भयो अभिमानो॥

७

गर्भ विषे उत्पत्ति भई पुनि जन्म लियो
शिशु शुद्ध न जानो।
बाल कुमार किशोर युवादिक वृद्ध भये
अति बुद्धि नसानो॥
जैसे हो भांति भई वपुकी गति तैसो हो होइ
रह्यौ वह प्राणी।
सुन्दर चेतनता न सम्भारत देह स्वरूप भयो
अभिमानो॥

८

ज्यों कोउ त्याग करे अपनो घर बाहर
जाइके वेश बनावे।
मुण्ड मुण्डाइके कान फराइ विभूति लगाइ
जटाउ रखावे॥
जैसोइ स्वांग करे वपुको पुनि तैसोहो मानत
सो ह्वै आवे।
त्यौं यह सुन्दर आपुन जानत भूलि स्वरूप हि
और कहावे॥

साक्षी ज्ञानको अङ्ग

मनोहर छन्द—चौताला

क्षिति जल पावक पवन नभ मिलि करि शब्द
और रस स्पर्श रूप रस गन्ध जू।

श्रोत्र त्वक् चक्षु घ्राण रसना रसको जान
वाक् पाणि पाद पायु उपस्थावन्ध जू ॥
मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ए चौबीश तत्त्व
पच्चीश जीवतत्त्व करत है धन्ध जू ।
षड्वीश वोहे ब्रह्म सुन्दर सुनिह करम व्यापक
अखण्ड एक रस निरसन्ध जू ॥

१

श्रोत्र दिक त्वक् वायु लोचन प्रकाशे रव नासिका
अश्वनी जिह्वा वरुण वखानिये ।
वाक् अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेन्द्र वलमेन्द्र
प्रजापति गुदा मित्र इं को ठानिये ॥
मन चन्द्र बुद्धि विधि चित्त वासुदेव आहि
अहङ्कार रुद्रको प्रभाव करि मानिये ।
याको सत्त पाइ सब देवता प्रकाशत हैं सुन्दर सु
आत्मा हो न्यारो करि जानिये ॥

२

श्रोत्र सुने दृग देखत है रसना रस घ्राण
सुगन्ध पियारो ।
कोमलता त्वक् जानत है पुनि बोलत है
मुख शब्द उचारो ॥
पाणि गहे पद गौन करे मल मूत्र तजे
उभज अध द्वारो ॥
जाके प्रकाश प्रकाशत है सब सुन्दर सोइ
रहे घट न्यारो ॥

४

बुद्धि भ्रमे मन चित्त भ्रमे अहङ्कार भ्रमे कहा
जानत नाही ।
श्रोत्र भ्रमे त्वक् घ्राण भ्रमे रसना दृग देखि
दसों दिश जांही ॥
वाक् भ्रमे कर पाद भ्रमे गुद द्वार उपस्थ
भ्रमे कछु कांही ।
तेरे भ्रमाये भ्रमे सबही गुण सुन्दर तू क्यों
भ्रमे इन माही ॥

५

बुद्धि को बुद्धि अरु चित्त को चित्त अहं को अहं
मन को मन सोई ।
नैन को नैन है वैन को वैन है कान त्वचा
त्वचा त्वक् कर जोई ॥
घ्राणको घ्राण है जीभको जीभ है हाथको हाथ
पगो पग दोई ॥
सीसको सीस है प्राणको प्राण है जीवको
जीव है सुन्दर सोई ॥

सुघराई प्रश्न—चौताला

कैसेकें जगत यह रच्यो है जगतगुरु मोसों कहो
प्रथम हो कौन तत्त्व कोन्हो है ।
प्रकृति कि पुरुष कि महततत्त्व अहङ्कार कीधों
उपजाये सत्व रज तम तीनो है ॥
कीधों व्योम वायु तेज अप कि अवनि कोन कीधों
पञ्च विषय पसारि करि लीन्हो है ।
कीधों दश इन्द्रीको अन्तस्करण कोन सुन्दर
कहत कीधों सकल विहीनो है ॥

उत्तर—चौताला

ब्रह्मते पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई प्रकृति तें
महतत्व पुनि अहङ्कार है ।
अहङ्कार हुते तीनगुण सत्व रज तम तमहु तें
महाभूत विषय पसार है ॥
रजहुते इन्द्री दश पृथक पृथक भई सत्त्वहुते
मनआदि देवता विचार है ।
ऐसे अनुक्रम करि शिष्यसों कहत गुरु सुन्दर
सकल यह मिथ्या भ्रम जार है ॥

प्रश्न—चौताला

मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आप है कि
मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है ।
मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप इन्द्री है कि
अन्तरकरण है वैठो है कि गौन है ॥

मेरो रूप त्रिगुण कि अहङ्कार महत्तत्त्व प्रकृति
पुरुष किधौं बोले है कि मौन है ।
मेरो रूप स्थूल है कि सूक्ष्म आहि मेरो रूप
सुन्दर पूछत गुरु मेरो रूप कौन है ॥

उत्तर—चौताला

तू तो कछु भूमि नाहि अप तेज वायु नाहि
व्योम पञ्च विषय नाहि सो तो भ्रम कूप है ।
तू तो कछु इन्द्री अरु अन्तःकरण नाहि
तीन गुणहु तू नाहि कोउ छांह धूप है ॥
तू तो अहङ्कार नाहि पुनि महतत्त्व नाहि
प्रकृति पुरुष नाहि तू तो सो अनूप है ।
सुन्दर विचार ऐसे शिष्यसौं कहत गुरु नाहि
नाहि करते रहे सोई तेरो रूप है ॥

२

तेरो तो स्वरूप है अनूप चिदानन्द घन देह तो
मलिन जड़ यौं विवेक कीजिये ।
तू तो निःसङ्ग निराकार अविनाशी अज देह तो
विनाशवन्त ताहि नहि धोजिये ॥
तू तो षड़उन्तर हित सदा एक रस देहके
विकार सब देह सिर दीजिये ।
सुन्दर कहत यौं विचार आपु भिन्न जानि
परकी उपाधि कहा आप वैर कीजिये ॥

३

देहहू नरक रूप दुःख को न वार पार देहहू
स्वरगरूप झूंठो सुख मान्यौ है ।
देहहू को बन्ध मोच देहहू अशोच शोच
देहहू क्रियाकर्म शुभाशुभ ठान्यौ है ॥
देहहू में और देह स्तो ह्वै विलास करै
ताहीकौं समुझि चित्त आतमा बखान्यौ है ।
दीउ देहतें अतीत दोउको प्रकाश कहै
सुन्दर चैतन्य रूप न्यारो करि जान्यौ है ॥

४

देह हले देह चले देह हो सौं देह मिले
देह खाइ देह पीवै देहहो भरतु है ।
देहहो हिवार गरै देहहो पावक जारै
देह रणमाझ जूझि देहहू परतु है ॥
देहहू अनेकभांति विविधि करम करै चुम्बक को
सत्ता पाइ लोह ज्यौं फिरतु है ।
आत्मा चैतन्य रूप व्यापक साक्षी अनूप
सुन्दर कहत सो तो जन्मे न मरतु है ॥

५

देहको न देह कछू देहको ममत्व छाड़ देह तो
दमामा दिये देह देहजात है ।
घट तो घटत घरो घट नाश होत घट घटके गयेतें
घटको न फेरि बात है ॥
पिण्ड पिण्ड माहि पिण्ड पिण्ड कोउ पावत है
पिण्ड पिण्ड खात पुनि पिण्डहीको पात है ।
सुन्दर न होइ जा सौं सुन्दर कहत जग सुन्दर
चैतन्य रूप सुन्दर विख्यात है ॥

प्रश्नोत्तर—चौताला

देह यह किनको है देह पञ्चभूत निको
पञ्चभूत कौन तें है तामस अहङ्कार ते।
अहङ्कार कौन तें है जासौं कहै महत्तत्
कौन महत्तत्व तें है प्रकृति मझारते ॥
प्रकृति ह्व कौन तें है पुरुष है जाको नाम पुरुष सो
कौन तें है ब्रह्म निराधारते ॥
ब्रह्म अब जान्यौ हम जान्यौ है तो निश्चय करि
निश्चय हम कियो है तो चुप सुख हारते ॥

१

एक घट माहि सुगन्ध जल भरि राख्यौ एक घट
माहि तो दुर्गन्ध जल भरो है ।
एक घट माहो पुनि गङ्गोदक राख्यौ आनि
एक घट माहो आनि मदिराउ करो है ॥
एक घृत एक तेल एक माहि लघु नीत सब हो
में सविता को प्रतिबिम्ब परो है ।
तैसीहो सुन्दर अंच नोच मध्य एक ब्रह्म देह
भेद देखि भिन्न भिन्न नाम धरो है ॥

३

भूमि परे आप आपहूके परे पावक है
पावकके परे पुनि वायु हु वहत है।
वायु परे व्योम व्योमहूके परे इन्द्रीदश
इन्द्रिनके परे अन्त:करण रहतु है॥
अन्त:करण परे तीन गुण अहङ्कार
अहङ्कार परे महत्तत्त्व को लहतु है।
महत्तत्त्व परे मूल माया माया परे ब्रह्म
ताही ते परात्पर सुन्दर कहतु है॥

४

भूमि तो विलीन गन्ध गन्धहु विलीन आप आपहु
विलीन रस रस तेज खात है।
तेज रूप रूप वायु वायुहु स्पर्शलीन सो स्पर्श
व्योम सह तमही विलात है॥
इन्द्रिय दश जमन देवता विलीन सत्व तीन गुण
अहं महत्तत्त्व गिल जात है।
महत्तत्त्व प्रकृति प्रकृति हू पुरुष लीन
सुन्दर पुरुष जाइ ब्रह्ममें समात है॥

५

आत्मा अचल शुद्ध एक रस रहे सदा देह
व्यवहार नमें देहही सो जानिये।
जैसे शशिमण्डल अभङ्ग न हो भङ्ग होहि
कला आवै जाइ घट बढ़ि सो वखानिये॥
जैसे द्रुम निश्चल नदीके तट देखियत
नदीके प्रवाह माहि चलतो सो मानिये।
तैसे आत्मा अतीत देहकों प्रकाशत है
सुन्दर कहत यों विचार भ्रम भानिये॥

६

आत्मा शरीर दोउ एक मेक देखियत जब लगि
अन्त:करण में अज्ञान है।
जैसे अंधियारी रैन घर में अंधेरो होइ आंखनको
तेज ज्यों को त्यों ही विद्यमान है॥
यदपि अंधेरे माहि नैन को न सूझै कछू तदपि
अंधेरे सों अलितही वखान है।
सुन्दर कहत तौ लो एकमेक जानत है जौ लौं
नहि प्रगट प्रकाश ज्ञान भान है॥

७

देह जड़ देवल में आत्मा चैतन्य देव याही को
समुझि कर या सो मन लाइयें।
देवल को विनसत वार नहि लागि कछु देव तो
सर्व्या अभङ्ग देवल में पाइये॥
देवको सकतिकर देवलको पूजा होइ भोजन
विविधि भांति भोगहु लगाइये।
देवल ते न्यारा देव देवल में देखियत सुन्दर
विराजमान और कहां जाइये॥

८

प्रीति सी न पाती कोउ प्रेम सो न फल और
चित्त सो न चन्दन सनेह सो न सेहरा।
हृदय सो न आसन सहज सो न सिंहासन
भावसो न सेज और शून्य सो न गेहरा॥
शील सोर प्राण नाहि ध्यान सो न धूप आन
ज्ञान सो न दीपक अज्ञानतम केहरा।
मनसो न माला कोउ सोहं सो न जाप और
आत्मा सो देव नाही देह सो न देहरा॥

९

श्वासो श्वासो राति दिन सोहं सोहं होइ
जाप याही माला वार वार दृढ़के धरतु है।
देह परे इन्द्री परे अन्त:करण परे एकही
अखण्ड जाग तापुकों हरतु है॥
काठको रुद्राक्षको और सूतहीको माला पुनि
इनके फिराये कौन कारज सरतु है।
सुन्दर कहत तातें आत्मा चैतन्य रूप आपुको
भजन सो तो आपुही करतु है॥

१०

छीर नीर मिलि दोउ एकठेइ होइ रहे नीर
छाड़ि हंस जैसे छीरको गहतु है।

कञ्चन में और धातु मिलि करि श्रान घरो शुद्ध
करि कञ्चन सुनार ज्यों लहतु है ॥
पावकहु दारु मध्य दारुही सो होइ रह्यो
मथि करि काढ़े शाही दारु को दहतु है।
तैसेही सुन्दर मिल्यो श्रात्मा अनात्मा सो भिन्न
भिन्न करिए सुतो सांख्य यों कहतु है ॥

११

अन्नमय कोष सुतो पिण्ड है प्रगट यह प्राणमय
कोष पञ्चवायु हु वखानिये।
मनोमय कोष पञ्च इन्द्रिय प्रसिद्ध मान पञ्च ज्ञान
इन्द्री विज्ञान कोष जानिये ॥
जाग्रत स्वपन विषे कहिये चत्वार कोष
सुषुपतिहु माहि कोष आनन्दमय मानिये।
पञ्चकोष आत्माको जीवनाम कहिये है
सुन्दर शङ्कर मास सांख्य यह आनिये ॥

१२

जाग्रत अवस्था जैसे सदन में बैठियत तहां कछु
होइ ताहि भली भांति देखिये।
स्वप्न अवस्था ज्यों वोवरे में बैठे जाइ रहे रहे
उहां उको वस्तु सब लेखिये ॥
सुषुप्ति भोंहरे में बैठे ते न सूझ परे महा अन्ध
घोरतम कछु वन पेखिये।
व्योम अनुस्यूत घर वोवरे भोंहरे माहि सुन्दर
साक्षी स्वरूप तुरिया विशेखिये ॥

१२

जाग्रतके विषे जीव नैननिमें देखियत विविधि
व्योहार सब इन्द्रिय गहतु है।
स्वपनहु माहि पुनि वैसो ही व्योहार होत नैन
नितें आइ करि कण्ठमें रहतु है ॥
सुषुप्ति हृदयमें विलीन होइ जात जब जाग्रत
स्वपनको तो सुध न लहतु है।
तीनहु अवस्था की साक्षी जब जाने आप
तुरिया स्वरूप वह सुन्दर कहतु है ॥

विहारी—यत्

जाग्रत रूप लिये सब तत्त्वनि इन्द्रिय द्वार
करै व्यवहारो।
स्वप्न शरीर भ्रमै नव तत्त्व को मानत है
सुख दुःख अपारो ॥
लीन सबै गुण होइ सुषोपति जानै नहीं कछु
घोर अंधारो।
तीन की साक्षी रहे तुरीया तत्त्व सुन्दर सोइ
स्वरूप हमारो ॥

२

भूमिते सूक्ष्म आपको जानहु आपते
सूक्ष्म तेजको अङ्गा।
तेजते सूक्ष्म वायु वहे नित वायुते सूक्ष्म
व्योम उतङ्गा ॥
व्योमते सूक्ष्म हैं गुण तीनहु ताते अहं
महतत्त्व प्रसङ्गा।
ताहुतें सूक्ष्म मूल प्रकृति जो मूलते सूक्ष्म
ब्रह्म अभङ्गा ॥

३

ब्रह्म निरन्तर व्यापक अग्नि स्वरूप
अखण्डित है सब माहीं।
ईश्वर पावक राशि प्रचण्ड जु सङ्ग उपाधि
लये वर ताहीं ॥
जीव अनन्त मसाल चिराग सो दीप पतङ्ग
अनेक दिखाहीं।
सुन्दर द्वैत उपाधि मिटे जब ईश्वर जीव
जुदे कछु नाहीं ॥

४

ज्यों नर पावक लोह तथावत पावक लोह
मिले सु दिखांहीं।
चोट अनेक परे घनकी सिर लोह बढ़े
कछु पावक नांहीं ॥
पावक लीन भयो अपने घर शीतल लोह
भयो तब तांहीं।

त्यौं यह आतम देह निरन्तर सुन्दर भिन्न रहे
मिलि मांही ॥

बहार—यत्

आतम चेतन शुद्ध निरन्तर भिन्न रहे
कहुं लिप्त न होई।
है जड़ चेतन अन्त:करण जु शुद्ध अशुद्ध
लिये गुण दोई ॥
देह अशुद्ध मलीन महा अति हाल न
चाल सके पुनि वोई।
सुन्दर तीन विभाग किये विनु भूलि परे
भ्रमते सब कोई ॥

बिहारी-बिहाग—यत्

ब्रह्म अरूप अरूपी पावक व्यापक युगल
न दीसत रङ्ग।
देह दारुतें प्रगट देखियत अन्त:करण
अग्नि है अङ्ग ॥
तेज प्रकाश कल्पना तौ लगि जौ लगि रहे
उपाधि प्रसङ्ग।
जहांके तहां लीन पुनि होई सुन्दर दोऊ
सदा अभङ्ग ॥

२

देह शराव तैल पुनि मारुत बातो अन्त:करण
विचार।
प्रगट ज्योति यह चेतन दीसे जाते भयो
सकल उजियार ॥
व्यापक अग्नि मथन करि जोयें दीपक
बहुत भांति विस्तार।
सुन्दर अद्भुत रचना तेरी तूंही एक अनेक प्रकार ॥

३

तिल में तैल दुग्ध में घृत है दारुमाहि पावक
पहिचान।
पुहप मांहि ज्यो प्रगट वासना ईखमाहि
रस कहत वखान ॥
पोस्ता माहि अफोम निरन्तर वनस्पति
में शहद प्रमान।
सुन्दर भिन्न मिल्यो पुनि दीसत देह
माहि यो आतम जान ॥

४

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनौ अन्त:करण अवस्था पावे।
प्राण चले जाग्रत अरु सुपनै सुषुप्ति में पुनि
अहनिंश धावैं ॥
प्राण गए तें रहे न कोऊ सकल देखते घाट विलावै।
सुन्दर आत्म तत्त्व निरन्तर सो कतहूं कहुं
जाइ न आवै ॥

५

पंद्रह तत्त्व स्थूल कुम्भ में सूक्ष्म लिङ्ग भरो ज्यौं तोय।
इहां जीव उहां आभा दीसे ब्रह्म इन्दु
प्रतिविम्बे दोइ ॥
घट फूटे नल गयो विलय ह्वै अन्त:करण
कहे नहि कोइ।
तब प्रतिविम्ब मिले शशि विम्बहि सुन्दर जीव
ब्रह्ममय होइ ॥

मनोहरछन्द—यत्

जैसे व्योम कुम्भके बाहिर अरु भीतर ज कोउ नर
कुम्भकी हज़ार कोस लै गयो।
ज्योंही व्योम इहां सोही उहां पुनि अखण्ड
इहां न विछोह न तो उहां मेल है भयो ॥
कुम्भ तो नयो पुरानो होइ के विनस जाइ व्योम तो
न ह्वै पुरानो नतौ कछु है नयो।
तैसेही सुन्दर देह आवे रहै नाश होइ आत्मा
अचल अविनाशी है अनामयो ॥

२

देहके संयोग होते शीत लगे घाम लगे देहके
संयोग होते क्षुधा तृषा पौनकों।
देहके संयोग कहे सुखतें अनेक वात देहके
संयोग ही पकरि रहे मौनकों ॥

देहके संयोग होते कटुक मधुर स्वाद देहके
संयोग कहे खाव्यो खारो लोनकों ।
देहके संयोग होते सुखमाने दुखमाने देहके
संयोग गए सुखदुःख कोन कों ॥

२

आपुकी प्रशंसा सुनि आपुही खुशाल होइ
आपुही की निन्दा सुनि आपु मुरझाय है ।
आपुही कों सुख मानि आपु सुख पावत है
आपुही कों दुःखमानि आपु दुःख पाय है ॥
आपुही की रक्षा करि आपुही को घात करे आपुही
हत्यारो होइ गङ्गा जाइ न्हाय है ।
सुन्दर कहत ऐसे देह होको आपु मानि निज रूप
भूलि के करत हाय हाय है ॥

विचारको अङ्ग
मनीहरछन्द—चौताला

प्रथम श्रवण करि चित्त एकाग्र धरि गुरु मन्त्र
आगम कहे सोई धारिये ।
दुतीय मनन वाखारही विचार देखे जोई कछु सुने
ताहि फेरिके सभारिये ॥
तृतीय ताही प्रकार निदिध्यास नीकें करि निहसङ्ग
विचरिके अपनपो तारिये ।
साक्षात्कार याही साधन करत होइ सुन्दर कहत
द्वैत बुद्धि यों निवारिये ॥

२

देखे तो विचार करि सुने तो विचार करि बोले तो
विचार करि करे तो विचार है ॥
खाइ तो विचार करि पीवे तो विचार करि सोवे तो
विचार करि तोहि तो विचार है ।
बैठे तो विचार करि उठे तो विचार करि चले तो
विचार करि सोहि मतिसार है ।
देइ तो विचार करि लेइ ते विचार करि सुन्दर
विचार करि याही निरधार है ॥

२

एकही विचार करि सुखदुःख सम जाने एकही
विचार करि मन सब धोई है ।
एकही विचार करि संसार समुद्र तरे एकही
विचार करि पार गति होई है ॥
एकही विचार करि बुद्धि नाना भाव तजे एकही
विचार करि दूसरो न कोई है ॥
एकही विचार करि सुन्दर सन्देह मिटे एकही
विचार करि एक ब्रह्म जोई है ।

—इन्द्रवज्रछन्द—चौताला

रूपको नाश भयो कछु देखिये रूप तो रूपहि माहि
समावै।
रूपको मध्य अरूप अखण्डित सो तो कछू कहुँ
जाइ न पावै॥
बीच अज्ञान भयो नव तत्त्वको वेद पुराण सबै
कोउ गावै।
सोउ विचार करै जब सुन्दर सोधत ताहि कहूँ
नहि पावै॥

२

भूमि सु तौ नहि गन्धको छांड़त नीर सु तो रसतै
नहि न्यारो।
तेज सुतो मिलि रूप रह्यो पुनि वायु स्पर्श सदा
सु पियारो॥
व्योम रु शब्द जुदे नही होत सु ऐसे ही अन्तःकरण
विचारो।
ये नव तत्त्व मिले पुनि तत्त्वनि सुन्दर भिन्न
स्वरूप हमारो॥

२

क्षीण सुपुष्ट शरीर को धर्म जु शीतल उष्ण जरा
मृत्यु ठानै।
भूख तृषा गुण प्राणकों व्यापत शोकरु मोह उभय
मत भानै॥
बुद्धि विचार करै निशिवासर चित्त चितैसु अहं
अभिमानै।
सर्व को प्रेरक सर्व को साक्षी सुन्दर आपको
न्यारो हो जानै॥

४

रूप पराकी न जानि परै कहु उठत है जिहि
मूलतै ज्ञानी ।
नाभि विषय मिलि समस्वर निसौं पुरुष संयोग
पश्यंति वखानी ॥
नाद संयोग हृदय पुनि कण्ठजु मध्य माया हो
विचारती जानी ।
अक्षरभेद लिये मुखद्वार सु बोलत सुन्दर वै
खरी वानी ॥

५

ज्यौं कोउ रोग भयो नरके घट वैद्य कहै यह
वायु विकारा ।
कोउ कहै ग्रह आइ लगी सब पुण्य किये कछु
होइ उवारा ॥
कोई कहै यह चूक पड़ी कछु देवनि दोष कियो
निरधारा ॥
तैसेंही सुन्दर तन्त्रनिकै मत भिन्न हि भिन्न कहै
जु विचारा ।

६

ये विषयो तम पूरि रहे तिनकौं रजनी महिं
बादर छायौ ।
कोउ सुमुक्षु किये गुरुदेव तिन्है भय युक्त सुशब्द
सुनायौ ॥
बादर दूरि भये उनकै पुनि तारनि सौ रज्जु
सर्प दिखायौ ।
सुन्दर सूर्य प्रकाशत ही भ्रम दूरि भयो रज्जु
को रज्जु पायौ ॥

७

कर्म शुभाशुभको रजनी पुनि अर्ध तमोमय अर्ध
उजारो ।
भक्ति सुता यह है अरुणोदय अन्त निशादिन
मध्य विचारो ॥
ज्ञान सुभान सदोदित वासर वेद पुराण कहै
जु पुकारो ।
सुन्दर तीन प्रभाव वखानत यौं निश्चय समुझो
विधि सारो ॥

मनोहर छन्द

काफ़ी—तिताला

देहहू कौं आपु मान देहहू सो होइ रह्यौ जड़ता
अज्ञानतम शूद्र सोई जानिये ।
इन्द्रिनिकै व्यापारनि अत्यन्त निपुण बुद्धि तमोरज
दुहुंकरि वैश्यहु प्रमानिये ॥
अन्त:करण माहि अहङ्कार बुद्धि जाकै रजगुणबुद्धि
जानि क्षत्रिय पहिंचानिये ।
सत्वगुण बुद्धि एक आत्मा विचार जाकै सुन्दर कहत
वह ब्राह्मण वखानिये ॥

२

आत्माके विषे देह आइ करि नाश होइ आत्मा
अखण्ड सदा एकइ रहतु है ।
जैसे साँप कञ्चुकी कौं लिये रहै कोउ दिन जीरण
उतारि करि नूतन गहतु है ॥
जैसे द्रुमहुंके पत्र फूल फल आइ होत ताहीके गए
ते पुनि औरहु लहतु है ।
जैसे व्योममाहि अभ्र होइ कैं विलाइ जात ऐसो
सो विचार कछु सुन्दर कहतु है ॥

३

खरी को डरो सौं अंक लिखके विचारियत
लिखत लिखत वह डरो घिसि जात है ।
लेखो समुझो है यश समुझि परो है तब जोई कछु
सही भयो सोइ ठहरात है ॥
दारु ही सो दारु मथ पावक प्रगट भयो वहै
दारु जारि करि पावक समात है ।
तैसे ही सुन्दर बुद्धि ब्रह्मको विचार करि करत
करत वह बुद्धि हु विलात है ॥

वसन्त—चौताला

आपुकों समुझि देखि आपुही सकल माहि
आपुहीमें सकल जगत देखियतु है।
जैसे व्योम व्यापक अखण्ड परिपूरण है बादर
अनेक नानारूप लेखियतु है॥
जैसे भूमि घट जल तरङ्ग पावक दीप वायुमें
बघूरो योंही विश्व देखियतु है।
ऐसेही विचारतें विचारहु विलीन होइ सुन्दरइ
सुन्दर रहतु पेखियतु है॥

२

देहको संयोग याइ जीव ऐसो नाम धरो
घटके संयोग घटाकाश ज्यों कहायो है।
ईश्वर हु सकल विश्व मैं विराजमान मठके
संयोग मठाकाश नाम पायो है॥
महदाकाश माहि घट मठ देखियत बाहिर
भीतर एक गगन समायो है।
तैसेही सुन्दर ब्रह्म ईश्वर अनेक जीव त्रिविध
उपाधि भेद ग्रन्थनि में गायो है॥

प्रश्न—चौताला

देह दुःख पावै किधौं इन्द्री दुःख पावै किधौं
प्राण दुःख पावै जब लहै न अहार कौ।
मन दुःख पावै किधौं बुद्धि दुःख पावै किधौं
चित्त दुःख पावै किधौं दुःख अहङ्कार कौ॥
गुण दुःख पावै किधौं सूत्र दुःख पावै किधौं
प्रकृति दुःख पावै किधौं पुरुष अधार कौ।
सुन्दर पूछत कछू जानि न परत तातें कौन
दुःख पावै गुरु कहौ या विचार कौ॥

उत्तर—चौताला

देहको तो दुःख नाहि देह पञ्चभूत निको
इन्द्रियको दुःख नाहि दुःख नाहि प्राणको।
मनहुको दुःख नाहि बुद्धिहुको दुःख नाहि
चित्तहुको दुःख नाहि दुःख अभिमानको॥
गुणनिको दुःख नाहि सूत्रहुको दुःख नाहि
प्रकृतिको दुःख नाहि दुःख न पुमानको।
सुन्दर विचारि ऐसे शिष्य सों कहत गुरु दुःख
एक देखियत बीचके अज्ञानको॥

२

प्रथवी भाजन अङ्ग कनक कटक पुनि जलहु
तरङ्ग दोउ देखि कै बखानिए।
कारण कारज ये तो प्रगट हि स्थलरूप ताहि तें
नजर माहि देखि करि आनिए॥
पावक पवन व्योम ये तो नहि देखियत दीपक
बघूरा अभ्र प्रत्यच्छ प्रमानिये।
आत्मा अरूप अति सूक्ष्मतें सूक्ष्म है सुन्दर
कारण तातें देह मैं न जानिये॥

३

जैनमत उह जिन राजकों न भूलि जाइ दान
तपशील सांचो भावना तें तरिये।
मनवचकाय शुद्ध सब सौ दयाल रहो दोष बुद्धि
दूरि करि दया उर धरिये॥
बोधि नाम तब जब मनको निरोध होइ बोधिको
विचार सोधि आत्माको करिये।
सुन्दर कहत ऐसे जीवत हो मुक्ति होइ मुयेते
मुकति कहै तिन्हें परहरिये॥

४

देह वोर देखिये तो देह पञ्चभूत निको
ब्रह्मा और कीट लगि देहइ प्रमान है।
प्राण वोर देखिये तो प्राण सबही को एक क्षुधा
अरु तृषा दोउ व्यापत समान है॥
मन वोर देखिये तो मनको स्वभाव एक
सङ्कल्प विकल्प करि सदाइ अज्ञान है।
आत्मा विचार किये आत्माहि दोसे एक सुन्दर
कहत कोउ दूसरो न आन है॥

ब्रह्म निष्कलङ्क अङ्ग
मनोहरछन्द—यत्

एक कोउ दाता गाय ब्राह्मणको देत दान
एक कोउ दयाहीन मारत निःशङ्क है।

एक कोउ तपसी तापस्या माहि सावधान एक
काउ कामी क्रोड़े कामिनीके अङ्ग है ॥
एक कोउ रूपवन्त अधिक विराजमान एक कोउ
कोढ़ी कोढ़ चुवत करङ्ग है ।
आरसी में प्रतिविम्ब मवही को देखियत
सुन्दर कहत एक ब्रह्म निषकलङ्क है ॥

२

रविके प्रकाश तें प्रकाश होत नेत्र निको
सब कोउ शुभाशुभ कर्मको करतु है ।
कोउ यज्ञ दान जप तप यम नेम व्रत कोउ इन्द्री
वस करि ध्यानको धरतु है ॥
कोउ परदारा परधनको तकत जाइ कोउ हिंसा
करिके उदरकौं भरतु है ।
सुन्दर कहत ब्रह्म साक्षीरूप एक रस वाही
में उपजि करि वाही में मरतु है ॥

३

ऐसे जन्तु जलमें नहीं उतपन्न होहि सब जलही में
विचरत जलके अधार है ।
जलही में क्रीड़त विविध व्यवहार होत काम
क्रोध लोभ मोह जलमें संसार है ॥
जलको न लागे कछू जीवनके राग द्वेष उनही
को क्रिया कर्म उनहीको लार है ।
तैसेही सुन्दर यह ब्रह्म में जगत् सब ब्रह्म
को न लागे कछु जगत विकार है ॥

४

स्वेदज जरायुज अण्डज उद्भिज पुनि चारि खानि
तिनको चौराशी लाख जन्तु है ।
जलचर स्थलचर व्योमचर भिन्न देह पञ्चभूत
भूत निको उपजि खवंत है ॥
शीत घाम पवन गगन में चलत आइ गगन
अलिप्त जामें मेघउ अनन्त है ।
तैसेही सुन्दर यह सृष्टि एक ब्रह्म माहि
ब्रह्म निषकलङ्क सदा जानत महंत है ॥

आत्मा अनुभव अङ्ग—लावनी

है दिल में दिलदार सही अँखिया उलटी करि
ताहि चितैये ।
आव में खाक में बाद में आतश जान में
सुन्दर हाथ जनैये ॥
नूर में नूर है तेज में तेज है ज्योति में
ज्योति है मिल मिल जैये ।
क्या कहिये कहते न बने कछू जो कहिये
कहते ही लजैये ॥

२

जासौं कहूं सब में वह एक है ता सो कैसो है
आंखि दिखैये ।
जो कहूं रूप न रेख तिसे कछु तौ सब झूंठके
माने कहैये ॥
जो कहुं सुन्दर नैन नि मांझि तौ नैन हु
वैन गये पुनि हैये ।
क्या कहिये कहते न बने कछु जो कहिये
कहते ही लजैये ॥

३

होत विनोद जितो अभि अन्तर सो सुख
आपनो आप ही पैये ।
वाहिर को उमग्यो पुनि आवत कण्ठते
सुन्दर फेर पठैये ॥
स्वादन रेवन वेरो न जाहि मनो गुड़ गूंगहि
ज्यो नित खैये ।
क्या कहिये कहते न बने कछु जो कहिये
कहते ही लजैये ॥

४

व्योम सो सौम्य अनन्त अखण्डित आदि न अन्त
सुमध्य कहां है ।
को परिमाण करे परिपूरण द्वैत अद्वैत
कछू न जहां है ॥
कारण कारज भेद नहीं कछू आपु में आपुही
आपु तहां है ।

सुन्दर दीसत सुन्दर माहि सु सुन्दरता कहै
कौन उहां है ॥

प्रश्नोत्तर—लावनी

एक कि दोय न एक न दोय उहीं कि इहीं
न उहीं न इहीं है।
शून्य कि स्थूल न शून्य न स्थूल जहीं कि तहीं
न जहीं न तहीं है ॥
मूल कि डाल न मूल न डाल वहीं कि महीं
न वहीं न महीं है।
जीव कि ब्रह्म न जीव न ब्रह्म तो है कि नहीं
कछु है कि नहीं है ॥

२

एक कहूं तो अनेक सो दीसत एक अनेक नहीं
कछु ऐसो।
आदि कहूं तोही अन्तहु आवत आदि न अन्त
न मध्य सु कैसो ॥
गोप कहूं तो अगोप कहा यह गोप अगोप न
जभो न वैसो।
जोई कहूं सोइ है नही सुन्दर है तो सही
परि जैसे को तैसो ॥

मनोहरछन्द—लावनी

एक जु कहै कोउ एक ही प्रकाशत है दोइ
जो कहै कोउ दूसरो न देखिये।
अनेक जो कहै कोउ अनेक भासै ताहि को
जाको जैसो भाव ता को तैसेहि विशेखिये ॥
वचन विलास कोउ कैसे हो बखान करौ व्योम
माहि चित्र कहूं कैसे करि लेखिये।
अनुभव किये तें एक दोइ न अनेक कछु सुन्दर
कहत ज्यौं को त्यौं ही ताहि पेखिये ॥

२

वचनह वेद विधि वचनह शास्त्र पुनि वचनह
स्मृति अरु वचन पुरान जू।
वचनह और ग्रन्थ वचनह व्याकरण वचनह
काव्य छन्द नाटक बखान जू ॥
वचनह संस्कृत वचनह प्राकृत वचनह भाषा
सब जगत में जान जू।
वचनके परे है सुवचन में आवै नाहि
सुन्दर कहत वह अनुभव प्रमान जू ॥

२

इन्द्री नही जानि सकै अल्प ज्ञान इन्द्रिनिको
प्राणहु न जान सकै श्वास आवै जाइ है।
मनहु न जान सकै सङ्कल्प विकल्प कर बुद्धिहु
न जानि सकै सुन्यो सो बताइ है ॥
चित्त अहङ्कार पुनि एउ नहि जानि सकै शब्दहु
न जानि सकै अनुमान पाइ है।
सुन्दर कहत ताहि कोउ नहि जानि सकै दीवा
करि देखिये सु ऐसो नहो लाइ है ॥

इन्द्रवज्रछन्द—लावनी

श्रोत्र न जानत चक्षु न जानत जानत नाही
सु सूंघत घ्राने।
ताहि स्पर्श त्वचा न सकै पुनि जानत नाहि
जू जीभ बखाने ॥
मन नाहि जानत बुद्धि न जानत चित्त अहं
कहि क्यों पहिचाने।
शब्दहु सुन्दर जानि सकै नहीं आत्मा
आपुकौं आपुहि जाने ॥

२

सूर्यके तेजते सूरज दीसत चन्द्रके तेजते
चन्द्र उजासे।
तारेके तेजते तारे उ दीसत बीजुल तेजतें
बीजु प्रकासे ॥
दीपक तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजतें
हीरो उ भासे।
तैसेंही सुन्दर आत्मा जानहु आपके तेजतें
आप प्रकासे ॥

२

कोउ कहै यह सृष्टि स्वभावतें कोउ कहै
यह कर्मतें सृष्टी।

कोउ कहै यह कालउ पावत कोउ कहै
यह ईश्वर तिष्टी ॥
कोउ कहै यह ऐसेही होत है क्यों करि
मानिये बात अनिष्टी ।
सुन्दर एक किये अनुभव विनु जानि
सबै नहो वाहिर दृष्टी ॥

४

कोउ तो मोक्ष आकाश बतावत कोउ तो मोक्ष
पताळकी माहीं ।
कोउ तो मोक्ष कहै पृथवीपर कोउ कहै कहीं
और कहांही ॥
कोउ बतावत मोक्ष शिलापर कोउ कहै
मोक्ष मिटे वरछांही ।
सुन्दर आत्माकी अनुभव विनु और कहुं
कोउ मोक्ष हो नाहो ॥

५

मुये तें मोक्ष कहै सब पण्डित मुयेतें मोक्ष
कहैं पुनि जैना ।
मूयेतें मोक्ष कहैं ऋषि तापस मूयेतें मोक्ष
कहैं शिव सैना ॥
मूयेतें मोक्ष मलेच्छ कहै तेउ धोखेहो धोखे
वखानत वैना ।
सुन्दर आत्माको अनुभव सोई जीवत मोक्ष
सदा सु ववैना ॥

६

जाग्रत तो नहि मेरे विषे कछु स्वप्न सुतो
नहि मेरे विषे हे ।
नाहि सुषोपति मेरे विषे पुनि विश्वहु
तैजस प्राज्ञ पषे हे ॥
मेरे विषे तुरिया नाहि दीसत याहो ते
मेरो स्वरूप अषे हे ।
दूरितें दूरि परेते परे अति सुन्दर कोउ न
मोहि लषे हे ॥

७

कोउ तो कहत ब्रह्म नाभिके कमल मध्य
कोउ तो कहत ब्रह्म हृदय में प्रकास है ।
कोउ तो कहत कण्ठ नासिकाके अग्रभाग
कोउ तो कहत ब्रह्म भ्रकुटो में वास है ॥
कोउ तो कहै ब्रह्म दसए द्वारेके बीच कोउ तो
कहै भौंर गुफा में निवास है ।
पिण्डतें ब्रह्मण्डते निरन्तर विराजे ब्रह्म सुन्दर
अखण्ड जैसे व्यापक आकास है ॥

८

पानि जिन गह्यौ सो तो कहत जखर सो पूंछ
जिन गहो तिन लानसो सुनायो है ।
सूंड़ जिन गहो तिन दगलोकी बांह कह्यौ
दांत जिन गह्यौ तिन सूंसर दिखायो है ॥
काम जिन गह्यौ तिन सूपसो बनाय कह्यौ
पीठि जिन गहो तिन विटेरा बतायो है ।
जैसो है सु तैसो ताहि सुन्दर सयांखो देखे
आंधरे ने हाथो देख झगरो मचायो है ।

९

न्याय शास्त्र कहै प्रगट ईश्वर वाद मीमांसक
शास्त्र महि कर्मवाद कह्यौ है ।
वैशेषिक शास्त्र पुनि कालवाद है प्रसिद्ध पातञ्जल
शास्त्र माहि योगवाद लह्यौ है ॥
सांख्यशास्त्र माहि पुनि प्रकृति पुरुषवाद
वेदान्त शास्त्रमाहि ब्रह्मवाद गह्यौ है ।
सुन्दर कहत षट्शास्त्र माहि भयो वाद जाके
अनुभव ज्ञान सु तो वाद में न वह्यौ है ॥

१०

प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म ऐसे ऋग्वेद कहै अहं
ब्रह्मास्मीति यजुर्वेद यों कहै ।
तत्त्वमसीति सामवेद यों वखानत है अयं
आत्म ब्रह्मवेद अथर्वन लहै ॥

एक एक वचन में तीन पद हैं प्रसिद्ध तिनको
विचार करि अर्थ तत्त्व को गहै।
चारि वेद भिन्न भिन्न सबको सिद्धान्त एक सुन्दर
समुझि कर चुपचाप ह्वै रहै॥

सिन्धु—लावनी

इन्द्रियको भोग जब चाहे तब आइ रहे
नाशवन्त तो तैं तुच्छानन्द यों सुनायो है।
देवलोक इन्द्रलोक विधिलोक शिवलोक वैकुण्ठके
सुखलो गनन्तानन्द गायो है॥
अक्षय अखण्ड एक रस परिपूरण है ताही तैं
पूर्णानन्द अनुभव तैं पायो है।
याहीके अन्तरभूत आनन्द जहालौं और सुन्दर
समुद्र माहि सर्वजल आयो है॥

सिन्धु—ठुमरी

एक तौ मायाविलास जगत प्रपञ्च यह चारि खानि
भेद पाइ द्वैत भास रह्यो है।
दूसरो विषय विलास इन्द्रियके विषय पञ्च
शब्दहु स्पर्श रूप रस गन्ध गह्यो है॥
तीजो वाचक विलास सो तो सब वेद माहि वरनि
कै जहां लगि वचन तै कह्यो है।
चौथो ब्रह्म को विलास तिहूंको अभाव जहां
सुन्दर कहत वह अनुभव तै लह्यो है॥

२

जीवतही देवलोक जीवतही इन्द्रलोक
जीवतही जन तप सत्यलोक आयो है।
जीवतही विधिलोक जीवतही शिवलोक
जीवतही वैकुण्ठलोक जो अकुण्ठ गायो है॥
जीवतही मोक्षशिला जीवतही भिस्त माहि
जीवतही निकट परम पद पायो है।
आत्माको अनुभव जिनकों जीवतही है भयो
सुन्दर कहत तिन संशय मिटायो है॥

३

इच्छाही न प्रकृति न महत तत्त्व अहङ्कार त्रिगुण
न व्योम आदि शब्दादि न कोय है।
श्रवनादि वचनादि देवता न मन आदि सूक्ष्म
न स्थूल पुनि एकही न दोय है॥
स्वेदज न अण्डज जरायुज न उद्भिज पशुहीन
पच्छीहीन पुरुष न जोय है।
सुन्दर कहत ब्रह्म ज्योंको त्योंही देखियत न तो
कछु भयो अब ह्वै न कछु होय है॥

४

छिति भ्रम जल भ्रम पावक पवन भ्रम व्योम
भ्रम तिन के शरीर भ्रम मानिये।
इन्द्री दश तेउ भ्रम अन्तरकरण भ्रम तिनहुके
देवता सुभ्रमते वखानिये॥
सत्व रज तम भ्रम पुनि अहङ्कार भ्रम महतत्त्व
प्रकृति पुरुष भ्रम भानिये।
जोइ कछु कहियेसु सुन्दर सकल भ्रम अनुभव
किये तै एक आत्मा ही जानिये॥

५

भूमि हु विलीन होइ आपहु विलीन होइ तेजहू
विलीन होइ वायु जो वहतु है।
व्योमहु विलीन होइ त्रिगुण विलीन होइ
शब्दहु विलीन होइ अहं जो लहतु है॥
महतत्त्व विलीन होइ प्रकृति विलीन होइ पुरुष
विलीन होइ देह जो गहतु है।
सुन्दर सकल जो जो कहिये सो सो लीन होइ
आत्माको अनुभव आत्मा रहतु है॥

६

मायाकी अपेक्षा ब्रह्म रात्रिकी अपेक्षा दिन जड़को
अपेक्षा करि चेतन वखानिये।
अज्ञानको अपेक्षा ज्ञान बन्धको अपेक्षा मोक्ष
द्वैतको अपेक्षा सुतौ अद्वैत प्रमानिये॥
दुःखको अपेक्षा सुख पापको अपेक्षा पुण्य
झूठको अपेक्षा ताहि सत्य करि मानिये।
सुन्दर सकल यह वचन विलास भ्रम वचन
अवचन रहित सोई ब्रह्म जानिये॥

७

आत्मा कहत गुरु शुद्ध निरवन्ध नित्य सत्य करि
मानै सुनो शब्द प्रमाण है।
जैसे व्योम व्यापक अखण्ड परिपूरण है व्योम
उपमान उपमान सौं प्रमाण है॥
जाकी सत्ता पाइ सब इन्द्रिय चेतन्य होंहि
यहां अनुमान अनुमानहु प्रमाण है।
अनुभव जानै तब सकल सन्देह मिटै
सुन्दर कहत यह प्रत्यक्ष प्रमाण है॥

८

एक घर दोय घर तीन घर चार घर पञ्च घर
तजि जब छठो घर पाइ है।
एक एक घरके आधार एक एक घर एक घर
निराधार आपुही दिखाइ है॥
सुतो घर साचीरूप घर घरमें अनूप ताहु घर
मध्य कोउ दिन ठहराइ है।
ताके परै साक्षी न असाक्षी न सुन्दर कछू
वचनातीत कहूं आइ है न जाइ है॥

९

एकतो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत माया
जाल परसत वेगि बुझजात है।
एक है मनन ज्ञान विज्जल ज्यों घनमध्य माया
जल वरषत तामें न भ्रमात है॥
एक निदध्यास ज्ञान वड़वा अनल सम प्रगट
समुद्र माहि मायाजल खात है।
आत्मानुभव ज्ञान प्रलय अगिनि जैसे सुन्दर
कहत द्वैत प्रपञ्च विलात है॥

कानड़ा—चौताला

चकमक ढ़ोकेतै चमत्कार कछु ऐसो है
जबलौं श्रवण ज्ञान तब हो लों जानिये।
कब मन लागै जब प्रगटै पावक ज्ञान सुलगत
जात वह मनन वखानिये॥
वर्द्धमान भये काठ कर्म नि जरावत है वहे
निदध्यास ज्ञान ग्रन्थन में गानिये।
सकल प्रपञ्च यह जारिके समाइ जात सुन्दर
कहत वह अनुभव प्रमानिये॥

२

भोजनको बात सुनि मनमें मुदित होत मुखमें
न परे जौलौं मेलिये न ग्रास है।
सकल सामग्री आनि पाक कौं करन लाग्यो
मनन करत कब जेऊं यह आस है॥
पाक जब भयो तब भोजन करन लाग्यो मुख में
मेलत जात उहै निदध्यास है।
भोजन पूरण करि तृपत भयो है तब सुन्दर
साकार अनभो प्रकाश है॥

३

श्रवण करत जब सबसो उदास होइ चित्त एकाग्र
आनि गुरुमुख सुनिये।
बैठके एकन्त ठौर अन्तःकरण माहि मनन करत
फेरि वह ज्ञान गुनिये॥
ब्रह्मकों परोक्ष जानि कहत है ब्रह्म सोहं सोहं
होइ सो निदध्यास धुनिये।
इह अनुभव इह कहिये साक्षात्कार सुन्दर
ए लालेते गलि पानो होइ सुनिये॥

४

जब ही जिज्ञास होइ चित्त एकठोरे आनि मृग
ज्यों सुनत नाद श्रवण सो कहिये।
जैसे स्वाति बूंदनु कौं चातक रटत पुनि
ऐसेही मनन करे कब बुन्द लहिये॥
जैसे रात्रिहु चकोर चन्द्रमाकौं ध्यान करे ऐसे
जानि निदध्यास दृढ़ करि गहिये।
सुन्दर साक्षात्कार कीट जैसे होत भृङ्ग उहे
अनुभव उहे स्वस्वरूप रहिये॥

५

काहुकों पूछत रङ्क धन कैसे पाइयत कान
देके सुनत श्रवण सोइ जानिये।

उन कह्यो धन हम देखो है फलानो ठोर
मनन करत भयो कब घर आनिये ॥
फेरि जब कह्यो धन गाड़ो तेरे घर माहि खोदन
लग्यो हे तब निदध्यास ठानिये।
धन निकरो हे जब दरिद्र गयौ हे तब सुन्दर
साक्षात्कार नृपति वखानिये ॥

ज्ञानीको अङ्ग

मेघ—चौताला

जाके हृदयमें ज्ञान प्रकाशत ताको स्वभाव रहे
नहि छानो।
नैनमें बैनमें सेनमें जानिये ऊठत
बैठत हे अलसानो ॥
सो कछु मद्य किये उदगारत कैसेहुं राखि
सकै न अवानो।
सुन्दर दास प्रसिद्ध दिखावत धानको खेत
पयारते जानो ॥

२

बोलत चालत ऊठत बैठत पीवत खातहु
सूंघत श्वासे।
ऊपर तो व्यवहार करे सब भीतर स्वप्न
समान सो भासे ॥
लेकरि तीर पताल को साधत मारत हे
पुनि फेरि अनासे।
सुन्दर देह क्रिया सब देखत कोउ न पावत
ज्ञानी को आसे ॥

३

बैठे तो बैठे चले तो चले पुनि पीछे तो पीछे हो
आगे तो आगे।
बोले तो बोले न बोले तो मौन हो सोवे तो सोवे
अरु जागे तो जागे ॥
खाइ तो खाइ नहो तो नहो जू गहे तो गहे
अरु त्यागे तो त्यागे।
सुन्दर ज्ञानी की ऐसी दशा यह जाने नहो
कछु राग विरागे ॥

कान्हरा—चौताला।

देखत हे पै कछू नहि देखत बोलत हे नही
बोल वखाने।
सूंघत हे नहि सूंघत प्राण सुने सब हे न सुने
यह माने ॥
भक्ष करे अरु नाहि भखे कछु भेटत है नही
भेटत प्राने।
लेत है देत है देत न लेत है सुन्दर ज्ञानीको
ज्ञानी हो जाने ॥

२

काज अकाज भलो न बुरो कछु उत्तम मध्यम
दृष्टि न आवे।
कायिक वाचिक मानस कर्म सु आप विषे न
तिन्हें ठहरावे ॥
हौं करि हौं न कियौ न करौं अब वौ मन
इन्द्रियको बरतावे।
दीसत है व्यवहार विषे नित सुन्दर ज्ञानीको
कोउ न पावे ॥

३

देखत ब्रह्म सुने पुनि ब्रह्महि बोलत हे
सोउ ब्रह्महि वानो।
भूमिहु नीरहु तेजहु वायुहु व्योमहु ब्रह्म
जहां लगि प्रानो ॥
आदिहु अन्तहु मध्यहु ब्रह्महि है सब ब्रह्म
यहो मति ठानो।
सुन्दर ज्ञेय अरु ज्ञानहु ब्रह्महु आत्महु
ब्रह्महो जानत ज्ञानो ॥

४

ऊठत केवल बैठत केवल बोलत केवल
बात कहो है।
जागत केवल सोवत केवल जोवत केवल
दृष्टि नहो है ॥
भूतहु केवल भाव्यहु केवल वर्त्तत केवल
ब्रह्म सही है।

है सब ही अध उरध केवल सुन्दर केवल
ज्ञान कह्यो है ॥

झंझौटी—चौताला

केवल ज्ञान भयो जिनके उर ते अधः उरध
लोक न जाहीं।
व्यापक ब्रह्म अखण्ड निरन्तर वा बिन और
कहूं कछु नाहीं ॥
ज्यौं घट नाश भये घट व्योम सुलीन भयो पुनि
है नभ माहीं।
त्यौं मुनि मुक्त जहां वपु छाड़त सुन्दर मोक्ष
शिला कहूं नाहीं ॥

२

आदि हुतो नहीं अन्त रहे नहीं मध्य शरीर
भयो भ्रमकूपं।
भासत है कछू औरको औरइ ज्यौंरइ रज्जुमें
अहि सीपस्वरूपं ॥
देखि मरीच सच्यो बिच बिभ्रम जानत नाहि
वहै रविभूपं।
सुन्दर ज्ञान प्रकाश भयो जब एक अखण्डित
ब्रह्म अनूपं ॥

मनोहर छन्द

नट मलार—चौताला

अन्तःकरण जाके तमगुण छाइ रह्यो जड़ता
अज्ञान वाकें आलस भय नास है।
रजःगुण को प्रभाव अन्तःकरण जाकें विविधि
करम ताके काम को वास है ॥
सत्वगुण अन्तःकरण जाके देखियत क्रिया करि
शुद्ध वाके भक्ति को निवास है।
त्रिगुणातीत साची तुरया स्वरूप जानि सुन्दर
कहत वाके ज्ञान को प्रकाश है ॥

२

तमगुणि बुद्धि सो तो तवाके समान जैसे ताके
मध्य सूरज की रञ्चक न ज्योत है।
रजोगुणी बुद्धि जैसे आरसीको आभो वोर ताके
मध्य सूर की कछुक उद्योत है ॥
सतोगुणि बुद्धि जैसे आरसीको शुद्ध ओर ताके मध्य
प्रतिबिम्ब सूरज की द्योत है।
त्रिगुणातीत जैसे प्रतिबिम्ब मिटि जाइ सुन्दर
कहत एक सूरजइ होत है ॥

३

सब सौ उदास होइ काढ़ि मन भिन्न करे
ताका नाम कहियत परम विराग है।
अन्तःकरण हुकी वासना निवृत्त होहि ताको
मुनि कहत है उहै बड़ो त्याग है ॥
चित्त एक ईश्वर सो नेकहु न न्यारो होइ उहै
भक्ति कहियत उहै प्रेम मार्ग है।
आप ब्रह्म जगतके एक करि मानै जब सुन्दर
कहत वह ज्ञान भ्रम भाग है ॥

४

कोउ नृप फूलनिकी सेज पर सूतो आइ जब
लगि जाग्यौ तौलो अति सुख मान्यो है।
नींद जब आई तब वाही की सुपन भयो जाइ
परो नरककुण्डमें यौं जान्यो है ॥
अति दुःख पायो परि निकरो न जाइ क्यौं ही
जागि जब परो तब सुपन बखान्यो है।
इह झूठ वह झूठ जाग्रत सुपन दोउ सुन्दर कहत
ज्ञानी सब भ्रम भान्यो है ॥

५

स्वप्नेमें राजा होइ स्वप्नेमें रङ्क होइ स्वप्नेमें
सुख दुःख सत्य करि जान्यो है।
स्वप्नेमें बुद्धिहीन मूढ़ समुझै न कछु सुपनेमें
पण्डित बहु ग्रन्थनि बखान्यो है ॥
स्वप्नेमें बुद्धि में कामी होइ इन्द्रियके वश परो
सुपनेमें अहङ्कार आन्यो है।
सुपन तें जाग्यो जब समुझ परीरै तब सुन्दर कहत
सब मिथ्या करि मान्यो है ॥

६

विधि न निषेद कछु भेद न अभेद कछु क्रिया
　　सो करत दीसे योंही नित प्रति है।
काहु सौं न निकट राखे काहु सौं न दूरि भागे
　　काहु सों न नेरे दूरि ऐसी जाकी मति है॥
रागहीन द्वेष कोउ सोद्र न उछाह दोउ ऐसो
　　विधि रहै कहुं रति न विरति है।
बाहिर व्योहार ठाने मनमें सुपन माने सुन्दर
　　ज्ञानी की कछु अद्भुत गति है॥

७

कामी है न यती है न सूम है न सती है न
　　राजा है न रङ्क है न तन है न मन है।
सोवे है न जागी है न पीछे है न आगे है न ग्रहे है
　　न त्यागी है न घर है न वन है॥
स्थिर है न डोले है न मौन है न बोले है न बांधे है
　　न खोले है न स्वामी है न जन है।
वैसो कोउ होइ तब वाकी गति जाने जब सुन्दर
　　कहत ज्ञानी शुद्ध ज्ञानघन है॥

८

सुनत श्रवण सुख बोलत वचन घ्राण फूलनि
　　सूंघत रूप देखत दृगन है।
त्वक सपरस रस रसना यहत जीभ असन करत
　　अरु चलत पगन है॥
करत गमन पुनि बैठत भवन सेज सोवत रवन
　　अरु वोढ़त नगन है।
जो जो कछु व्यवहार जानत सकल भ्रम सुन्दर
　　कहत ज्ञान गगन मगन है॥

९

कर्म न विकर्म करे भाव न अभाव धरे शुभ हु
　　अशुभ परे याते निधरक है।
वसती न शुन्य जाके पापहो न पुण्य ताके
　　अधिक न न्यून वाके स्वरग नरक है॥
सुख दुःख सम दोउ नीचहो न उच कोउ ऐसो
　　विधि रहै कोउ मिलो न फरक है।
एकही न दोय जाने वन्ध मोक्ष भ्रम माने सुन्दर
　　कहत ज्ञानी ज्ञान में गरक है॥

१०

अज्ञानी को दुःख को समूह जग जानियत
　　ज्ञानी की जगत सब आनन्द स्वरूप है।
नैनहीन कों तो घर बाहिर न सूझ परे जहां
　　जाइ तहां देखे एक अन्धकूप है॥
जाके चक्षु है प्रकाश अन्धकार भयो नाश
　　वाको जहां रहे तहां सूरजको धूप है।
सुन्दर अज्ञानी ज्ञानी अन्तर बहुत आहि वाको
　　सदा राति वाको दिवस अनूप है॥

११

ज्ञान अरु अज्ञानको क्रिया सब एक सोही अज्ञ
　　आशा ओर ज्ञानी आश न निरास है।
अज्ञ जोइ जोइ अरे अहङ्कार बुद्धि धरे ज्ञानी
　　अहङ्कार विनु करत उदास है॥
अज्ञ सुख दुःख दोउ आप विषे मान लेत ज्ञानी
　　सुख दुःख कों न जाने मेरे पास है।
अज्ञको जगत यह सकल सन्ताप कर सुन्दर
　　ज्ञानी कों सार ब्रह्म कों विलास है॥

१२

ज्ञानी लोक संग्रह कों करत व्योहार विधि
　　अन्तःकरण में सुपन कोसो दौर है।
देत उपदेश नाना भांतिके वचन कहि सब कोउ
　　जानत सकल सिरमौर है॥
हस्त न चलन पुनि देह सों करावत है ज्ञानमें
　　गरक नित लिए निज ठौर है।
सुन्दर कहत जैसे दन्त गजराज उके खाइवेके
　　और हो दिखाइवेके और है॥

१३

इन्द्रियको ज्ञान जाके सो तो पशुके समान देह
　　अभिमान खान पानहि सो लीन है।
अन्तःकरण ज्ञान कछुक विचार जाके मानुष
　　व्योहार शुभ कर्मनि अधीन है॥

आत्मा विचार ज्ञान जाके निसि वासर है
सोइ साधु सकल बातनि में प्रवीन है।
एक पर आत्माके ज्ञान अनुभव जाके सुन्दर
कहत वह ज्ञानी भ्रम छीन है॥

१४

जाही ठौर रवि कौ उदय भयो ताही ठौर
अन्धकार भागि गयो गृह वनवास तै।
न तो कछु वनते उलटि आवे घर माहि न तो
घन चली जाइ कनक अवास तै॥
जैसे पछी पांख टूटि जाही ठौर परो आइ
ताही ठौर गिर रह्यो उड़वेको आसतै।
सुन्दर कहत सब मिटि जाइ दौर धूप धोखो
न रहत कोउ ज्ञानके प्रकाशतै॥

१५

जैसे काहु देश जाइ भाषा कहै और सोही समुझि
न कोउ वासों कहे का कहतु है।
कोउ दिन रह करि बोली सीखि उनहीको फेरि
समुझावे तब सब को लहतु है॥
तैसे ज्ञान कहे ते सुनत विपरीत लगे आपो
आपनोइ मत सब कोउ गहतु है।
उनहीके मत करि सुन्दर कहत ज्ञान तब ही तो
ज्ञान ठहराइकें रहतु है॥

१६

एक ज्ञानी कर्मनि में ततपर देखियत भक्तिको
प्रभाव नाहि ज्ञान में गुरक है।
एक ज्ञानी भक्तिको अत्यन्तही प्रभाव लिये
ज्ञान माहि निश्चय करि कर्म सो तरक है॥
एक ज्ञानी ज्ञानही अज्ञान कौ उच्चार करे
भक्ति अरु कर्म इन दुहूंतें फरक है।
कर्म भक्ति ज्ञान तीनो वेदमें वखानि कहे
सुन्दर बतायो गुरु ताहि में मरक है॥

१७

जैसे पछी पगन सो चलत अवनि आइ तैसे
ज्ञानी देह करि कर्म नि करतु है।
जैसे पछी चोंच करि चुगत अहार पुनि तैसे ज्ञानी
उरमें उपासना धरतु है॥
जैसे पछी पङ्ख निसों उड़त गगन माहि तैसे
ज्ञानी ज्ञान करि ब्रह्ममें चरतु है।
सुन्दर कहत ज्ञानी तीनो भांति देखियत ऐसो
विधि जाने सब संशय हरतु है॥

सवैया—चौताला

एक क्रिया करि कर्मनि पावत आदि और
अन्त ममत्व बंध्यो है।
एक क्रिया करि पाक करे जब भोजन लो कछु
अन्न रंध्यो है॥
एक क्रिया मल त्यागत है लघु नीत करे काई
नाहि फंध्यो है।
त्यों यह जानि क्रिया अरु संग्रह सुन्दर
तीन प्रकार संध्यो है॥
जीव नरेश अविद्या निद्रा सुख सज्जा सोयो
करि हेत।
कर्म खवास पुटपुरी लाई ताते वहुविधि
भयो अचेत॥
भक्ति प्रवान जगायो कर गहि आलस भरो
जम्भाई लेत।
सुन्दर अब निद्रा वश नाही ज्ञान जागरण
सदा सचेत॥

२

ज्ञान प्रकाश भयो जिनके उर वे घट क्योंहूं पे
न रहेंगे।
भोड़ल माहि दूरे नहि दीपक यद्यपि वे सुख
मौन गहेंगे॥
ज्यों घनसारहि गोपि छिपावत तोहु सुगन्ध हि
तब्र बहेंगे।
सुन्दर और कहा कोउ जानत बैठेकी वात
बताउ कहेंगे॥

२

ज्ञानी कर्म करै नानाविध अहङ्कार या तन को खोवै।
कर्मनिके फल कछू न वाञ्छै अन्तःकरण
वासना धोवै॥
ज्यों कोउ खेती को जोत तले करि बीज भून
करि बोवै।
सुन्दर कहै सुनो दृष्टान्तहि नागो न्हाय सो
कहा निचोवै॥

अङ्ग विदेहकी

प्रदीप—यत्

भावै देह छूटि जाहु काशी माहि गङ्गा तट
भावै देह छूटि जाहु क्षेत्र मगहरमें।
भावै देह छूटि जाहु विप्रके सदन मध्य भावै
देह छूटि जाहु स्वपचके घरमें॥
भावै देह छुटो देश आरज अनारजमें
भावै देह छूटि जाहु वनमें नगरमें।
सुन्दर ज्ञानीके कछु संसो नाहि रह्यो कोइ
स्वर्ग नरक सब भाजि गयो भरमें॥

२

भावै देह छूटि जाहु आजही पलक माहि भावै
देह रहो चिरकाल जग अन्त जू।
भावै देह छूटि जाहु ग्रीष पावस ऋतु शरद
शिशिर शीत छूटत वसन्त जू॥
भावै दक्षिणायनहु भावै उतरायणहु भावै देह सर्प
सिंह बीजुली हनन्त जू।
सुन्दर कहत एक आत्मा अखण्ड जानि याही
भांति निरसंशय भये सब सन्त जू॥

सवैया—यत्

कै यह देह धरो वन परवत कै यह देह
नदीमें बहो जू।
कै यह देह धरो धरती महि कै यह देह
कृशानु दहो जू॥
कै यह देह निरादर निन्दहु कै यह देह सराह
कहो जू।
सुन्दर संशय दूरि भयो जब कै यह देह चलो
कि रहो जू॥

२

कै यह देह सदासुख सम्पति कै यह देह
विपत्ति परो जू।
कै यह देह निरोग रहो नित कै यह देहहो
रोग चरो जू॥
कै यह देह हुताशन पैठहु कै यह देह
हिवारे गरो जू।
सुन्दर संशय दूरि भयो सब कै यह देह जिवो
कि मरो जू॥

जीवनमुक्तकी अङ्ग

प्रदीप—यत्

प्रीति कि रीति कछू नहि राखत जाति न
पांति नहो कुल गारो।
प्रेमके नेम कहूं नहि दीसत लाज न कान
लग्यो सब खारो॥
लीन भयो हरिसो अभि अन्तर आठहु याम रहै
मतवारो।
सुन्दर कोउ न जान सके यह गोकुल गांव को
पैंड़ोइ न्यारो॥

२

ज्ञान दियो गुरुदेव कृपा करि दूरि कियो भ्रम
खोलि किवारो।
और क्रिया कहि कोन करे अब चित्त लगो
परब्रह्म पियारो॥
पांव विना चलिके तिहि ठाहर पंगु भयो मन
मित्त हमारो।
सुन्दर कोउ न जानि सकै यह गोकुल गांव को
पैंड़ोइ न्यारो॥

३

एक अखण्डित ज्यों नभ व्यापक बाहिर भीतर है
एक सारो।

इष्ट न युष्ट न रूप न रेख न श्वेत न पीत न
रङ्ग है कारो ॥
चकित होइ रहे अनुभव बिन जौ लगि नाहि
न न्यान उजारो ।
सुन्दर कोउ न जान सके यह गोकुल गांव को
पैंड़ोइ न्यारो ॥

४

द्वन्द बिना बिचरै वसुधा पर जा घट आवत ज्ञान
अपारो ।
काम न क्रोध न लोभ न मोह न राग न द्वेष
न म्हारो न थारो ॥
योग न भोग न त्याग न संग्रह देह दशा न
ढकौ न उघारो ।
सुन्दर कोउ न जान सके यह गोकुल गांवको
पैंड़ोइ न्यारो ॥

५

लच्छ अलच्छ अदच्छ न दच्छ न पच्छ अपच्छ न
तूल न भारो ।
झूठ न सांच अवाच न वाच न कञ्चन कांच न
दीन उदारो ॥
ज्ञान अज्ञान न मान अमान न मान गुमान
न जीत न हारो ।
सुन्दर कोउ न जान सके यह गोकुल गांव को
पैंड़ोइ न्यारो ॥

अद्वैत ज्ञानको अङ्ग

प्रश्नोत्तर कान्हरा—चौताला

हो तुम कौन हौं ब्रह्म अखण्डित देह में क्यों
नहो देहके नेरे ।
बोलत कैसे कहो नहीं बोलत जानिये कैसे
अज्ञान ऐ तेरे ॥
दूरि करो भ्रम निश्चय धार कह्यो गुरुदेव
कहौं नित टेरे ।
हो तुम ऐसे ई हूं पुनि ऐ सोइ दोइ भये
नाहि द्वैत है मेरे ॥

२

हौं कछु और कि तू कछु और कि है कछु
और कि सो कछु औरे ।
हूं अरु तू यह है कछु सो पुनि बुद्धि विलास
भये झक झोरे ॥
हूं नहीं तू नहीं है कछु सो नहीं बूझि
बिना जित हो तित दौरे ।
हूं पुनि तू पुनि है कछु सो पुनि सुन्दर व्यापि
रह्यो सब ठौरे ॥

३

उत्तम मध्यम और शुभाशुभ भेद अभेद
जहां लगि जो है ।
दीसत भिन्न तवो अरु दर्पण वस्तु विचारत
एकही लोहै ॥
जो सुनिये अरु दृष्टि परे पुनि वा बिनु
और कह्यो अब को है ।
सुन्दर सुन्दर व्यापि रह्या सब सुन्दर हो मधि
सुन्दर सोहै ॥

४

यौवन एक अनेक भए द्रुम नाम अनन्त जु
जानिहु न्यारो ।
वापी तड़ाग र कूप नदी सब है जल एक सो
देखो निहारो ॥
पावक एक प्रकासत बहुविधि दीपक एक
मसाल हु वारो ।
सुन्दर ब्रह्म विलास अखण्डित खण्डित
भेद कि बुद्धि सुटारो ॥

५

एक शरीर में अङ्ग भए बहु एक धरा पर
धाम अनेका ।
एक शिला मधि कार किये सब चित्र बनाय
धरे टिक टेका ॥
एक समुद्र तरङ्ग अनेकनि कैसेकै कीजिये
भिन्न बिवेका ।

द्वैत कछू नहीं देखिये सुन्दर ब्रह्म अखण्डित
एक को एका ॥

६

ज्यों मृत्तिका घट नीर तरङ्ग ही तेज
मसाल किये जु बहुता ।
वायु बघूरनि गांठ परी बहु बादल व्योम
सु व्योम जिमूता ॥
वृच्छ सुबीज है वीज सुवृच्छ है पूत सु बाप है
बाप सुपूता ।
वस्तु विचारत एक ही सुन्दर ताने रु बाने
तो देखिये सूता ॥

७

भूमिहु चेतन आपहु चेतन तेजहु चेतन
हैं सु प्रचण्डा ।
वायुहु चेतन व्योमहु चेतन शब्दहु चेतन
पिण्ड ब्रह्मण्डा ॥
है मन चेतन बुद्धिहु चेतन चित्तहु चेतन
आहि उदण्डा ।
जो कछु नाम धरे सोइ चेतन सुन्दर चेतन
ब्रह्म अखण्डा ॥

८

एक अखण्डित ब्रह्म विराजत नाम जुदो करि
विश्व कहावे ।
एक ही ग्रन्थ पुराण वखानत एकइ दत्त
वशिष्ठ सुनावे ॥
एकइ अर्ज्जुन उद्धव सों कहि कृष्ण कृपा करि
के समझावे ।
सुन्दर द्वैत कछू मति जानहु एकइ व्यापक
वेद बतावे ॥

मनोहरछन्द—चौताला

शिष्य पुछे गुरुदेव गुरु कहे पूछ शिष्य मेरे
एक संशय है तो क्यों न पूछे अबहो ।
तुम कहो एक ब्रह्म अबहु मैं कहूं एक एक तो
अनेक ताको इह तो भ्रम सबहो ॥
भ्रम यह कौन को है भ्रमहो कों भ्रम भयो
भ्रमहो कों भ्रम कैसे तू न जाने कबहो ।
कैसे करि जानों प्रभु गुरु कहे निश्चय धारि
निश्चय में धाखो अब एक ब्रह्म सबहो ॥

ब्रह्मराग—चौताला

ब्रह्म है ठौरक ठौर दूसरो न कोउ और वस्तुको
विचार किए वस्तु पहिचानिये ।
पञ्चतत्त्व तीन गुण विस्तारे विविध भांति नाम
रूप जहां लगि मिथ्या माय मानिये ॥
शेष नाग आदि देके वैकुण्ठ की लोक पुनि
वचन विलास सब भेद भ्रम भानिये ।
न तो कोउ उरझो न सुरझो कहो सु कौन
सुन्दर सकल यह जवावाद जानिये ॥

२

प्रथमहो देह मेते बाहिर कों चौंक परो
इन्द्रिय व्योहार सुखसत्य करि जान्यो है ।
कोनउ संयोग पाइ सत्गुरु भेट भई उन उपदेश
देके भीतर को आन्यो है ॥
भीतर कों आवतहो बुद्धि को प्रकाश भयो हों
कौन देह कोन जगत किन मान्यो है ।
सुन्दर विचारतहो उपज्यो अद्वैत ज्ञान आपको
अखण्ड एक ब्रह्म पहिचान्यो है ॥

३

सकल संसार विस्तार करि वरनियो स्वर्ग
पाताल मर्त पूरि भ्रम रह्यो है ।
एक तें गिनत गिनि जाइए सो लगि फेरि
करि एक को एक हो गह्यो है ॥
यह नहो यह नहो यह नहो यह नहो रहे
अवशेष सो वेद यों कह्यो है ।
सुन्दर सहो सो विचारि को अपुनपो आपु
में आपकूं आपु हो लह्यो है ॥

४

एक तू दोय तु तीन तू चारि तू पञ्च तू तत्त्व
तें जगत कीयो ।

नाम अरु रूप ह्वै बहुत विधि विस्तारो तुम
विना और कोउ नाहि बोयो ॥
राव तू रङ्क तू दानी तू दीन तू दोइ कार मेल तें
दियो लोयो ।
सकल यह सृष्टि तुम माहि उपजै खिपै कहत
सुन्दर बड़ो विपुल होयो ।

केदारा—चौताला

तोही में जगत यह तूही है जगत माहि मैं अरु
जग माहि भिन्न कहा जो रहो ।
भूमिही ते भाजन अनेक भांति नानारूप
भाजन विचारि देखे एकही है मही ॥
जलतें तरङ्ग भई फेन बुद्बुदा अनेक सो
उ तो विचारे वहे एक जल है सही ।
महापुरुष जेते हैं सब कौ सिद्धान्त एक सुन्दर
खल्विदं ब्रह्म अन्त वेद है कही ॥

२

जैसे इक्षु रसको मिठाई नाना भांति भई फेरि
करि गारे इक्षु रस कौं लहतु है ।
जैसे घृत खोजिकें डरा सौ बन्धन जात पुनि
पिघरेते वहु घृतह रहतु है ॥
जैसे पान जमके पाखानहु सो देखियत सो
पाखान फेरि करि पानी ह्वै वहतु है ।
तैसेही सुन्दर यह जगत हे ब्रह्ममय ब्रह्म सो
जगत मय वेद यों कहतु है ॥

३

जैसे काठ कोर तामें पुतरो बनाइ राखो
जो विचार देखिये तो वहे एक दार है ।
जैसे माला सूतही कि मनिकाहु सूतहीके
भीतर छुयो पुनि सूतहीको तार है ॥
जैसे एक समुद्रके जलही को लोन भयो सो
उ तो विचारे जु वहे जल खार है ।
तैसेही सुन्दर यह जगत सु ब्रह्ममय ब्रह्म सो
जगतमय यही निरधार है ॥

४

जैसे एक लोह के हथियार नानाविध किये
आदि अन्त मध्य एक लोहही प्रमानिये ।
जैसे एक कञ्चन से भूषण अनेक भये
आदि अन्त मध्य एक कञ्चनह जानिये ॥
जैसे मेननके संवारे नर हाथो हय आदि अन्त
मध्य एक मेनह वखानिये ।
तैसेही सुन्दर यह जगतमय ब्रह्म सो ब्रह्ममय
जगत यह निश्चय करि मानिये ॥

५

ब्रह्ममें जगत यह ऐसो विधि देखियत जैसो
विधि देखियत फूलरो मझोर में ।
जैसो विधि गिलम दुलीचोमें अनेक भांति
जैसो विधि देखियत चूनरो उ चोर में ॥
जैसो विधि कांगरेउ कोट पर देखियत
जैसो विधि देखियत बुदबुदो नीरमें ।
सुन्दर कहत लीक हाथ पर देखियत
जैसो विधि देखियत शीतला शरीर में ॥

६

ब्रह्म अरु माया जैसे शिव अरु शक्ति पुनि
पुरुष अरु प्रकृति दोउ वाहि कें सुनाये हैं ।
पति अरु पतनी ईश्वर अरु ईश्वरी उ नारायण
लक्ष्मी हे वचन कहाये हैं ॥
जैसे कोउ अर्द्ध नारी नटेश्वर रूप धरे एक
वीजही तें दोइ दाल नाम पाये हैं ।
तैसेही सुन्दर वस्तु ज्यों हो त्योंही एक रस उभय
प्रकार होइ आपुही दिखाये हैं ॥

ब्रह्मपवनछन्द—चौताला

ब्रह्म निरीह निरामय निर्गुण नित्य निरञ्जन
और न भासे ।
ब्रह्म अखण्डित है अध उरध बाहिर भीतर
ब्रह्म प्रकासे ॥

ब्रह्म हो सूक्ष्म स्थूल जहां लगि ब्रह्म हो
साहब ब्रह्म हो दासै ।
सुन्दर और कछू मति जानहु ब्रह्महो देखत
ब्रह्म तमासै ॥

२

ब्रह्म हो माहि विराजत ब्रह्म हो ब्रह्म विना जिन
औरहो जानौ ।
ब्रह्म हो कुञ्जर कीटहु ब्रह्म हो रङ्क हु ब्रह्महो
ब्रह्म हो रानौ ॥
कालहु ब्रह्म स्वभावहु ब्रह्म हो कर्म हु जीवहु
ब्रह्म वखानौ ।
सुन्दर ब्रह्म विना कछु नाहि न ब्रह्म हो जानि
सवै भ्रम भानौ ॥

३

आदि हुतो सोइ अन्त रहै पुनि मध्य कहा
कछु और कहावै ।
कारण कारज नाम धरे जग कारज कारण
माहि समावै ॥
कारज देखि भयौ चित विभ्रम कारण देखि
विभर्म,विलावै ।
सुन्दर या निश्चय अभि अन्तर द्वैत गये फिर
द्वैत न आवै ।

मनोहरछन्द—चौताला

द्वैत करि देखे जब द्वैत हो दिखाई देत एक
करि देखे जब उहे एक अङ्ग है ।
सूरज कर देखे जब सूरज प्रकाश रह्यो किरण
निकी देखे तौ किरण नाना रङ्ग है ॥
भ्रम जब भयो तब माया ऐसो नाम धरो
भ्रमके गए तें एक ब्रह्म सर्वङ्ग है ।
सुन्दर कहत याकी दृष्टिहो कौ फेर भयो ब्रह्म
और मायाके तौ माथे में न शृङ्ग है ॥

२

श्रोत कछु और नाहि नेत्र कछु और नाहि
नासा कछु और नाहि रसना न और है ।
त्वक कछु और नाहि वाक् कछु और नाहि हाथ
कछु और नाहि पावनको दौर है ॥
मन कछु और नाहि बुद्धि कछु और नाहि चित्त
कछु और नाहि अहङ्कार तौर है ।
सुन्दर कहत एक ब्रह्म विना और नाहि
आपुहो में आपु व्यापि रह्यो सब ठौर है ॥

भ्रान्तिका अङ्ग

मनोहरछन्द—चौताला

कियौ न विचार कछु भनक परो है कान धारि
आइ सुनि कै डरपि विष खायो है ।
जैसे कोउ अनकृते ऐसेहो बुलाइयत वार वोति
गई परि कोउ नहो आयो है ॥
वेदहु वरणि कै जगत् तरु ठाढ़ो कियो अन्त
पुनि दियो जर मूलतें उठायो है ।
तैसेहो सुन्दर याको कोउ एक जाने भेद जगतको
नाम सुनि जगत भुलायो है ॥

२

ऐसोइ अज्ञान कोउ आइके प्रगट भयो दिव्य
दृष्टि दूरि गई देखै चर्मदृष्टि कौं ।
जैसे एक आरसो सदाइ हाथ माहि रहै साम्ह्
नहो देखे फेरि फेरि देखै पृष्टि कौं ॥
जैसे एक व्योम पुनि बादर सो छाय रह्यो व्योम
नहो देखत देखत बहु दृष्टि कौं ।
तैसे एक ब्रह्म हो विराजमान सुन्दर है ब्रह्म कौं
न देखै कोउ देखै सब सृष्टि कौं ॥

३

अनकृतो जगत अज्ञान तें प्रगट भयो जैसे कोउ
बालक वैताल देखि डरो है ।
जैसे कोउ स्वप्नमें देखो है व्याघ्र आइ मुख तें
न आवै बोल ऐसो दुःख पर्यो है ॥
जैसे अन्धयारो रैन जेवरो न जाने ताहि आपु
हित सांप मान भय अति कर्यो है ।
तैसे हो सुन्दर एक ज्ञानके प्रकाश विनु आपु
दुःख पाइ पाइ आपु पचि मर्यो है ॥

४

मृत्तिका समाय रही भाजनके रूप माहि मृत्तिका
को भ्रम मिटि भाजन ही गरी है।
कनक समाई त्यों ही होइ रही आभूषण कनक
न कहै कोउ आभूषण करी है॥
बीजहु समाय करि वृक्ष होइ रही पुनि वृक्षहि
को देखियत बीज नहीं लरी है।
सुन्दर कहत यह योंही करि जानो सब ब्रह्महो
जगत होइ ब्रह्म दूरि रही है॥

५

कहत है देह माहि जीव आइ मोहि रही कहां
देह कहां जीव वृथा चौंक परी है।
बूड़िवेके डर तें तिरन को उपाय करें ऐसे
नाहि जानें यह मृग जल भरी है॥
जेवरी को सांप जैसे सीप विषे रूपो जानें और
ईंको और देखि योंही भ्रम करी है।
सुन्दर कहत यह एकही अखण्ड ब्रह्म ताही
कौं पलटिके जगत नाम धरी है॥

विचार को अङ्ग

मनोहर छन्द—चौताला

वेद को विचार सोई सुनि कै सन्तन सुख आपुहु
विचार करि जोइ धारियतु है।
योगको युकति जानि जगत उदास होइ शून्य
में समाधि लाइ मन मारियतु है॥
ऐसे ऐसे करत करत केते दिन वीते सुन्दर
कहत अजहूं विचारियतु है।
कारो है न पीरो न तो तातो है न सीरो कछू
हाथ न परत तातें हाथ झारियतु है॥

२

मन कौं अगम अति वचन थकित होत बुद्धिहु
विचार करि वहु खोड़ियतु है।
श्रवण सुनि न जाहि नयनहु न देखे ताहि रसना
को रस सरवसु छोड़ियतु है॥
त्वक को परस नाहि घ्राण को न विषय होइ
पगनहु करि जित तित छोड़ियतु है।
सुन्दर कहत अति सूक्ष्म स्वरूप कछू हाथ न
परत तौ हाथ मोड़ियतु है॥

३

गुफा कौं संवारि तहां आसन उ मारि प्राणहु
को घेरि घेरि नाक सौटियतु है।
इन्द्रिय को घेरि करि मनहु को फेरि करि
त्रिकुट में हेरि हेरि हिये छोटियतु है॥
सब छिटकाय पुनि शून्य में समाय तहां समाधि
लगाय पुनि आंखि मोड़ियतु है।
सुन्दर कहत हम औरउ किये उपाय हाथ न
परत तातें हाथ पोटियतु है॥

४

बोले है न मौन धरे बैठे है न गौन करे जागे है
न सोवे सुतो दूरि है न तौरो है।
आवे है न जाइ न तो स्थिर अकुलाइ पुनि
भूखो है न खात कछु तातो है न सीरो है॥
लेत है न देत कछु हेत न कुहेत कछु श्याम है
न श्वेत सु तो रातोइ न पीरो है।
दूबर न मोटो कछु लांबो नहि छोटो ता तें
सुन्दर कहत कहा कांच है न हीरो है॥

५

भूमि है न आप न तो तेज है न ताप न तो
वायुहु न व्योम न तो पञ्च को पसारो है।
हाथ है न पांव न तो नैन है न भाव ना तो रङ्क
है न राव न तो वृद्ध हो न वारो है॥
पिण्ड है न प्राण न तो जान न अजान तो वन्ध
निर्वाण न तो हरवो न भारो है।
द्वैत न अद्वैत न तो भीत न अभीत न तो सुन्दर
कह्यो न जाइ मिल्यो है न न्यारो है॥

धनाश्री-सुलतानी—यत्

पाप न पुण्य न स्थूल न शून्य न बोले न मौन
न सोवे न जागे।

एक न दोय न पुरुष न जोय कहै कहा कोई
न पीछे न आगी ॥
वृद्ध न बाल न कर्म न काल न विश्व विशाल
न जूझै न भागी।
बन्ध न मोक्ष अप्रोक्ष न प्रोक्ष न सुन्दर है
न असुन्दर लागी ॥

२

तत्त्व अतत्त्व कह्यो नहि जात जू शून्य अशून्य
धरै न धरै है।
ज्योति अज्योति न जान सकै कोउ आदि न
अन्त जियै न मरै है ॥
रूप अरूप कछू नही दीसत भेद अभेद करै
न हरै है।
शुद्ध अशुद्ध कहै पुनि कौन जू सुन्दर बोलै न
मौन धरै है ॥

३

खोजत खोजत खोज रहे अरु खोजत है
पुनि खोजहि आने।
गावत गावत गाइ गये बहु गावत है
अरु गाइ है गाने ॥
देखत देखत देखि थके सब दीसै नही कछु
ठौर ठिकाने।
बूझत बूझत बूझिके सुन्दर
हेरत हेरत हेर हिराने ॥

४

पिण्डमें है परि पिण्डलि पै नही पिण्ड परै पुनि
त्यौंही रहावै।
श्रोत्र में है परि श्रोत्र सुनै नही दृष्टि में है
परि दृष्टि न आवै ॥
बुद्धि में है परि बुद्धि न जानत चित्त में है
परि चित्त न पावै।
शब्द में है परि शब्द थक्यौ कहि शब्दहु सुन्दर
दूरि बतावै ॥

५

भूमिहु तैसें हो आपुहु तैसें हो तेजहु तैसें हो
तैसेही पौना।
व्योमहु तैसेही आहि अखण्डित तैसेही ब्रह्म
रह्यो भरि भौना ॥
देह संयोग वियोग भयो जब आयो सु कोन
गयो कहि कौना।
जा कहिये कहते न बनै कछु सुन्दर जानि गह्यो
सुख मौना ॥

६

एकही ब्रह्म रह्यो भरपूरि तौ दूसरो कौन
बतावन हारो।
जो कोउ जीव करै परमाण तौ जीव कहा कछु
ब्रह्म ते न्यारो ॥
जो कहो जीव भयो जग दीसत तौ रवि माहि
कहां कौ अंधारो।
सुन्दर मौन गही यह जानि के कौनहु भांति
नही निरधारो ॥

७

जो हम खोज करैं अभि अन्तर तौ वह खोज
करैही विलावै।
जो हम बाहिर कौ उठि दौरत तौ कछु
बाहिर हाथ न आवै ॥
जो हम काहु कौं पूछत हैं पुनि सोउ अगाध
गगना धावै।
ताही ते कोउ न जान सकै तिहि सुन्दर कौन
सो ठौर बतावै ॥

८

नैन न बैन न सैन न आस न वास न श्वास
न प्यास न याते।
शीत न घाम न ठौर न ठाम न पुर्ष न वाम
न बाप न माते ॥
रूप न रेख न शेष अशेष न श्वेत न पीत न
श्याम न राते।

सुन्दर मौन गहो सिद्ध साधक कौन कहे
उसको मुख बातें ॥

९

वेद थके कहि तन्त्र थके कहि ग्रन्थ थके निशि
वासर गाते।
शेष थके शिव इन्द्र थके पुनि खोज कियौ बहु
भांति विधाते ॥
पीर थके अरु मीर थके पुनि धीर थके बहु
बोलि गिराते।
सुन्दर मौन गहो सिध साधक कौन कहे उसको
मुख बाते ॥

१०

योगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि
रहे फल खाते।
सन्यासी थके वनवासी थके जु उदासी थके
फिर फेरि फिराते ॥
शेखु मसायख और उ लायक थाकि रहे मन
में मुसकाते।
सुन्दर मौन गहो सिध साधक कौन कहे उसको
मुख बाते ॥

इति श्रीसुन्दरदास कृत सुन्दरविलास सवैया सम्पूर्णः।

श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव रागसागरोद्भव सङ्गीत रागकल्पद्रुमे
ज्ञानतत्त्वसारसंग्रह समाप्तः।

अथ श्रीकबीर-बीजक प्रारम्भः

आसावरी—तिताला

अन्तर ज्योति शब्द एक नारी।
हरि ब्रह्मा जाके त्रिपुरारी ॥
तो त्रिय भग अरु लिङ्ग अनन्ता।
तेउ न जानत आदि औ अन्ता ॥
वैखरी एक विधाता कीन्हा।
चाद हेठ वर पाट सों लीन्हा ॥
हरि हर ब्रह्मा महतो नाऊं।
तिन पुनि तीनो वश विलगाऊं ॥
तीन लोक चल खण्ड ब्रह्मण्डा।
षट दर्शन छानवे पखण्डा ॥
पेट हि काहु न वेद पढ़ाया।
सुन तिकराय तुर्क नहीं आया ॥
नारी मोचित गर्भ प्रसूती।
स्वांग धरे बहुते करतूती ॥
तहिया हम तुम एकहो लोहु।
एक प्राण पियापे मोहु ॥
एकहो जनो जना संसारा।
कवन ज्ञान तें भएहु न्यारा ॥
भौ बालक भग द्वारहि आया।
भग सौ गौते पुरुष कहाया ॥
अवगतिको गति काहु न जानी।
एक जीभ कत कहो वखानी ॥
जो मुख होहि जीभि दश लाखा।
'तौ कोइ आइ महातम भाखा ॥

साखी

कहहि कबीर पुकार कइ मोहल व्यवहार।
एक राम नाम जाने विना भव बूड़ि मुयो संसार ॥

धनाश्री—तिताला

जीव रूप एक अन्तर वासा।
अन्तर ज्योति कीन्ह परकाशा ॥
इच्छा रूप नारी अवतरी।
तासु नरम गाई है तरी ॥
धरि तेहि नारीके पुत्रके उधेउ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर सेउ ॥
फेरि ब्रह्मै पुछल करतारी।
को तोर पुरुष करी तुम्ह नारी ॥

हम तुम तुम हम अवर न कोइ ।
तुमही पुरुष हमहि तोरि जोइ ॥

साखी

बाप पूत विए कवारो ए कै माबो आए ।
ऐसा पूत सपूत न देखो जो बापहि चिन्हवाए ॥

२

बरणहु कवन रूपमय रेखा ।
दूसरा कौन अो काहि जेहि देखा ॥
है ओंकार आदि जो वेदा ।
वेकर कहहु कौन खलु मेदा ॥
नहि कछु होत पिताकी बन्द ।
नहि तारागण नहि रवि चन्द ॥
नहि जल नहि स्थल नहि स्थिर पौन ।
को धर नाम हुकुम को रौन ॥
नहि कछु हुतो दिवस नहि राति ।
ते करा कहहु कवन कुल जाति ॥

साखी

शून्य सहज मन सुमति प्रगट भई एक जोति ।
तेहि पुरुषको मैं वलिहारो निरालम्भ जो होति ॥

३

प्रथम अरम्भ कवन कर भयाउ ।
दूसरा प्रकट कीन्ह ते ठाउ ॥
प्रकटे ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति ।
प्रथमही भक्ति कीन्ह जीव उक्ति ॥
प्रगट पवन पानी अरु छाया ।
बहु विस्तार कै प्रगटो माया ॥
प्रगटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा ।
पृथ्वीमें प्रगट कीन्ह नव खण्डा ॥
प्रगट सिद्ध साधक सन्यासी ।
ए सब लागि रहे अविनाशी ॥
प्रगटे सुर नर मुनि सब झारि ।
तेही खोजि परे सब हारि ॥

साखी

जीव शीव सब प्रगटेव ठाकुर सब दास ।
कबीर और न जानि एक राम नामको आस ॥

जङ्गला—तिताला

प्रथम चरण गुरु कीन्ह विचारा ।
कर तागा यहि सिरजन हारा ॥
करम काइ कै जग बौरावा ।
शक्ति भक्ति लै बांधि न्हवावा ॥
अद्भुद रूप ज्योतिके वानो ।
उपजी प्रीति रमैनी ठानी ॥
गुणियन गुण अर्थ नहिं आया ।
बहुतक जन चीन्हि नहि पाया ॥
जो चीन्हे ताको निर्मल अङ्गा ।
अनचीन्हे नर भये पतङ्गा ॥

साखी

चीन्हि चीन्हि कर गावा बौरे वानी परी न चीन्ह ।
आदि अन्त उत्पति प्रलय आपुही कै दीन्ह ॥

२

हरि हर ब्रह्माके मन भाई ।
तीनि अच्छर लै युक्ति बनाई ॥
बौधि अच्छर का कीन्ह बखाना ।
अनहद शब्द ज्योति परवाना ॥
अच्छर पढ़ि गुणि राह चलाई ।
सनक सनन्दन कै मन भाई ॥
वेद कितेब कीन्हे विस्तारा ।
फैलि गइलि मन अगम अपारा ॥
चहु युग भक्तन बाखल बाटी ।
समुझि न परी मोटरी फाटी ॥
भै भै पृथ्वीमें दश दिशि धावै ।
अस्थिर होइ औषधी पावै ॥
होध भिस्त जा चित न डोलावै ।
खसमहि छोड़ दोज़ख को धावै ॥

पूरब दिशि हंसगति होई।
है समीप सोई बूझै कोई॥
भक्त भक्तिका कीन्ह शृङ्गारा।
बूड़ि गई सब मांझो धारा॥

साखी

बिनु गुरु ज्ञान दुई भई प्रथम कहो मिलि बात।
युग युग सोई कहि गया काहु न मानो बात॥

३

तहिया होते पवन नहि पानी।
तहिया सृष्टि कौन उतपानी॥
तहिया होते कली बहु फूला।
तहिया होते गमन हो शूला॥
तहि विद्या तहि वेद अवादा।
तहिया हुते सबद नहि सादा॥
तहिया हुते अखड नहि वासू।
नहि सुर धरणि गगन आकासू॥
तहिया हुते गुरू नहि चेला।
गम आगम नहि पन्थहु हेला॥

साखी

अबगतिकी गति का कहो जाके गांव न ठांव।
गुण वोहुना पेखना क्या कहि लीजे नांव॥

पूर्वी—तिताला

तत्त्वमसो इन्हके उपदेशा।
ए उपनिषत् कहै संदेसा॥
ई निश्चय उन के बैठी भारी।
वोहिके वरणन करै अधिकारी॥
परम तत्त्वके निज परवाना।
सनकादिक नारद सुख माना॥
जग बलि किया जनक संवादा।
दत्तात्रय वाही रसस्वादा॥
वहै बात शिष्टराम मिलि गाई।
कृष्णराम ऊधव समुदाई॥
वहै बात ले जनक दृढ़ाई।
देह धरे विदेह कहाई॥

साखी

कुल अभिमाती खोइ के जीवत मुया न होइ।
देखत जो नहि देखिए अदृष्ट कहावे सोइ॥

२

बाधे अष्ट कष्ट नौ सूता।
जग बाधी अञ्जनीके सूता॥
झखके वाहन बाधो जानो।
बाधे सृष्टि कहा ले गानो॥
बाधे देव तैतिसो कोरी।
सो बैर तलो हवदो गो तोरी॥
राजा सौरै तुरिया चढ़ो।
पथिके सुमर नाव ले बढ़ो॥
अर्थ वोहुनो सबरे नारी।
परजा सबरे पहुमी भारी॥

साखी

बन्द मनावे ते फल पावे बन्दिया सो देए।
कहै कबीर ते ऊबरे निशवासर नाम जो लेए॥

पीलू—यत

ए हो ले पिपराहो वहो।
जग रह्न आवत काहु न कहो॥
आइ कर गो भया अजगूता।
जन्म जन्म जन पहरे बूता॥
बूता पहरि माकरे माना।
तीनि लोक में करै पीवाना॥
बाधिन्ह ब्रह्मा विष्णु महेशू।
सुर नर मुनि सब देव गणेशू॥
बधो न पवन वावक नभ वीरू।
चन्द सु बाध न दोऊ वीरू॥
साध मन्त्र बाधिन सब भारी।
अमृत वस्तु न जानि नारी॥

साखी

अमृत वस्तु न जानै मगन भया सब लोय।
कहहि कबीर का मौनहि मारण जीव न होय॥

२

आधरि गुष्टि सृष्टि भई बौरी ।
तिनि को कामि लागि ठगौरी ॥
ब्रह्महि ठगा नाग पा जारी ।
देवता सहित ठग्यो त्रिपुरारी ॥
राज ठगौरी विरमहि परी ।
चौदह भुवनको रचो ओघरी ॥
आदि अन्त जाके जरि को न जानी ।
ताके डर तुम काहे को मानी ॥
के उतंग तुम जात पतङ्गा ।
यम घर कियो जीवके रङ्गा ॥
नीम कीट जैसे नीम पियारा ।
विषको अमृत कहे गंवारा ॥
विषके सङ्ग कौन गुण होई ।
किञ्चित् लाभ मूल गो खाई ॥
विष अमृत को एकै सानी ।
जो न जाना तिन विष करि मानी ॥
कहा भयो नल सुख भौ सूझा ।
विनु परचै जग बूझ न बूझा ॥
मति कर होन कवन गुण कहई ।
लाल चला जी आशा रहई ॥

साखी

मुवा है मरि जाहुगे मुएको बाजी ढोल ।
सपन सनेही जग भया सयो दानी रहि गो बोल ॥

गौरी—तिताला

माठी कों कोर पयानक ताला ।
सोई ब्रह्म सोइ रखवाला ॥
सबके देखत जीव डराना ।
ब्रह्मा विष्णु एकहो जाना ॥
जो किसान किसानो करइ ।
उपजे खेत बीज नहि परइ ॥
छाड़ि देहु नस झिलिक झिला ।
बूड़े दोउ गुरु और चेला ॥

तीसर बूड़े पारथ भाइ ।
जिन्ह वन गड़ा होदवा लगाइ ॥
भूकि भूकि कूकुर मरि गयउ ।
काज न एक सियारसे भयउ ॥

साखी

मूसी विलाई एक सङ्ग कहु कैसे रहि जाए ।
अचरज एक देखहु हो सन्तो हस्ती सिंहहि खाए ॥

२

नहि प्रतीति जैह है संसारा ।
दुर्बल चोट कठिन कर मारा ॥
सो तो शेखे जास लुटाई ।
काहूके परतीत न आई ॥
चले लगे सब मूल गंवाई ।
यम कैवारि काटि नहि जाई ॥
आज काज है कालि अकाजा ।
चले लादि डिङ्ग तर राजा ॥
सहज बिचारै मूल गवाई ।
लाभ ते हानि होइ रे भाई ॥
वोछी मति चन्द्रमा गौ अथइ ।
त्रिकुटी सङ्ग न वामी वसइ ॥
कैहुन अष्ट तुम जीतहु जाइ ।
तब हो विष्णु कहा समुझाइ ॥
तब सनकादिक तत्त्व विचारा ।
जैसे रङ्ग परा धन पारा ॥
भव मर्याद बहुत सुख लागा ।
ए लेखे सब संशय भागा ॥
देखेहि उतपति लागु न वारा ।
एक मरै एक करै विचारा ॥
मुए गएको कोइ न कहई ।
झूठी आशा लगो जग रहई ॥

साखी

जरत जरत ते वाचहु काहे न करइ गुहारि वइ ।
विष खेइयके खायहु राति दिवस मिलि झारि वइ ॥

भूपाली—तिताला

बड़ सो पापी आहि गुमानो ।
पाषण्ड रूप छल नल जानो ॥
वामनरूप लीन्ह वलि राजा ।
ब्राह्मण कोन्ह कौनको काजा ॥
ब्राह्मण ही सब कोन्हो चोरी ।
ब्राह्मण ही को लागो घोरी ॥
ब्राह्मण कोन्हो ग्रन्थ पुराना ।
कैसेहु के मोहि मानस जाना ॥
एक से ब्रह्मा पन्थ चलाया ।
पशुहि गोप गोपालहि गाया ॥
पशुगी शम्भू जगत् चलाया ।
एक से भूत प्रेत मन लाया ॥
एक से पूजा जैन विचारा ।
एक से निहुरि नमाज़ गुज़ारा ॥
कोइ काहु का कहा न माना ।
झूठा खसम कबीर न जाना ॥
तनमनमें रहो मेरे सुक्ता ।
सत्य कबीर सत्य है वक्ता ॥
आपुही हैच आपुह पाता ।
आपुही कुल आपुहो जाती ॥
सर्वभूत संसार निवासी ।
आपुहि खाम आपु सुख वासी ॥
कहत मोहि भएल युग चारो ।
काके आगे कहो पुकारो ॥

साखी

सांचहि कोई न मानै झूठहिके सङ्ग जाए ।
झूठहि भूठा मिल रहा अहमक् खेहा खाए ॥

२

उनइ वद्दिरिया परि गौ संझा ।
अगवा भूले वन खण्डा मंझा ॥
पिया न तै धनि अनतै रहइ ।
चौपरि कामरि माथे महइ ॥

साखी

फुलवा भार न ले सकै कहै सखो सन रोइ ।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होइ ॥

कलिङ्ग-गौरी—तिताला

चलत चलत अति चरण पिराने ।
हारि परे तहां अति रिसियाने ॥
गुणी गन्धर्व मुनि अन्त न पाया ।
हरि अलोप जग धन्धे लाया ॥
गहन वन्ध वानो ना सूझा ।
थाकि परे तब कछु न बूझा ॥
भूलि परे जो अधिक डेराई ।
रजनी अन्धकूप होइ आई ॥
माया माह उहा भरिपरो ।
दादुर दामिनी पायन आ परो ॥
बरसे तपै अखण्डित धारा ।
रजनी जाव न कछू अहारा ॥

साखी

सभै लोग जहं डाइया व्याभे सके भुलान ।
कहा कोइ माने नहीं सब एकै माह समान ॥

भूपाली—तिताला

जस जीव आप मिले अस कोइ ।
बहुर धरम सुख हृदया होइ ॥
जासो वात राम की कहो ।
प्रीति न काहूसो निवहो ॥
एकै मान सकल जग देखो ।
बाहर परे सो होइ विशेखो ॥
वीखे मोहके फन्द छोड़ाइ ।
जहां जाए तहां काट कसाइ ॥
आहि कसाई छूरी हाया ।
कैसेहु आवे काट न माथा ॥
मानुष बड़ा बड़ाके आया ।
एकहि पण्डित सबै पढ़ाया ॥

पढ़ना पढ़ो वरो जनि गोइ।
नहि तौ निश्चय जाहु विगोइ॥

साखी

सुमिरण करहु रामको छाड़हु दुखांकी आस।
नाहित तरुपर धरि चापि है
यमको रहु कोट पचास॥

२

अद्भुद पन्थ वरनि नहि जाई।
भूमे राम भुलो चुवि पाई॥
जौ चेतहु तौ चेतहु भाई।
नाहित जीव जनम ले जाई॥
शब्द न मानै कथै ज्ञाना।
तातें यम दीन्हों है थाना॥
संशय सावज वसै शरीरा।
तिन खाइल अव नवेयल हीरा॥

साखी

संशय सावज शरीर में सङ्गहि खेलै जुआरि।
ऐसा धाइ वापुरा जीवहो मारै झारि॥

एमन—तिताला

अनहद अनुभवको करि आसा।
ए विपरीत देखहु होत तमासा॥
ए तमाशा देखहु रे भाई।
जहां सुनी तहां चलि जाई॥
सुनहो वच्छे सुनहो गयउ।
हाथा छाड़ि बेहाथा भयउ॥
संशय सावज सकल संसारा।
काल अहेरो सांझ सकारा॥

साखी

सुमिरण किये हु का रामको काल गहै केश।
नहि जानहु कव मारि हो का घरका परदेश॥

२

अव कहो राम नाम अविनाशा।
हरि छोड़ि जियरा कतहु न आशा॥
जहां जाहु तहां होहु पतङ्गा।
अव जनि जरहु समुझि विष सङ्गा॥
राम नाम लय लावै लीन्हा।
भृङ्गी कीट समुझि मन दीन्हा॥
भो अस गहतु अति दुःखके भारो।
करु जीव यत्न जो देखु विचारी॥
मन कै वात हल हरो वेकारा।
तै नहि सूझै वार न पारा॥

साखी

इच्छा कर भवसागर तामें वोहित राम अधार।
कहै कबीर हरि शरम गो सुख विस्तार॥

१

वहुत दुःख दुःखको खानी।
तव तचि हो जव राम हो जानो॥
रामहि जानि युक्ति ज्यों चलइ।
युक्ती सो फन्दा नहो परइ॥
युक्तिहि युक्ति चला संसारा।
निश्चे कहा तो मानु हमारा॥
कनक कामिनी घोर पटोरा।
सेवति वहुत रहलि दिन थोरा॥
थोरे संपति गो बौराइ।
धर्मराज के खबरि न पाइ॥
देखि त्रास मुख गौ कुम्हिलाई।
अमृतके धोके गो विष खाई॥

साखी

मैं सिरजो मैं जारो मैं मारो मैं खाउ।
जल स्थल महि आद मिरौ मोर निरञ्जन नाउ॥

•

अलख निरञ्जन लखै न कोइ।
जे वन्धे वन्धार न कोइ॥
जे झूठा वाधा ए आना।
झूठे वात सांच कर माना॥

धन्धा बन्धा किन व्यवहारा।
कर्म विवर्जित बसै निनारा॥
षट आश्रय और रस न दीन्हा।
षट् रस वास षटे वस्तु कीन्हा॥
चारि हच्छ छः शाख बषाने।
बौद्या अग्नित जन ना जाने॥
चारे आगम करै विचारा।
ते नहि सूझि वार न पारा॥
जप तीर्थ धर्म करै बहु पूजा।
काल पुरुष जग कीजै बहुजा॥

साखी

साधी मन्दिल नेह का मति कोइ पैठे धाए।
जो कोइ पैठे धाइ के विन शिर सेती जाए॥

५

अलख सुख दुःख आदि औ अन्ता।
मन भुलान मग रसै सन्ता॥
सुख विसराय मुक्ति कहा पावै।
परिहरि सांच भूठ कह धावै॥
अचल ज्योति डाहे एक सङ्गा।
नयन नेह जस तरै पतङ्गा॥
करहु विचार जो सब दुःख जाइ।
एह प्रहक भूठा केर समाइ॥
लालच लागो जन्म सराइ।
जरा मरण नियरायल आइ॥

साखी

भ्रमके बाधतइ जग इहि विधि आवे जाइ।
मानुष जन्म पाइ के बल का है को जहड़ाइ॥

केदारा—तिताला

चन्द्र चकोरको ऐसो बात जनाइ।
मानुष बुद्धि दीन पलटाइ॥
चारि अवस्था सपने कहइ।
भूठो फूरा मानत अहइ॥
मिथ्या बात न जाने कोइ।
एहि विधि सब गयल विगोइ॥
आगि दै दै सबनि गंवाइ।
मानुष बुध्याकी सपने पाइ॥
चौतिस अक्षर सौ निकले जोइ।
पाप पुण्य जाने गो सोइ।

साखी

सोइ कह ते सोइ हो ठगी तेनो कलि न बाहर आव।
हो हजूर ठाठ कहत हो कों धे धे जनम गंवाय॥

२

चौतिस अक्षर का एहि विशेखा।
सच श्रीनाम एहि में देखा॥
भूलि भटकि नर फिरि घर आवा।
होत जन्म सो सबनि गंवावा॥
खोजहि ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति।
अन्तत लोक खोजहि बहु भक्ति॥
खोजहि गुणि गन्धर्व मुनि देवा।
अन्त लोक खोजै बहु सेवा॥

साखी

वती सती सब खोजै मानै मन में हारि।
बड़ बड़ जीवन वाचहो कहहि कबीर पुकारि॥

केदरा—तिताला

आपुहि करता भये कुलाला।
बहु विधि वासन गनै कुम्हारा॥
विधि ने सबे कीन्ह एकठाउ।
अनेक यतन के यानक पाउ॥
जे तुर अग्नि नै दीन्ह प्रजारी।
तंहि में आप भये प्रतिपाली॥
बहुत यतन ते बाहर आया।
तब शिव शक्ति नाम धराया॥
घर के सुत जो होइ अयाना।
ताके सङ्ग न जाइ सयाना॥
सांची बात कहो ने अपनो।
भया दिवाना और के पुनो॥

गुप्त प्रकट है एकै दुधा ।
का को कहिए ब्राह्मण सुदा ॥
समुझ गर्व भूलो मति कोइ ।
हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोइ ॥

साखी

जिन्ह एह चित्र बनाइयां सांचा सो ए वार ।
कहहि कबीर ते जन भले जो चितवत हो
सेत विचार ॥

केदारा—तिताला

ब्रह्मा को दीन्हा ब्रह्मण्डा ।
सात द्वीप पुहुमी नवखण्डा ॥
सत्य सत्य कै विष्णु दृढ़ाइ ।
तीनों लोक में राखि न जाइ ॥
लिङ्ग रूप शङ्कर तब कीन्हा ।
धरती खाल रसातल दीन्हा ॥
तब अष्ट की रची कुमारी ।
तीन लोक भाइन सब भारी ॥
दुतिया नाम पार्वती भई ।
तब कर ते शङ्कर को दई ॥
एकै पुरुष एक कहे नारी ।
तेहि ते रची खानि जग चारी ॥
शर्मन वर्मन देव औ दासा ।
रजगुण तम मानुष रति अकासा ॥

साखी

एकै अण्ड ओंकार ते सब जग भयो पसार ।
कहहि कबीर सब नारि रामकी अविचल
पुरुष भतार ॥

२

अस जोलहा कामर मन जाना ।
जिन जग आइ पसारिहु ताना ॥
धरति अकाश दोइ गांव ठगाया ।
चन्द्र सूर्य्य दोइ नारि बनाया ॥
सहस्र तारा ले पूरण पूरी ।
अजहूं भो न कठिन है दूरी ॥
कहहि कबीर कर्मो माजुरी ।
सुत कुसुत वोम भल कुरी ॥
वज्र हु ते तृण खिन मे होइ ।
तृण से वज्र करै पुनि सोइ ॥
निझरू नरू जानि परिहरे ।
कर्म कवाघल लालच करै ॥
कर्म धर्म मति बुद्धि प्रहरिया ।
झूठा नाम सांच लै खरिया ॥
राजगति त्रिविध कोन परगासा ॥
कर्म धर्म बुद्धिकेर विनासा ॥
रविके उगे ते भो चौना ।
घर बाहर दोनोमें लोना ॥
विष खाइ विष नहिं सावे ।
गरुड़ा सो जो मृतक जिआवे ॥

साखी

अलख ज्योति लगी पलक में पलकहि में डसि जाय ।
विषहर मृत न मानै तो गरुड़ा काह कराय ॥

सोरठ—तिताला

औ भूले षट दर्शन भाइ ।
पाषण्ड भेख रहा लपटाइ ॥
जीव शीवका अहै मसेना ।
चारु वन्ध त्रिगुण सेना ॥
जैनी धर्म कर्म ना जाना ।
पाती तोरि देवघरा आना ॥
देव नाम अरु वाक् फूला ।
मानो जीव कोटि सम तूला ॥
जो पृथिवी के राम उचारे ।
देखत जन्म आपनो हारे ॥
मन मतिमन्द करे असरारा ॥
कल पेखो दश सेनहि हारा ॥
ताकर हाल होइ अदभुदा ।
छो दर्शन में जैन विगुरदा ॥

साखी

ज्ञान अमर पद बाहर नियरे ते है दूरि।
जो जाने ताके निकट है नहिं तो रहा
सकल घट पूरि ॥

२

सुम्रत आहि गुणनके चीन्हा।
पाप पुण्यके मारग लीन्हा ॥
सुम्रत बेद पढ़े असरारा।
पाषण्ड रूप करे हंकारा ॥
पढ़े वेद अरु करे बड़ाई।
संशय गांठि अजहु नहिं जाई ॥
पढ़े सत्य सो जीव बध करई।
मूड़ि काटि अगु मन के धरई ॥

साखी

कहहि कबीर ए पाषण्ड बहुतक जीव सताव।
अनुभव भाव न दरसे जीवत आपन लखाव ॥

विहाग—तिताला

अन्ध लै दर्पण वेद पुराना।
देखो कहा महा रस जाना ॥
जस खर चन्दन लादे भारा।
परम लगासन जानु गंवारा ॥
कहहि कबीर खाजी असमाना।
सो न मिले याही अभिमाना ॥

१

वेदकी पूती सुम्रत भाई।
सो जो बेरो करलते आई ॥
आपही वरो आपु नरवन्धा।
झूठा मोह काल के फन्दा ॥
बांधत बांध छोरि नहिं जाई।
विशेष रूप भुलो दुनो आई।
हमरे देखत सकल जग लूटा।
दास कबीर राम कहि झूटा ॥

साखी

रामहि राम पुकारत जिह्वा पड़िगो रौस।
सूखो जल पोवे नहिं खोद पवनको हौस ॥

विहाग—तिताला

पढ़ि पढ़ि पण्डित करे चतुराई।
निज मुक्ति मोहि कहे समुदाई ॥
कहां बसे पूर्व कौन गांउ।
सो मोहि पण्डित सुनावहु नांउ ॥
चारि वेद ब्रह्मे निज ठाना।
मुक्ति को मर्म न उनहु जाना ॥
दान पुण्य उन्ह छत बयाना।
अपना मरणको खबरि न जाना ॥
एक नाम है अगम गंभीरा।
तहवा अस्थल दास कबीरा ॥

साखी

चिंउटी जहां न चढ़ि सके राई नहिं ठहराइ।
आवागमन को गम नहो तहां सकल जग जाइ ॥

२

पण्डित भूले पढ़ि गुणि वेदा।
आपु अपनपो जानु न भेदा ॥
सन्ध्या तर्पण को षट् कर्मा।
ई बहु रूप करे असु धर्मा ॥
गायत्री युग चारि पढ़ाई।
पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ॥
और के छुए लेत हो सोचा।
तुमते कहहु कौन है नोचा ॥
अगुणो गर्व करो अधिकाई।
अधिको गर्व न होत भलाई ॥
जासु नाम है गर्व प्रहारो।
सो कस गर्वे हि सके संहारो ॥

साखी

कुल मर्यादा खोइ के खाके जिन पद निर्वाण।
व्याल वीज नसाइके नास भए विदेहो थान ॥

२

ज्ञानी चतुर बिलक्षण सोइ।
एक सयान सयान न होइ ॥
दूसर सयान काम मन जाना।
उतपति परसै सांझ बिहाना ॥
बणिज एक सब नालो टाना।
नियम धर्म सजि मन भगवाना ॥
हरि अस ठाकुर तेज न जाइ।
बाल न भिस्ति गाव दुल हाइ ॥

साखी

ते नर कहां गए जिन्ह गुरु दीन्हो झूठ।
राम नाम निज जानि कै छाड़ि देहो भ्रम खूढ़ ॥

सोरठ—तिताला

एक सयान सयान न होइ।
दूसर सयान न जानै कोइ ॥
तीसर सयान सयान हि खाइ।
चउथ सयान तहां लजाइ ॥
पचै सयान जी जानै कोइ।
छवै माह सब गहल बिगोइ ॥
सतवे सयान जे जानै माइ।
लोक वेद में दीन्ह देखाइ ॥

साखी

बीजक बतावे बीत जा जौ बित गुप्ता होइ।
ऐसे शब्द बतावे जीव को बूझै बिरला कोइ ॥

ठुमरी—तिताला

एहि बिधि कहौ कहा नहि माना।
मारग माझ पसारो ताना ॥
राति दिवस मिलि जोरि न तागा।
वीढ़त कातत भर्म न भागा ॥
भर्मा सब घट रहल समाई।
भर्म छोड़ि कतहु नहि जाई ॥
परै न पूरि दिनहु दिन छीना।
तहइ जाइ जहं अगा बिहीना ॥

जो मत आदि अन्त चलि आया।
सो मत सभनुन प्रगट सुनाया ॥

साखी

वहै संदेस फूरि कमाने लीन्हों सिरहि चढ़ाइ।
सन्तो सन्तोष सुख में रहौ तौ हृदय जुड़ाइ ॥

२

जिन कलिमा कलि माहि पठाया।
कुदरति खोजि तिनहु नहि पाया ॥
कामतै करम करै करतूता।
बेद कतेब भए सबो रूता ॥
कामतै सो जो गर्व अवतरिया।
कामतै सो नमाज केवरिया ॥
कामतै सुनत और जो नेउ।
होन्दू तुरुक न जानै भेउ ॥

साखी

पानी पवन से जोइ कै रचि आई उतपात।
सुनो सुरति समाइकै कासा कहिये जात ॥

२

आदम आदि सुधो नहि पाई।
मामा हौ तया काइ आई ॥
तब नहि होते तुरुक औ हिन्दू।
माइ कर रुधिर पिता कर बिन्दू ॥
तब नहि होते गाइ कसाई।
तब कछु बिसमी किन फुरमाई ॥
तब नही होते कुल अरु जानो।
दोजख कवना नहि उतपाना ॥
मनमस सेका सुधो नहि जानै।
मति भुलान से दीन भुखानै ॥

साखी

संयोग कारण नख भौ जागी का गुत जाई।
जिह्वा स्वाद कर्कासेनउ कीन्हो बहुत उपाई ॥

२

अम्बुक रास समुद्रकी खाई।
रवि शशि कोटि तैतिसो भाई ॥

भ्रमर जाल में आसन माड़ा।
चाहत चख रुख संग न छाड़ा॥
दुःख के भर्म काहु नहि पावा।
बहुत भांतिके जग बौरावा॥
आपुहि बावर आपु रिसियाना।
हृदया बसत राम नहि जाना॥

साखी

तेइ हरि तेई ठाकुर तेई हरिके दास।
नहि यम भवा न यामिनो भामिनि चली निरास॥

देश—ठुमरी

जब हम रहलि रहलि नहि कोइ।
हमरे माह रहल सब कोइ॥
कहु हो राम कवन तोर सेवा।
सो समुझाइ कहहु मोहि देवा॥
फुर फुर कहौ मरे सब कोइ।
झूठे झूठा सांधत होइ॥
आंधर कहै सबै हम देखा।
तहां दिठार बैठि मुख पेखा॥
एहि विधि कहौ मानै जौ कोइ।
जस मुख तस जो हृदए होइ॥
कहै कबीर हंस मुस खाइ।
हमरे कहे छूटि हो भाइ॥

खम्बावती—तिताला

जिम जिन कीस आप विश्वासा।
नरक गए ते नरकै वासा॥
आवत जात न लागी वारा।
काल अहेरी सांझ सकारा॥
चौदह विद्या पढ़ि समुझावै।
अपने मरण कि खबर न पावै॥
जाने जीव के परा अन्देसा।
झूठे आनि कै कहा सन्देसा॥
सङ्गति छोड़ करै असरारा।
उभे मोट नरक के भारा॥

साखी

गुरु द्रोही मन मुखी नारी पुरुष विचार।
ते नर चौराशी भर्मि है जो लगि चन्द्र दिवाकर॥

२

कबहु न भए सङ्ग औ साथा।
ऐसे जन्म गवाओ आथा॥
बहुरि न पैहो ऐसो ठाना।
साधु सङ्गति तुम नहि पहिचाना॥
अब तोर होइ नरक में वासा।
निशिदिन रहे लवारिके साथा॥

साखी

जाति सबनकर देखिए कहहि कबीर पुकार।
चेतना होइ तो चेतहु नाहि त धोस परतु है खार॥

३

हिरनाकुस रावण गौ कंसा।
कृष्ण गए सुर नर मुनि बंशा॥
ब्रह्मा गये मर्म नहि जानो।
बड़ सब गए जी रहल सयानी॥
समुझि न परल राम के कहानी।
निरबक दुःख को सबैक पानी॥
रहि गौ पन्थ थकित भये मोना।
दशहु दिसा पजारि भौ योना॥
मीन जाल भ्यो ई संसारा।
लोहे की नाव पखानका भारा॥
खेवै सबै भरम हम जानो।
सबो कहे रहे उतरानो॥

साखी

मछरी मुख जस केचुया मुसवन गिरदानि।
सरपनमें गहरुवा ऐसे जाति देखि सब न कै जानि॥

२

विनसे नाग गरुड़ गलि जाई।
विनसै कपटी औ सत भाई॥
विनसै पाप पुण्य जिन कीन्हा।
विनसै गुण निरगुणिन चीन्हा॥

विनसै अग्नि पवन औ पानी ।
विनसै सृष्टि कहा ले गानी ॥
विष्णुलोक विनसै छण माही ।
हौं देखा परव लै को छाही ॥

साखी

मत्स्यरूप माया भई सबरे खेले अहेरि ।
हरि हर ब्रह्मा न उबरे सुर नर मुनि कहु केरि ॥

जरासिन्धु शिशुपाल संहारा ।
सहस्र अर्जुन छल सो मारा ॥
बड़ छल रावण से हो गल विती ।
लङ्का रहल कञ्चन की भिती ॥
दुर्योधन अभिमानी गयउ ।
पाण्डव केर भेद नहि पयउ ॥
भया केडि भगील सब राजा ।
उत्तम मध्यम बाजन बाजा ॥
छः चकवै वीति धरनि समाना ।
एको जीव प्रीति तन जाना ॥
कह ले कहो अचेते गये ।
चेत अचेत झगरा एक भये ॥

साखी

यह माया जग मोहनी मोहिनि सब जग झार ।
हरिश्चन्द्र सत् के कारणे धरि धरि शोक विकार ॥

खम्भावती—तिताला

माणिकपूर कबीर बसेरी ।
मदित सुनो सेखत को केरो ॥
दूजो सुनो जवनपुर थाना ।
कुसी सुनो पीरन को खाना ॥
एक दश पीर लिखे तेहो चामा ।
खसमा पढ़े दैगम्बर नामा ॥
सुनि बोल मो पै रहा न जाई ।
देखि मुकका रहा भुलाई ।
हवी नवो नवीके कामा ।
जहाँ ले अमल सो सबै हरामा ॥

साखी

शेख अकर दो शेख अकर दो मानो वचन हमार ।
आदि अन्त औ युग युग देखो दृष्टि पसार ॥

२

दर की बात कहो दरवेस ।
पातशाह के वन भेस ॥
कहा कूच कहा करो मुकामा ।
कवनि सुरतिके करो सलामा ॥
मैं तोहि पूछो मूसलमाना ।
लाल ज़रद को ताना बाना ॥
क़ाज़ी काज करो तुम कैसा ।
घर घर ज़बह करावहु भैंसा ॥
कवरो मूरगो किन फ़ुरमाया ।
का के कहे तुम छुरो चलाया ॥
दरद न जाने पीर कहावे ।
वैदा पढ़ि पढ़ि जग भरमावे ।
कहै कबीर इकसदइ बहावे ॥
आप शरीखे जग कबुलावे ॥

साखी

दिन रहतु हो रोज़ा राति को हतो हो गाई ।
एह सुन वे बन्दगी कबीर खुशी खोदाई ॥

२

कहत मो भइल युग युग चारी ।
समुझत नहीं मोर सुत मारी ॥
वेसहि आगि लागि वेसहो जरिया ।
भर्म भुलान नर धन्धे परिया ॥
हस्तीके फन्दे हस्ती रहई ।
मृगके फन्दे मृगा गहई ॥
लोहै लोह काट अस आना ।
त्रिया के ताव त्रिया पै जाना ॥

साखी

नारीं रचतें पुरुष पुरुष रचते नार ।
पुरुष पुरुष जो रचते विरले संसार ॥

परज—तिताला

जाका नाम अकहु यारे भाई।
ताकर कहा रमणी माई॥
कहिये तात प्रजै है ऐसा।
जैसा पथिक वोहित चढ़ि वैसा॥
है कछु रहनेकी बाता॥
बैठ रहै चले पुनि जाता॥
रहै वदन नहि अङ्ग खभाउ।
मन अस्थिर न बोले काउ॥

साखी

तन रहि तो मन जात है मन रहि तो तन जाई।
तन मन एकै ह्वै रहै सो हंस कबीर कहाई॥

२

जेहि कारण शिव अाहु वियोगी।
अङ्ग विभूति लाइ ले योगी॥
शेष सहस्र मुख पार न पावे।
सो अब खसम सहित समुझावे॥
वैसो विधि जो मो को ध्यावे।
छठए मास जो दर्शन पावे॥
कौने माव देखाई देउ।
गुप्त रहहु खभाव सब लेउ॥

साखी

कहहि कबीर पुकारि कै सब काउ है विचार।
कहा हमार न मानै तो कस छूटे भ्रमजार॥

परज—तिताला

महादेव मुनि अन्त न पाया।
माम सहित उन जन्म गँवाया॥
उनते सिद्ध न साधक कोई।
मन अस्थिर कहु कैसे के होई॥
जो लगि तनमें आहै मोई।
तो लगि चेत न देखे कोई॥
तब तो चिति हो जब तजि हो प्राना।
भयै ज्ञात तब मन पछताना॥

इतना सुनत निकट चलि जाई।
मन के विकार न छूटे भाई॥

साखी

तीनो लोक मुए कुवायके छुटो न काहु को आस।
एकहि अन्धरे जग खायो सबका भवा निवास॥

परज—तिताला

मरिगे प्रह्मा काशी के वासी।
शिव समेत तरे अविनाशी॥
मथुरा तारि गे कृष्ण गुवारा।
तारि तारि गये दसो अवतारा॥
तारि तारि गये भक्ति जिन ठानी।
सगुण मह जिन निर्गुण आनी॥

साखी

नाथ मछन्द्रा बचे नाहो गोरख दत औ व्यास।
कहै कबीर पुकारि कै ए सब ध्यान के पास॥

२

तारे राम तार लछिमना।
सङ्ग न गइ सीता अस धना॥
तारत नाहि धन लागो वारा।
गए भोज जिन साज लवारा॥
गय पाण्डव कुन्ती अस रानी।
गए सहदेव जिन बुधि मति ठानी॥
सबै सोनेको लङ्क उठाई।
चलत बार कछु सङ्ग न लाई॥
जा करि पुरिया अन्तरिच्छ छाई।
सो हरिचन्द्र देखल नहि जाई॥
मूरख मनुष्य अधिक सजोई।
अपने मरे और लग रोई॥
इन जाने अपनी मरि जैवे।
टंका दसवो देअ रखो ईवे॥

साखी

अपनो अपनो करिए काहु के न लागो साथ।
अपनो करि गे रावण अपनो दशरथ नाथ॥

परज—तिताला

दिन दिन जरै जनना के पाउ।
गाड़े जाहि न उमगै काउ॥
वान्ध न देइ मसकरी करइ।
कहु दुइ भांति कैसे निस्तरइ॥
अक्रम करै कर्म के धावै।
प्रढ़ि गुण वेद जगत समुझावै॥
छूछा परै अकारथ जाई।
कहै कबीर चित चेतहु भाई॥

२

क्षति पा सुरत रसिक एक अहइ।
नाध पचास कै आये कहइ॥
विद्या वेद पढ़े पुनि सोइ।
वचन कहै प्रतक्ष्इ होइ॥
पहुंचो बात विद्या के पेता।
वनहा के भर्म भया सङ्केता॥

साखी

खङ्ग खोज न तु परे पोछे अगम अपार।
विनु खरचे कस वाचि हो कबीर झूठा है हंकार॥

२

ते सुत मानु हमारी सेवा।
तोको राज देव हु देवा॥
अगम दुर्गम गढ़ देव छड़ाइ।
औरो बात सुनो कछु आइ॥
उतपति परलै देहु देखाइ।
करहु राज सुधि वे सह आइ॥
एको बार न होइ है बांको।
बहुरि जनम होइ है ताको॥
जाइ पाप सुख देउ घना।
निश्चय वचन कबीर के मना॥

साखी

साधु सन्त तेइ जन मानो वचन हमार।
आदि अन्त उतपत्ति प्रलय देखो दृष्टि पसार॥

२

चढ़त चढ़ावत भण्डहरि फोरी।
मन वहि जानै के करि चोरी॥
चोर एक मूसे संसारा।
विरला जन कोइ बूझन हारा॥
स्वर्ग पाताल भूमि ले मारी।
एकै राम सकल रखवारी॥

साखी

पाहुन ह्वै ह्वै सब गए विनु भितियनको चीत।
जा सो किया मिताइया सोजन भया न हीत॥

२

छाड़ो पति छाड़ो लंगराई।
मन अभिमान टूटि सब जाई॥
जिन सो चोरी मिथ्या खाई।
फिर वीरवा पलुहा बन जाई॥
पुनि सम्पति औ पति के रावै।
सो वी वास सार लो आवै॥

साखी

झूठ झूठ के डारो मिथ्या इह संसार।
तेहि कारण मैं कहत हौं जेहिते होइ उधार॥

२

धर्म कथा जो कहते रहइ।
लावरो उठो प्राते कहइ॥
लावरि बिहने लावरि संझा।
एक लावरि बसे हृदया मंझा॥
राम हु केर मर्म नहि जाना।
लै मत ठानै वेद पुराना॥
वेदहु केर कहल नहि करइ।
जरते रहै स्वस्ति नहि परइ॥

साखी

गुणातीत के गाथ ते आवहि गये गमाय।
माटी का तन माटी मिलि गो पवनहि पवन समाय॥

परज—यत

जौ तू करता वरण विचारा।
जन्मत तीन दण्ड अनुसारा॥
जन्मे शूद्र सुए पुनि शूद्रा।
कृतम जनेउ घालि जग दूद्रा॥
जौ तुम ब्राह्मण ब्राह्मणीके जाया।
अवराह दे काहे न आया॥
जो तू तुरुक तुरुकनी के जाया।
पेटहि काहे न सुनति कराया॥
कारी धवरी दूहो गाई।
ता को दूध देह विलगाई॥
छाड़ि कपट नर अधिक सयानी।
कहै कबीर भुज सारङ्ग पानी॥

२

नाना रूप वरण इक कीन्हे।
चारि वरण वह काहु न चीन्हे॥
नष्ट गए कर ती नहि चीन्हा।
नष्ट गए औरहि मन दीन्हा॥
नष्ट गये जिन वेद बखाना।
नष्ट गये जिन वेद बखाना॥
वेद पढ़ै पै भेद न जाना॥
विमुलख करै नयन नहि सूझा।
भया अयान तब कछू न बूझा॥

साखी

नाना नाच नचाइ कै नाचै नष्ट कै भेख।
घट घट है अविनाशी सुनहु तकी तुम शेख॥

३

काया कञ्चन यतन कराया।
बहुत भांति के मन पलटाया॥
जो सौ वार कहौ समुझाई।
तौ यह धरा कुवाय न जाई॥
जन के कहै थान रहि जाई।
नवौ निधि सिधि तिन पाई॥
सदा धर्म जाके हृदै वसई।
राम कसौटी कसते रहई॥
जौरे कसा वे अन तै जाई।
सो बावर अपन हु बौराई॥

साखी

ता ते परी काल की फांसो करहु आपनो सौच।
जहां सन्त तहां सन्त सिधारो मिलि रहो
धुनते वीच॥

४

अपने गुण को अवगुण कहहु।
एह अभिमान तुम न विचारहु॥
तुम जिवरे बहुत दुःख पाया।
जल विनु मीन कवन सच पाया॥
चातक जल हल भरे जो पासा।
मेघ न वरसै चलै उदासा॥
स्वांग धरै भवसागरको आसा।
चातक जल हल आसै पासा॥
राम नाम एही निज सारू।
ऐसा बहुत सकल संसारू॥
हरि उतङ्गतुम भांति पतङ्गा।
यम धरि कियहु जीव के सङ्गा॥
कै चित है सपने निधि पाई।
हिय न समाइ कहां धरहु छपाई॥
हिय न समाइ छोड़ नहि पारा।
झूठ लोभ तें कछु न विचारा॥
सुमृत कीन्ह आपु नहि माना।
तब जरतह छल छागर ह्वै जाना॥
जिन दुर्मति डोलै संसारा।
तै नहि सूझै वार न पारा॥

साखी

अधम एसो बड़ो ले कोइ न करै विचार।
कहा हमार मानै नहि तब कस छूटे भ्रमजार॥

माड़—तिताला

सोई हितू बुद्धि मोहि भावै ।
जात कुमार्ग मारग लावै ॥
सो सयान मारग रह जाई ।
करै खोज कबहूं न भुलाई ॥
सो झूठा जो सुत को तजही ।
गुरुकी दया राम ते भजही ॥
किञ्चित् है एक ते भुलाना ।
धन सुत देखि भए अभिमाना ॥

साखी

दिये न खज़ाना किये न पियाना न दिल भया उजार ।
मरि गये ते मरि गये बाचे बाचनहार ॥

२

देह हिलाए भक्ति न होई ।
स्वांग धरेन बल बहुत बिगोई ॥
धींगा धागों भलो न माना ।
जा काहु मोहि हृदे न जाना ॥
मुख कछु आन हृदय कछु आना ।
सुपने कहो मोहि ना जाना ॥
सो दुःख पद्द है एह संसारा ।
जो चेतो तो होइ उबारा ॥
जो गुरुजनको निन्दा करई ।
शूकर श्वानका जन्म सो धरई ॥

साखी

लख चौरासी जीव जो तुम भटको दुःख पाव ।
कहै कबीर जो रामहि जानै सो मोहि नीके भाव ॥

३

ताहि वियोग ते भये अनाथा ।
परे निकुञ्ज न पावे पाथा ॥
वेद नकल कहै सो जानै ।
जो समुझै ते भलो न मानै ॥
नट वट वह खेलै जो जानै ।
ता कर गुण भल ठाकुर मानै ॥

वोई खेल सब घट माहि ।
दूसर के लै कछुवो नाहि ॥
भलो पोच जो अवसर आवै ।
कैसे के जन पूरो पावै ॥

साखी

जाकर सर लागे सो जाने है पीर ।
लागी तो भागे नही सुख सिंधु निहार कबीर ॥

४

ऐसा योग न देखा भाई ।
भूला फिरता लिये गलाई ॥
महादेव को पन्थ चलावै ।
ऐसो बड़ो महंतो कहावै ॥
हाट बज़ार लगावै तारी ।
कच्चा सीधा माया प्यारी ॥
कब कहु दत्त मवासा तोरी ।
कब सुखदेव तोपची जोरी ॥
कब नारद बन्धके चलाया ।
व्यासदेव कब बन्धन जाया ॥
करै लराई मति के मन्दा ।
एह अतीत तक तरकश बन्दा ॥
भए विरक्त लोभ मति ठाना ।
सोना पहिरि लजावै बाना ॥
घोरा घोराको नही बटोरा ।
गाव पाइ जस चले करोरा ॥

साखी

सुन्दरि नहीं है सोहतो सनकादिक के साथ ।
कबहु क दग़ा लगावै कारो हाड़ो लोन्हें हाथ ॥

परज—तिताला

बोल ना का सो बोलिए भाई ।
बोलनहो सब तन्तु नसाई ॥
बोलत बोलत बाट विकारा ।
सो बोलिए जो पोच विचारा ॥

मिले सन्त वचन दुइ कहिए।
मिले असन्त मौन ह्वै रहिए॥
पण्डित सो वो ना हितकारी।
गुरु खसार हिए भकमारी।
कहै कबीर अन्ध घट डोलै।
पूरो होइ विचार हि बोलै॥

२

सो गदधा जो मनकै माना।
ताको बात इन्द्रहु नहि जाना॥
जटा तोरि पहिरावे सेलो।
योग युक्तिका गर्वहु हेलो॥
आसन उड़ाए कौन बड़ाई।
जैसे कौवा चील्ह मेडराई॥
जैसो भीति तैसी है नारी।
राजपाट सब गनै उजारी॥
जस नरक तस चन्दन जाना।
जस बाउर तस रहै सयाना॥
लपसी लौग गनै इकसारा।
खांड प्रहरि मुख फांकै छारा॥

साखी

एही विचार विचार ते गए बुद्धि बल चेति।
दोए मिलि एक होइ रहा मैं काहि लगाऊं हेत॥

कलिङ्ग—तिताला

नारि एक संसार हि आई।
माइ न वाके बापहि जाई॥
गोड़न गुड़न प्राण अन्धारा।
तामें भवरि रहल संसारा॥
दिना सात ले उनको सही।
बुधि अदभुत् अचरज क्या कही॥
वाके वदन परे सब कोई।
बुधि अरबुद अचरज बड़ होई॥

साखी

मूस बिलाई एक सङ्ग कहु कैसे रहि जाए।
अचरज एक देखहु हो सन्तो हस्ती सिंहहि खाए॥

परज—तिताला

चली जात देखी एक नारी।
तर गागरि ऊपर पनिहारी॥
चली जात वै वासओ बाटा।
सोवनिहार के ऊपर खाटा॥
जो इन परै सुपेदी सारी।
खसम न चीन्हे धरनि भै बौरी॥
सांझ सकार दिया लै बारै।
खसमहि छोड़ि सोवे लगवारै॥
वाही के रस निस दिन राची।
पीव से बात कहै नहि साची॥
सोवत छाड़ि चली पिय अपना।
ए दुःख बाधो कहवे कसना॥

साखी

अपनी जांघ उघार कै अपनो कही न जाए।
के चित जाने आपना को मेरा जाने गाए॥

कलिङ्ग—तिताला

तहि या होत अस्थूल न काया।
न तोके सौग ताको पै साया॥
कमल पत्र तरङ्ग जल माही।
सङ्गही रहलि पत्र पै नाही॥
आस पास अण्डे में रहई।
अगणित अन्त न कोई कहई॥
निराधार अन्धा ने जानी।
राम नाम ले उचरी बानी॥
धर्म कहै सब पानी अहई।
ता के मनही पानी रहई॥
टोर पतङ्ग सरै धरियारा।
तेहि पानी सब कर आचारा॥
फन्द छोड़ि जे बाहर होई।
बहुरि फन्द न जाहि सोई॥

साखी

भ्रम के बांधल एइ जग कोइ न करै विचार।
हरि की भक्ति जाने बिना भव बूड़ि मुया संसार॥

८

तेहि साहेब के लागी साथा।
दो दुःख मेटि के होहु सनाथा॥
दशरथ कुल अवतरि नहि आया।
नहि लङ्का के राव सताया।
नहि देवकी के गर्भ हि आया।
नहीं यशोदा गोद खिलाया॥
पृथिवी रमण दमन नहो करिया।
पैठि पाताल नहीं बलि छरिया॥
न वालि राजा सो माडी रारी।
नहि हिरनाकुस वधो पछारी॥
वाराहरूप धरनी नहि धरिया।
छत्री मारि निछत्र न करिया॥
नहि गोवर्द्धन कर में धरिया।
नहि गुवाल सङ्ग वन वन फिरिया॥
गण्डकी शालग्राम नहि फूला।
मत्स्य कच्छ हो नहो जल डूला॥
द्वारावती शरीर नहि छाड़ा।
लेइ जगन्नाथ पिण्ड नहि गाड़ा॥

साखी

कहे कबीर पुकारि के वहु पंथे मति भूल।
जेहि राखो अनुमान कै सो स्थूल नाहि अस्थूल॥

२

माया मोह कठिन संसारा।
यह विचार ना कछु विचारा॥
माया मोह कठिन है फंदा।
होइ विवेकी साइ जन बन्दा॥
राम नाम ले वेरा धारा।
सो वेरा संसारे पारा॥

साखी

राम नाम अति दुर्लभ औरनते नहि काम।
आदि अन्त औ युग युग मोहि रामहि ते संग्राम॥

३

एक काल सकल संसारा।
एक नाम है जगत पियारा॥
त्रिया पुरुष कछु कहो न जाई।
सर्वरूप जग रहा समाई॥
रूप निरूप जाइ नहि बोलो।
हलू काग आजा इन तोलो॥
भूख न तृषा धूप नहो छाहो।
दुख सुख रहित रहा तेहि माहो॥
मानुष जन्म चुके अपराधो।
या तन केर बहुत है साधो॥
तात जननि कहे पुत्र हमारा।
स्वारथ लागि कोन्ह प्रतिपारा॥
कामिनो कहे मोर पिय आहो।
वाघिनो रूप गरासे ताहो॥
सुत कलत्र रहै लव लाई।
जम्बुक नाई रह मुंह बाई॥
काग गृध्र दोउ मरण विचारे।
शूकर श्वान दोउ पन्थ निहारे॥
अग्नि कहे मैं या तन जारूं।
सो न करौं जो जरत उबारूं॥
धरणि कहे मोहि में मिलि जाई।
पवन कहे सङ्ग लेउं उड़ाई॥
जे घरके घर कहे गंवारा।
सो वैरो है लगे तुम्हारा॥
सो मन तुम अपनेके जानो।
विषय स्वरूप भूले विज्ञानो॥

साखी

एतना तनके साझिया जगमो भरि दुःख पाव।
चेतत नाहो नु गुम्धन लवारे मोर मोर गोहराव॥

कलिङ्ग—तिताला

वाटत वटा घटायत छोटी।
परखत पर परखावत खोटी॥

केतिक कहो कहा ले कहो ।
औरक कहो परे जो सही ॥
कहे विना मोहि रहल न जाई ।
ब्रह्म ह ले ले कूकुर खाई ॥

साखी

खाते खाते युग गया बहुरि न चेतहु आइ ।
कहै कबीर पुकारि के ए जोव जोवत जाइ ॥

२

बहुतक सहस करो जिन अपना ।
तेहि साहिब सो भेंट न सपना ॥
खर खोटा जो नहि परखाया ।
चाहत लाभ सो मूल गंवाया ॥
समुझि न परति पातरो मोटो ।
वोको गांठि सबै यह खोटो ॥
कहै कबीर काहि देउ खोरो ।
जब चलि हो झिझि आशा तोरो ॥

३

देव चित सुन हरे जाई ।
सो ब्रह्मा सङ्ग घोर मसाई ॥
जाने मन मन्दोदरि तारा ।
तिन घर जेठ सदा रखवारा ॥
सुरपति जाइ अहल्या छरी ।
सुरगुरु रमणि चन्द्रमा हरी ॥
कहै कबीर हरिके गुण गाया ।
कुन्ती करण कुमारि जाया ॥

४

सुख के वृक्षक जगत उपाया ।
समुझि न परा लो वेधे किछु माया ॥
छो चत्रिन्द्र पतो युग चारो ।
फल हो पाप पुण्य अधिकारो ॥
स्वाद अनन्त कछु वरणि न जाई ।
के चरित्र सो तेहो माहो ॥

नटवट साज साजिया ।
जो देवे सो बाजिया ॥
मोहहि वपुरा युकति न देखा ।
शिव शक्ति विरञ्चि नहि पेखा ॥

साखी

परदै परदै चलि गये समुझि परो नहि वानि ।
जो जान सो वाचि हो नहि तो होत सकल को हानि ॥

५

चत्रिय चत्रिय कर किय धर्मा ।
सबही वाके बाटे कुकर्मा ॥
जिन अवन्धु गुरु ज्ञान लखाया ।
ताको मन तहां ले खाया ॥
चत्रिय सो जो कुटुम्ब सो जूझै ।
पाचो मेटि एक करि बूझै ॥
जीव मारि जीव प्रतिपाले ।
देखत जन्म आपने हारे ॥
हाले करै निसाने घाउ ।
जूझि परै तहां मन्मथ राउ ॥

साखी

जनमत मरण जोवे जोवहि मरण न होइ ।
सुन सनेही राम विना चले अपनपो खोइ ॥

६

ये जियरा तू दुःखहि सभार ।
जो दुख व्यापि रहल संसार ॥
माया मोह बंधा सब लोइ ।
अल्प लाभ मूल गा खोइ ॥
जननी उदर गर्भ में सूता ।
जन्म भयो अस गए बहुता ॥
उपजै विनसै योनि फिरि आवै ।
सुखके लेस सपने नहि पावै ॥
दुःख सन्ताप कष्ट बहु पावे ।
जो न मिले सो जरत बुझावे ॥
मोर तोर में जरै जग सारा ।
धिक् स्वारथी झूठा संसारा ॥

झूठे मोह रहो जग लायो।
इन्हते मांझ बहुरि पुनि आगो॥
जेहि हित के राखे सब सोई।
सो सयान बचै नहि कोई॥

साखी

आपु आपु चेत नहि कौ हु तौ रु सुना होइ।
कहहिं कबीर सुपने जग निरायो थिया
थिया नहि सोइ॥

सोरठ—तिताला

सन्तो भक्ति सत् गुरु आनी।
नारी एक पुरुष द्वै जाया बूझा पण्डित ज्ञानी॥
पाहन फोरि गङ्ग एक निकरो चहुं दिसो पानी पानी।
तै पानी दै पर्वत बूड़े दरिया लहरि समानी॥
उड़ि मक्खी तरिवर को लागी बोले एकै बानी।
वेमाखी के माखा नाहीं गर्भ रहा बिनु पानी॥
नारी सकल पुरुष गा खाया ता ते रहे अकेला।
कहहि कबीर जो अब की समुझै सोई गुरु हम चेला॥

२

सन्तो जागत नींद न कीजै।
काल न खाय काल नहि व्यापै देह जरा नहि छीजै॥
उलटी गङ्गा समुद्रहि शोषै शशि औ राहु गरासै।
नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिनु परकासै॥
बिनु चरण न को दुहु दिशि धावै
बिन लोचन जग सूझै।
सरिता उलटि सिन्धु को ग्रासे यह अचरज को बूझै॥
औंधे घड़ा नाहि जल बूड़े सूधे सो घट भरिया।
जाहि कारण नर भिनि भिनि करै गुरु
परसादे तिरिया॥
पैठि गुफामें राज जग देखा बाहर कछू न सूझै।
उलटा बाण पारधी लागे सूरा होइ सो बूझै॥
गायन कहै कबहु नहि गावै अनबोले नित गावै।
नट बट बाजी पेखनो पेखै अनहद हेत बढ़ावै॥

कथनी बदनी निज करि जोवै ए सब अकथ कहानी।
धरती उलटि अकाश हि बेधै ए पुरुषनकी बानी॥
बिना पियाले अमृत न अंचवै नदी नीर भरि राखै।
कहै कबीर सो युग युग जीवै जो राम सुधारस चाखै॥

कलिङ्ग—तिताला

सन्तो घर में झगरा भारी।
रात दिवस मिलि उठि उठि लागे पाच टोटा
एक नारी॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहै पाचो अधिक सवादी।
कोउ काहु को हटक न मानै आपुहि आपु मुरादी॥
दुरमति के दुहा गनि मैं टेटे चाप चपेरी।
कहहि कबीर सोइ जन मेरा जा घरकी रारि निबेरी॥

विहाग—तिताला

सन्तो देखत जग बौराना।
साच कहो तौ मारण धावै झूठे जग पतियाना॥
नियमी देखा धर्मी देखा प्रात करै असनाना।
आत्मै मारि पखानहि पूजै इन के कछू न ज्ञाना॥
बहुतक देखा पीर औलिया पढ़े कतेब पुराना।
करौ मूरि तदबीर बतावै उन में वह जो ज्ञाना॥
आसन मारि डिम्भ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथरनि पूजन लागे तीरथ गर्व भुलाना॥
माला पहने टोपी पहने छाप तिलक अनुमाना।
साखी सबदा गावत भूलै आत्म खबरि ना जाना॥
हिन्दू कहै मोहि राम पियारा तुरुक कहै
रहिमाना।
आपुसमें दोउ लरि लरि मुए मर्म कोई
नहि जाना॥
घर घर मन्त्र देते फिरही महिमाको अभिमाना।
गुरु समेत शिष्य सो बूड़े अन्तकाल पछताना॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो ए सब भर्म भुलाना।
केतिक कहूं कहा नहि मानै सहजहि
सहज समाना॥

विहाग—यत

सन्तो अचरज एक भौ भारी ।
बहु तो कहो ताको पति भारी ॥
एक पुरुष एक है नारी ताकर करहु विचारा ।
एकै अण्ड सकल चौरासी भ्रम भूला संसारा ॥
एकै नारी जाल पसारा जग में भया अन्देसा ।
खोजत काहु न पाया ब्रह्मा विष्णु महेसा ॥
नाग फास लिये घट भीतर मूसेमि सब जग जाई ।
ज्ञान खण्ड गवी ना सब जूझै पकरि काहु
नहि पाई ॥
आपहि मूल फूल फल बारी आपुहि चुनि
चुनि खाई ।
कहै कबीर सोई जन उबरे जेहि गुरु लियो
जगाई ॥

२

सन्तो अचरज एक सौ भारी ।
पुत्र खहल महतारी ॥
पिता के सङ्ग भई है बावरी कन्या रहलि कुमारी ।
खसमहि छोड़ि ससुर सङ्ग गवनो सो किन
लेहु विचारी ॥
भाई के सङ्ग सासुर गौनी सासु सावती दीन्हा ।
ननद भवज परपञ्च रचो है मोर नाम नहि लीन्हा ॥
समधी के सङ्ग नाही आई सहज भई घरबारी ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो पुरुष
जन्म भौ नारी ॥

३

सन्तो कहो को पति आई ।
झूठो कहत सांच बनि आई ॥
लव करत रतन अवध अमोलिक नहि
गाहक नहि साई ।
चिमकि चिमकि चिमक दृग दहु दिश
अाख रहा छिरकाई ॥
आपुहि गुरु कृपा कछु कीन्हे निर्गुण अलख लखाई ।
सहज समाधि उनु सुनो जागो सहज मिले रघुराई ॥
जहा जहा देखो तहा तहा सोई सब
माणिक बेधो हीरा ।
परम तत्त्व गुरु ते पाया कहै उपदेश कबीरा ॥

४

सन्तो आवे जाए सो माया ।
है प्रतिपाल काल नहि पा कै नहिं कहुं
गया न आया ॥
काम समुद्र मछ कछ हो ना संखासुर न संहारा ।
हृदयानल द्रोह नहि वाके कहो कवन के मारा ॥
खम्भ फोरि जो बाहर होई ताहि पतीजै सब कोई ।
हरिनाकुस नख उदर विदारा सो नहि करता होई ॥
बावन रूप न बलि काज वो जो जांचे सो माया ।
बिना विवेक सकल जग भर्मा माया जग भर्माया ॥
परशुराम क्षत्रिय नहि मारा ए छलया कीन्हा ।
सत गुरु भक्ति भेद नहि पाया जीव अमिथ्या दीन्हा ॥
सिर जनहार ना व्याही सीता जल पयान नहि बांधा
लै रघुनाथ एक कै सुमिरै जो सुमिरै सो आंधा ॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आया कर ते कंस न मारा ।
है महबीन सबन को साहिब नहि जीता नहि हारा ॥
बे करता नहि बोध कहाया नहो असुरके माया ।
ज्ञानहीन करता सब भूमे माया जग भरमाया ॥
वै करता नहि भये कलङ्की नाहि कंस गह मारा ।
ए छल बल सब माया कीन्हो यती सती सब टारा ॥
दश अवतार ईश्वरो माया करताके गिन पूजा ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो उपजै खपै सो दूजा ॥

५

सन्तो बोले ते जग मारै ।
अनबोलेते कसे के बनि है शब्द कोइ न विचारै ॥
पहिले जन्म पुत्र के भयऊ बाप जनमिया पाछे ।
बाप पूत को एकै माया ए अचरज को काछे ॥
दोहुर राजा टीका बैठे विषहर करै खवासी ।
श्वान बापुरा घर नहि ठाना बिल्लो घर में दासी ॥

काग दो कार कार कुरङ आगे बैल करे मठवारो ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो भलो सैन्य बनो वारी ॥

६

सन्तो राम है दूनो हम दीठा ।
हिन्दू तुरुक कहा नहि माने स्वाद दूनो को मीठा ॥
हिन्दू वरत एकादशी सावै दुग्धसा धारा मेती ।
अनके त्यागे मनके न हटके पार न करे संगवेती ॥
तुरुक रोज़ा नमाज़ गुज़ारे बिस्मिल्ला बाङ्ग पुकारे ।
उनको बिहिश्त कहाते होइ है माझि मुरगी मारे ॥
हिन्दूकी दया मेहर तुरुकनको दूनो घटमें त्यागी ।
वे हलाल वै झटका मारे आगि दूनो घर लागी ॥
हिन्दू तुरुक की एक राह है सत गुरु राह बताई ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो राम न कहो खुदाई ॥

७

सन्तो पाड़े निपुण कसाई ।
बकरा मारि भैंसाको धावे दिलमें दरद न आई ॥
करि असनान तिलक दै बैठे विधि सो देवी पुजाई ।
आतम राम छनक मो विनसे रुधिर की
नदी बहाई ॥
अति पुनीत उच्च कुल कहिए सभा माहि
अधिकाई ।
इनते दीक्षा सब कोइ मागे हसि आवे मोहि भाई ॥
पाप कटन को कथा सुनावे कर्म करावे नीखा ।
हम ती दोउ प्रखपर देखो यम लाए धोखा ॥
गाई वधेते तुरुका कहिए उनते वे का छोटे ।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो कलिमें ब्राह्मण खोटे ॥

८

सन्तो मते मात जन रङ्गी ।
पीवत पियाला प्रेम सुधारस मतवाले सब सङ्गी ॥
अरधे उरधे माटी रोपि ले कैसो वरसे गारी ।
मूदे मदन काटि क्रम कस भर सन्तत चुवत अगारी ॥
गोरखदत्त वसिष्ठ व्यास कवि ते नारद
शुकमणि जोरी ।
सभा बइठि शम्भु सनकादिक तह फिरे अंधर
कटोरी ॥
अम्बरीक औ जाग जनक भट शेष सहस्र
मुख फाना ।
कहां लो गनों आदि अन्त ले महले महल दिवाना ॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण माती शिवको नारी ।
निर्गुण ब्रह्म माती वृन्दावन अजहू न छूटो
खुमारी ॥
सुर नर मुनि यती पीर औलिया जिन रे पिया
तिन जाना ।
कहै कबीर गूंगे का शकर क्यों करि करै बखाना ॥

९

राम तेरी माया द्वन्द्व मचावे ।
गति मति वाकी समुझि परै नहि सुर नर
मुनिन नचावे ॥
क्या सैमरकी शाख बढ़ाए फूल अनुपमे वानी ।
केतिक चातक लागि रहो है देवतरु वा उगानी ॥
क्या खजुरी बड़ाई तेरी फल कोई नहि पाव ।
ग्रीषम शीत आइ तुलानी तेरी छाया काम न आवे ॥
अपने चतुर अवरके सिखवे कनक कामिनी सवानी ।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो रामचरण रति मानी ॥

१०

राम राय संशय घटे न छूटे ।
तावे पकरि पकरि जमजम लूटे ॥
होइ सुसको न कुलीन कहावे तुम योगी सन्यासी ।
ज्ञानी गुणी शूर कवि दाता या मति कबहु विनासी ॥
सुमत वेद पुराण खोटे सब अनुभव भाय में दरसी ।
लोह हिरन्या होत दुहु केसे जौ नहि पारस परसी ॥
जीवत न तरहु मुए का तरि हो जीवते जो न तरे ।
गहै प्रीति तो कियो जिन जासो सोइ तहा अमरै ॥
जो कछु कियो ज्ञान अज्ञाना सोई समुझि सयाना ।
कहे कबीर तासो का कहिए जो देखत
दृष्टि भुलाना ।

काफ़ी—तिताला

राम राय चली हन्दावन मा हो घर छाड़े जात जुलाई।
गजनो गज दश गज तुन इसको पुरिया एक तनाई॥
सात सूत नौ गेड़ बहुत्तरि पाटु लागु अधिकाई।
ता पट तुल न तुले गज न अमाई पैसनो सेर अाढ़ाई॥
ता में घटवट रति ज नाहो करकच कर धर हाई।
निति उठियै षट् सम सो घर वश ता पर लागि तिहाई॥
भीगो पुरिया काम न आवे जुलहा चला रिसाई।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो जिन यह सृष्टि उपाई॥
छाड़ि पसार राम भजु बौरे भव सागर तरि लाई॥

२

राम राय झिझि यन्त्र बाजे चरण विहीना नाचे।
कर विनु बाजे सुने अवण विनु सरवन श्रोता सोई॥
पट न सुवेश सभा विनु अवसर बूझो मुनि जन लोई।
इन्द्री विनु भोग स्वाद जिह्वा विनु आ छयाड़ विहूना।
जागी चौ मन्दिर तहां मूसे खसम अचत घर सूना॥
बीज विन अङ्कुर पेड़ विन तरवर विन फूले
फल लागा।
बांझको कोखि पुत्र अवतरिया विन पग सिरौ
यर चढ़िया॥
मसि विन द्दात कलम विन कागज विनु
अच्छर सुध होई।
सुध विनु सहज ज्ञान विनु ज्ञाता कहै कबीर
जन सोई॥

कलिङ्ग—तिताला

रामहि गावे औरहि समुझावे हरि जाने विना
विकल फिरे।
जा सुख वेद गायत्री उचरे ता सु बचन
संसारहि तरे॥
ताके पाव जगत उठि लागे सो ब्राह्मण जोव
घात करे।
अपने उच्च नीच कर भोजन विन तम हठि
उदर भरे॥

ग्रहन अमावा देठ कटक मारे कर दीपक
लिये कूप परे।
व्रत एकादशी के मर्म न जाने भूत व्रत
हठि हृदय धरे॥
तजि कपूर गांठी विष बांधे ज्ञान गमाइ
सुगन्ध फिरे।
छोजे साव चोर प्रतिपाले सन्तजनाको कूटि करे॥
कहे कबीर जिह्वा के लम्पट इह विधि
प्राणी नरक परे॥

२

राम गुण न्यारो न्यारो।
अबुझा लोग कहां लग बूझे कोई बूझन
हार विचारो॥
केते रामचन्द्र तपसी से जिन हो जग भरमाया।
केते कान्ह भए मुरलोधर तिन भी अन्त न पाया॥
मत्स्य कच्छ वराहसरूपी बावन नाम धराया।
केतक बुद्ध भए अकलङ्की तिन भी अन्त न पाया॥
केते सिद्ध साधक सन्यासी जिन वनवास वसाया।
केतकि मुनि जन गौरख कहिए तिन भी
अन्त न पाया॥
जाको गति ब्रह्मा नहि जानी शिव सनकादिक
हारे।
ताके गुण बल कैसे कै पै हो कहहि कबीर पुकारे॥

३

ए तत्त्व राज प्यो होइ प्रानी तुम बूझो अकथ
कहानी।
जाको भाव होत हरि ऊपर जाग्रत रैन विहानी॥
गाइनड़ो है सूनहु घेरे सिंह रहा वन घेरे।
पांच कुटुंव मिलि जूझन लागे बाजन बाजि घनेरे॥
रोहु मृगा ससे वन हाके पारथ वाणहि मेले।
सादर जरे सकल वन डाहे मच्छ अहेरा खेले।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो जो एह पद अरथावे।
जो इह पद को गाइ विचारे आपु तरे मोहि तारे॥

४

कोई राम रसिक रस पीयोगी।
पीयोगी सुख जीवोगो ॥
फल अलङ्कृत बीज नहि बकला शुक पंछी
तहां रस चाखेल।
चुवे न बुन्द अङ्ग नहीं भीजै दशरथ वर सब
सङ्ग ला पैल ॥
निगम रिसाल चारिक फल लागा तिनमें
तीनो समावै ।
एक दुरि चाहै सगा न कोई यतन यतन
काहु विरलै पावै ॥
गए बसन्त ग्रीष्म ऋतु आई बहुरि न तरुवर
तर आवै।
कहै कबीर स्वामी सुख सागर राम मगन होइ
सो पावै ॥

६

राम मरमसि कौन दण्ड लागा।
मरिबे का करबे अभागा ॥
कोई तीर्थ कोइ मुण्डित केशा।
पाषण्ड कर्म मन्त्र उपदेशा ॥
विद्या वेद पढ़ि करे अहंकारा।
अन्तकाल मुख फांके छारा॥
दुःखी सुखी होइ कुटम्ब जिवावै।
मरण दाव इसकर दुःख पावै॥
कहहि कबीर यह कलि है कसोटी।
मोर है करवासी निकली खोटी॥

आशावरी—यत्

अवधु छाड़ो मन विस्तारा।
सो पद गहो जाहि सो सद्गति परब्रह्म सो न्यारा॥
नाहि महादेव नाहि महम्मद हरि हज़रत तब नाही।
आदम ब्रह्म नाहि तब होते नहो धूप नहि छाही ॥
असिया से पैगम्बर नाही सहस्र अट्टासी सुनो।
चन्द्र सूर्य तारागण नाही मत्स्य कच्छ नाहि दुनो ॥
वेद कतेब सुमत नहि संयम नहि यम ना परिसाई।
बांग नमाज़ कलमा नहि होते रामो नाहि खोदाई॥
आदि अन्त मन मध्य न होते आतश पवन न पानी।
लक्ष चौरासी जीव न होते साखी शब्द न वानी ॥
कहहि कबीर सुनो हो अवधू आगे करहु विचारा।
पूरण ब्रह्म कहांते प्रगटे कृत्तिम किन उपचारा॥

आशावरी—तिताला

अवधु कुदरत की गति न्यारी।
रङ्क निवाज़ि करै वै राजा भूपति करे भिखारी ॥
याते लवङ्ग सर्प नहि लागै चन्दन फूल न फला।
तक्षक शिकारी रमै जंगल में सिंह समुद्रहि झूला ॥
रेड़ रूख भये मलया गिरि चहुं दिश फूटो वासा।
तीनो लोक ब्रह्माण्ड खण्डमें देखे अन्ध तमासा ॥
पङ्गा मेरु सुमेरु उलङ्घै त्रिभुवन मुक्ता डोलै।
गूंगा ज्ञान विज्ञान प्रकासे अनहद वाणी बोलै॥
आकाश हि दाधि पाताल पठायो सो स्वर्ग पर राजै।
कहै कबीर राम है राजा जो कछु करै सो छाजै॥

२

अवधु सा योगी गुरु मेरा।
जो इह पद का करै निवेरा ॥
तरुवर एक मूल विनु ठाढो विन फूले फल लागा।
शाखा पत्र कछू नहि वाके अष्ट गगन मुख जागा ॥
पै विनु पत्र करह विनु तुम्बा विनु जिह्वा गुण गावै।
गायन हार के रूप रेख नहि सत् गुरु होइ लखावै ॥
पंछी को खोज मन को मारग कहहि
कबीर दोउ भारो।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरतिकी वलिहारी ॥

३

अवधु वै तुतरा बतराता।
नाचे बाजन बाज बराता॥
मार के माथे दूलह दीन्हो अकथ जोरि के हाता।
मडये एक चाहन समधी दीन्हो पुत्र पिया हल माता॥

दुलहिनो लीपि चउका बइठायो निर्भय पद
परकाता ॥
माते उलटि बरातहि खायो भली बनो कुशलाता ।
पाणिग्रहण भयो भव मण्डन सुखमनि सुरति समानो ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो बूझहु पण्डित ज्ञानो ॥

४

कोई बिरला दोस्त हमारो भाई रे बहुत बहुत
का कहिए ।
साधन भजन संवारैं आपै ज्यो राम राखे त्यो रहिए ॥
आसन पवन योग शुचि स्मृति जो पिय पढ़ि बेलाना ।
छ: दर्शन पाषण्ड छानवे इकले काहुं न जाना ॥
आलम दुनो सकल फिरि आयो एकल वे निपाना ।
ताजो करि गहि जगत उठायो मनमें मन न समाना ॥
कहै कबीर योगो अरु जङ्गम फोको उनको आसा ।
राम नाम रटैं ज्यो चातक निश्चय भक्ति निवासा ॥

५

भाई रे अद्भुत रूप आथा है कहो ताको पतियाई ।
जहा जहा देखो तहा तहा सोई सब घट
रहल समाई ॥
लक्ष्मी बिन सुख दरिद्र दुःख बिनहु नींद बिना
सुख सोवै ।
यश बिनु योगो रूप बिनु आशिष ऐसो रत्न
बिहूना रोवै ॥
भ्रम बिनु गञ्जन मान बिनु निरखे रूप बिना
बहुरूपा ।
गिधि बिन सुरति रहस बिनु आनन्द ऐसो
चरित अनूपा ॥
कहै कबीर जगत हरि मानिक देखो चित अनुमानो ।
परिहरि लाख लोक कुटुम्ब सब भजहु न
सारङ्गपानो ॥

६

भाई रे गइया एकरी रांचि दियो है ।
गइया भार अभरमो भयो है ॥
नौ नारो को पानो पिबत हो तृषा तज न बुझाई ।
कोठा बहत्तर अवल बलावे बज्र केवार लगाई ॥
खूटा गाड़ि डोरी दृढ़ बांधो तइयो जोरि पराई ।
चारि वृक्ष छव शाखा वाके पत्र अठारह भाई ॥
एतिक ले गइया गम को है गइया अति लहिराई ।
ई सातो औरई सातो नव छव चौदह भाई ॥
वेतोक ले गइया खाय बढ़ायो गैया तउ न अघाई ।
सुरता में रातो है गैया सेत सोधो है माई ॥
अवरन धरन कछू नहि वाके सांझ असांझइ खाई ॥
ब्रह्मा विष्णु खोजि के आये शिव सनकादिक भाई ।
सिद्ध अनन्त वाके खोजि परे हैं गइया किनहु न पाई ।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो जो यहु पद अरथावै ॥
जो यह पद को गाइ विचारै आगे होइ निबहावै ॥

योगिया—तिताला

माई रे नैन रसिक जो जागै ।
परब्रह्म अवगति अविनाशी कैसेहुके मन लागै ॥
अमली लोग खुमारी तृष्णा सो कतहु सन्तोष न पावै ।
काम क्रोध दोउ मतवाला माया भरि भरि आवैं ॥
ब्रह्म कलाल बैठावन भाटो ले इन्द्रिय रस चावैं ।
सङ्गहि पोच है ज्ञान पुकारै चतुरा होइ सो पावैं ॥
सङ्कट सोच पोच या कलिमें बहुतक व्याधि शरोरा ।
जहां धोर गम्भोर अति निश्चल तहां उठि मिलहु
कबीरा ॥

२

भाइ रे दे लमदोश कहां ते आये काहु कौने भरमाए ।
अल्लह राम करोमा केसो हरि हजरत नाम धराए ॥
गहना एक कनकते गहना इन में भाव न दूजा ।
कहन सुननके हे करि थापे एक नमाज एक पूजा ॥
वही मह्मदेव वही महम्मद वही ब्रह्मा वही
आदम कहिये ।
को हिन्दू को तुरक कहावे एक जमीं पर रहिए ॥
वेद कतेव पढ़हि वे कुतबा वे मुलना वे पांड़े ॥
बेगर बेगर नाम धराया एक माटोके भांड़े ।

कहै कबीर वे दूनो बूड़े रामहि किनहु न पाया ॥
वे खस्सी वे गाय कटावे बाद हि जन्म गंवाया ।

२

हंसा संशय छूरी कुहिया ।
गइया पीयाव बछरुया दुहिया ॥
घर घर सावज खेलैं अहेरा पाथर वोटा लेई ।
पानी मछा तलफि गयो भू भरि धूरिहि लोरा देई ॥
धरती बरीसै बादर भीजै भीर भयो पै राज ।
हंस उड़ानि ताल सुखानि चहल वेधा पाज ॥
जौ लग कर डोलैं पग चलै तो लग आश न कीजै ।
कहहि कबीर जो चलत न दीसै तासु
वचन का लीजै ॥

सिन्धु—तिताला

हंसा हो नित चेत सवेरा ।
इह परपञ्च कान बहुतेरा ॥
पाषण्डरूप रचो त्रिगुण तेहि पाषण्ड भूले संसारा ।
घर के खसम वधिक वे राजा प्रजा का धौं करे विचारा ॥
भक्ति न जाने भक्त कहावे तजि अमृत विष
कइल न सारा ।
आगी बड़े ऐसहो भूले तिनहु न मानल कहल
हमारा ॥
कहल हमारा गांठी बांधो वो निसुवासर
रहि हो हुशियारा ।
एकलि गुरु बड़े खपच डारि ठगौरो सब जग मारा ॥
वेद कतेब दोइ फन्द पसराते फन्द परू आपु बेचारा ।
कहहि कबीर ते हंस न बिसरे जौ मैं मिलो
छोड़ावम हारा ॥

२

हंसा प्यारे सरवर ते जे जाई ।
जे सरवर विच मोतिया चुगत हुते बहुविधि
केलि कराई ॥
सूखे ताल पुरइ बीजल छाड़े कमल गए कुम्हिलाई ।
कहहि कबीर जे अब के बिछुरे बहुरि मिलो
कब आई ॥

आसावरी—तिताला

हरि जन हंस दशा लिये डोले ।
निर्मल नाम चुनी चुनी बोले ॥
मुक्ताहल लिए चोंच सुभावे ।
मौन रहै को हरि यश गावे ॥
मान सरोवर तट को वासी ।
रामचरण चित अन्त उदासी ॥
काक कुबुद्धि निकट ना आवे ।
प्रतिदिन हंसा दूषण पावे ॥
नीर क्षीरका करे निबेरा ।
कहहि कबीर सोइ जन मेरा ॥

२

हरि मोर पिय मैं राम की बहुरिया ।
राम बड़ा मैं तनक लहुरिया ॥
हरि मेरे रहटा मोर तनरे पिउरिया ।
हरि के नाम ले कतलि बहुरिया ॥
छव मास ताग वर्ष दिन कुकुरिया ।
लोग बोले भल काते ले वपुरिया ॥
कहहि कबीर सूत मल काता ।
रहंटा नाहि मुक्तिको दाता ॥

३

हरि ठग जगत् ठगौरी लाई ।
हरि के वियोग कैसे जीवहु रे भाई ॥
को काको पुरुष कवन काकी नारी ।
अकथा कथा यम दृष्टि पसारी ॥
को का को पुत्र कवन काको बापा ।
को मारे को सहै सन्तापा ॥
ठगि ठगि मूल सब निकौ लीन्हा ।
राम ठगौरी काहु न चीन्हा ॥
कहहि कबीर ठग मो मन माना ।
गई ठगौरी तब ठग पहिचाना ॥

४

हरि डिग ठगन सकल जग डोला ।
गमन करत मैं समुझ न बोला ॥

बालापनके मित्र हम तुम्हारे।
हमहि छोड़ि काहे चलेहु सकारे॥
तुमहि पुरुष मैं नारि तुम्हारी।
तुम्हरी चाल पाहन ते भारी॥
माटी को देह पवन को शरीरा।
हरि ठग ठग सो डरे कबीरा॥

५

हरि बिनु भुवि बिगुरचे संगवा जहां जाय गये
अपन पौ खोई।
तेहि फन्दे बहु फन्दा योगी कहै योग है
मोको दुतिया और न कोई॥
ज्ञानी गुणी सुर कवि दाए जो कहै बड़ हमही।
जहांते उपजें वहां समानि छुटी गइल सब तमही॥
बायें दाहिने ते जे विका रानो जु कहै हरिपद
गहिया।
कहहि कबीर गूंगे गुड़ खाया पूछे सो का कहिया॥

६

ऐसे हरि सो जगतल सरत है।
पण्डव कतहुं गरुड़ धरत है॥
मूस बिलाई इक सन हेत।
जम्बुक करे केहरि सो खेत॥
अचरज एक देखि संसारा।
सुनहि खेद कुण्डल असवारा॥
कहै कबीर सुन सन्तो भाई।
यह सन्धि काहु विरले पाई॥

७

पण्डित वाद वदे सो झूठा।
राम के कहे जगत गति पावे तोपाडु कहे सुख मीठा॥
पावक कहे पाव जो दाहे जल कहे तृषा बुझाई।
भोजन कहे भूख जो भाजे तो दुनिया तरि जाई॥
नर के साथ सुवा हरि बोले हरि परताप न जाने।
जो कबहीं उड़ि जाइ जङ्गल में फिरि हरि
सुरति न आने॥
विनु देखे विनु अरस परस विनु नाम लिए का होई।
धनके कहे धनिक जो होवे निरधन रहे न कोई॥
साचि प्रीति विषम माया सो हरि भगतन की हांसी।
कहहि कबीर एक राम भजे विन बांधे
यमपुर जासी॥

८

पण्डित देखो मन में जानी।
कहु दहु छाति कहा ते उपजे तबही छुति
तुमे जानी॥
छूतिहि जे जे छूति विवरजत जाके सङ्ग न माया।
छूतिहि जेवन छूतिहि अचवन छूतिहि जन्म उपाया॥

९

पण्डित सोधि कहो समुझाई जाते आवागवन नसाई।
अर्थ धर्म काम मोक्ष कहु कौन दिसा बसे भाई॥
उत्तर कि दक्षिण पूर्व की पश्चिम सरग
पातालके माहीं।
विना गोपाल ठौर नहि कतहु नरक जात दहु काही॥
अनजानेका नरक सरग है हरि जानेके नाहीं।
जेहि डरके सब लोग डरत हैं सो डर हमरे नाहीं॥
पाप पुण्यकी शङ्का नाहीं सरग नरक न जाहीं।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो जहां पद तहां समाहीं॥

१०

पण्डित मिथ्या करहु विचारा।
ना वहां सृष्टि न सिरजनहारा॥
स्थल आकाश पवन नहि पावक रवि शशि
धरणी न नीरा।
ज्योतिःस्वरूप काल नहीं वहां वचन न आहि शरीरा॥
कर्म धर्म कछु नाहीं वहवां न वहां मन्त्र न पूजा।
साधन सहित भाव नहि वहवां सो दहु
एक न दूजा॥
गोरख राम एक नहि वहवां न वहां वेद विचारा।
हरि हर ब्रह्मा नहि शिव शक्ति न वहां तीर्थ अचारा॥
माय बाप गुरु जाके नाहीं सो दहु दुइको अकेला।

कहहि कबीर जो अबको समुझै सोई गुरु
हम चेला ॥

कलिङ्ग—तिताला

बूझो पण्डित करहु विचारो।
पुरुष है कि नारी ॥
ब्राह्मण के घर ब्राह्मणी होती योगी के घर चेली।
कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुरकुनी कलि में
रहति अकेली ॥
वर नहि वरो व्याह नहि करो पुत्र जन्म होनहारी।
कारो मूड काह नहि छाड़ो अजहु आदि कुमारी ॥
माईके हो जाउ नहि ससुरा साई सङ्ग न सोऊं।
कहै कबीर मैं युग युग जीऊं जाति पांति कुल खोऊं॥

१

कौन मुया कहु पण्डित जाना।
सो समुझाइ कहो सयाना ॥
मूए ब्रह्मा विष्णु महेशू।
पारवती सुत मुए गणेशू ॥
मुए चन्द्र मुए रवि सेसा।
मुए हनुमत जिन्ह बांधिन सेता ॥
मुए कृष्ण मुए करतारा।
एक न मुए जो सिरजनहारा ॥
कहहि कबीर मुया नहि सोई।
जाको आवागमन न होई ॥

२

पण्डित आचार्य्य एक बड़ होई।
एक मल मूत्र अन्न नहि खाहो एक मह
सिझै रसोई ॥
करि असनान देवनकी पूजा नव गुण कांधे जनेऊ।
हाड़ो हाड़ हाड़ थारो मुख अस षट् कर्म वनेऊ ॥
धर्म कथे जह जोव वधे जह अकरम करम करे
मेरे भाई।
जो तुम को बाह्मण कहिये तो का को
कहिये कसाई ॥

कहहि कबीर सुनो हो सन्तो भर्म भूलि दुनो भाई।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम या गति विरले पाई ॥

सिन्धु—तिताला

पांड़े बूझि पीवो गे तुम पानी।
मटियाके घरमें बैठे ता में सृष्टि समानी ॥
छप्पन कोटि यादव तहां भीगे मुनिजन
सहस अठासी।
पयग पयग पैगम्बर गाड़े सो सब सरि भी माटी ॥
मत्स्य कच्छ घरियार बियानें रुधिर नीर जल भरिया।
नदिया नीर नरक भरि आये पशु नानुग सब सरिया ॥
हाड़ झरि झरि गूद गलि गलि दूध कहां ते आया।
सोलि खाड़े यवन बोइगे मड़ए छूति लगाया ॥
वेद कवेद छांड़ि दे पांड़े यह सब मनका भर्मा।
कहै कबीर सुनो हो पांडे ए सब तोरे कर्मा ॥

२

पण्डित देखो हृदय विचारी।
को पुरुष को नारी ॥
सहज समाना घट घट बोलै वाके चरित अनूपा।
वाको नाम क्या कहि लीजै नावै वरनन रूपा ॥
तैं मैं क्या करता नर बौरा क्या तेरा क्या मेरा।
राम खुदा शक्ति शिव एकै कहो धौ काहि निहोरा ॥
वेद कुरान पुरान केतावा नाना भांति बखाना।
हिन्दू तुरुक जइनि अरु योगी एकलो काहु न जाना॥
छौ दर्शन में जो परमाना तासे ना मन माना।
कहै कबीर हमें हो बौरे ये सब खलक सयाना ॥

३

बूझहु बूझहु पण्डित पद निरवाना।
सांझ परे कहा वावसे भाना ॥
ऊंचे नीचे पर्वत टेला नौन।
विनु गाइन तहां उठै गौन ॥
के सम प्यास मन्दिल नहि जहवा।
सहस्र धेनु दुहावे तहवा ॥

नित्य अमावस नित संक्रान्ति ।
नित्य नवग्रह बैठे पांति ॥
मैं तोहि पूछौ पण्डित जना ।
हृदये ग्रहण लागु केहि घना ॥
कहै कबीर इतनो नहि जाना ।
कौन शब्द गुरु लागे काना ॥

४

बूझु बूझु पण्डित निर्वाण होई ।
आधा बसे पुरुष आधा बसे जोई ॥
बिरवा एक सकल संसाला ।
स्वर्ग सीस जर गैल पताला ॥
बारह पखुरी चौबीस पाता ।
घन बरोह लागा चहु पासा ॥
फूले फले न वाको बानो ।
निसि दिवस बिकार चुवै पानी ॥
कहै कबीर कछु अछुलौ न तहिया ।
हरि बिरवा तौपाल न जहिया ॥

५

बूझ बूझ पण्डित मन चित लाई ।
कबहि भई लौ कबहि सुखाई ॥
खन मन डूबे खन अवगाह ।
रतन न मिलै पावे नहि थाह ॥
नदिया नहि सिलसिल बहै नीर ।
मत्स्य न मरै के बटेर है तीर ॥
पोखरा नाहि बंधल तहं घाट ।
पुरइनि नाहि कमल में बाट ॥
कहै कबीर एक मन का धोखा ।
बइठा रहै चलन चाहै चोखा ॥

६

बूझि लीजै पुरि पुरि ब्रह्मज्ञानी ।
वर्षायो परिया बुन्द न पानी ॥
च्यूंटीके पग हस्ती बांधी छेरी बाघहिं खाए ।
उदधि माह सो निकलो माछरी चौड़े गेह कराए ॥
मेड़क सर्प रहै एक सङ्ग बिलरिया श्वान बिहाई ।
निति उठि सिंह श्वानते डर पै अद्भुत कथा न गाई ॥
कौरव संगर गावन घेरे पार्थ बाण मिले ।
उदधि भूपती तरे बड़ा हो मत्स्य अहेरा खेले ॥
कहै कबीर ए अद्भुत ज्ञाना को इह ज्ञानं माने ।
विना परों उड़ि जाइ आकाशहि जीव मरण
नहि जानै ॥

७

वा बिरवै चीन्हे जो कोई ।
जरा मरण रहित तन होई ॥
बिरवा एक सकल संसारा ।
पेड़ एक फूटल तिन डारा ॥
मध्यकी डार चारि फल लागा ।
शाखा पत्र गने को वागा ॥
बेलि एक त्रिभुवन लपटानो ।
बांधे ते नहि छूटे ज्ञानी ॥
कहै कबीर हम जात पुकारा ।
पण्डित होइ सो करे विचारा ॥

सोरठ—तिताला

साईं के सङ्ग सासुर आई ।
सङ्ग नाहि सुतौ स्वाद नहि पाई ॥
गो जोबन सपनेकी नाई ।
जना चारि मिलि लगन सुखाई ॥
जना पांच मिलि मांडो छायो ।
सखी सहेली मिलि मङ्गल गायो ॥
दुःख सुख माथे हरदी चढ़ाई ।
गांठी जोरि भाइपति पाई ॥
अर्घ दई ले चली सुवासिनी चोकै
राड भई संग गाई ।
भर्यो विवाह चली बिनु दुलहे बाट
जात समधी समुझाई ॥
कहै कबीर हम गोने जैबे ।
तब कन्त ले तूर बजइबे ॥

२

नर को ढाढस देखो आई।
कछु अकथ कथा है भाई ॥
सिंह सहदुअ एक हरढो तिन सोकस वो इन धाने।
वनको भलुइया चाखुर फिरे छागर भये हैं किसाने ॥
छेरी बाघ व्याह होइ हे मङ्गल गावहि गाई।
वनकी रोज धरि दाहेज दीन्हो गोलुक दे जाई ॥
कागा कापड़ धोवन लागे वकुला किरपे दाँते।
माछी मूड़ मुड़ावन लागी हमहु जाइब वरियाती ॥
कहै कबीर सुनो हो सन्तो जो यह पद अरथावे।
सोई पण्डित सोई ज्ञाता सोई भक्त कहावे ॥

३

नर को नहि परतीत हमारी।
झूठे वणिज किया झूठा सो पूजी सबन मिलि हारी॥
षट् दर्शन मिलि साथ बुलायो त्रिदेवा अधिकारी।
राजादे सबड़ो परपञ्चो रैयत रहत उजारी ॥
उत ते इत इत ते उत रहइ जलकी साटि सवारी।
ज्यों कपि डोरि बांधि बाजीगर अपनो खुशी पसारी ॥
यह पेड़ उत्पत्ति प्रलयको विषिया सबै बेकारी।
जैसे श्वान अपावन रचि त्यों लागो संसारी ॥
कहहि कबीर ए अद्भुत ज्ञाना को माने
बात हमारी।
अजहुं लेउ छोड़ाय जगत् सो जो करु सुरति संभारी॥

कालिङ्ग—तिताला

ना हरि भजे न आदत छूटी।
सब दे समुझि सुधारत नाहो अंधरे भए इ
हिएकी फूटी ॥
पानी मा गह पाषाणको देखो ठोकत ठोकत
उठे भभूका।
सहस्र घड़ा नितही जल ढारे फिरि सूके का सूका ॥
सेतहि सेत सेत भो अङ्गा सेने बाढ़ि अधिकाई।
जो सनिपात रोगि यह मारो सो साधन सिधि पाई॥
अनहद कहत कहत जग विनसे अनहद
सृष्टि समानो।
निकटि पयाना यमपुर धावे बोले एकै वानी ॥
सत् गुरु मिले बहुत सुख लहिए सत् गुरु
शब्द सुधारै।
कहै कबीर सो सदा सुखारी जो यह पदहि विचारै ॥

सिन्धु—तिताला

नर हरि लागी धो विकारा विनु ईंधन मिले
न बुझावनिहारा।
मैं जानो तोहि सो व्यापे जरत सकल संसारा ॥
पानी माह अग्निको अङ्कुर लै मन बुझावन पानी।
एक न जरे जरे नर नारी युक्ति न काहू जानी ॥
शहर जरे पहरू सुख सोये कहै कुशल घर मेरा।
कुम्हिया जरी वस्तु निज उबरी विकल राम रङ्ग तेरा॥
कुबुजा पुरुष गले इक लागा पूजी न मनकी साधा।
करत विचार जन्म गयो खोसो या तन रहल असाधा॥
जानि बूझि जो कपट करत है ऐसा मन्द न कोई।
कहै कबीर सब नारी रामको मो ते और न होई॥

परज—तिताल

माया महा ठगिन हम जानी।
त्रिगुण फांस लिए कर डोले बोले मधुरी बानी ॥
केशव के कमला होइ बैठो शिव के भवन भवानी।
पण्डाके मूरति होइ बैठो तीरथहू के पानी ॥
योगी के योगिन होइ बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी।
काहू के हीरा होइ बैठो काहू कौड़ी कानी ॥
भक्ताके भक्तिन होइ बैठो राजाके घरह रानी।
कहै कबीर सुनो हो सन्तो यह सब अकथ कहानी ॥

२

माया मोह मोहित कीन्हा।
ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा ॥
यौवन ऐसो सुपने जैसो जीवन स्वप्न समान।
शब्द उपदेश दियो ते छाड़ो परम निधान ॥
ज्योतिः तरङ्ग देखि उर हुलसे पश्च न पेखे आगो।
काल फांस नर मुग्ध न चेतै कनक कामिनी लागी ॥
शेष सोई पद कतेव निरखे सुर मुनि शास्त्र विचारै।

सत् गुरुके उपदेश विना ते जानि कै जीव मारै ॥
करु विचार विकार परिहरि तरण तारण सोई।
कहहि कबीर भगवन्त भजि नर दुतिया और न कोई ॥

२

मरि हो रे तन कहले करि हो।
ना छूटे बाहर ले धरि हो ॥
काया विगुर्चन अनवनि भांती।
कोई जारै कोई गाड़े माती ॥
हिन्दू ले जरै तुरुक लै गाड़े।
यह परपञ्च दुहु घर छाड़े ॥
कर्मफास यम जाल पसारा।
जो धीर मर्म छरी गहि मारा ॥
राम विना नर होइहु कैसा।
बाट माझ गोबर परा जैसा ॥
कहै कबीर पाछे पछितइ हो।
या घरते जब वा घर जइहो ॥

कलिङ्ग—तिताला

माई मेरे कुल उजियारी।
सासु ननद पटिया ले बांधलि ससुरहि
परलि उघारी ॥
जारौ माग मता सुन्नरिको।
सेन सरवर रचि न घभारिको ॥
जना पांच कुखुया मिलि रख लो
अवर दुइ औ चारी।
पोरो प्रोसनी करी कलेवा सङ्ग है बुद्धि महतारी ॥
सहज बापुरे सेज विछावल सुत लेऊं मैं पांव पसारी।
आव न जाव मरी नहि जीवो साहेब मेटलि गारी ॥
एक नाम मैं निजुके गहलो तो छूटल संसारी।
एक नाम मैं वधि के लेखूं कहै कबीर पुकारी ॥

विहाग—तिताला

मैं का सो कहो को सुनै को पतियाई।
फुलवाके छुवत भंवर मरि जाई ॥
जौतियन बोइयन सिचियन सोई।
विनु डार विनु पाते फूल एक होई ॥
गगन मण्डल विच फूल एक फूला।
तर भई डार ऊपर भयी मूला ॥
फूल भल फूलल मलिनि भल गूथे।
फुलवा विनसि गइल भवरा निरूथै ॥
कहहि कबीर सुनो सन्त भाई।
पण्डित जन फूल रहल लुभाई ॥

परज—तिताला

जोलाहा बीनौ हु हरिनामा।
जाको सुरवर मुनि धर ध्याना ॥
ताना तनैक औठा लीन्हो चरखो चारी वेद कलामा।
सरकुण्डी एक रामनारायण पूरण प्रकटे कामा ॥
भवसागर एक कठवत कीन्हा तें हमी माड़ी साना।
माड़ी के तन माड़ी रहो है माड़ो विरले जाना ॥
चांद सूरज दोउ गोडा कीन्हो माझ दीप
कियो चौन्हा।
त्रिभुवन नाथ जब मांजन लागे श्याम
मुरलिया दीन्हा ॥
पाईके जब भरना लीन्हा वै वाधे के राना।
वे बाधी मैं तीनो लोके बाधो कोउ न रहा उबाना।
तीनो लोक एक करगह कीन्हा दृग मग कीन्हो ताना।
आदि पुरुष बैठावन बैठे कबीरा ज्योति समाना ॥

कलिङ्ग—तिताला

योगिया फिरि गयो नगर मझारो।
जाइ समान पाच तहां जारो ॥
गये दिगन्तर कोइ न बतावे।
योगिया गुफा बहुरि नहि आवे ॥
जरि गयो कथा ध्वजा गई छूटो।
भाजि गये डङ्क खपर गये फूटो ॥
कहै कबीर कलो है खोटो।
जो रहै करवासो निकले टोटो ॥

२

योगिया के नगर वसे मति कोई।
जो रे वसे सो योगिया होई ॥

वह योगिया के उलटा ज्ञाना।
कारो चोलो नाहो ताना॥
परगट सुकंथा गुपुता धारो।
तामें मूल सजीवनि भारो॥
वह योगियाको युक्ति जो बूझै।
राम रमै ताहि त्रिभुवन सूझै॥
अमृत वेलि छण छण पीवै।
कहै कबीर योगी युग युग जीवै॥

सोरठ—तिताला

जो पै बीज रूप भगवाना।
तो पण्डित कहा पूछो आना॥
कहा मन कहा बधो हंकार।
सत्व रज तमः गुण तीन प्रकार॥
विष अमृत फल फरे अनेका।
बहु धावे इक है तरवेका॥
कहै कबीर ते मैं का जानो।
कोदहु छुटल कौन अरुझानो॥

अहीरी—तिताला

जो चरखा जरि जाय बढ़इया न मरै।
मैं कातौं सूत हज़ार चरखुला जिन जरै॥
बाबा मेरो ब्याह करो अच्छा वर हित काह।
जौ लग अच्छा वर मिलै तौ लग तुमहि विवाह॥
प्रथम नगर पहुंच ते पगि गये शोक सन्ताप।
एक अचरज मोइ देखा जो बिटिया ब्याहो बाप॥
समधीके घर लमधो आए आए बहू के माई।
गोड़ चूहा दे दे चरखा दियो दृढ़ाई॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो चरखा लवै जो कोई।
यह चरखा लखि परै तौ आवागमन न होई॥

२

यन्त्री यन्त्र अनुपम बाजै।
वाके अष्ट गगन मुख गाजै॥
तूही बाजै तूही गाजै तूही लिए कर डोलै।
एक शब्द में राग छतीसो अनहद वाणी बोलै॥

मुखको नाल श्रवण को तूवा सत् गुरु साजि बनाया
रटभ्र को तार नासिका चिरई माया को
मोम लगाया॥
गगनमण्डल में भो उजियारा उलटा फेर लगाया।
कहै कबीर जन भए हैं विवेकी जिन यन्त्री
सो मन लाया॥

२

जैसा मासु नर को तैसा मासु पशुको रुधिर
एक सगाराजो।
पशु को मासु भखे सब कोई नरहि न
भखे सियाराजो॥
ब्रह्मकुलाल मेदिनी भैया उपजि विनसि कित
गइयाजो।
मासु मछरिया तरै पैखइ हो जो खेतन में
बोइयाजो॥
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो राम नाम
नित लेइयाजो।
जो कछु कियो जिह्वा केस्वारथ बदल पराए देइयाजो॥

२

चातक कहा पुकारे दूरि।
जल सो जगत् रह्या भरपूरि॥
जेहि जल नाद विन्दुका भेद।
षट्कर्म सहित उपासना वेद॥
जेहि जल जीव शोवका वास।
सो जल धरणी अम्बर प्रकाश॥
जेहि जल उपजै सकल शरीरा।
सो जल भेद न जानु कबीरा॥

सिन्धु—तिताला

चलहु कहा टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो।
दसो द्वार नरक भरि बूड़े तू गनृधीको बेवेढ़ो॥
फूटे नयन हृदय नहि सूझै मति एको नहि जानो।
काम क्रोध तृष्णा के मारे बूड़ि मुए विनु पानो॥
ज्यो जारे त्यो होइ भरम धुरि गाड़े क्रमि कोट खाई

शूकर श्वान काम के भोजन तिन कै एहै बड़ाई ॥
चेति न देखि न बुधि बल बोरे तुहु ते काल न दूरि।
कोटि यत्न करहो बहुतेरा तन को अवस्था धूरि ॥
बालू के घरवामें बैठे चेतत नाहि श्रयाना।
कहहि कबीर एक राम भजे बिनु बूड़े बहुत सयाना॥

परज—तिताला

फिरो कहा फूले फूले फूले।
जब दस मास ऊर्ध्व मुख होते सो दिन काहे को भूले॥
जो माखो साठो नहि विहुरे सोचि सोचि धन कीन्हा।
मुए पीछे लेहु लेहु करे भूत रहनि कछु दीन्हा ॥
देहरि लेवर नारि सङ्ग है आगे सङ्ग न सहेला।
मृत्यु कथा न लिया सङ्ग खटोला फिरि पुनि
हंस अकेला ॥
जारे देह भस्म हो जाई गाड़े माटी खाई।
काचे कुम्भ उदक ज्यो भरिया तनको यहे बड़ाई ॥
राम न रमसि मोहके माते परे काल बसि कूवा।
कहे कबीर नर आपु बंधाये ज्यो नलिनी भ्रम सूवा॥

२

ऐसे योगिया बद करनो।
जाके गगन आकाश न धरनी ॥
हाथ न वाके पाव न वाके रूप न वाके रेखा।
विना हाट हटवाई लावे करे बयाई लेखा ॥
कर्म न वाके धर्म न वाके योग न वाके युक्ति।
सिङ्गो पत्र कछू ताहो वाके काहे को मागी मुक्ति ॥
मैं तोहि जाना तैं मोहि जाना मैं तोहि माहि
समाना।
उतपति प्रलय एको नहि होता तब कहो
कौन ब्रह्म को ध्याना ॥
योगी एक आनि ठाट कियो है राम रहा भरि पूरि।
औषध मूल कछू नहि वाके राम सजीवन मूरि ॥
नटवट बाजो पेखनि पेखे बाजीगरको बाजी।
कहे कबीर सुनो हो सन्तो भाई सूर्य विराजी ॥

३

ऐसो भरम विगुरचर भारो।
वेद कतेव दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी ॥
माटी का घट साज बनायो वाहो बीच समाना।
घट विनसे का नाम धरोगे अहमक खोजि भुलाना ॥
रज गुण ब्रह्मा तम गुण शङ्कर सत् गुण हरि हैं सोई।
कहहि कबीर राम रमि रहिए हिन्दू तुरक न कोई ॥

४

अपनपो आपुहो बिसरो।
जैसे कनक काच मन्दिर में भ्रमि के मूस मरो ॥
ज्यों केहरि वपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखि परो।
वैसे हा मज स्फटिक शिला में दशनन आनि अरो ॥
मरकट मुठो स्वाद नहि भहर घर घर रटत फिरो।
कहहि कबीर ललना का सुगना तोहि कौन पकरो॥

पीलू—तिताला

आपु अपन श्रम कीजे बहु तेरा।
काहू न मर्म पावा हरि केरा ॥
इन्दु कहा करे विश्रामा।
सो कह गए जो कहत हुते रामा ॥
वे कहा गये जे हते सयाना।
होय मृतक वह पदहि समाना ॥
रामानन्द राम रस माते।
कहै कबीर हम कहि कहि थाके ॥

धनाश्री—तिताला

अब हम जानिया हो हरि बाजी का खेल।
डङ्का बजाइ दिखाइ तमाशा बहुरि लेत सकेल ॥
हरि बाजी सुर नर मुनि जहड़े माया चाटि कलाया।
घर में डारि सबे भरमाये हृदय ज्ञान नहि आया ॥
बाजी झोड़ बाजीगर साचा साधनको मति ऐसो।
कहहि कबीर जिन जैसो समुझो ताको
गति भे तैसो ॥

२

कहू हो अम्बर का सो लागा।
चेतनहार बहि चेत सुभागा ॥

अम्बर मध्ये दीसै तारा।
एक चेतै दूजै चेतावनिहारा॥
जो खोजो सो उहां नाहीं।
सो तौ आहि अमर पद माहीं॥
कहहिं कबीर पद बूझै सोई।
मुख हिदया जाके एकै होई॥

बिहाग—तिताला

बन्दे करि ले आपन बेरा।
आपु जियत लख आपु ठौर करि मुए कहां घर तेरा॥
इह अवसर नहिं चेतौ प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो कठिन जाल का घेरा॥

धनाश्री—तिताला

राम की भांति हुररी।
सब सन्त उचारत चुनरी॥
वाल्मीक वन बोइया चुनी लियो सुखदेव।
कर्म वपुरा हो रहा सूत कातै जयदेव॥
तीन लोक ताना तन्यो ब्रह्मा विष्णु महेश।
नाम लेत मुनि हारिया सुरपति सकल नरेश॥
विष्णु जिह्वा गुण गाइयां विन बस्तीका देश।
सूने घरका पाहुना तासौ लायौ नेह॥
चारि वेद कै डाकियौ निरङ्कार कियौ रारि।
बिनै कबीरा चून्दरी मौना बाधौ वारि॥

२

तुमह हरिहि समुझौ लोई गौरी मुख मन्दर बाजै।
एक अगुणी षट् चक्रहिं वेधी विन विषम कुल माजै॥
ब्रह्मै पकरि अग्नि में होमै मत्स्य गगन चढ़ि गाजा।
नीति अमावसि निति ग्रह में तू राहु ग्राह सन दाजा॥
सुरभी भच्छण करत वेद मुख घन वरसै तन छीजै।
त्रिकुटी कुण्डल मध्य मन्दर बाजै औघट
अम्बर भीजै॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो योगिन सिद्धि पियारी।
सदा रहै सुख संयम अपने वसुधा आदि कुमारी॥

३

भूला है अहमक नादाना।
तुम हरदम रामहि नहिं जाना॥
वरवश आय के गाय पधारै गला काटि जिन
आप लिया।
जीवता जीव मुरदा करि डारै तिस को कहत
हलाल हुया॥
जासु मासु को पाक कहत हौ ताकी उत्पति
सुनु भाई।
रज्जो बीज से मासु उपानी मासु न पाको तू खाई॥
अपनी देखि करत नहिं अहमक कहत हमारे
बड़न किया।
उसका खून तुम्हारी गरदन जिन तुम को
उपदेश दिया॥
गई सियाही आई सफेदी दिल सफेद अजहू न हुवा।
रोजा नमाज बांग का कीजै हुजरे भीतर
पइठि मुवा॥
पण्डित वेद पुराण पढ़त हैं मौलना पढ़े कुराना।
कहहिं कबीर दोउ गए नरकहिं जिन
रामहिं नहिं जाना॥

४

काजी तुम कौन कतेब वखानी।
झौकत वकत रहो निशु वासर मति एको नहिं जानी॥
शक्ति उनमाने सुनति करत हो मैबव दाग भाई।
जो खोदाइ तेरि सुन्नति करतै आपुहि काटी
क्यों न आई॥
सुनति कराय तुरुक जो होते औरतको क्या कहिए।
अर्द्ध शरीरी नारी वखानै ताते दूरहिं रहिए॥
घालि जनेऊ ब्राह्मण हो नाम हरि के का पहिराया।
वेजनमै की शूद्रौ परोसै तुम पांड़े क्यों खाया॥
हिन्दू तुरक कहांते आया किन यह राह चलाया।
दिल में खोजि देखि खोजादे भिश्ति
कहां किन पाया॥

कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो जोर करत है भाई।
कबीर न बाट रामको पकरो अन्तकाल पछिताई॥

५

भूला लोग कहे घर मेरा।
जा घरवामें भूला डोले सो घरवा नहिं तेरा॥
हाथी घोड़ा बैल वाहनो संग्रह कियो घनेरा।
बसती में सो दियो बन्देरा जङ्गल कियो बसेरा॥
गांठी बांधि खरच नहिं पठए बहुरि ना कियो फेरा।
बीबी बाहर हरफ महल में बीच मियां को डेरा॥
नो मन सूत उरझि न सुरझि जन्म जन्म उरझेरा।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो यह पदका
करो निवेरा॥

६

कबीरा तेरो घर कन्दरामें या जग रहत भुलाना।
गुरु की कही करत नहिं कोई महले महल देवाना॥
सकल ब्रह्म में हंस कबीरा कागा न चोंच पसारा।
मन मत कर्म धरे सब देही नाद विन्दु विस्तारा॥
सकल कबीरा बोलै वाणी नीनो में घर छाया।
अनहत लूटि होत घट भीतर घट का मर्म न पाया॥
कामिनी रूपी सकल कबीरा मृगा चौरदे होई।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके पकरि सके नहिं कोई॥
ब्रह्मा वरुण कुबेर पुरन्दर पीवा अरु प्रह्लादा।
हरिनाकुस को उदर विदारो तिनहु के
काल न राखा॥
गोरख ऐसो दत्त दिगम्बर नामदेव जयदेव दासा।
तिनको खबर कहे नहिं कोई उन कद कियो है वासा॥
चौपरि खेल होत घट भीतर जन्मके पासा डारा।
दम दमकी खबर न जाने कोइ करि न सके निरुवारा॥
चारि दिशा महि मण्ड रचो है रूम शाम
बिच डोलो।
ता ऊपर कछु अजब तमाशा मारा है धमकोलो॥
सकल अवतार जा के महिमण्डल अनन्त
खटारक सेरो।
अद्भुत अगम अवगाह रचो है ए सब शोभा तेरो॥
सकल कबीरा बोले बीरा अजहूं हो होशियारा।
कहै कबीर गुरु सकलो दर्पण हरिदम
करो पुकारा

७

कबीरा तेरो बकदल में मानि अहेरा खेलै।
बपुवारो आनन्दम् गा रुचि रुचि सर मेलै॥
चेतत रावल पवन खेड़ा सहज मूल बाधै।
ध्यान धनुष ज्ञानवान योग सर साधै॥
षट् चक्र वेधि कमल वेधि जाइ उजियारा कीन्हा।
काम क्रोध लोभ वहांको सावज दीन्हा॥
गगन मध्ये रो कीन्ह द्वारा जहां दिवस नहिं राती।
कबीर दासा जाद पहुंचे बिछुरे सङ्गो साती॥

८

सावज न होई।
भाई सावज न होई॥
वाको मासु भये सब सावज एक सकल संसारा
अवगति वाको बाता।
रेट फारि जो देखिये रे भाई करे जी आता॥
जैसो वाको मासु रे भाई पुन पुन मासु बिकाई।
हाड़'गोड़ धुरा पर वारे आगी धुवां नहिं खाई॥
सीर सींगि कछू नहिं वाके पूछ कहां वे पावे।
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया कबीरा नीरी गावे॥

विहाग—तिताला

सुभागी काहो कारण लोभ लागे रत्न जन्म खोयो।
पूर्व जन्म भूमि के कारण बीज काहे को बोयो॥
बुन्द सज्जन मण्ड साजी अग्निकुण्ड रहाया।
दश मास माताके गर्भ बहुरि लागी माया॥
बाल छुती वृद्ध हुवा होनी हुवा सो होवा।
जब उम्र जेहै बांध चले है नयन भरी भरि रोवा॥
यौवनको जिन आशा राखो काल गराबे वासा।
बाज़ी है संसार कबीरा चित्त चेति डारो पासा॥

२

सन्त महन्त हो सुमिरा सोई।
जो कोउ फांसी से बचा होई॥

दत्तात्रय मर्म नहि जाना मिथ्या स्वाद भुलाना।
सलिला मथि घृत को काढिन ताहि समाधि समाना॥
गोरख पवन राखि नहि जाना योग युक्ति उन माना।
सिद्धिसिद्धि संयम बहुतेरे परब्रह्म नहि जाना॥
व्यष्टि सृष्टि विद्या सम्पूरण राम ऐसो शिख साखा।
जो राम को मरता कहिये तिनहु को काल न राखा॥
हिन्दू कहे हम राम हि जानि तुरुक कहे हमारा पीर।
दोनो आइ दीनमें झगरे ठाठे देखे हंस कबीर॥

२

तन धरि सुखिया कोइ न देखा जो देखा सो दुखिया।
उदय अस्तकी बात कहत हो ताकर करउ विवेकिया॥
बाटे बाटे सब कोई दुखिया क्या योगी क्या वैरागी।
शुक्राचारज दुखके कारण सब हो माया त्यागी॥
योगी जङ्गम ते अति दुखिया तपसी हो दुख दूना।
आशा तृष्णा सब को व्यापो कोइ महल नहि सूना॥
साच कहुं तो सब जग खीझे झूठ कहा नहि जाई।
कहहि कबीर तेइ भव दुखिया जिन यह राह चलाई॥

३

ता में न के टटो मेरे भाई।
तन छूटे मन कहां समाई॥
सनक सनन्दन जयदेव नाना।
भक्ति सहो मन उनहु न जाना॥
अम्बरीष प्रह्लाद सुदामा।
भक्ति सहो मन उनहु न कामा॥
भरथरि गोरख गोपीचन्दा।
ता मन मिलि मिलि कियो आनन्दा॥
जा मन के कोइ जाने न भेव।
ता मन मग्न भयो सुखदेव॥
शिव सनकादिक नारद शेषा।
तनके भीतर मन उनहु न पेषा॥
अखिल निरञ्जन सकल शरीरा।
ता मन भ्रमि भ्रमि रहल कबीरा॥

४

बाबू ऐसो है संसार तुम्हारो एह कलि है विष हरे बहारा।
को अब अनख सहे प्रतिदिन कोन है रहनि हमारा॥
शास्त्र सहस्र सब कोइ जाने हृदय तत्त्व नहि बूझे।
निरजीव आगे सरजीव थापे लोचन कछू न सूझे॥
तजि अमृत विष काहे अचवो गांठो बांध्यो खोटा।
चोरन दीन्हो पाट सिंहासन साहन सो कियो वोटा॥
कहहि कबीर झूठे मिलि झूठा गहि ठग व्यवहारा।
तीनि लोक भरि पूरि रहो है नाहीं है पतियारा॥

५

कह हो निरञ्जन कोनि बानो।
हाथ पांव मुख श्रवण जिह्वा का कहि जपि हो प्रानी॥
ज्योति हो ज्योति ज्योति जो कहिए ज्योति कवन सहि दानी।
ज्योति हि ज्योति ज्योति दे मारे तब ज्योति कहां समानो॥
चारि वेद ब्रह्मा जो कहिया तिनहु न या गति जानी।
कहहि कबीर सुनो हो सन्तो बूझो पण्डित ज्ञानी॥

६

को अस करे नगर कोतवलिया।
मासु फैलाइ गृध्र रखवरिया॥
मूसा भयोनाव मञ्जार कन्हरिया।
सोवत दादुर सर्प पहरिया॥
बैल वियाइ गाइ भे बन्झा।
बछवे दुहे तीनि तिनि सञ्झा॥
अंगने चोर साहु घर मूसे।
सोना लेइ बहले धूसे॥
निति उठि सिंह स्यारते जूझे।
कबिराके पद विरला जन बूझे॥

कविता—तिताला

का कहि उमर गये बहु तेरा।
बहुतक मुए फिरे नहि फेरा॥

जब हम रोवत तब न संभारा।
गर्भ वासकी बात विचारा॥
अब तै रोवा क्या तै पाया।
केहि कारण तै मोहि रुवाया॥
कहहि कबीर सुनो नर लोई।
काल बसेर परो मति कोई॥

सोरठ—तिताला

अलह राम जीवो तेरो नाई।
जन के मेहर होडु तू साई॥
क्या मुण्डो भूमि शिर नाये।
क्या जल देह नहाये॥
खून करे मसकीन कहावे।
गून्हें रहै छिपावे॥
क्या उज़ूजू मज्जन कराये।
क्या मसजिद सिर नाए॥
हृदये कपट नमाज़ गुज़ारो।
का हज मका जारो॥
हिन्दू वर्त्त एकदशो साधे करै चौबोसो रोज़ा मुसलमाना।
एगारह मास कहो किन टारा एकहि माह भियाना॥
जो खोदा इह जीत वसत है और मुलक केहि केरा।
तीरथ मूर्त्ति राम निवासी दुनी में किनहु न हेरा॥
पूरब दिसा हरि को वास पश्चिम अलह मुकामा।
दिल में खोज खोज दिल ही में यह करीमा रामा॥
वेद कतेब कहा किन झूठा झूठा जी न विचारै।
सब घट एक एक ले लेवै भो दूजा कहि मारै॥
जीते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा।
कबीर निगुरा अलह राम पुकारै सो गुरु पीर हमारा॥

सिन्धु—तिताला

आव बे आव मुझे हरि को नाम।
अवर सकल तजि कौने काम॥
कहां तब आदम कहां तब हौवा।
कहां तब पीर पैगम्बर हुवा॥
कहां तब ज़मीं कहां आसमान।
कहां तब वेद कतेब कुरान॥
जिन दुनिया मेरवो मसीदि।
झूठा रोजा झूठा ईदि॥
साचा एक अलहको नाम।
जाके नैनै करो सलाम॥
कहु हो छतम कहांते आई।
किसकी कहे तुम छुरो चलाई॥
कत छत मैं बाज़ो लाया।
हिन्दू तुरुक की राह चलाया॥
कहां तब दिवस कहां तब रातो।
कहां तब छत्तिमको उतपातो॥
नहि वाके जाति नहि वाके पाति।
कहहि कबीर वाके दिवस न राति॥

सोरठ—तिताला

अब कहां चलेहु अकेला मिन्ता।
उठि मन करो घरे की चिन्ता॥
खीर खाड़ घृत पिण्ड सवारा।
सो तन लै बाहर करि डारा॥
जो सिर रचि रचि बांधे पागा।
सो सिर रत्न बिडारे कागा॥
हाड़ जरै जस लवारी झूरी।
केश जरै जस तनको कूरी॥
आवत सङ्ग न जात संघाती।
कहा भयो दल वाके हाती॥
माया के रस लेन हु न पाये।
बीचै जम बोलारन्हे खाये॥
कहहि कबीर नर अजहु न जागा।
यम के मुद्गर मांझ सिर बाजा॥

२

देवलोक हरिके सगाई।
माइ घरे पुत्र धिया सङ्ग जाई॥
सासु ननद मिलि अदल चलाई।

मइयाके गृह बेटी जाई ॥
हम बहनोई राम मेरो सारा ।
हम बाप हरि पुत्र हमारा ॥
कहहि कबीर हरीके बूता ।
राम रमै सो कुकरी के पूता ॥

३

बिना पवन पर्वत उड़ै ।
जीव जन्तु सब वतृसहि कुड़ै ॥
सूखे सरवर उठहि हिलोर ।
बिनु जल चकवा करै कलोल ॥
बैठा पण्डित पढ़े पुराना ।
बिन देखे का करै बखाना ॥
कहहि कबीर जो पद का जाना ।
सोई सन्त सदा परमाना ॥

४

दारी केहि ले तोहि दो गारी ।
तू समुझिके पन्थ बिचारी ॥
घरहूंके नाइन अपना ।
तिन साहेब मेरे सपना ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय बानी ।
तिनहु कहल नहि मानी ॥
योगी जङ्गम जेते ।
आपु गये हैं ते ते ॥
कहै कबीर एक योगी ।
तू भ्रमि भ्रमि भौ भोगी ॥
लोगो ताही मतिके भौरा ।
ज्यों पानी पानीमें मिलि गो त्यो
जरि मिले कबीरा ॥

५

जौ मये को सांचा ब्यास ।
तुम्हरा मर्म है मगहर पास ॥
मगहर मरो मरै नहि पावै ।
अन्त तैं मरो तो राम लजावै ॥
मगहर मरे ते गदा होई ।
भलो प्रतीति राम तें खोई ॥
क्या काशी क्या मगह जो पै हृदय राम रमै मोरा ।
जौ काशी तन तजै कबीरा रामहि कौन निहोरा ॥

६

कैसे कै तरौं अब नाथ कैसे कै तरो ।
अब बहु कुटिल भरो ॥
कैसो तेरो सेवा पूजा कैसा तेरो ध्यान ।
ऊपर तो ऊजर दीखा भीतर वग उनमान ॥
भाव तो भुजङ्ग दीखा अति रे व्यभिचारी ।
सुरति तो सचान देखा तोर मति तो मजारी ॥
अति रे विरोध देखा अति रे दिवाना ।
षट दर्शन सब देखो भेष लपटाना ॥
कहहि कबीर सुनो नरबन्दा ।
डाइनि डिम्भ सकल जग धन्धा ॥

७

ए भ्रम भूत सकल जग खाया ।
जिन जिन पूजा तिन तिन जहड़ाया ॥
अण्ड न पिण्ड प्राण नहि देहा ।
काटि काटि जीव सौतिक एहा ॥
बकरी मुरगी दूनो छेदा ।
अनिल जन्म उन अवसर लेदा ॥
कहहि कबीर सुनो नर लोई ।
भूतवाके पूजल भूतवा होई ॥

धनाश्री—तिताला

भ्रमर उड़े बग बइठे आई ।
रैन गई धोसो चलि जाई ॥
हलहल कांपे बाला जोय ।
नहि जानै का करि है पीव ॥
कांचे बासन टिकै न पानी ।
उड़ि गये हंस काया कुम्हिलानी ॥
काग उड़ावत भुजा पिरानी ।
कहहि कबीर ए कथा सिरानी ॥

१

खसमै विनु तेलीके बैल भयो।
बैठत नाही साधु की सङ्गति नाधे जन्म गया ॥
बहि बहि मरी पची निज स्वारथ यम के डाड़ सह्यो।
धन दारा सुत राज काजमें माथे भार गह्यो ॥
खसमहि छोड़ि विषय रङ्ग राती तैं
पापके बीज बोयो।
झूठी मुक्ति नर आशा जीवन की प्रेतका जूठ खयो ॥
लख चौरासी जीवजन्तु में सादूर जात बह्यो।
कहहि कबीर सुनो हे सन्तो उन श्वान की
पूछ गह्यो ॥

२

अब हम भइलि बहर जल मीना।
परबले जन्म तप कामद कीना ॥
तहिया मैं अछलु मन वैरागी।
तेज लोभे शोक कुटुम्ब राम लागी ॥
तजले मैं काशी मति भइलि भोरी।
प्राणनाथ कहु का गति मोरी ॥
हमहि क्रूर सेवक तुमही अपाना।
देह मैं दोष काहि भगवाना ॥
हम चल अइलो तुम्हरे शरणा।
कतहु न देखो हरि जीको चरणा ॥
हम चलि अइलि तुम्हारे पासा।
दास कबीर भल कइल निरासा ॥

४

लोग बोले दूरि गये कबीर।
या मत जानै कोइ कोइ धीर ॥
दशरथ सुत तिन लोके जानी।
राम नाम के मर्म न मानी ॥
जस जीव जानि परा जस लेखा।
राज को करै उरग ज्यों पेखा ॥
यद्यपि फल उत्तम गुण जानो।
हरि छोड़ि मन मुक्तियो नहीं मानो ॥
हरि आधार जस मीन हो नीरा।
और यत्न कछु कहै कबीरा ॥

५

अपनो कर्म न मेटो जाई।
कर्मका लिखा मिटै कहु कैसे जो युग कोटि सिराई ॥
गुरु वशिष्ठ मुनि लग्न सुधारे सूर्य मन्त्र एक दीन्हा।
जो सीता रघुनाथ विवाह पल एक सञ्चन कीन्हा ॥
तीन लोकके कर्ता कहिए बालि बधो बरिआई।
एक समय ऐसी बनि आई उनहु अवसर पाई ॥
नारद मुनि के वदन छिपायो कीन्हा कपि
को स्वरूपा।
शिशुपालकी भुजा उपारे आपु भये हरि भूपा ॥
पार्वती को बांझ न कहिए ईश्वर न कहिये भिखारी।
कहे कबीर.कर्ताकी बातें कामकी बातें न्यारी ॥

६

है कोइ गुरु ज्ञानी जगत् में उलटि वेद बूझै।
पानी में पावक बरै आंधे आंखो सूझै ॥
गाई तौ नाहर खायो हरिणी खायो चीता।
काग लङ्गर काटि के बटेरो बाज जीता ॥
मूसे तौ मजार खायो श्वानहि खायो सियारा।
आदि के उपदेश जाने ता सुधो सुवारा ॥
एक हो दार खायो पाचहो भुजङ्गा।
कहहि कबीर पुकारि के है दोउ एक सङ्गा ॥

७

झगरा एक बड़ो राजाराम।
जो निरवारै सो निरवाम ॥
ब्रह्म बड़ा के जहां ते आया।
देव बड़ा के जिन्ह उपजाया ॥
यई मन वड़ा कि जेहि मन मान।
राम बड़ा को रामहि जान ॥
भ्रमि भ्रमि कबिरा फिरे उदास।
निर्थक डाकि तीर्थको दास ॥

८

झूठे जिनि पतिआहु सुन सन्त सयाना ।
तेरे घटही में ठग पुर है मति खोवहु अपाना ॥
झूठेको सन्तान है धरती असमाना ।
दशो दिशा वाके फन्द है जिव घेरि है अयाना ॥
योग जप तप संयम तीर्थ व्रत दाता ।
नवधा वेद कतेब है झूठेको बाना ॥
काहु को सब दे फुरे काहु करामाती ।
मान बड़ाई ले रहै हिन्दू तुरुक जाती ॥
बात व्योतै आसमानकी मुदती नित रानी ।
बहुत खुदी दिल राख भरे तनु पानी ॥
कहहि कबीर कासो कहौ सकलो जग अन्धा ।
सांचा सौ भागा फिरे झूठे का बन्दा ॥

कबीर—चौंतीसा

ओंकार आदि जो जाने ।
लिखि के मेटे ताहि सो माने ॥
ओङ्कार कहै सब कोई ।
जो नहि लखा सो विरलै होई ॥
काका कवल कोनि कहु पावै ।
शशि ग्रसित सम्पूर्ण हि आवै ॥
तहां कुसुम गङ्ग जो पावै ।
अवगह गहि के गगन रहावै ॥
खखा चाहै खोरि मनावै ।
खसमहि छोड़ि चहु दिस धावै ॥
खसमहि छोड़ि चमा होइ रहई ।
होइ अधीन अक्षय पद लहई ॥
गगा गुरु के वचनै मान ।
दूसरि शब्द करै नहि कान ॥
तहां विहङ्ग कबहु नहि जाई ।
अवगह गहिके गगन रहाई ॥
घघा घट विनसे घट होई ।
घटहीमें घट राखु समोई ॥
जो घट घटे घटहि फिरि लावै ।
घटही में फिरि घटहि समावै ॥
नना निरखत निसु दिन जाई ।
निरखत नयन रहै अरगाई ॥
निमिष एक जो निरखे पावै ।
ताहि निमिष मह नयन छिपावै ॥
चचा चित्र रचो बहु भारी ।
चित्र छोड़ि तै चेतु चित्तकारी ॥
जो नहि चित्र विचित्र उ लेखा ।
चित्र छोड़ि तै चेतु चितेखा ॥
छछा आहि छत्रपति पासा ।
छकि कौन रहसि मेट सब आसा ॥
मैं तो कह चण चण समुझाया ।
खसम छोड़ि कस आपु वधाया ॥
जजा इ तन जीवत हि जारे ।
यौवन जारि युक्ति तो पारे ॥
जो किछु जानि जानि पर जरे ।
घटही ज्योति उजियारी करे ॥
झझा अरुझि संग झोकत जान ।
होटत हुटत जाहि परान ॥
कोटि सुमेरु टूटि फिरि आवै ।
जो षड़ गढ़ हि सो पावै ॥
या निरुह कर आदस देहु ।
नाही देखि न भजिये अजेहु ॥
नाही देखि न आपु भजाउ ।
जहां न होत तहां तन मन लाउ ॥
जहां नही तहां जब कछु जानो ।
जहां नही तहां ले पहिचानो ॥
टटा वाट विकट मन माहो ।
खोलि कपाट महल तै जाहो ॥
रहो लटपटो जुटि तेहि माहो ।
होहि अटल तै कबहु न जाहो ॥
ठठा ठौर दूरि ठग नोरे ।
नीति के निठुर कीन्ह मन घोरे ॥

जो ठग ठगो सब लोग अयाना ।
सो ठग अचिह्न ठौर पहिचाना ॥
डडा डर उपजें डर होई ।
डर ही मह डर राखु समोई ॥
जो डर डरै डरहि फिरि आवै ।
डर ही मह फिरि डर हि समावै ॥
ढढा ढोठ गहो कत आना ।
ढूंढत ढूंढ़त जाइहि प्राना ॥
कोटि सुमेरु टूटि करि आवै ।
जो मढ़ गढ़ा मढ़हि सो पावै ॥
नाना दूइ वसे है गाउ ।
नाना ढूढे नाना तोरि नाउ ॥
मुवा एका जाहि तजि घना ।
मरहि अत्या ककेता गना ॥
तता अति तिरिया नहि जाई ।
तन त्रिभुवन मह राखु छपाई ॥
जो तन त्रिभुवन माह छपावे ।
तन्तुहि मिले तन्तु सो पावे ॥
थथा अति अथाह थाह नहि जोई ।
इथिर उथिर नर हरदम होई ॥
थोरे थोरे स्थिर होवु रे भाई ।
विनुष भे जस मन्दिर थम्हाई ॥
ददा देखहु विना मन हारु ।
जस देखहु तस करहु विचारु ॥
दयाह हारे तारो लावे ।
तब दयाल को दर्शन पावे ॥
धधा अर्ध छोड़ जहुं मन लावे ।
आपा मेटि के प्रेम बढ़ावे ॥
चौथि बोए नाना मह जाई ।
राम गदह होय खरु खाई ॥
पपा पाप करे सब कोई ।
पापीके घर धर्म न होई ॥
पाप कहै सुन हु रे भाई ।
हमरे लिए को छुवो न पाई ॥
फफा फल लागा बड़ दूरि ।
चाखे शिष्य गुरु देइ न तोरि ॥
बबा बर बर करें सब कोई ।
बर बर किए काम नहि होई ॥
बाबा बात कहै अरथाई ।
फलका मर्म न जानेहु भाई ॥
भभा भर्मि रहा भरि पूरि ।
भभरे ते है नियरे दूरि ॥
भभा कहै सुनहु रे भाई ।
भभरे आय भभरे जाई ॥
ममा सेवे मत्त पाई ।
हमरे सेवे मूल गंवाई ॥
जजा जगत् रहा भरि पूरि ।
जगत् हुते है जाजा दूरि ॥
जा जा कहै सुनहु रे भाई ।
हमरे सेवे जय जय पाई ॥
ररा रारि रहे अरुझाई ।
राम के कहे दुख दारिद जाई ॥
ररा कहै सुनहु रे भाई ।
सत् गुरु पूछि कैसे वहु आई ॥
लला तुतरे बात जनाई ।
तुतरा तुतरे परिचय पाई ॥
अपने तुतरा और के कहई ।
एकहि खेत दूनो निरवहई ॥
घघा घरघर करे सब कोई ।
घरघर किए काज नहि होई ॥
घघा कहै सुनहु रे भाई ।
राम नाम लै जाहु पराई ॥
ससा सरा रचो वरिआई ।
सर वेधे सब लोग तवाई ॥
ससाके घर सुनु गुणी होई ।
एतनी बात न जानै कोई ॥

हाय हाय करत जीव सब जाई ।
छेव परे तब कहि समुझाई ॥
छेव परे तब कहि समुझाया ।
कहै कबीर अगु मन गा हराया ॥

अथ विप्रबतीसी लिख्यते

सुनहु सभन मिलि विप्र बतीसो ।
हरि विमु बूड़ो नाव भरोसो ॥
ब्राह्मण होइ के ब्रह्म न जानै ।
घर मह यज्ञ प्रतिग्रह आनै ॥
जेइ सिरजा तेहि नहि पहिचानो ।
कर्म धर्म ले बैठि वखानो ॥
ग्रहण अमावस सायर दूजा ।
खाति कपाति परो जनि पूजा ॥
प्रेत कनक मुख अन्तर बासा ।
आहुति सत्य होम के आसा ॥
कुल उत्तम कलि माह कहावै ।
फेरि फेरि धर्म कर्म करावै ॥
सुत दारा मिलि जूटो खाहो ।
हरि भक्ति के छूति कराहो ॥
कर्म अशौच उच्छिष्ट खाहो ।
मतिभ्रष्ट यम लोके जाहो ॥
न्हाइ खोरि उत्तम होइ आवै ।
विष्णुभक्त देखे दुख पावै ॥
स्वारथ लागि रहै वे काजा ।
नाम लेत पावक ज्यों डाजा ॥
रामकृष्ण के छाड़ेन्हि आसा ।
पढ़ि गुनि भे कृतम के दासा ॥
कर्म पढ़हि कर्महि को धावे ।
जे पूछे तेहि कर्म दृढ़ावे ॥
नहि कर्मीको निन्दा कीजे ।
कर्म करे ताहि चित दीजे ॥
ऐसो भक्ति हृदय मह लावे ।
हिरणाकुसको वन्थ चलावे ॥
देखहु असमति केर प्रकासा ।
अभ्यन्तर कृत्तिमके दासा ॥
जाके पूजे पवन जड़े ।
नाम सुमिरि नीमो मह बूड़े ॥
पाप पुण्यके हाथहि पासा ।
मारि जगत् को कोन्ह विनासा ॥
वहिनो वो कुल वहिनि कहावे ।
अग्निहि जारे अग्निहि मावे ॥
बैठाते घर साहु कहावे ।
भीतर भेद मुस वहिनो लखावे ॥
ऐसो विधि सुर विप्र भनीजे ।
नाम लेत पचासन दोजे ॥
बूड़ि गये नाहि आप संभारा ।
ऊंच नीच कहु काहि जोहारा ॥
उच्च नीच है मध्यम वानी ।
एकै पवन एक है पानी ॥
एकै मटिया एक कुम्हारा ।
एक सभन का सिरजनहारा ॥
एक चाक सब चित्र बनाया ।
नादविन्दुके मध्य समाया ॥
व्यापी एक सकल को गूतो ।
नाम धरे का कहिये भूतो ॥
राक्षस करणी देव कहावे ।
वाद करे गोपाल न भावे ॥
हंस देह तजि न्यारा होई ।
तब को जाति कहै वहु कोई ॥
श्वेत सुफेद कि राता पियरा ।
अवरण वरण कि ताता सियरा ॥
हिन्दू तुरुक कि बूढ़ा वारा ।
नारि पुरुष मिलि करहु विचारा ॥
कहिये काह कहा नहि माना ।
दास कबीर सोइ पे जाना ॥

लखो यहा है वहि जात है कारत है चहु वोर।
जो कहा नहि माने तो देहु धका दुहि ओर॥

चाचरी

च्योवङ्गी चूनरी कोइ सुन्दरि कोइ पहिरो आए।
शोभा अदभुत रूप वाको महिमा वरणि न जाए॥
चन्द्रवदनि मृगलोचनी मायाबुन्दका दियो उघाल।
यती सता सब मोहिया हो गज गति वाको चाल॥
नारद को मुख माडि के लोन्हों वसन छड़ाय।
गर्व गहेलो गर्व सो उलटि चलो मुसुकाय॥
शिव सन ब्रह्मा दोरिके दूनो पकरो जाय।
फगुवा लियो छिनायके बहुरि दियो छिटकाय॥
अनहद ध्वनि वाजा बजे सत मन सुनत भा चाव।
खेलन हारा खेलि है बहुरि न ऐसो दाव॥
सुर नर मुनि औ देवता गोरख दत्त औ व्यास।
सनक सनन्दन लेन कह्यो है औसे केतिक आस॥
छिरकत थेथे ऊमसे खरि पिचकारो गात।
कर लिये वसिया पुनि फेरि फेरि चितवत जात॥
ज्ञान गाड़ ले रो पिया त्रिगुण दियो है सात।
शिव सन ब्रह्म लेन कह्यो है अवरक केतिक वात॥
एक वोर सुर नर मुनि ठाढ़े एक वोर अकेली आप।
दृष्टि परे ते काहु न छाड़यो करि लियो एके बाप॥
जेते थे ते ते लियो घुंघुट माह समोय।
काज्जल वाको रेख है अदगा गया न कोय॥
इन्द्र कृष्ण दारे खण्डे लोचन ललचि नचाए।
कहहि कबीर ते उबरे जाहि न मोह समाए॥

२

सारो जग कानि हराम मन बोरा हो।
जाल शोक सन्ताप समभु मन बोरा हो॥
विना नीमका घोघरा मनु बोरा हो।
बिनु कछ गिलका ईश समुझ मन बोरा हो॥
काल भूतको हसहि मन बोरा हो।
चित्र रचो जगदीश समुझ मन बोरा हो॥
तब तन सो क्या गर्व सो मन बोरा हो।
भस्म कीनि जाके सांझ समुझ मन बोरा हो॥
काम अन्ध जग वश परहु अङ्कुश सही हो
मन बोरा हो।
सौस मर्कट मुठो खादको लोन्हो हो
मन बोरा हो॥
भूजा पासरि समुझु मन बोरा हो।
छूटनको संशय परो मन बोरा हो॥
घर घर नाचेहु द्वार समझु मन बोरा हो।
ऊंच नोच जानें नहीं मन बोरा हो॥
घर घर खायहु डाग समुझ मन बोरा हो।
जो सुगना ललनो गह्यो समुझ मन बोरा हो॥
ऐसी भर्म विचारि समुझ मन बोरा हो।
पढ़ि गुनिके क्या किएहु समुझु मन बारा हो॥
अन्ध बिलइया खाय समुझ मन बोरा हो।
न्हाने को तीरथ घना मन बोरा हो॥
पूजन को बहुदेव समुझ मन बोरा हो।
बिनु पानी नदू बहो मन बोरा हो॥
तुम टेकहु राम जहाज समुझु मन बोरा हो।
कहहि कबीर जग भर्मिया मन बोरा हो॥

धनाश्री—तिताला

हंसा सरवर शरीरमें रमैया राम।
जागत चोर घर मूसे रमैया राम॥
जो जागल सो जागल रमैया राम।
सोवत गयल विगोए रमैया राम॥
आजु पसेरा नियरैया राम।
कालि वसेरा दुरियैया राम॥
वौरनि देसवा रमैया राम।
मैं न मरहु गैया राम॥
त्रास सघन दधि मथन को एह रमैया राम।
भवन मथे छटल भरि पूरि रमैया राम॥
फेरि के हंसा पाहुना भय सुर मैया राम।
वेधे त्रिपद निर्वाण रमैया राम॥
तो है हंसा मणि मालिक रमैया राम।

जस रे कियहु तस पायहु रमैया राम ॥
हमार दोष जनि देहु रमैया राम।
आगम काटि गमको लेहु रमैया राम ॥
सहज कियेहु व्यापार रमैया राम।
रामनाम धन वाणिज्य कियहु रमैया राम ॥
लादेहु वस्तु अमोल रमैया राम।
लाचल दुनिया लादि चल रमैया राम ॥
नौ वहिया दश गोनि रमैया राम।
पाछल दुनिया जागि परे रमैया राम ॥
खाखर डारेनि फेरि रमैया राम।
सिर धुनि हंसा उड़ि चले रमैया राम ॥
सरवर मीत जोहारि रमैया राम।
आगि जो लागो सरवर में रमैया राम ॥
सरबर जरि भये धूरि रमैया राम।
आगि जो लागो सरवर में रमैया राम ॥
कहहि कवीर सुनु सन्तो हो रमैया राम।
परखि न लेहु खरा खोटा रमैया राम ॥

२

वेलि भल सुमृत जहड़ायेहु रमैया राम।
धोके कियेहु विश्वास रमैया राम ॥
सो तोहै वन शूकर रमैया राम।
सोर कियेहु विश्वास रमैया राम ॥
इती है वेद भागवत रमैया राम।
गुरु दिहल मोहि थापि रमैया राम ॥
गोबरकोट उपायेहु रमैया राम।
परिहरि जइहहु खेत रमैया राम ॥
बुद्धि बल तहां न पहुंचेहु रमैया राम।
सोज कहांके होइ रमैया राम ॥
से सुनि मन में धीरज भयल रमैया राम।
मन बढ़ि रहल लजाइ रमैया राम ॥
फेरि पाछे जो हेरहु रमैया राम।
काल भूत सब अहे रमैया राम ॥

कहहि कबीर सुन सन्तो हो रमैया राम।
जानि ढिगहु फैलाव रमैया राम ॥

अथ बिरहुली लिख्यते

आदि अन्त नहि होते बिरहुली।
नहि जरी पालव पेड़ बिरहुली ॥
निसि वासर नहि होते बिरहुली।
पौन पानि नहि मूल बिरहुली ॥
ब्रह्मादिक सनकादि बिरहुली।
कथि गे योग अपार बिरहुली ॥
मास असारे शीतल बिरहुली।
बोवनि सातो वोज बिरहुली ॥
नित गोड़े नित सोचे बिरहुली।
नित नव पल्लव पेड़ बिरहुली ॥
छिछिम बिरहुली छिछान बिरहुली।
छिछिन रहल तीन लोक बिरहुली ॥
न रहल तीन लोक बिरहुली।
फूल एक भल फूलल बिरहुली ॥
फूलि रहल संसार बिरहुली।
से फूल बन्दहि सन्तजना बिरहुली ॥
वन्दि करा वर जाहि बिरहुली।
से फूल लूटहि सन्तजना बिरहुली ॥
डासिगे वैतर सांप बिरहुली।
विषहर मन्त्र न माने बिरहुली ॥
गारुड़ बोल अपार बिरहुली।
विषकी कियरिया बोयहु बिरहुली ॥
लोढ़त का पछताहु बिरहुली।
जन्म जन्म जमु अन्तरे बिरहुली ॥
फल एक कनहर डार बिरहुली।
कहहि कबीर सचपाइ हो बिरहुली ॥

अथ हिण्डोला

धनाश्री—तिताला

भर्म हिंडोलन झूले सब जग आए।
पाप पुण्य के खम्भ दो जामें राम रमाए ॥

लोभ मरुवा विषय भरा काम कीन्यो ठानि ।
शुभ अशुभ बनाय डाड़ो गह्यो दूनो पानि ॥
भूलते गुणी गन्धर्व मुनि भूलते सुरपति इन्द्र ।
भूलते नारद सारदा भूले व्यास फणीन्द्र ॥
भूलते विरिञ्चि महेश मुनि भूलते सूर्य चन्द ।
आपु निर्गुण सगुण होइ भूलिया गोविन्द ॥
छ चारि चउदह सात एकईस तीनि लोक बनाए ।
खानि वखानि खोजि देखहु अस्थिर कोइ न रहाए ॥
खण्ड ब्रह्माण्ड खोजि षट दर्शन छुटत कतहु नाहि ।
साधु सन्त विचारि देखहु जीव निस्तारे कहा जाहि ॥
शशि सूर्य रैनि शरद तहां तन्तु पल्लव नाहि ।
काल अकाल परले नहीं तहां सन्त विरले जाहि ॥
तहां के छुटे बहु काल बीते भूमि परो भुलाए ।
साधु सङ्गति खोजि देखहु बहुरि उठि समाए ॥
एरी भूलवे को भय नहीं जो सन्त होहि सुजान ।
कहे कबीर सन्त सुकृत मिले तौ बहुरि न भूले आन ॥

२

बहुविधि चित्र बनाय के हरि रच्यो कोड़ो रास ।
जाहि न इच्छा भूलवेकी ऐसी बहु केहि पास ॥
भूलत भूलत बहु कल्प बीते मन नहि छाड़े आस ।
रचो हिंडोला अहो निसु चारिहु युग चतुर मास ॥
कबहु के नीच ऊंच कबहु स्वर्ग भूमि ले जाए ।
अति भ्रमत भर्म हिंडोलना नेक नाहि ठहराए ॥
डरपत हौ याहि भूलवे को राखु यादव राए ।
कहहि कबीर गोपाल विनती शरण हरिजु अपाए ॥

३

लोभ मोहके खम्भ दोउ मन से रच्यो हिंडोरा ।
भूलत जीव जहान जहां लगि कतहु न
देखे थिति ठौरा ॥
चतुर भूले चतुराइया हो भूल हो राजा सेव ।
चांद सूर्य दोउ भूल हो उनहु न आप्राभेव ॥
लख चौरासी जीव भूलही रवि सुत धरिया ध्यान ।
कोटि कल्प युग वितल अजहु न माने हारि अयान ॥
धरणी आकाश दोउ भूलहो भूलहो हो पवन नीर ।
देह धरे हरि भूलहो देखहि हंस कबीर ॥

अथ शब्द कहरा लिख्यते

सहज ध्यान देहु सहज ध्यान रहो गुरुके वचन
समाए हो ।
मेलि सिस्तो चारा चित राखहु रहहु
दृष्टि ले लाए हो ॥
जस दुख दोष सहहु एहि अवसर अस सुख
होइ हि पाए हो ।
जो खुटुकार वेगि नहि लागे हृदय नेवारहु काए हो ॥
मनु अहि काह रह हु मत मारे खिझ आखो
झिक बोले हो ।
मानु मोत मोते वनि छोड़े कपट गांठि ब
खोले हो ॥
भोग उपभोग भुगुति जिनि भूलहु ज्ञान युक्ति
तब साधहु हो ।
जो एहि भांति करहु मतवालो तामत
किञ्चित् वाधहु हो ॥
नाहित् ठाकुर है अति दारुण करि है चाल
कुचलिया हो ।
बाधि मारि डांडि सब लेइ है छूटिहि सब
मतवलिया हो ॥
जब हो शामत आनि पहुंचि है पीठि साठ भल
टूटी हो ।
ठाढे लोग कुटुम्ब सब देखहि कहे काहु के
न छूटी हो ॥
एकतो निस्ति पाय परि विनवे विनती किये
न माने हो ।
अनचिह्न रहेहु कियेहु गहि चिह्नरे सो कैसे
पहिचाने हो ॥
ले रब बोलाइ बात न पूछे केवट गर्व तन बोले हो ।
जो करे हाथ संभल कछु नाहीं सो निदाघ
में डोले हो ॥

जेन्ह सब युक्ति अगू मन के राखल धरेन्हि
कछु मरि डहरी हो।
जे करे हाथ पांव कछु नाही धरे लाग ते सहरी हो॥
पेलना आछत पेलि चलु बौरे तीर तीर
करोवहु हो।
उथले रहहु परहु जिनि हाथ हु के खोवहु हो॥
तर के घाम उपर के भूभरि छांह कतहु नहि
पायहु हो।
ऐसो जानि पसोजहु सोभहु कस न छपरिया
छायहु हो॥
जे कछु खेल कियेहु सो कयेहु बहुरि खेल
कस होई हो।
सासु ननद दुइ दिहे उलाटन रहहु लोज मुंह
गोई हो॥
गुर भौ टील गोद भौ लचपच कहा न मानेहु
मोरा हो।
ताजी तुरकी कबहु न साधेहु चढ़े हकाके घोरा हो॥
ताल भांझ भल बाजत आवे कहरा सब कोइ
नाचे हो।
जे रङ्ग दूलह व्याहन आवे ते रङ्ग दुलहिनि राचे हो॥
नौका आखत खेवइ न जानेहु कैसे के लगवे
तीरा हो।
कहहि कबीर रामरस माते जोलहा दास
कबीरा हो॥

२

मत सुनु मानिक मत सुनु मानिक हिदया बने
वारह हो।
अटपट कोहरा करे कोहरैया चमरा गावन
चारह हो॥
निति उठि कोरिया बेठि मरथरो गोपो आगे नाचे हो।
निति उठि नौवा नाव चढ़त है बेरहु बेरा वाचे हो॥
राउर के कछु खबरि न जानेहु कैसे के भगरा
निबेरहु हो।
एक गांव में पांच तरुणि बसें ता में ढोठ निहेरहु हो॥
आपन आपन सन भगरा वरगासेन्हि पियसे
प्रीति नसावनि हो।
भइसिन्ह माहु रहत निति बकुला तकुला
ताकि लगावनि हो॥
गाइन माह बसेहु नहि कबहूं कैसे के पद
चिन्हवेवहु हो।
पंथी पंथ पूछि नहि लीन्हेहु मूढ़हि मूढ़ गंवेबहु हो॥
जन्तु इतिके घर हेरिन्ह ललचि कोद इनके मन
दोरा हो।
इन्ह कर जिनि दरर पसारहु तव पैवहु थित
ठोरा हो॥
प्रेम पान एक सत गुरु दीन्हा गाढ़ो तीर कमान हो।
दास कबीर कहे एह कहरा रामहि माह समान हो॥

३

मूड़ मुड़ाय फूलि के बैठेहु मुद्रा पहिरि मजूसा हो।
ताहि उपर कछु छार लपेटे भितर भितर
घर मूसा हो॥
बरषत है मवें मे मथोसा सुखा सुहकारो हो।
मोहन जहां तहां ले जै है नहि पति रहो
तुमारो हो॥
मांभ मभरिया बसे जो जाने जन होइ सो
थोरा हो।
निर्भय भे तहां गुरुको नगरिया सुख सोवे दास
कबीरा हो॥

४

क्षेम कुशल औ सही सलामति कहहु कवन को
दीना हो।
आवत जात दुनो विधि लोटो सबे तंग हरि
लीना हो॥
सुर नर मुनि यती पीर औलिया मीरा पैदा
कीन्हा हो।

कहं लग गणहु अनन्त कोटि लहि सकल
पयाना दीन्हा हो ॥
पानी पै न अकाश जाहिगी चन्द्र जाहिगी सूरा हो।
ए सो जाहिगी वो सो जाहिंगे परत न काहु के
पूरा हो ॥
कुशल कहत कहत जग विनसे सकल कालको
फांसी हो।
कहै कबीर सारो दुनिया विनसी रहल राम
अविनासी हो ॥

५

ऐसनि देहनि राखन बौरी सुए छुवै नहि कोई हो।
डंड़वा करोरवा तोरि लड़ाइन्हि जो कोटिन्ह
धन छोड़हि हो ॥
सई निश्वासा उपयुत रासा हकरायन्हि परिवारा हो।
चन्दन चीर चतुर सब लिपे गले गजमुक्ता हारा हो ॥
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ज्ञानहीन
मतिहीना हो।
एक एक दिन इहै गति सब के का राव का दीना हो॥

६

हो सबहि नमें हो सबहि नमें विलग विलग
बिलगाई हो।
वोढ़न मोरे एक पिछौरा लोग बोले एकताई हो ॥
एक निरन्तर अन्तर नाही ज्यों जल घट
शशि झाई हो।
एक समान कोइ समुझत नाहीं जाते जरा
मरण भ्रम जाई हो ॥
तामें बालक बूढ़ो नाहि न मोरे चेलकाई हो।
[illegible]नि दिवस तहवां में नाही नारि पुरुष
समताई हो ॥
तिरविध रहो सबन में वरतो नाम मोर रमराई हो।
पठये न जाव आने नहि आवो सहज रहो
दुनियाई हो ॥

जोलहा तान बान नहि जाने फाटि
बिनै दश ठाई हो।
गुरु परताप जिनहि जस भाषो जन विरले
सिधि पाई हो ॥
अनन्त कोटि मन होरा वेधो कोटको मोल नहि
खाई हो।
सुर मुनि जाके खोज परे है कछु कछु कबिरहि
पाई हो ॥

७

ननदी गे तें विषम सोहागिनी तें निदरे संसारागे।
आवत देखिय सङ्ग सु तोते औ खसमहु मारागे ॥
मोरे बापके दुइ मेहरूवा मैं औ मोरि जेठानीगे।
जब हम अहलि रसिक जगमें तबहि बात
जग जानीगे ॥
माय मोरि मरलि पिताके सङ्गे सर रचि
मरल संघातागे।
अपने मुई अवर ले मुई लोग कुटुम्ब सङ्ग सातागे ॥
जो लगि श्वास रहै घट भीतर तो लगि कुशल
परिहैगे।
कहहि कबीर जब श्वास निसरिगे मन्दिर
अनल जरिहैगे ॥

८

ई माया रघुनाथ को बौरी खेलन चलो अहेरा हो।
चतुर चिकनिया चुनि मारो काहु न राख्यो नेरा हो ॥
मौनी वो दिगम्बर मारो ध्यान धरन्ते योगी हो।
जङ्गल महके जङ्गम मारे माया किनहु न भोगी हो ॥
वेद पढ़ंते पांड़े मारे पूजा करन्ते स्वामी हो।
अर्थ विचारत पण्डित मारो सकल शास्त्र परगामी हो॥
सोंगी विनि वन धोमर मारो ब्रह्मा कबिरा फोरा हो।
नाथ मछींद्रा बचे खोटि देसि गलहु मयोरा हो ॥
जा घटके घर करता धरे ता हरिभक्तन्हके चेरी हो।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो ज्यों आवे
त्यों फेरी हो ॥

९

रामनाम भजु रामनाम भजु चेति देखु मनमाही हो।
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़ेहु चलत डुलावत
बाही हो॥
दादा बाबा च्यो परपाजा जीन्ह कर ई भुइ भाड़े हो।
अन्धरे भयेहु हियहु की फूटी तेन्ह काहे
सब छाड़े हो॥
ई संसार असारक धन्धा अन्तकाल कोइ नाही हो।
उपजत विनसत वार न लागे जस बादर परछाही हो॥
नाती जोत अरु कुल कुटुम्ब सब इन्ह कर कवन
बड़ाई हो।
कहहि कबीर एक राम भजे विनु बूड़ी सब
चतुराई हो॥

१०

राम नाम विनु राम नाम विनु मिथ्या
जन्म गंवायहु हो।
सेमर सेइ सुगा ज्यो पिंजड़े सून परे पछतायहु हो॥
जेसे मद्यप गांठ अर्थ देइ घर हुके अक्लि गंवाई हो।
स्वादहि उदर भरे कहु कैसे वोसहि प्यास न जाई हो॥
गांठी रत्न मर्म जनि जाने पारख लीनो छोरी हो।
कहहि कबीर यह अवसर बीते रत्न न मिले
बहोरी हो॥

११

राम नाम की सेवा वोरा दूरि नाहि दुरि आशा हो।
और देव कहा पूजहु वोरे ई सब झोठी आशा हो॥
उपरकी उजल कहा भे बोरे भीतर अजहु कारा हो।
तनके वृद्ध कहा भयो बोरे जो मन अजहु वारा हो॥
मुखके दांत कहा भयो मेरे अन्तर दांत
लोहे का हो।
फेरि फेरि चना चवाय विषय को का स्वाद
मद लोभे का हो॥
तनके सकल संज्ञा घटि गयउ मन हो दिलासा
दूनी हो।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो सकल सयानप
ऊनी हो॥

१२

बीढ़न मोरे राम नामके मैं रामहिके बनिजाई हो।
राम नामके करहु बनिजिया हरि मोरे हरवाई हो॥
सहस्र नामके करो पसारा दिन बढ़ोत गंवाई हो।
जाके देह मैं नव पांच सेरवा ताके होत अढ़ाई हो॥
सेर पसेरी पूरा करि ले पसंगा कतहु न जाई हो।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो जोर चला जहड़ाई हो॥

वसन्त—धमार

ऐसो जात है दुर्लभ शरीर।
राम नाम भजु लागु तीर॥
गये वेणु वलि गये कंश।
दुर्योधन गये बूड़े वंश॥
पृथु गये पृथिवीके राउ।
तिल विक्रम गये रहे न काउ॥
सब चक्रवे गये मण्डलीक झारी।
अजहु हो नर देखु विचारी॥
हरि वत कश्यप जनक वालि सारा।
उन्ह सब छेकल यमको धारा॥
गोपीचन्द्र मल कीन्ह योग।
जैसे रावण मारो करत भोग॥
ऐसे जात देखिए सबको याम।
कहहि कबीर भजु राम नाम॥

२

सब मदमाते कोउ न जागु।
संगहि चोर घर मूसन लागु॥
योगी माते धरि योग ध्यान।
पण्डित माते पढ़े पुरान॥
तपसी माते तपकी भेव।
सन्यासी माते करि हरि सेव॥
मोलना माते पढ़ि मुसाफ।
काजी माते हैं इनिसाफ॥
संसार माते मायाके धार।

राजा माते करि अहङ्कार ॥
माते सुखदेव ऊधव अक्रूर ।
हनुमन्त माते लेइ लङ्गूर ॥
शिव माते हरि चरण सेव ।
कवि माते नामा जयदेव ॥
सत्य सत्य कहि अमृत वेद ।
जैसे रावण मारे ववरके भेद ॥
चञ्चल मनके अधम काम ।
कहहि कबीर भजु राम नाम ॥

२

हमार कहल केउ नहि पतियार ।
आपु बूड़े नर सलिल धार ॥
अन्ध कहै अन्धे पतिआय ।
जस विश्वाके लग ना जाय ॥
सो तो कहिये ऐसे अबूझ ।
खसम ठाढ़ ढिगा नहि सूझ ॥
आपन आप नचै चाहै मान ।
झूठ प्रपञ्च सांचके जान ॥
झूठा कबहि न करै काजु ।
मैं बरजी तोहि सुन निलाजु ॥
छाड़ पाखण्ड मानु बात ।
नाहित परहहु यमके हात ॥
कहै कबीर नल कियेहु खोज ।
भटकि मुयल सब वनके रोज ॥

३

मैं आयो हरि मिलन तोहि ।
ऋतु वसन्त पहिराव मोहि ॥
लम्बी परी या पाई छीन ।
सूरा न खोटा है दो तीन ॥
सर लागी तेहि तीनि से साटि ।
कसनि बहतरि लागु ताठि ॥
खुर खुर खुर चलै नारी ।
बैठि मोहिनी पसयो मारी ॥

ऊपर नाचे निकरत कोड़ ।
करि गहु मह दुइ चालै गौड़ ॥
पांच पचीशो दशए हार ।
सखी पांच तहं रचै धमार ॥
रङ्ग विरङ्गी पहिरे चीर ।
हरिके चरण धै गावै कबीर ॥

५

तुम बूझो पण्डित कौन नारी ।
कैहुं न विवाह लहै कुमारी ॥
सब देवन्ह मिलि हरिहि दीन्ह ।
चारिउ युग हरि सङ्ग लीन्ह ॥
प्रथम हो पदमिनी रूप आय ।
है सापिनी जब यो दिखाय ॥
ई भरि युवती बावरि नाहि ।
अति रै तेज त्रिय रैनि ताहि ॥
कहहि कबीर औज पियारी ।
अपने बल कब रहलि कुमारी ॥

६

बुढ़िया हसि बोले मैं नितहुं वारि ।
मोहि सो तरुणी कहु कवनि नारि ॥
दांत गयल मोर पान खात ।
केश गयल मोर गङ्ग नहात ॥
नयन गये मोर काजर देत ।
वयस गयल पर पुरुष लेत ॥
जातल पुरुषवा मोर आहार ।
अबजाने के करों संहार ॥
कहै कबीर बुढ़िया आनन्द गाय ।
पुत्र भर्तारहि बैठी खाय ॥

७

करपंलव कवल बेले नारि ।
पण्डित होइ सो लेइ विचारि ॥
कपड़ा न पहिरे है उघारि ।
गिर जोव वे धन अति पियारि ॥

उलटि पलटिके बाजू तार।
काहुहि मारे काहुहि उबार॥
कहहि कबीर दासनके दास।
काहु सुख दे काहु उदास॥

८

जाके बारह मास बसन्त होय।
ताके परमारथ बूझो बिरला कोय॥
बरिसै अग्नि अखण्डधार।
हरियर यौवन अठारह भार॥
पानिय आदर धरे न लोय।
मौन गहै काम मन धोय॥
बिनु तरुवर फूलै आकास।
शिव बिरञ्चि तहं लेहिं बास॥
सनकादिक भूल भ्रमर होय।
लख चौरासी जीव जग जोय॥
जो तोहि सत गुर सत्य लखाव।
ताते नहि छूटे चरगन भाव॥
अमरलोक फल लावे चाय।
कहहि कबीर बूझि सो खाय॥

९

बरही में वाजं बड़ो रारि।
उठि बैठि लागी चपल नारि॥
एक बाटी जाके पांच हाथ।
पांच हुकी पचीस साथ॥
पचीस बतावे ओर ओर।
ओर बतावे केक ठोर॥
अन्तर मध्य अन्त लेह।
झिक झारि दे खाजि नहिं देह॥
आपन आपन चाहे भोग।
कैसे कैसे के कुशल परि है योग॥
विवेक विचार न करै कोय।
सब खिलकत मा सदके. लोय॥
सुख फारि हंसे राव रङ्क।
ताते धरे न पाइ एको अङ्क॥
नियरे नयो जे बतावे दूलि।
चहु दिसि चाखलि रहलि फूलि॥
लख शरीरो एक जीव।
ताते पुकारे पीव पीव॥
अबरिक बार जो होइ चुकाव।
कहहि कबीर ताको पूरो दाव॥

१०

शिव काशी कैसे भई तोहारि।
अजहु हो शिव देखु विचारि॥
चोवा चन्दन अगर पान।
घर घर अमृत होइ पुरान॥
बहुविधि भवनन्ह लागु भोग।
एसे नम्र कोलाहल करे लोग॥
बहुविधि परजा लोग तोर।
तेहि कारण जीव ढीठ मोर॥
हमरे बालक के इहइ ज्ञान।
तोहके हरि समझावे आन॥
जे आहि मनसे रहल आय।
जीवन मरण कहु कहां समाय॥
नाकर जो कछु होइ अकाज।
तोहि दोष नहि संशय लाज॥
हरि हर्षित सो कहल भेव।
जहां हम तहां अवर न केव॥
दिन चारि मन धरहु धीर।
जस देखहि तस कहहि कबीर॥

११

रसना पढ़ि बोले श्रीबसन्त।
पुनि जे परवे यमके फन्द॥
मेरु दण्ड पर दण्ड कीन्ह।
अष्ट कमल पजार दीन्ह॥
ब्रह्म अग्नि कियो प्रकास।
अधः ऊर्ध तहां बहै बतास॥

नौ नारी तहां परिमल गाव।
सखी पांच तहां देखन धाव॥
अनहद बाज रहल पूरि।
पुरुष बहत्तरि खेले धूरि॥
माया देखि कस रहेहु भूलि।
जस बनस्पति रहलि फूलि॥
कहे कबीर हरिदास के दास।
फगुवा मांगी वैकुण्ठ वास॥

१२

माइर मोर मनसा अति सुजान।
धान कूटि कूटि करो विहान॥
बड़रे भोर उठि आगन वाट।
बड़रे खाचि लई गोवर काठ॥
वासी भात मनु सेलिह लखाय।
बड़े घइल लेइ पनियाके जाय॥
सर अही बांधे पाट पाट।
लेइ रे बेचो मैं हाट हाट॥
कहहि कबीर इ हरिके काज।
जोइया के ढिग रहि कहु कवन लाज॥

अथ साखी लिख्यते

पांच तत्त्वका पूतरा मानुष धरिया नाव।
एक कलाके बीछुरे विकल भया सब गाव॥
पांच तत्त्वका पूतरा जो विरचे मैं कोव।
मैं तोहि पूछो पण्डिता शब्द बड़ा की जीव॥
पांच तत्त्व ले यातन सो तन कहि लइ दीन्ह।
कर्महिके वस जीव हे कर्महि जीवके कीन्ह॥
पांच तत्त्वके भीतरे जो प्रवसु अस्थान।
विरले मर्म को पाइयां गुरुके शब्द प्रमान॥
पांच तत्त्वका खेल है ताकर करहु विचार।
कहे कबीर इ तत्त्वके बूझे जीवका होइ उवार॥

२

रङ्ग हिते रङ्ग उपजे सब रङ्ग देखो एक।
कौन रङ्ग हे जीव का ता कर करहु विवेक॥
सुनत खात अड़ि आसन पीड़े भरो खजूर।
जाके दिलमें हो वसो सेना लिए हजूर॥
शब्द हमरा आदिका पल पल राखो याद।
अन्त फलेगो माहली ऊपरको बरबाद॥
जागत तरखो जीव है शब्द सोहगा सेत।
जरत बुन्द जल को कुन्ही कहे कबीर कोइ देख॥

३

शब्द हमारा आदिका शब्द हमारा जीव।
फल रहा न किता करो घोरेया बाधोव॥
शब्द हमारा तुम शब्दका सुनिए मति जाहु सरखि।
जो चाहहु निज तत्त्व को तो शब्द लेहु परखि॥
शब्द विना स्रुति आधरी कहो कहां को जाय।
द्वारन पै वै शब्दका फिरि फिरि मटका खाय॥
शब्द शब्द बहु अन्तरे सार शब्द मत लीज।
कहहि कबीर जेहि सार शब्द महि
धूक जीवन सो जीज॥

४

शब्द हि मारा गिरि परा शब्दहि छाड़ा राज।
जिन्ह यह शब्द विवेकिया ताकर सुधरा काज॥
पर्वत ऊपर हरि वसे घोरे चढ़ वसे गाव।
विना फूल भंवरा रस चाहे कहु बरवा को नाव॥
गांव ऊंचे पहारपर औघटको है बाह।
कबीर ऐसा ठाकर साइयां ऊपरि गापको छाह॥

५

जेही गये हैं पण्डिता तेही गये अहीर।
ऊंची घाटी रामकी तेहि चढ़ि रहा कबीर॥
एक बार ते उतरि रहु संमल परो न साथ।
संमल घाटे खग थके जीव विराने हाथ॥
कबिरा का घर शिखर पर जहां सलह ली गयल।
पांव न टिके पलका तहां पण्डित न लादो बयल॥

६

जहिया जन्म मुक्ति है होता तहिया होत न कोय।
छूटिति हारो हो जगते कहां चला विगोय॥
विनु डाड़े जग डाड़िया सोरठ परिया डाड़।

बाट निहारे भोनिया गुरुते माटो खाड़ ॥
ई जग तो जहड़े गया भया योग नहि भोग।
तिल भरि कबिरा ले गया तिल्ली भारे लोग ॥
कबिरा जात पुकारिया चढ़ि चन्दनके डार।
बाल सगाये ना लगै पुनि का लेत हमार ॥
चन्दन सर्प लपेटिया चन्दन काह कराय।
रोम रोम विष भोनिया अंमृत कहा पियाय ॥
चन्दन वास निवारहूं तुम कारण वन काति।
जीवत जीव न मारहूं मूये सबै निपाति ॥
जिन्ह जिन्ह सुमिरन है किया ऐसो पूर पढ़ाय।
भूलि परे दिन आयये सुमिरन कियो न जाय ॥
इहई सुमिरन धारि ले आगी विषमी बाट।
स्वर्ण बिसाइन सब चले जहं बनिया नहि हाट ॥
बहुत दिवस तेहि बीतिया शुभग समाधि लगाय।
करहा डारा गाड़में टूरि परे पछताय ॥
बनते भागो बेहड़ो पर करहा अनबान।
करहा देख न सो कहै को करहा को जान ॥
कबिरा भवन न भाजिया बहु विधि धरिया भेख।
साईके परिचय विना अन्तर रहिगो रेख ॥
तनमन परिचय सब नसे शून्य न मानो भाय।
झिलमिल ज्योति अनाहदी विनसे कहां समाय ॥
झिल मिल झगरा झेलते माको छुटो न काहु।
गोरख अटके कामपुर कोन कहावे साहु ॥
गोरख रसिया रामके सुए न जारे देह।
मास गले माटी भई कौरे मांझि लेह ॥
काटे आम न मौलसो काटे जुटे न कान।
गोरख पारस परस विन काहिका नुकसान ॥
जो जानहु जग जोवना ज्यों जीवहु त्यों जीव।
पानी चाहहु आपना पनिया मांगिल पीव ॥
जो जानहु जो आपना तो कर जीव कै सार।
जियरा ऐसा पाहुना मिले न बारम्बार ॥
पनिया पियावत का फिरे घर घर हारहि हार।
तृषावन्त जन होइ तो पीवेगा झक मार ॥

काहु बहियां बल आपहो छाड़ विरानी आस।
जेहि अंगना नदिया बहै सो कस मरे पियास ॥
हृदया भीतर आरसी मुख देखो नहि जाय।
मुख भी तब ही देखिये दिलका धोका जाय ॥
जो मुददा सम शीलमें सबहो रूप समान।
कह कबीर उस सावकी गति सब देखि भुलान ॥
देखि के भूकें लागत कुत्ता सुनिके सुके अवाजो।
विन देखे विन सुने भूके सो कुत्ता है पाजो ॥
गहकी टेक न छाड़िया चोंच जोभ जरि जाय।
काहा तप्त अङ्गार है गये चकोर चबाय ॥
चकोर चन्द्रके भारोसे निगले तप्त अङ्गार।
कहै कबीर डाढ़े नहीं ऐसो वस्तु खगार ॥

७

मलयागिरिके वास में वेधो ढाक परास।
वेना कबहि न वाधिया युग युग रहते पास ॥
मलयागिरके वासमें वृक्ष रहे सब गोय।
कहनेको चन्दन भया मलयागिरि नहि होय ॥
चलते चलते पगु थका नगर रहा नौ कोस।
बीच हि मह डेरा परा कहहु कौनको दोस ॥
चलते चलते पगु थका अन्तर परिगो सांझ।
बहुत रसिक खेला किया विखा रहि गो बांझ ॥
मन बोले कब जाइये चित्त कहे कब जाव।
क्यो मासके छोठते ज्यादा को सरगाव ॥
ठहते भयो उदास जब भार खपड़ को जाय।
चौरी ताको मारिया चिरई चुनि चुनि खाय ॥
राम नाम जिन्ह चीन्हिया झीनो पञ्जर तासु।
नयनन आवै नीदरी अङ्गन जामे मासु ॥
जो जन भीजे रामरस मग्न होत मनमाह।
ज्यों दर्पणको सुन्दरी गहे न आवे बांह ॥
जो जन भीजे रामरस विकसित कबहि न सूख।
अनुभव भाव दरास तो नरको सुख न दूख ॥
पारसरूपो जीव है लोहरूप संसार।
पारसते पारस भया परसि भया एक सार ॥

प्रेम पाटको चोलना पहिरि कबीरा नाचु ।
पानिप दीन्हो तासु को तन मन बोले साचु ॥
दर्पणकेरी गुफहमें सो नहिं ईठा धाय ।
देखि जो पतिमा आपनो भूकि भूकि मरि जाय ॥
ज्यों दर्पण प्रतिबिम्ब देखिये आप दुनह मह सोय ।
ज्यों या तन्तु व तन्तु से आइ जाइ पुनि दोय ॥
यौवन शायर बूझते रसिया ललच कराहि ।
अब कबीर पाथे परे पन्थी आवे जाहि ॥
एक समाने एक सम सकल समाने ताहि ।
कबिरा सबे समान बूझते तहां दूसरो नाहि ॥

८

देर रतीनो ताह सब पटहि न चीन्हें कोय ।
डिगह ई शब्द बिबेकिया छलधनो है सोय ॥
सबहो ते सांचा भला सन चासे मस होय ।
सांच बिना है सुख नहीं कोटि करे जो कोय ॥
सांचा भया तो क्या भया जो नहि सांचा जान ।
सांच होइ सांचहि मिले सांचहि माह समान ॥
सच्चा सौदा कीजिये अपने दिलमें जान ।
सांचेहि हीरा पाइए झूठहि मूरो हान ॥
सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।
जाके दिलमें सांच है तहां बिराजत आप ॥
सांचहि शाप न लागही सांचहि काल न खाय ।
सांचहि सांचहि जो चले ताको काह नसाय ॥
जाते सांचा बनिया सांचो हाट लगाव ।
अन्दर झाड़ू देइके बाहर कहा बहाव ॥
सुकृत वचन माने नहीं आपु न करे विचार ।
कहहि कबीर पुकारि के सपने गया संसार ॥

९

आगि जो लागि समुद्रमें जरिगे दानव झारि ।
पूर्व पश्चिम के पण्डिता मुये विचारि विचारि ॥
आगि जो लागि समुद्रमें धावत परगट लोय ।
सो जाने जो जरि मुवा को जाको लव होय ॥
आगि जो लागि समुद्र में टूटि टूटि खसे झोल ।
रोवे कबीरा डाफर्द मोरा हीरा जरे अमोल ॥

लाई लावन हारको जाको लाय पर लार ।
बलिहारी लावनहारको छप्पर बचे घर जार ॥
बुन्द जो परा समुद्र में ताहि जाने सब लोय ।
समुद्र समाना बुन्द में बूझे बिरला कोय ॥
जहर लीभो मेरो पिया अफीमची सौ बार ।
कबीर पलक न ते तजे जामें जौन विचार ॥
विरह बाण जेहि लागिया औषध लगे न ताहि ।
सुसकि सुसकि मरि मरि जिये उठे कराहि कराहि ॥
बिरह कियो दिल करि सपच सपच धुवां धुंधआय ।
दूध से तब हो बाचि हौ जब सकल लोक जरि जाय ॥
कहत कहहि कर प्रतिदिवस समय जो देखो देखि ।
गये होत नहीं बाहुरे बहुरि न अइ हौ फेरि ॥
सांचा शब्द कबीरका हृदये देखु विचारि ।
चित्त देइ समझे नहीं मोहि कहत भवल युग चारि ॥
दवको डाढ़ी लाकरो वो भो करे पुकार ।
अब तो परेहु लोहार घर डाहै दूजो बार ॥
जो तू चाहे मूझको छाड़ि देह सब आस ।
मूझे ऐसो होइ रहु सब कछु तोरे पास ॥
कोटि तो काटे कोटि गढ़ि कोटिन्ह दीन्हों आगि ।
पण्डित पढ़ि गुनि झलि भए सा कत उबरे भागि ॥
सावन के रा सेहरा बुन्द परा असमान ।
सारो दुनो वैष्णव भई गुरु न लागे कान ॥
दिन बुड़ाउ धूला नहीं इहै अंदेशा मोहि ।
सलिल मेहके धारमें कस नींद परी है तोहि ॥
बहता बहते हो मिले गहता मिला न कोय ।
बहि लाने दे ऐसो कहता जो नहि गहता होय ॥
साखी कहै गहै नहीं चालो चलो न जाय ।
सलिल मोह नदिया बहे पांव कहां ठहराय ॥
जहां गहको तहां हो नहो हो नह गहको नाहि ।
बिना बेश भटकत फिरे देखि शब्दको छाहि ॥

१०

जहं बोला तहं अक्षर आया ।
जहां अक्षर तहं मन हि दृढ़ाया ॥
बोल अबोल एक नहि होई ।

जीन्ह इ लया सो विरला होई ॥
एक एक के निरुवा रतनो बहुमारी जाय।
दुइ मुखका बोलना घना तमाचा खाय ॥
जिन्ह बन्दन देवहु बोलना नेवार।
साखी से सङ्ग करु गुरु मुख शब्द बिचार ॥
शाखो तो जीभे डगा चप चप बोले कुबोल।
मनके घाले भरमत फिरे काल हो देत हिंडोल ॥
जाके जिवहा वदन नहि हृदया नाहीं सांच।
ताके सङ्ग न लागे घाले खटिया मांच ॥
जो लगि भार शरोरमें तीर रह्यो है टूटि।
चुवक वीतु निकसे नहीं कोटि पाहन गे छूटि ॥
आगी सोटी साकरी पाछे चखनाचर।
परदा तरको सुन्दरो रहो धकासे दूर ॥
जे मारग सनकादि गे ब्रह्मा विष्णु महेश।
सो मारग अब थाकिया मैं काहि करों उपदेश ॥
संसारी सब अविचारी कोइ विरहो कोइ योग।
अवसर मारे जात है ते चेतु विराने लोग ॥
संशय सब जग धांधिया संशय धंधे न कोय।
संशय धंधे सो जना जा शब्द विवेकी होय ॥
बोलना है बहु भांतिका नौ मन कछु उ न सूझ।
कहे कबीर पुकारि के ते घटघट बाणी बूझ ॥
नकटा का यह राज है नफर कवरते तेक।
सार शब्द टकसार कोइ हृदया करे विवेक ॥
मूल गहे ते काम है ते मति भर्म भुलाय।
मन शायर सामुद्र है वही कतहु मति जाय ॥
भौंरा भूले बागमें बहु फूलनको बास।
ऐसे जीव बोलने विधिमें अन्तहु चले निरास ॥
भौंर जाल बगजाल है बहुत विचार अचेत।
कहहि कबीर ते बांचि है जाके हृदय विवेक ॥
तोनि लोक टोड़ी भये उड़े मनके साथ।
हरि जन हरि जाने विना परे कालके हाथ ॥
नाना रङ्ग तरङ्ग है मन मकरन्द असूझ।
कहहि कबीर पुकारिके ते अकोम कलाले बूझ ॥

११

बाजीगरका बांदरा सो जियरा मनके साथ।
नाना नाच नचाइ के राखे अपने हाथ ॥
ई मन चञ्चल ई मन चोर ई मन सुच ठगहार।
मन मन करते सुर नर मुनि जहड़े मनके लख दुआर ॥
राम वियोगी विकल तन इन दुखवे मति कोय।
छूअत हो मरि जाहि गे ताला वेलो होय ॥
काल खरा शरोरमें सब जग पाय सिफारि।
विरले जन कोइ बाचि है जो रामहि मर्जहि विचारि ॥
काल खपड़ा शिर ऊपर तेरे जागु विराने मीत।
जाको घर है नरेसमें सो कस सोवे निचोत ॥
कलो काट काले घुना यत्न यत्न घुन खाय।
काया मध्ये काल बसत है मोमन कोई पाय ॥
मनमायाको कोठरी तामें संशयका कोट।
विषहर मन्त्र माने नहीं काल सर्पका चोट ॥
मन शायर मन साल हरि बूड़े बहुत अचेत।
कहे कबीर ते बाचि है जाके हृदय माह विवेक ॥
शायर बुद्धीमान को वाय बिंछ ना चोर।
सारी दुनिया जहड़े गये कोइ न लागे ठोर ॥
मानुष होयके कोइ न मुवा मुवा सौदागर चोर।
एका जीव ठोर नहि लागा भया सो हाथी घोर ॥
मानुष जन्म दुर्लभ हे होहि न बारम्बार।
पाका फल ज्यों गिरि परे बहुरि न लागे डार ॥
मानुष जन्म पाइ नर चकहु अबके घात।
जाय परेहु भव चक्रमें सहत घनेरो लात ॥
मानुष बेचारा क्या करे जाको शून्य शरीर।
जो जीव भाकि न उबरे तौ कहा पुकारे कबीर ॥
मानुष बेचारा क्या करे जाके हृदया माहो शून्य।
सोहा चम्बक बेठाइ के फिरि फिरि चासे चून्य ॥
मानुष बेचारा क्या करे जाके कहे न खुले कपाट।
सोनहो चौक बेठाइके फिरि फिरि ऐपन चाट ॥
मानुष ते बड़ पापिया अगुर हराइ न मान।

बार बार बगकू कुम्हो गभो परै औधान ॥
मानुष का गुणै बड़ा मास न आवै काज।
हाड़न अभरण होय तो चाम बाजने बाज ॥
रतन काजर न करु माटीका शृङ्गार।
आय कबीरा फिरि गया फीका है संसार ॥
हंसा मोल बिकानिया कञ्चन थार डराय।
जो जस मर्म न जानै सो तस काह कराय ॥
हंसा तै सो वरण वरण का वरणो मैं तोहि।
तब करवा लोहै लहु तब सराहो तोहि ॥
हंसा तुम सबलता हटुको अपनो चार।
रङ्ग विरङ्गे रङ्गिया तुम कौन्हेहु अवर लगवार ॥
हंसाके घट भीतरै वसै सरोवर ताल।
हंस प्ररीरी तै जानियै वक उघरहिंगो काल ॥
हंसा सरवर तजि चले देही परिगो सून।
कहहि कबीर पुकारि कै तेइ दर तेई थून ॥

१२

काहे हरिणी दूबरी एही हरिपरि ताल।
लाख अहेरी एक मृग केतिक टारै भाल ॥
कुल करणीके कारणै हंसा गये बिगोय।
तब कवन कुल जोहै जब चारि चरणका होय ॥
जा सो दिल मिलिया नहीं शब्द न बेधो अङ्ग।
कहहि कबीर पुकारि कै हंस बकुलका सङ्ग ॥
तीन लोक भै पींजरा पाप पुण्य भौ जाल।
सकल जीव सावज भये एक अहेरी काल ॥
वेन्हा दीन्हो खेतको वेन्हा खेतहि खाय।
तीनि लोक संशय परी मैं काहि कहौं समुझाय ॥
बलिहारी वहि दूध की जामें निकला घीव।
आधी साखि कबीरकी चारि वेदका जीव ॥
लोभे ज्ञान गवाइया पापि खाया पून।
आधा सो आधो कहै तापर मेरा खून ॥
आधी साखी सिर कटै जौ निरुवारी जाय।
का पण्डित तेरी पोथिया जौरा दिन मिलि गाय ॥

बांह मरोरे जात है मैं सोवत लिया जगाय।
कहहि कबीर पुकारि के येहि पीड़े होइ का जाय ॥

१३

बेरा बांधेन्हि सर्वका भवसागर अतिमाह।
छाड़ी तो बूड़ै नहीं नाहित डासै बाह ॥
हाथ कटोरा खोवा भरा मग जोहत दिन जाय।
कबीर उतरा चित्त तै छाछ दियो नहि खाय ॥
एक कहौ तो एक नहि दुई कहो तौ गारि।
हो जैसा का तैसा कहहि कबीर पुकारि ॥
अमृत केरी मोटरी सिर सो धरी उतारि।
जाहि कहौं मैं एक सो कहै मोहि दुइ चारि ॥
अमृत केरी मोटरी बहु विधि दीन्हा छोरि।
आपु सरीखे जो मिले ताहि पियावो घोरि ॥
चारि चोर चोरी चले पगपनी उतारि।
चारो दर थून्हो हरो पण्डित करहु विचारि ॥
जाके मुनिवर तप करहि वेद थके गुण गाय।
सोइ देउ पिया पनो कोई नहि पतिआय ॥
एक तै अनन्त अनन्त एक तै होइ हाय।
परिचय भया एक तै तब अनेकहि माह समाय ॥
एक शब्द गुरुदेवका तामें अनन्त विचार।
थाके मुनिवर ज्ञानी वेद न पावे पार ॥
चोगोड़ाके देखते व्याधा भागा जाय।
एक अचम्भो हो देखा मरा काल को खाय ॥
रावरके पिछवारे गावे चारो सेन।
जीव परा बहु लूटिमें ना कछु लेन न देन ॥
विषके बिरवे घर कियो रहा सर्प लपटाय।
तातै जियरहि डर भया जागत रैन बिहाय ॥
जो घर है सांपका तेहि घर साधु न होइ।
विमुख सकल समपदा विषहर लागा सोइ ॥
घुघुची भरिके बोये उपजु पसेरी आत।
डेरा परा कालका सांझ सकारे जात ॥
मन भरि को बोये घुघुची घुघुची भरि नहि होय।
कहा हमार माना नहो अन्तहु चला बिगोय ॥

आपा तजिके हरि भजै नखसिख तजै विकार।
सब जीवन ते दुर रहै साधु मता है सार॥
मायाकी झक जग जरै कनक कामिनी लागि।
कह कबीर कैस बाचि हो धुवां लपेटी आगि॥
पच्छापच्छी कारणे सकलो जगत भुलान।
निरपच्छी होइ हरि भजै सोई सन्त सुजान॥
बड़े गये बड़ आपने रोम रोम हङ्कार।
सत्गुरुकी परिचय बिना चारो वरण चमार॥
माया जग सांपिनि भई बिखिलेइ बइठी आछि।
सब जग फन्दे फन्दिया चले कबीरु काछि॥
सांप बिछीका मन्त्र है महुरो झारा जाय।
विकट नारि पाले परे काटि करेजा खाय॥
बोखर बैरी एक है व्याह करै मति कोय।
बांधे हो मरि जाहुगे मुक्ति कहांते होय॥
मन माया दोउ एक है माया मनहि समाय।
तीनि लोक संशय परी मैं केहि कहौं बिलमाय॥
मन मायाकी चोटमें मारा सकल जहान।
सुर नर मुनि सब हो खसे उबरे सन्त सुजान॥
कटी कानकी कामिनी मोतीको पतिआय।
चुभकि चुभकि लोहू पिये काटि कलेजा खाय॥
अति तिरिया किरपा करै देन कहै कछु और।
मूल पात्र आगी धरै यही नरकका ठौर॥
पीपर एक महारङ्ग भान।
ताकर मर्म कोइ नहि जान॥
डार नवाय कोइ नहि खाय।
खसम अछत वह पिपरे जाय॥
साहुसे भौ चोरवा चोरहुसे भौ असूझ।
तब जानहुगे जीयरा जब तुमइ परैगो बूझ॥
ताको पूरो क्या परे गुरु न लिखाई पाट।
ताको बेड़ा बूड़ि है फिरि फिरि अवघट घाट॥
चारि मास घन बरिसता अति अपूर्व जलनीर।
पहिरे जब तन बखतरो चुभे न एको तीर॥
गुरुको मेलो जीव डर काया छीजनिहार।
कुमति कमाई जो बसे लागि जुआको लार॥
तामसके हैं तीनि गुण भ्रमर लेहिं तहं वास।
एक डार तीनो फले भांटा ऊख कपास॥
लोगन केरो अथइया मति कोइ बैठे जाय।
एक खेत में चरत है बाघ गदहरा गाय॥
मन गयन्द माने नहीं चला सुरतिके साथ।
महावत बेचारा क्या करै जो अङ्कुश नाहीं हाथ॥
मन मसनद गई अरहने मनसा भई सचान।
मन्त्रयन्त्र माने नहीं उड़ि उड़ि लागो खान॥
ई माया है चूहड़ी औ चुहड़ाकी जोय।
बाप पूत अरुझावती सङ्ग न काहुके होय॥
कनक कामिनी देखि कै तू मति भुलहु सुरङ्ग।
मिलन छुटन दोउ लगी ज्यौं केंचुली भुजङ्ग॥
मायाके हैं वश परे ब्रह्मा विष्णु महेश।
नारद सारद सनक सनन्दन गौरी अवर गणेश॥
तन संशय बिनसो नहीं काल अहेरो नौतु।
एकहि डङ्क बसेरवा कुशल पुछहु का मोतु॥
साहु चोर चीन्हें नहीं अन्धा मतिका हीन।
पारख बिना बिनास है करि विचार हो भीन॥
साहु भरोसे चोरके चोर साहु है केइ।
जोलगि चोर बंधे नहीं तो लगि वस्तु न देइ॥
साहु साज बतावई चोर बुजुबुजा देइ।
वस्तु बचावै आपना चोर कहांते लेइ॥
मूरख से का का करै शठसे काह वसाइ।
पाहन भार फुटे नहीं चोखा तीर नसाइ॥
गुरु सैकलि गढ़ करिल मन हाथ मुसुकुला देइ।
शब्द लाञ्छना छोलिके चित दर्पण करि लेइ॥
मूरखके समुझावते ज्ञान गांठिका जाय।
कोइला होइ न ऊजरो केतको साबुन लाय॥
मूरख मूढ़ कमान खसि खपा तोर खरआहि।
बाणनिहारा क्या करै जो वाण न लागे ताहि॥
जैसे गामो गुमजको नीचे टरे हहराय।
ऐसा हृदया मूर्खका शब्द नहीं ठहराय॥

सुगना सेमर सेइया दुइ ढेंठोको आस ।
ढेंठो काटि चनाक्रदा सुगना चला निरास ॥
सुगना सेमर वेखिले तेरो घनी विगुरची पांखि ।
ऐसा सेमर सेइये जाके ह्रदया नाहीं आंखि ॥
चक्को चलती हो देखा मेरे नयनन्ह आई रोय ।
दुइ पट्टनके बीचमें सालिम गया न कोय ॥
जोग भरोसे कोनके बइठि रहा अरगाय ।
जियरहि ऐसे यम लुटै भेड़ा लुटै कसाय ॥
जानि बूझि जड़ होइ रह बल तजि निर्बल होय ।
कह कबीर तेहि सन्तका पला न पकरे कोय ॥
हीरा सोइ सराहिए जो सहे घनको चोट ।
कुघट कुरङ्गी मानवा परिछत निकला खोट ॥
हाड़ जरे जस लाकरो केश जरे जस घास ।
कबिरा जारे राम रस कोठी जरे कपास ॥
पावन्ह पुहुमी नापते दरिया करते फाल ।
हाथ न परवत तालते तेहि धरि खायो काल ॥
पूर्व उगे पच्छिम बसै भखै पवनका मूल ।
ताहु राहु गरासतो मानुष काहे भूल ॥
सन कागज छूवो नहीं कलम धरो नहि हात ।
चारि युगका महातम कबीर मुखहि जनावै बात ॥
अपने अपने पीरके सबहि न लीन्हो मानि ।
हरिकी बात दुरन्त है परो न काहु जानि ॥
अपरको दाई गई ह्रदयको गई हेराइ ।
जाके चार लोचन गये तासो कहा बसाइ ॥
उपरेको दोउ गई ह्रदयको कूटि आंखि ।
कबीर बेचारा क्या करै जीवहि नाहीं भाकि ॥
मैं रोवो एहि जगत्को मो को रोवै न कोय ।
मो को रोवै सो जना जो शब्द विवेको होय ॥
साहेब साहेब सब कहै मोहि अंदेशा और ।
साहेब से परिचय नहीं बैठहुगे केहि ठौर ॥
गुरु पूरा शिष्य सूरा बाग् मरोरि न पैठि ।
साहेब से परिचय कर तब एक दुलैचा बैठि ॥
केतिक दिन एह गये अनरूचेको नेह ।
बोए ऊसर ऊपजै नहि जल बरिसै मेह ॥
हरि हीरा जन जौहरी सबन पसारो हाट ।
जब जन आयो पारखी तब हीरो देखो साट ॥
हीरा तहां न खोलिए जहां कपटको हाट ।
बांधहु चुपको मोटरो लागहु अपनी बाट ॥
हीराको बोरिया नहीं चन्दनको नहि पांति ।
सिंहों का लेहड़ा नहीं साधु न चले जमाति ॥
नौ मन दूध बटोरि कै टपके किया बिनाश ।
दूध फाटि कांजी भया भया घीवका नास ॥
जिव बिनु जिव जीवै नहो जीवका जीव अहार ।
जीव दया कै पालह पण्डित करो विचार ॥
हो तौ सब होको कहो मेरो कहै न कोय ।
मेरो तो सोई कहै जो मुझ्ई ऐसा होय ॥
हो तौ सबहोको कहो मोको कोइ न जान ।
तब भी अच्छा अब भी अच्छा युग युग होउ स आन॥
मे चितवो तेरे विसके तै चितवै कछु और ।
लानत है तेहि चित्त को एक चित्त दुइ ठौर ॥
जस दिल मेरा तुझै पर तस तेरा दिल होय ।
कथा लोहा ताय के सन्धि ना लखै कोय ॥
परगट कहो तो मारिया परदे लखै न कोय ।
सहना छपा पुसालतर को कहि वैरी होय ॥
कलि खोटा जग आंधरा शब्द न माने कोय ।
जाहि कहीं मैं आपनो सो उठि वैरी होय ॥
कहहि कबीर हमार मन बहुत यत्न समुझाय ।
बांड़ी पूंछि उठायके चक्को वेब को जाय ॥
देश विदेशो हों फिरो मन हो भरा सुकाल ।
जाके ढूंढत हों फिरो ताके परा दुकाल ॥
देश देश हम बागिया गांव गांव को खोर ।
यके जिआरु ना मिला देखा फटकि पछोर ॥
राह बेचारो क्या करै पन्थि न चलै संभारि ।
अपनो मारग छोड़ि कै चलो उजारि उजारि ॥
समुझेको मति एक है जिन देखा सम ठौर ।
कहै कबीर है बीचका बल कहि औरका और ॥

बोल हमारी पुरुबको हमहि लखे नहि कोय।
हमहि लखै सोई जना धूर पुरुबिया होय॥
जाके चलते खुद परा धरती होय बेहाल।
सो सावत थामें परा पण्डित करहु विचार॥
मूवा है मरि जाहुगे बिनु सर थोथे भाल।
परेहु कहां रे वृच्छतर आजु मरहु के काल॥
सबको उतपति धरति है सब जीवन्ह प्रतिपाल।
तिल तिल होती गारुई रही ठिकाके भाल॥
सब हो से लघुता भली लघुता से सब होय।
जस दुतियाके चन्द्रमा शिर नावै सब कोय॥
तौ लगि तारा जममगै जौ लागि उदय न सूर।
तौ लगि जीवहु कर्म वशि जब लगि ज्ञान न पूर॥
अछिया छतम न होत है धरती होत न नीर।
उतपति प्रलय न होत है तबको कही कबीर॥
नाम न जानै गांवका भूला मारग जाय।
कालि गड़े गा काट अगु मनहो वास न खोराय॥
तीनि लोक चोरी भई सरवस सबका लीन्ह।
विना मुण्डका चोरवा परा न काहुहि चीन्ह॥
सङ्गति से सुख ऊपजै सङ्गति से दुख होय।
कह कबीर तहं जाइए अपनी सङ्गति लोय॥
जैसी लागी पेड़को तैसी निवहै ओरि।
कउड़ी कउड़ि बटोरिके जुटै न लख करोरि॥
आजु कालि दिनके लिये अस्थिर नहीं शरीर।
केतिक दिन नर राखि हो काचे वासन नीर॥
पलमें परलय बीति है लोगन्ह लागु तमारि।
आगिल सोच नेवारहु करि पाछिलो गोहारि॥
बन्धा को बन्धा मिले छूटै कवन उपाय।
कर सेवा निरबन्धको पलमें लेत छोड़ाय॥
बहु बन्धनसे बांधिया एक बेचारा जीव।
की छूटै बल आपने या कि छोड़ावहि पीव॥
जिव जिन मारहु बापुरा सबका एकै प्रान।
तीरथ गए न वाचि हो कोटि हिरा दे दान॥
जिव जनि मारहु बापुरा सब घट एकै प्राण।
हत्या कबहु न छूटि है कोटिन्ह सुनो पुराण॥
तीरथ गये थे तीन जन चित चञ्चल मन चोर।
एको पाप कटा नहीं लादे उनदस मोर॥
तीर्थ भई विष बेलरी रही युगहु युग छाय।
कबिर निमूल निकंदिया कवन हलाहल खाय॥
ए गुणवन्ती बेलरी तव गुण बरनि न जाय।
जहं काटे तहं हरिअरी सींचेते कुम्हिलाय॥
आगे आगे दौ बरै पीछे हरिअरि होय।
बलिहारी वहि वृच्छकी जर काटे फल चोय॥
बली कुटुम्बी निहफली फुलवा कुबुध बसाय।
बोर बिनष्टो तोमरो सरो पात करुआय॥
परदे पानी ढाढ़िया सन्ता करो विचार।
शरमा शरमी पचि मुवा काल घसीटे छार॥
अस्ति कहौ तौ कोई न पतीजे विना अस्तिका सेधा।
कहहि कबीर सुनहु हो सन्तो हीरे हीरा बेधा॥

१७

काजर केरी कोठरी बूड़त है संसार।
बलिहारी वहि पुरुषको पइठि के निकरनिहार॥
काजर केरी कोठरी काजर होको कोट।
कारी तौ दुनया भई रही वोटको वोट॥
काजर केरी कोवरी पानी केरा गङ्ग।
कह कबीर कैसे वाचि हौ पांच कुरङ्गो सङ्ग॥
अर्थ खर्व ले द्रव्य है उदय अस्त ले राज।
भक्ति महातम ना तुले ई सब कवने काज॥
मत्स्य बिसाने सब मए धीमरके दरबार।
अखियां रतनारी तेरी तै कस पहिरो जार॥
पानी भीतर घर किया सेजा किया पताल।
पासा परा करीमका त्यों मैं पहिरो जाल॥
मत्स्य भये ना वाचि हो धीमर तेरो काल।
जेहि जेहि डाबर तर तुम फिरो तेहि तेहि डारो जाल॥
बिनु रसरी नर जग बंधा ताकर बन्ध अलेख।
दीन्हों दर्पण हाथ में चश्म विना क्या देख॥
समुझाए समुझै नहीं पर हथ हाथ बिकाय।

मैं खींचत हौं आप की वह चलि यमपुर जाय ॥
साध कहे ते मारिया भूठहि करे पियार।
हम सिर डारे टेकुरो सींचे अवरकि पार ॥
सज्जन सौ दुर्जन भया सुनि काहुकी बोल।
कांसा तांबा हो रहा होत हिरा को मोल ॥
लोहा केरी नावरी पाहन केरा भार।
सिर पर विषकी मोटरी उतरा चाहै पार ॥
कृष्ण समीपी पाण्डवा गले हेवारे जाय।
लोहेको पारस मिले काहे काई खाय ॥
नयनन आगी मन वसे पलक पलक कर दौर।
तीनि लोक मन भूप है मन पूजा सब ठौर ॥
मन सारथि है आपु रस विषम लहरि फहराय।
मनहि चलाए तन चले तातें सरवस जाय ॥
मनके घारे परहु जनि छाड़ि देहु बुधिवानि।
बहुत परोसिया बुड़ि मुए हम अपने दिल जानि ॥
कैसी गति संसार की ज्यों गाड़र की ठात।
एक परा जेहि गाड़ में सभे गाड़ में जात ॥
मारग तो अति कठिन है तहं मति कोई जाय।
गए तहां नहि बाहुरे कुशल कहे को आय ॥
केरा तब हि न चेपिया जब ढिग लागो वेर।
अबके चेपे क्या हुआ काटन्ह लीन्हा घेरि ॥
मारी मरे कुसङ्गके केरा साथ बयेर।
वैहाले बेचोर छ विधिने सङ्ग निवेर ॥
सङ्गति कीजे साधुकी हरहि अवरको व्याधि।
वोछी सङ्गति नीचको आठो पहर उपाधि ॥
वस्तु अनत खोजत अनत क्यों करि आवे हाथ।
आनो सोई सराहिए पारख राखे साथ ॥
छः दर्शन मह एक बेचारा तासु नाम वनवारी।
कहहि कवीर इ खलक सयानी तामें हमहि अनारी ॥
सिखे सुने विचरे नहीं अन जानेका दोहा।
कह कवीर पारस परसे विन पाहन पीतर लोहा ॥

१५

जाके सतगुरु ना मिले व्याकुल दश दिशि धाव।
आंखि न सूझे बारवर जारे घूर बताव ॥
प्रथमहि एका जोहो किया भया सो बारह बान।
कसतक सबटिन टिका यो तर भया निदान ॥
जीवति मरनि न जाने अन्ध भया सब जाय।
वादो हारे धावन पाये जन्म जन्म पछताय ॥
भक्ति बिगारि कबीर इन्ह कंकर पत्थर धोय।
हृदयामें विष राखिके अंमृत डारेन्हि खोय ॥
ज्ञान रत्नको कोठरी चुम्बक दीन्हे ताल।
पारख आगे खोलिए कुञ्जी वचन रसाल ॥
सर्ग पातालके बीचमें दो तुमरी आवद्धि।
षट् दर्शन मह संशय परी लक्ष चौरासी सिद्धि ॥
दुर्मति को तू दूरि करु अच्छा जन्म बनाव।
काक गमन बुधि दूरि करि हंस गमन चलि आव ॥
हारे तेरा रामजी मिलो कबीरा मोहि।
ते तो सबन मह मिलि रहा मैं न मिलावों तोहि ॥
जे ते पावन वनस्पति औ गङ्गाका रेनु।
पण्डित बेचारा क्या करे कबीर कहा मुख वेन ॥
हो विलगाए औरके बिगरो नहि कछु तोर।
घाव क्या करो जहां देखो तहां प्राण मोर ॥
भ्रम मर्यादा तिहु लोक में भ्रम मण्डा सब ठांव।
कहहि कबीर पुकारि के तुम वसे भ्रमके गांव ॥
रत्न अड़ायन्हि रेतमें कङ्कर चुनि चुनि खाय।
कहहि कबीर पुकारिके अन्त चला पछताय ॥
हम जाना कुल हंस हो तातें कीजा सङ्ग।
जो जनते बग बावरा कुवन न देते अङ्ग ॥
सतगुरु वचन सुनहु हो सन्तो मति लेहो सिरभार।
हों हुजूर ठाढ़े कहत बहुत संभार संभार ॥

१६

सिंह अकेला वन रमै पल पल करता दौर।
जैसा वन है आपना तैसा वन है और ॥
विरह भुजङ्गम तन वसे मन्त्र न माने कोय।
राम वियोगी ना जिये जिये तो बौरा होय ॥
विरह भुजङ्गम पेठिके करे करेजे घाव।

साधू अङ्ग न मोरही ज्यों भावे त्यों खाव ॥
करु बन्दगी विवेकको भेष धरे सब कोय।
वह जाने दे बन्दगी शब्द विवेक न होय ॥
एक वाण हैगा मेरा मनका वाण छतीस।
एक वाण मेरा लगे सबै वाण हो फीस ॥
जो मीला सो गुरु मिला शिष्य मिला नहि कोय।
षट् लख छनवे सहस में एक जीव पर होय ॥
पैठा है सबके घट भीतर बैठा हैगा सचेत।
जब जैसी गति चाहिये तब तैसी मति देत ॥
जासो गोइ भीतर रहे सोइ जाने सब बात।
जानत ही अवगुण करे तो काहे कुशलात ॥
बाणीते पहिचानिए चोर साहुकी घाट।
अन्तर्गतकी करणि जो निकरे मुंहकी बाट ॥
बूझि तो रीझि सदा समुझि तो हो सार।
देखु तमाशा ताहि को जो बन्धन ते पार ॥
अपनी कहु मेरी सुने सुनि मिलि एकहि होय।
मेरे देखत जग गया ऐसा मिला न कोय ॥
जा वन सिंह न सञ्चरे पक्षी नहि उड़ि जाय।
सो वन कबिरा छण्डिया शून्य समाधि लगाय ॥
जो खोजत कल्पे विता घटही में सो मूल।
बाढ़े गर्व गुमानको ताते परि गइ भूल ॥
जाके खोजन जाइए सो तो हाल हजूर।
तालिब को है नौयरे बेतालिब के दूर ॥
एक बातकी बात है कोई कहै बनाय।
भारी परदा बीचका ताते लखो न जाय ॥
मुखसे मीठी जो कहै हृदये है मति आन।
कहु कबीर तिन लोग सों तैसेहु राम सयान ॥
जौ लगि तोला तौलमी तौ लगि बुधि व्यवहार।
तोला फूटा धन गया कोइ न ढोवै भार ॥
विरहिन साजो आरती दर्शन दीजै राम।
मूये दर्शन देहुगी आवै कवनै काम ॥
पहिर हुते जब सब हुते जिह्वा दांतकी ठौर।
मुक्ति परी बिललात है वृन्दावनकी खोर ॥
बाजन दे बाजन्दरो कलि कुकुरी मति छेम।
तुझै बिरानी क्या परे ते आपनी निबेर ॥
मर जीवा अमृत पिवा का धसि मरसि पताल।
गुरुकी सेवा साधुको सङ्गति को एहि हाल ॥
देखहु जिवके ढाढ़से धसि जरि पइठ पताल।
जीव अटक माने नहीं गहिरे निकरा लाल ॥
एक साध सब साधिये सब साधे एक जाय।
उलटो सींचे मूल को फूले फले अघाय ॥
यन्त्र बजावत होश ना टूटि पड़ा सब तार।
यन्त्र बिचारा क्या करे गया बजावनहार ॥
औरन्हके समुझाव को जिह्वा परिगो रेत।
राशि बिरानो राखते खायो घरको खेत ॥
क्षण मनुया खिल खिल हंसे क्षण मनुया उठ रोय।
क्षण मनुया परि जर मरे क्षणहु चला बिगोय ॥
बोला एक अमोल है जो कोइ बोले जान।
हृदय तराजू तोलि के तब मुख बाहर आन ॥
कर्क करेजे गड़ि रहा वचन वृक्षके फांस।
निकलाए निकले नहीं रहा सो काहु गांस ॥
गुरु माथे पर राखिए चलिए आज्ञा माहि।
कहु कबीर तेहि सन्तके तीनि लोक डर नाहि ॥
गुरु माथे से उतरा शब्द बेमुखा होय।
ताके काल घसोटि है राखि सके ना कोय ॥
विनु देखे वहि देशको बात कहे सो कूर।
आपुहि खारी खात है बेचत फिरे कपूर ॥
बलिहारी वहि चित्तकी परचित परखनहार।
साई दीन्हीं खांड़को खारी बोल गंवार ॥
सोना सज्जन साधु जन टूट जुटहि सौ बार।
दुर्जन सभा कोहार की एकहि धका दरार ॥
घाट भुलाना बाट विनु भेष भुलानो कानि।
जाको माड़ी जगत्में सो न परा पहिचानि ॥
मरते मरते जग मुवा मरण न जाने कोय।
ऐसा हो कर नहिं मुवा बहुरि मरण नहिं होय ॥
मरते मरते जग मुवा मरण न कियो विचार।

एक सयानो आपनो परवश मुवा संसार ॥
माया तजके क्या भया जौ मन तजो न जाय ।
जे मन मुनिवर हैं डहे सो मन सब ही खाय ॥
कितन मनावो पाव परि कितन मनावो रोय ।
हिंदुवा देवता पूजता तुरुक न काहू होय ॥
दादा भाई बाप के लेखो चरणन्ह होइ हो बन्दा ।
यहि पुरिया जो मोहि चीन्हें सो जन सदा अनन्दा ॥
धोखे धोखे बीतिया जन्मो गये सिराय ।
खिति अपनो पकरी नहीं दुःख कहां प समाय ॥
जाके भरि घर आवरो कूप दुआरे आय ।
जो कोइ निकलो चाहई परे कूपमह जाय ॥
हणसो मासु न मेल हो कोटि कल्प का हीर ।
जेहि मारग नग मिलत है कैसे तजें कबीर ॥
वह हो राजनि जानह जो लादत बनिजार ।
ई हीरा है मुक्तिका खोये जात गंवार ॥
करना होइ सो करि न ले ज़बरा पहुंचो आय ।
आगो लागी हारते तब कछु काटि न जाय ॥
बोई तौ बोई सही ते क्या भया अयान ।
ये निर्गुण गुणवन्त तू दोऊ एकै शान ॥
शब्द संभारे बोलिए शब्दके हाथ न पांव ।
एक शब्द कर ओषधी एक शब्द कर घाव ॥
जैस कथन तैसा करण जस चुम्बक तस ज्ञान ।
कह कबीर चुम्बक बिना क्या जीते मैदान ॥

१७

सब वासी इक देशका बन चक लागो आय ।
देखि शरत्को चांदनी परें भुलाय भुलाय ॥
भाल चाहहु तौ चेतहू आय लगो है नाव ।
बार बार पछताहुगे बहुरि न ऐसो दाव ॥
अब बिछुरे कहं जाहुगे कहं रोपहुगे पांव ।
शिर दे सन्मुख लड़ि मरहु अब जनि परहु कुदांव ॥
गुरु मूरति गति चन्द्रमा सेवक नयन चकोर ।
पलक पलक निरखत रहे गुर मूरतिको वोर ॥
गुरु समाने शिष्यमें निज कर लागा नेह ।
बिलगाये बिलगै नहीं एक प्राण दुइ देह ॥
गुरु गुरुमें भेद है गुरु गुरुमें भाव ।
सो गुरु हरदम वन्दिए शब्द बतावहि दाव ॥
सात पांच गुरु करि हो लोइ ।
शब्द बतावे गुरु है सोइ ॥
हरि बिछुरे गुरु शरण है गुरु बिछुरे नहि ठौर ।
रे अपराधी मानवा गुरुसे कहो न और ॥
गुरु कुम्हार शिष कुम्भसे गढ़ि गढ़ि काटहि खोट ।
भीतर रखा प्रेम सो बाहर बाहर चोट ॥
गुणका गोफा हों किया सादिक मिला न कोय ।
योगी जङ्गम वहि मुवा भाव भक्ति नहिं होय ॥
गुरु तौ ऐसा चाहिए शिषसे कछू न लेइ ।
शिष तौ ऐसा चाहिए गुरुको सर्वस देइ ॥
जाके दिलमें कपट नहि कपट न लागे ताहि ।
जाके दिलमें कपट है कपटै कपटै खाहि ॥
साहब तो है सबहि का साहब का कोइ एक ।
लाखन मध का देखिये कोटिन मध्ये देक ॥
पूरा साहेब देखिए पूरा होवै आय ।
पूराको पूरा मिले पूरा परहि लखाय ॥
पूरा साहब सेइये सर्वस पूरा होय ।
वक्रसे प्रीति लगाय कै मूरहु आवै खोय ॥
चमा शील जब ऊपजे अलख दृष्टि तब होय ।
बिना शील पहुंचे नहीं कोटि करै जो कोय ॥
शीलरत्न सबसे बड़ा सब रत्नको खानि ।
तीन लोककी सम्पदा बसे शीलमह आनि ॥
गोधन अनधन गोपधन सबै रत्न धन खान ।
जब आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान ॥
जहां पाप तहां आपदा जहां सोग तहं पाप ।
जहां दया तहं दीनता जहां चमा तहं आप ॥
जहं अथाह तहं थाह न पावै ।
जहां थाह तहं स्थिर न रहावै ॥
इहइ अथाह थाह सबहि मेंमें दरिया लहरि समानो ।
धीमर जाल नाइ कह करि है मीन रहा होइ पानो ॥

साखी बल दर ढहि परी बेबल चर युग चार।
कबिरा रस नहि होत है करि न सके निरवार॥
सुख देना दुख मेटना दूरि करण मन बाध।
कह कबीर हम कब मिले प्रेमसनेही साध॥

१८

सुखदायी सबमें रमे दुःख ना काहुहि देइ।
अपने मतमें दृढ़ रहै साधु लक्षण तेइ॥
सन्त न छोड़हि सन्तई कोटिक मिलहि असन्त।
चन्दन सर्प लपेटिया शीतलता न तजन्त॥
आजाके घर अजर है बेटाके शिर भार।
तीन लोक नाती ठगो पण्डित करहु विचार॥
साधू जगमें दुलभ है और मिले बहु भेख।
नीर छीरते जानिए बकुला हंस परेख॥
साधु तो सब ही भले अपनो अपनो ठौर।
शब्द विवेकी पारखी ते माथेके मौर॥
मन रङ्गी बड़ रङ्गिया रंगता रङ्ग कुरङ्ग।
कह कबीर तब बाचि हो गहहु शब्दके सङ्ग॥

१९

मन तो अमर होत है मारे नाहि मराय।
ज्ञान रत्न कर शिला तब घसत घसत घसि जाय॥
मन सब पर असवार है पैंड़े करै अनेक।
जो मन पर असवार है सो कोइ विरला एक॥
मन पक्षी होइ उड़ि चले भमैत फिरै अकाम।
वैकुण्ठो खाली परा साहब सेवक पास॥
ई मन तो शीतल भया उपजा ब्रह्मज्ञान।
जेहि भ्रम सुन्दर जग जरै सो अब उदक समान॥
गोरी चढ़ी पहार पर रचिरचि करै सिंगार।
पिय मुख बात न उचरै सभै सिंगार असार॥
गोरी सब गुन आगरो कानन झलकै वीर।
कांटा लागा मैन का साले सकल शरीर॥
लख अहेरी एक मृग बड़ डग पर्यो एक।
अकसर बपुरा का करै दुर्जन बसै अनेक॥
सङ्ग दोष लागे नहीं ज्ञान रत्नके साथ।
बाज़ीगरको छोकरा खेलै सर्पके साथ॥
बसा बसा या उजरा अवर बसाता गाव।
सहीं बसा नहि उजरा भया बसैका नाव॥
याचत तू है साथ हमारा।
नाहीं बूझै बूझनहारा॥
वाही में जो रहै रहावै।
कह कबीर सो बहुरि न आवै॥

२०

पक्षा पक्षीमें जग पचा ते नर मतिका हीन।
ज्ञान पक्ष निर्पक्ष है सब पक्षनते भीन॥
माया जाते मन धरा मन धर भया पतङ्ग।
आपा खोया तुझ मिला तुझ मिल तेरो रङ्ग॥
जबहि छरीला तन मलो तब नहि व्यापा पोर।
जानि जौहरो पशु दियो तब फाटो नग होर॥
सदा सर्वदा सोवता चारि अवस्था माहि।
सतगुरु अञ्जन अञ्जिया लोचन ढपि ढपि जाहि॥

वसन्त—धमार

नहीं छाड़ों बाबा राम नाम।
मेरे और पढ़न से कौन काम॥
प्रह्लाद पठाए पढ़न शाल।
जाके सङ्ग सखा लिए बहुत बाल॥
अहो कहा रे पढ़ावे पाण्डे आलजाल।
मेरो पाटीमें लिख दे श्रीगोपाल॥
पाण्डेने मुरके कही जाय।
प्रह्लाद बुलायो वेग धाय॥
राम नामकी छाड़ बान।
तोहो अब ही छुड़ावों मेरो कह्यो मान॥
कहा डरावे मोहि बार बार।
जिन जल थल गिरिको कियो प्रहार॥
मार डार भावे देह जार।
राजा रामजी छाड़ों तो मेरे गुरुकी गार॥
राजा खड्ग काढ़ कोप्यो रिसाय।
तेरो राखन हारो मोहि बताय॥

खम्भ फारि प्रगटे मुरारि।
हिरनाकुश मारो नख विदारि॥
आदि पुरुष देवादिदेव।
जिन भक्त हेतु धारो नृसिंह भेव॥
कहे कबीर कोउ लहे न पार।
प्रह्लाद उबारो अनेक बार॥

पहेरी—तिताला

बढ़ैया मोरा मीत आय।
चरखा दे हो बनाय॥
बाबा रे मोरा व्याह कराय दे सुन्दर बर खोज लाव।
ज्यो खोजी ते वर नहीं मिले रे हमरा तुमरा न्याव॥
सास मेरे ससुरार मरे रे व्याहा खसम मर जाय।
एक बढ़ैया ना मरे रे जिन चरखा दए हे बनाय॥
पानी से पैदा किए रे नगर बसायो गाव।
एक अचरज हम देखा साधो बिटिया बाप लजाव॥
दास कबीर यह चरखा देखा चरखा लखा न जाय।
जो यह चरखा लखि परे रे आवागमन नशाय॥

ईमन-झंझोटी—तिताला

भज राम राम राम।
चरखा चलेगा मुदाम॥
मैं घर आई पोनी लाई अन्तर बात विचारी।
चरखा लेके चौकमें बैठी कातत हरिको प्यारी॥
भाव भक्ति कर पुनी सरीरत सुचौकने रन
पौवन हारी।
ज्ञान धाम वाको मल कर राखा विरह ताते
झनकारी॥
मन कर टिक्की बात न करता चमरख ऐसी युक्ति लगाई।
उस चरखेमि पांच पांखुरी भ्रमर माल लिपटाई॥
चांचो सीरी लाल अटारी ता बिच बैठी कातनहारी।
सद्‌गुरुने मोहे कुञ्जी दीनो खुल गई ज्ञान किवारी॥
शाह कबीरका चरखा चाले आठ पहर एक तारी।
निराकार ध्वनि सूत कतत हे लाग रहा धुनकारी॥

झंझोटी—पश्तो

ग़मे दुरी से जो जलता आशक आंखों से जारी है।
सजन सकारे जायंगे नयन मरेंगे रोय।
विधिना ऐसो रैन कर भोर कभू नहि होय॥
कहां लौं सोयें ए प्यारो सुबह रुख़सत हमारी है॥
साजन तुम मत जानियो तुम बिछुरे मोहि चैन।
डादी पवनको लाकड़ी सुलगत है दिन रैन॥
तपे ग़म सें जिगर तो जल चुका अब तन की बारी है।
एक तो नयना मद भरे दूजे अञ्जन सार।
ए बौरी कोइ देत हे मतवारे हथियार॥
निगाहे यार जादू है या बूंदोकी कटारी है॥
अरे पपोहा बावरे आधो रात न कूक।
होले होले सुलगती तैं क्यों दीनो फूक॥
अरे ज़ालिम तेरी आवाज़ने आफ़त गुज़ारी है।
जा वेदा घर आपने तू क्या जाने सार।
आशक़ किन चङ्गी किए विन देखे दीदार॥
मेरे इस दर्दकी दारूसे अफ़लातूं भी आरी है॥
कागा आंख निकास दूं पिया पास ले जाय।
पहले दर्श देखायके पाछे लीजो खाय॥
जमाले यारसे कब आशक़ों को आंख प्यारी है।
देह सूख पिञ्जर भयो रक्त रहो नहि मास।
बाला जियरा रह गयो याको कब लग आस॥
अजल ला रो ख़बर जल्दीसे हम पर मौत भारी है॥
हम तो योगी प्रेमके प्रेम हमारो वेश।
अङ्ग विभूति लगायके फिरते देश विदेश॥
न था मालूम क़िस्मत में हमारे ख़ाकसारी है।
साजन वे दिन कौन थे जो सुख लाए प्रीति।
अब दुख दे न्यारे भए कौन ग्रामको रीति॥
अरे बौरे मुरव्वत कुछ करो पर किरदगारी है॥
मार छुरी मर जायिये छूट परे सब जार।
ऐसा मरना क्या भला दिनमें सौ सौ बार॥
कभी मरते कभी जीते यही हालत हमारी है।
आठ पहर चौसठ घटो खड़ो पुकारूं पीव।
जैसे खाल लोहार की सांस लेत विन जीव॥
न मरते हैं न जीते हैं यही हालत हमारी है॥

काटौं चोंच पपोहरा ऊपर छिरकौं लोन।
पी मेरा मैं पीवको तू पी कह सो कोन॥
धरोहर हम धरो जिससे कि उनको यादगारी है॥

सोरठ—तिताला

पोथी तो खोल पांड़े मेरा साजन कब घर आवे।
कोई सई संदेसा ल्यावे कोइ मिठड़ो बात सुनावे॥
मेरा साजन कब घर आवे उनही सो मेरा चित है।
सुन सुन सज्जनको बतियां मेरे पड़ो कलेजे कतियां
मोहे नींद न आवे सारी रतियां येहो निगोड़ो रत है॥
दादुर मोर कोकिला बोले।
चपला चहु दिश डोले॥
दादूको दर्शन दीजे।
मेरा यही सन्देशा लीजे॥

२

कायामें कीरत कर ले तू मोटो दातार।
बसते सिरजिड़ा साहबाजो तू मोटो करतार॥
चौदह भवन पलमें गढ़े तै घढ़त न लागे बार।
थापेउ तायर तू धनो रे धन धन सिरजनहार॥
धरती अम्बर तैं धरतीते पानी पवन अपार।
चन्द्र सूर्य दीपक रच्या रे रैन दिवस विस्तार॥
ब्रह्मा शङ्करते किया रे विष्णु लिया अवतार।
सुर नर साधू सिरजिया रे कर ले जीव विचार॥
आप निरञ्जन ह्वै रह्या रे काय मो कौतुकहार।
दादू निर्गुण गुण गहे हो जीवनको बलिहार॥

मल्लार—तिताला

हरि तुम अपनि शरण मोहि राखो।
गृध्र व्याध गज गणिका तारी वेद विमल
यश भाखो॥
तुम तजि और ठौर नहीं मेरे नित तेरे हो
दर्श अभिलाखो।
सागर आगर गुणके उजागर राग रङ्ग रस चाखो॥

———o———

इति श्रीकृष्णानन्द व्यासदेव कृत रागसागरोद्भव सङ्गीत
रागकल्पद्रुमे कबीरबीजकादि समाप्तः।

परिशिष्ट

राग—बिलावल

नागर नन्दकुमार मुरलीधर तनतानो।
गिरिवरके अङ्कते अचानक लई राधिका सयानी॥
ब्रजसुन्दरि जतननि मुदित करि नूपुर
कङ्कण वाग्यो।
कुम्भनदास मुसकानी मन्दगति अङ्कनहि
अङ्कन पयानी॥

२

तेरे तनकी उपमाकों देख्यो में विचारि
के कोउ नाहि न भामिनी।
कहा बपुरों कञ्चन कदली कहा केहरि
गज कपोत कुम्भ पिक कहा चन्द्रमा और
कहा बपुरो दामिनी॥
कहां कुरङ्ग शुक बन्धूक केकी कमल या आगे
श्री देखिये सबनि कामिनी।
मोहन रसिक गिरिधरन कहत राधा परम
भावती तु है कुम्भनदास स्वामिनी॥

३

तोसों भोर भये कहू रसिकें कह्यो सखोरी
तु करति मान।
इतनेही कों काहेकों रूसति गोवर्द्धनधारी
सुख निधान॥
मेरो कह्यो करि छाड़ि अटपटो सुनि रीत
आह अपनों सयान।
कुम्भनदास स्वामी सों प्यारी न करि निदान॥

४

को तो सो बात कही पीय तरे तन काहे
कों रिसानो।
प्राणनाथ सों कोप पारे सोइ अयानो॥
जा विनु रह्यो न परे छिनु ता सों क्यों
रूसिये सयानो।
कुम्भनदास प्रभु गिरिधरन कहँ सोइ कीजिये
ज्यो रहिये हृदे लपटानो॥

५

सुनि गोपाल एक ब्रजसुन्दरि तुमहि मिलन कों
जोहति करति।
बार बार मोसो कहति रहति है है वाके
जीय बहुत अरति॥
तुमहि जपति रहति निशिवासर और वात
कछु जीय न धरति।
श्याम स्वरूप चहुंटि चित लाग्यो लोक लाज
तें नाहि डरति॥
हों तन मोन वाहि एको छिनु अति आतुर
चित विरह भरति।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर तुम कारण
नव जोवन गरति॥

६

तेरे नैन चञ्चल वदनकमल पर जैसे
युगखञ्जन करत कलोल।
कुञ्चित अलक मनो रस लम्पट अलि
आये मधुपनिके टोल॥
कहा कहों अङ्ग अङ्गको शोभा खुडीन
परसत चारु कपोल।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर देखत
बाढ़े मनोज अमोल॥

७

अञ्चनकों खोलि कञ्चुकी के कसना।
मनमु चहेव पिय झरि झरोखनि तन
अङ्गुठी दोनो विच दमना॥

लज्जित तन कम्पित भै वीहीनामें
　　और बसना।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धनधर वहीं
　　लाल लये है हसना॥

८

अञ्जन पीक कहुं कहुं लागी नैननि सगी
　　करति सब भूटि।
मोहन लाल गोवर्द्धनधारी सबै सुभामिनी
　　लियो है लूटि॥
नैना रसमसे अधर ओर छवि चन्दन
　　गयो गातते सूक।
कुम्भनदास प्रभु सों मिली भामिनी
　　कहत न बनै सुख भइ मति मूक॥

९

पिउ सङ्ग जागी वृषभानुदुलारी।
अङ्ग अङ्ग आलस से जंभाति अति कृष्ण
　　मदन ते भवन सिधारी॥
मारग हाथ लिहो सखी औरेन
　　कहिं सदुष्टि तन दसा बिसारी।
छीतस्वामिनी सों कहै भामिनी तोहि
　　मिले निसि गिरिवरधारी॥

१०

राधा निसि हरिके संग जागी।
जमुना पुलिन सजल कुञ्जनमें पिया
　　अङ्ग मिलि मिलिकें अनुरागी॥
कुटिल अलक बगरी जु वदन पर दोउ
　　कपोल पीकनिसों पागी।
छीतस्वामिनी उमगि उमगिकें गिरिधर
　　लाल उरनि सों लागी॥

११

वालकृष्ण जागहु मेरे प्यारे।
बैठी सेज कहति है जननी वार वार
　　मुख कमल निहारे॥
सुन्यौं वचन माताको जब हो तनिक तनिक
　　दोउ नैन उघारे।
लिये उठाहि अङ्क भरि तबही उद मोदक
　　सों वदन पखारे॥
माखन मिश्री और मलाइ औट्यो दूध
　　तुम लेहु दुलारे।
विविध भांति पकवान मिठाइ आनन
　　मेलि अपुनपो वारे॥
मुख पसारि अंगुलि पहराइ शिर ऊपर
　　चीतनि जब धारे।
डोलत अजिर मुदित मनमोहन व्रज जन
　　ओट भई जु निहारे॥

१२

गोद लिये जननी मुदित मन वालकृष्णको
　　करति सिङ्गार।
अंगुली लाल जरी पहराइ सिर कुल ही
　　धारति एक मार॥
हमुनी कण्ठ जड़ित नगमानिक अरु सोहत
　　मोतिनके हार।
बाजूबन्द लाल भुज राजत जगमगात है
　　परम सुढार॥
पहुंचो हातनि गरम बिराजत ताको
　　शोभा को नहो पार।
मानो अहि सुतके फणि ऊपर मणि
　　अङ्गनमें व्रजपति देखि लजानो मार॥

१३

वाकृष्णको जगमोहनको लीयें गोद खिलावे।
सुन्दर मुखछवि निरखिकें मनमें सब गावे॥
चु चु करि चुम्बन करे बहुलाभ भावे।
कबहुंक अङ्गुरी लाइ कें फन्द चलन सिखावे॥
घुटरुन चलत उताल सों मैया ढिग आवे।
ले उछङ्ग जननी तबै स्तन पान करावे॥
पीत झंगुलो पहराइकें तिर कुल बनावे।

कण्ठ कठुला हसुली चुनो करधनो सुहावे ॥
यह यहतें नव गोपिका देखनको आवे ।
अजिर दौरि रिङ्गन करे व्रजजन मन भावे ॥

१४

बात कहु अो कहित कोलो सों ।
आरि करे जिनि सुनि मन मोहन देवहुं
कारो कहि कहि मो सों ॥
सूरजवंश भयो नृप दशरथ तिनके
पुत्र भये हैं च्यारि ।
राम भरत लछमन शत्रुहन खेलत रहत
आंगनके द्वारि ॥
विश्वामित्र मखरक्षण करिके अरु तारो
गउतमको नारि ।
मिथिला जाइ शिवधनुष तोरे तब
जनक सुता माला उर डारि ॥
करि विवाह घरकों जब आए भरत
गए मातुलके धाम ।
नृप मन सोधि कह्यो गुरु आग्ये हैं गहि
राज देहुं श्रीराम ॥
केकइ वचन पिताकि आज्ञ चले
दण्डक तापस अनुहारि ।
लछमन सहित सतीवरनारो सीग
चलनि चाप कर धारि ॥
पञ्चवटी बिच रत त्रियके सङ्ग रावण
हरण कीनो तिहि काल ।
इतनो सुनत सूरके स्वामी चौकि
कह्यो दे धनुष उताल ॥

१५

सुनि सुत एक कथा कहों प्यारो ।
कमल नयन मन आनन्द उपज्यो रसिक
शिरोमणि देह हुंकारो ॥
नगर एक रमणीक अयोध्या बड़ बनें
जहां अगम अटारो ।
बहुत गली पुर बीच विराजत भांति भांति
सब हाट बजारो ॥
तहां नृपति दशरथ रघुवंसी जाके
नारि नवलि सुखकारो ।
कौशिल्या केकइ सुमित्रा तिनके जनम
भये सुत चयारो ॥
चारि पुत्र राजाके प्रकटे तिनमें
एक राम व्रतधारो ।
जनक धनुष पण कियो जानकी त्रिभुवन
के सब नृपति हंकारो ॥
राजा पुत्र देउ रिषि लाये सुमत
जनक जन तहं पगुधारो ।
धनुष तोरि मुख मोरि नृपतिको
जनक सुता तिन तब वरो नारो ॥
पट अङ्गुठा जब पोर नृपतिके तब
केकइ मुख मेलि निवारो ।
वचन मागि नृपति सों यह लोनो रघुपतिके
अभिषेक सम्भारो ॥
तात वचन सुनि तमोराव जिनि भ्राता घरणि
सहित वनचारो ।
उनके जात पिता तनु त्यागो अति व्याकुल
करि जीव विसारो ॥
चित्रकूट गए भरत मिलन वन पग पांव रादि
करो अपारो ।
जुवति हेत कपट मृग मारो राजीवलोचन
गर्व प्रहारो ॥
रावण हरण कियो सोताको सुनि करुणामय
नींद निवारो ।
सूर श्याम तब रट्यो कोपको लछमन देहु
जननी भ्रम टारो ॥

१६

आजि निकुञ्ज मञ्जुमें खेलत नवल किशोर
नवलि किशोरी ।

अति अनुपम अनुराग परस्पर अति
अभूत भूतल पर जोरी ॥
विद्रुम फटिक विधि नियमित
धर नव पूर पराग लखोरी ।
कोमल किसलय मैनसुपेसल पर
श्यामल निवासित गोरी ॥
मिथुन हास परिहास परायण पीक कपोल
कमल परजोरी ।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर नारी
वन्दन मोहन तोरी ॥
हरि उर मुकर विलोकि अपनपौ
विभ्रम विकल मानजुत मोरी ।
चिवुका सुचारु प्रलोइ प्रवोधित
परि प्रतिविम्ब जनाइ निहोरी ॥
नैंति नैंति वचनामृत सुनि सुनि ललितादि
देखति दुरि वोरी ।
हित हरिवंस करत कर धूननि प्रणय
कोप-मानावनि तोरी ॥

१७

अतिही अरुण तेरे नैन नलिनरी ।
आलसजुत इतरात रगमगी भए निशि
जागर अनिल मलिनरी ॥
शिथिल पलक में उठत गोलक गति विधि यों
मोहन मृग सकत चलनरी ।
हित हरिवंस हंसकल गामिनी सम्भ्रम देत
मारिन अलिनरी ॥

१८

बनी राधा मोहनकी जोरी ।
इन्द्रनील मनि श्याममनोहर श्वेत कुम्भ तन गोरी ॥
भालविसाल तिन कुहरि कामिनी
चिकुर चन्द्रबिन रोरी ।
गज नायक प्रभुपाल संग्रहनि गति
वृषभानु किशोरी ॥

नीलनिचोल जुवति मोहन पट पीत
अरुण सिरखोरी ।
हित हरिवंस रसिक राधापति सुरति
रङ्ग में बोरी ॥

विलावल—चर्चरी

आजु नागर किसोर भारती विचित्र
जोर कहा कहुं अङ्ग अङ्ग परम माधुरी ।
करत केलि कण्ठ मेलि बाहु दण्ड गण्डमण्ड परखि
सरस वाद्य हास्य मण्डली जुरी ॥
श्यामसुन्दरी विहार बाँसुरी मृदङ्गतार
मधुर घोष नूपुर किङ्किणी चुरी ।
देखत हरिवंस आलि निर्गुणी सुधाङ्गलि
वारि फेरि देत प्राण देह सौं दुरी ॥

२

मञ्जल कलकुञ्ज देख राधाहरि विसद वेस
राका लसत कुमुद बन्धु सरस सद सामिनी ।
सांवल दुति कनक अङ्ग धरे तनिनि एक सङ्ग
नीरद मणि नीलमध्य लसति दामिनी ॥
अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल
सौरभ जुत सीस अनिल मन्दगामिनी ।
किसलय दल रचित सैन बोलत पिया चाटु बैन
मान सहित गति पद अनुकूल कामिनी ॥
मोहनमन मथन मार वरसतु चलौ निहार
वेकुजुत नैति नैति वदत भामिनी ।
नर वाहन प्रभु सुकेलि विधिभर भरति बेलि
सुरति रसरूप नदी गजगत गामिनी ॥

३

सुनहि राधिके सुजान तेरे हित सुखनिधान
रास रचो श्यामतट कलिन्दनन्दिनी ।
नृत्यति जुवती समूह रागरङ्ग अति कतूह
वागुरस मूल मूलिका अनन्दिनी ॥
वंसीवट निकट जहां परम रमण भूमि तहां
सकल सुखद वहे मलय वायु मन्दिनी ।

जातीकुन्द विकास कानन अतिसै सुवास
राका शसि सरद मास विमल चांदिनी ॥
नरवाहन प्रभु निहारि लोचन भरिमैं नारि
नख सिख सौन्दर्यकाम दुख निकन्दिनी ।
विलमय भुज ग्रीव मेलि भामिनी सुखसिन्धु झेलि
नव निकुञ्ज श्याम केलि जगत वन्दिनी ॥

४

निरखि आंखि विमुख नैन सिरा वमति
विपरीत सात ।
श्यामल पर शोभित गोरिजात ॥
लटमें लटपट में पट अरुझि उर मह नव उरजात ।
मुखमें अधर वाहुनिमें सुदृढ़ वन्दे वलिजात ॥
चन्द्रवदन सानन्दकिशोर चकोर पियतन अघात ।
व्यास स्वामिनी पियसङ्ग विरहति
मानसो सदै लाल ॥

५

श्यामगुञ्जरी कहां अति कोमल परम किशोर ।
सुनि सुकुमारी महा अति कठिन कुटिल
नखसिख अङ्ग तोर ॥
कहां कपोल मृदुल मञ्जुल अति
कहां तव नख रसकोर ।
कहां कोवोर जलधर सम कहा दसन
अन्यारे ओर ॥
कहां कुंवर को सदय हृदय कहां तव कुच पीन
कठोर ।
कहां निराग सनाहु कहां दृढ़ वाहनि वन्धन जोर ॥
कहां दीन आधीन कहां तव वङ्क चितवनि
चितचोर ।
व्यास स्वामिनी रसिक प्रीत के नाते
कह्यो सुखोर ॥

६

ठाढे दोउ कुञ्जमहलके द्वार ।
राधा मोहन मोहि लागत है तु देखियो उन
कु नैन भरि मोहित आसु सुतार ॥
अति आतुर तोहि तन चितवत इकटक पलक
लमत नहि लोचन मीन लगी ज्यों गार ।
व्यास स्वामिनी चितवत ही चुम्बन ललित
विहसि उरसि पीर लइ विहरत राधा रङ्गधार ॥

७

मोहनकी देही उलटी रचीरी ।
नैन नीरसर बूड़त हुतें विरह दहनतें जरत बचीरी ॥
भइ श्याम तें पीन धरनि दहि तरुणी
प्रताप तटीरी ।
हे राधे रव श्रवण सुनत तु अजहुं न
निठुर लटीरी ॥
चन्दनचन्द घर पवन पानु करि दुख की
राशि रटीरी ।
तो विन अनत न शरण मीत कहु भीत
समा विरटीरी ॥
इतनेह सुनि उरि चलि अमी सङ्ग अङ्ग
सुगन्ध गणठीरी ।
व्यास स्वामिनी रतिरस वरषत सुख मैं
को चमटीरी ॥

८

ऐसी कुंवरि कहां पिय पाई ।
राधा हुते नख सिख सुन्दरि अवलौं कहां दुराई ॥
काकी नारी कौनकी बेटी कोन गांउते आई ।
सुनी न देखि व्रज वृन्दावन सुधि बुधि
हरति पराई ॥
याकी सुभग सुहाग भाग अभिलाष जु
अभिसन भाई ।
याहीके रस वस ह्वै तुम वृषभानसुता विसराई ॥
यह विनोद सुनि देखन आइ अत्र कि कण्ठ
लपटाई ।
व्यास स्वामिनी विहसि मिलित हांस रस
सुधङ्ग मचाई ॥

९

कहन न पै है कोउ बात।
श्याम कामवश गोजर ह्वै गये राधाके से गात॥
जै सोइ ध्यानु धरो तैं सोइ भए अधर गण्ड
उरजात।
नख सिख अङ्ग अनङ्ग मोहियत देखत
नैन सिरात॥
बहु गुण रूप न तोहु मे सखि फूल भरत
मुसकात।
गज मराल गत निरखत मोहै रति
मनसिज कुंभात॥
अपनी जोरि हि मैंव्यो याहतैं ललितादि
को वलिजात।
तेही रसमें विरस कियो अब
कौन काज पछितात॥
कण्ठ बाहु धरि चलो अतोकें सुनि
अभूत अनकात।
व्यासस्वामिनी परसत मोदन
धरणि गिरे लपटात॥

१०

सैनन विसरे चैंलगि भोर।
वन याते कासों पिया हियतें विहसत
कत हि किसोर॥
दुख मेंटत भेटत तुकौ नहिं चुम्बन देयो न चोर।
काहि देग्रो जोवन धन कर गहि ले कुचकोर॥
माके पाइ गयो मरे प्यारे कासों करत निहोर।
को नहि विकल किये नवनागर तुम
पनिहां तुम चोर॥
निजु विहार आरोपि आनपर कोपि मानगढ़ तोर।
व्यासस्वामिनी विहसि मचाइ सुरति समुद्र हिलोर॥

११

सन्देशो कहो दूतिका आनि।
अनबोले सब अङ्ग दिखाइ नागरि लै है जानि॥
वदन प्रसारि तामें नीबू निचोयो सिर ऊपर
धरि पानि।
कांनकु काइ नाइ हंसि ना ज्यो धरनि
गिरि मुरझानि॥
पुलकित कंपित खेद भेदतन अंसुवनि
आप चुचांनि।
शीतल जल भरि कमल उरहि धरि
झारति पटु दुख दांनि॥
वनमाला तोरत कर मोरत पाइ परत मुसक्यानि।
शीतलजल भरि कमल उरहि धरि कदलि
खंभ लपटानि॥
व्योरो विपदा सुनि सुनि ब्रतेजि छाड़ि
जीयकि वानि।
रामदासिके समुझि विनोदनि कुंवरि
जिवायौं आनि॥

१२

ए हरि मोसों न विगारनकों तोसो न संवारनको
मोहि तोहि परो होड़।
कौन धों जीते कौन धो हारे परी बदि न छोड़॥
तुम माया बाजो पसारो बिविध मोहो
मन मोको भूलग्रो कोड़।
कहि हरिदास हम जीते हारे तुम तउ न तोड़॥

१३

प्रिया पियके उठवे की छवि वरणी न जाइ
सबते न्यारे।
मानो घोसरे निइ कटोरे छोवन भये न्यारे॥
वार लटपटे मानो भौंर यूथ लरत परस्पर
कमलदलनि पर खञ्जरीट शोभा न्यारे।
हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी पर
कोटि कोटि अनङ्ग कोटि ब्रह्माण्ड वारि डारे॥

१४

जगाइरो भइ वेर वड़ी।
अवबेली खेलो प्रियके सङ्ग अलक है कल लाडलड़ो॥

तरनि किरनि वस्थनि ह्वे आइल गोनिवा जानि
सुकर परत वह्रोंही ह्वे रह्यो अड़ी।
विहारीदास रति की वरने कवि जो छवि
मो मन मांझ गड़ी॥

१५

जिनि जगावे जुगल नवल निजु नेह सुख।
जागे यामिनि मैन नैननि नीर वन प्राण जीवनो
मेरे मनभावन दमन दुख॥
अमित अमित विहार मूरत सुखद कुमार
ये सकुमार तन मनहि दिये लिये रह्रै रख।
औवर विहरनिदासि लोल लोचन निरखि
सुखराशि हंसि मिलत सुन्दर सुमुख॥

१६

जागो सनेह जस्योमत माने।
झगरत जुरत किशोर किशोरी वरजोर
मेंलत तउ न माने॥
कोटि समेटि वसन सम्भ्रम निपि पलटि
नेवि पाइयाने।
विहारी सामी दम्पति को सुखनिरखत
सखी वारति अपने प्राने॥

१७

कुञ्ज मेंन रस ऐन प्रिया पिया वनें है विचित्र
वरवागे।
चन्दनवन्दन विविधि मन रञ्जन अञ्जन वेश
छवि मानों चित्र सों किये सुतन अङ्ग
अनङ्ग नि दागे॥
अपने अपने रस आनन्द विरस भये आलस
वितु अनुरागे।
विहारनिदासि गखो भायो ओरनिके कव
पुनि हंसि हंसि हंसि उर लागे॥

१८

या हंसि हंसि कहत है वात सुनति न वात
निपुन वढात।
सोमन कूरनिसों मुखमूंदि राखत श्रवणनि
तन जात॥
वचन रचन वलवलानि पुलकित सगात।
विहारनिदासिके मैननिमें सुखमें ललि लटपटात॥

१९

आजु को छवि अङ्ग अङ्ग रह्यो फवि ऐसी
मति कोनकी वे वरने कवि।
उपल अहि न काहि वताउं गाउं इन्हें
सुनि जांहि सबै दवि॥
हंसत खेलत मिलत सकल निमागत झपटि
चलत प्रगु धरत भुवि।
विहारनिदासी सङ्गम सुख सुरति देखियो देखि
आनन्द उदै रवि॥

२०

सांवलो मनहरण मनोहर।
वचन रचन रुचिर है जुरि कुञ्ज कुटीतन
मगन प्रेमभर॥
अङ्ग अङ्ग आलिङ्गन चुम्बन हंसत रसाल
सहज सुन्दर वर।
विहारीदासी दुलरावति गावति जु नव किसोरी
सुजन सर्वोपरि॥

२१

तूं मनमोहनोरो मोहन मोहेरो अङ्ग अङ्ग।
अगमनो अलके झलके वर उरपर छूटो लट सुख
हसत लसत दसनावलि सहज भ्रुकुटो भङ्ग॥
मृग मधुपलों श्याम कांम सब सजि अलवेलो
धाम सौरभ सुर सवद सुनत फिरत सङ्ग सङ्ग।
रहसि फिर चितयो हितसों मनि आनि उर
अङ्ग रङ्ग अनङ्ग॥

२२

मुदित मोहन अङ्ग मोहनको मनमोहनो तू
मोह्योरी मोहन।
जदपि रहत हसत खेलत अङ्ग सङ्ग निशिदिन
छिनु न तजि सकत मोहन॥

अभूत रीति जीति पिया उघम नव चक्र किये
कहति तुमसों सखी कर पदपर आयोजन।
बिहारीदासीकी स्वामिनी सुनि ह्वै मौन
चिते मुसिकाति पत्याति न मोहन ॥

२३

मोहन नील रसाल सों मोहिल अल कौन
हु बोल्यो भावे।
जब कबहु हों रहों मौन वे हांस
मन मोद वढ़ावें ॥
तान अतीत अनागत अङ्ग सङ्ग मिलि मधुर
सुर गावे।
बिहारीदासी स्वामिनीके रस रसिक रसही में
रस उपजावे ॥

२४

विहारि निहारि लोही लागत सकल सुख-
हिनिकी दानि।
चितवन चित पोषति तोषति तन मन
मनसा रस सानि॥
दरस रूप रस हास परसपर विचित्र तिहारी वानि।
धन्य जनम मानत अनुरागी जरभर लागत आनि॥
विहरत वन रति मानिनि सङ्कर विदारि
कामकी सांनि।
बिहारी दासी लता बनि छिन छिन
वही ये को जानि॥

२५

मेरी स्वामिनी प्रसन्नवदन सांवरो सुखराशि।
इनहि लड़ाउं अनुदिन छिनछिन लहों सावासि॥
फूली फूली टहल करों मनके मनि हुलासि।
अनन्य श्रीहरिदासि विपुल वनविहारनि दासि॥

२६

सांवरो नवरङ्ग।
ते सोयेतन घन दामिनी दुति कुंवरी किशोरी
गोरीको सङ्ग॥

इनहिं रसरसिक उपासित खातहिया विकलौं
जल जावत लगत नङ्ग।
विहारनि दासी अनन्य भजन विनु साधन
आन करत न कछु ढङ्ग॥

२७

प्रिया श्याम सङ्ग जागो है।
शोभित कनक कपोल उने पर दसन छाप छवि
लागो है॥
अधरनि रङ्ग छुटी अलकावलि सुरतरङ्ग अनुरागी है।
विठल विपुल कुञ्जकी क्रीड़ा कामकेलिरस पागी है॥

२८

रसिक रसीली भांति छविली नैन रङ्गीली तूं
पियपैतें आई।
अलक कञ्चुकी छुटी चारु च्यारि चूरी फूटी
आलस मदन लूटी लेति जम्भाई।
डगमगचरण धरति मालो पिया आंकों भरति
चित चित नहि टरति वहि छविमें लुभाई॥
श्रीविठल वेष उरवनी नखरेख रजनीके जीवग्रोच
जानिमें पाई॥

२९

श्यामा चलहु लड़ैती प्रिया कुञ्जनिकरहु केलि।
श्याम तमाल लाल नव किशोरी बाल तुम ब्रज
नवल तव कनककी वेलि॥
विविध कुसुम घन रचित श्रीवृन्दावन बोलत
सुहाये पिकमधुप रहेहैं झेलि।
विठल विपुल रस विहारी तिहारे वन जमुनाके
तीर सुखविलास खेलि॥

३०

आवत नारि लो लालफूले।
कुञ्जकेलि नवरङ्ग विहारी सुरतहि डोरे झूले॥
निशि जागी अलसात रसमगी पट पलटे गति भूले।
विठल विपुल पुलक ललितादिक दिन देखत
द्रुमसूले॥

२१

सुनहु रसिक वृन्दावनको यश।
कुञ्जकेलि मानिनी मनोहर परवस भए
नाहि न अपने वश॥
इहि वन नितत नवीन युगलवर द्रुमदल नितत
श्रवत सलिताल्लस।
विठल विपुल विनोद विहारीको गुणकियो
चाहति रसना रस॥

२२

सुन्दर श्यामसुन्दर वहु लीला
सुन्दर बोलत वचन रसाल।
सुन्दर चारु कपोल अति सुन्दर उरज वनी
सुन्दर वनमाल॥
सुन्दर चरण सुन्दर है नखमणि सुन्दर कुण्डल
हेमजराल।
सुन्दर मोहन नेन चपल किये सुन्दर ग्रीवा
बाहु विशाल॥
सुन्दर मुरली मधुर बजावत सुन्दर राधे हे गोपाल।
सूरदास दम्पती अतिराजत व्रजकों
आवत सुन्दरवाल॥

२३

तुम जागो मेरे लाड़िले गोकुल सुखदाई।
कहति जननि आनन्दसों उठो कुंवर कन्हाई॥
तुमको माखन दुध दधि मिश्री हों ल्याई।
उठिकें भोजन कीजिये पकवान मिठाई॥
सखा द्वार परभातसों सब टेर लगाई।
वनकों चलिये सांवरे दइ तरनि दिखाई॥
सुनत वचन अति मोदसों जागी जदुराई।
भोजन करि वनकों चले सूरज वलि जाई॥

२४

आजु प्रात हि तुम रात बात कहत वन कन्हैया।
जैसे शुकपिक कपि बोलत है अरस परस सुनि
सुनि सुख पावत मावत नन्द यशोदा मैया॥
वचन रचन कहत समुझि समुझि परत नाहि
कछु वीच वीच दाउ जब कहत मेरी गैया।
रीझि रीझि हरसि हरसि पुलकि पुलकि उर लावत
चुंमति मुख वार वार लेति फुलिबलैया॥
बहुविधि पकवान पानि खीरनीर भोजन घृत
माखन मिश्री खवाई और चावत खैया।
वलि वलि व्रजवनिता जहीं दामोदर हित चितवत
हरत लरतभूषण पढ़ नटवर दोउ मैया॥

२५

माई कोन गोपके ए दोउ नागर धोटा।
इनकी बात कहीं सखी तो सों गुणनि बड़े
देखतके छोटा॥
अग्रज अनुज महोदर जोरी गौर श्याम
ग्रथित सिर चोटा।
मन्तदास वलि वलि मूरति पर
ललित सबहि विधि मोटा॥

२६

नैननिको चञ्चलता कहा कोनें भोनें रङ्ग
कौनकेहो श्याम हमसों दुवारत।
ओरके वदन देखनको नेमलियो कियों पत्रनिमधि
राखो प्यारी ताके मार मउर नए आवत॥
मधुप गधलुवध सेजे पोङ्गनिशि वसे सलाग आवत
रति कोरति गावत।
सूरदास मदनमोहन तनको प्रीति प्रकट भई
मुख नहीं वनत बनावत॥

२७

भोर भए मुख देखि लजाने।
रसकी केलि वाल मुख मोहत अरुण नेनि
अरमाने॥
काजर रेख बनी अधरमिन पर ललित कपोल
पीक लपटाने।
मधुप मनो कुञ्जनिपर बैठे उडि न सकत मकरन्द
लुभाने॥

देखति हार अलङ्कृत विन गुण आए जीती रण
धीर सयाने ।
सूरदास पीय पाव धारिये जानतिहौं परहाथ
बिकाने ॥

३८

झीले अटको घुंघट तामधितरारे भारे
नो इनमोके लारे रीजीय अञ्जन ।
कछुक सकुच गुरजनकी ताते ओठ दीये अवलोकति
पोय तन चञ्चल मानहु जालपरे अकुजात खञ्जन ॥
छबीलोको छबीलो अंखियारी जिनके कटाक्ष
तरङ्गनिमें हरिको मन लाग्यो करन मञ्जन ।
अति चतुराइ सों चतुर विहारीके चितकों लागेरी
निरखि निरखि अनुरञ्जन ॥

३९

तुम मुख और चन्द्रमा विरञ्चि तुलाकारी तोल्यो
ओछो अकाश गयो क्षुकि धरणी रहो निकाइको
भारो भरोरो पला ।
याहीतें शशी घटत वढ़तहै देखि देखि तेरो
वदन निर्मला ॥
तो सम नाहि न पूजीये सब मिलि कलङ्की नाम
धरयो निशि भ्रमत फिरत न रहे अचला ।
तानसेन प्रभु सरस वस करलीयो रूपआगरी
रूपकला ॥

४०

अहो टेटी पागरि नागरि नारि सीस धरे जैसे
टेटी पागकों राखे रहतु कि चिकनीया ।
ढुरि ढुरि मुरि मुरि बतीया करति अगिलो पछिलोन
सों दोउ करतारो मारति एकनिसों नेनसें
नव वनीया ॥
लाहीकी लहंगा पचरङ्ग चूनरि कण्ठछरा
ओर तावीच मनिया ।
तानसेन प्रभु रीझि चकित भए तुहीं सबनि में
धनि धनिया ॥

४१

सुनरी प्यारी पचरङ्ग प्याहिरे सुपनीयां गगरीया
भरे आवति है सुदौउ हाथ चेंथी धरे ।
गोरे भुजनमें गाढ़े वरा फुनिड़ड़निमें श्याम चुरीउ
घेरी नहनमे हंदोसों गहिरोइ रङ्ग करे ॥
स्वासन वेसरि मोती हालत सुख प्रस्वेद
नेनाभोहें चढ़ाए ।
कानन वोरें गरें मोतीन लर कुच उतङ्ग नितम्ब
भारो कटि छीनो चलत लफि लफि परत उरवेनो
पाट भीजेरो सुवो होत फुलेल परे ॥
जे हरि जोति सूरज सोंहो उपरो पाइ महावर
नखनि जोति अरु गुदनगुदाए तानतरङ्गको
प्रभु विनति करत है सों हंसि बोलति हरे हरे ॥

४३

नील पट पहिरे कञ्चन गात प्रात अलसात नवल
राधावर बाललाल सङ्गलागो पागोरस पागो रसकेलि
निकसि ठाढ़ी भई सघन कुञ्जनके द्वार ।
भुज न जोरि एखहाति जम्भाति मन्द मुसिकाति
सुमिरति वातन जाति सखीलखी सुखराशि
विथुरे वार ॥
अरुण नयन आलसजुत बेन अधर अञ्जन लगो
पीक छाप जुग मृदुल कपोलनि नखछत उरज
उतङ्ग सुभट कञ्चुकी कवच कस छूटे टूटे मणिगण
मुक्ताहार ।
सिथल वसन कटि सिथल रसन डगमगो चाल
उरमाल मरगजो चरण महावर कहुं कहुं कुच्यो
यह छवि निरखि निरखि व्रजजन वलिहार ॥

४४

त्रिभङ्ग अङ्ग रङ्गभरे विराजित हरि छवि सों
व्रजवनिता निके करजोरे ।
तेहो सांचति गतें लेत रेखा प्रमाण मोहति प्राण
चरण धरत थोरे थोरे ॥
कवहुं री रिझावत श्यामहि देखत नयनउ
मोह मोरे।

नटवर भेष धरे रामदासको प्रभु मोहन नाइकु जाके
नित्य नृत्यत शिव विरञ्च सुर नर मुनि भइ भोरे ॥

४५

व्रजतें निकसि हरि वनकों चलत केतो शोभा
राजत गायनु लेत सम्भारि ।
अपनी अपनी धेनु पाछे मिलवन मिस देखन चली जे
चातुरही व्रजनारी ॥
सवनिपेंते लेत वरण वरण निटेना करत सोंगत
सब ग्वालवृन्दहि आपु नहीं मुरारि ।
रामदास प्रभु वे चले बालकसङ्ग भेष धरे जैसे फांदत
दादुर बोलत चातक नृत्यत वही अनुहारि ॥

४६

हमपर यह हो गइवो वाजन ।
ले डारे यशोदाके आगे जेनम फोरे भाजन ॥
दुरी बात सब प्रकट करि देत नेंकहु आइ लाजन ।
रामदास प्रभु दूरे भजन मध्य आङ्गन लागो गाजन ॥

४७

मो मनसे छोरी लालन कहि कहि थोरी
वोरि वतियां ।
मांगत दानु दियो सरवसु विरसो सुनयो जियते
मेन जाग्यो छेटगो कोन भतियां ॥
घट पटाइ मुरझाइ रही देखत किशोर मोकों
भूलोरी सबै गतियां ।
रामदास प्रभुको अङ्ग अङ्ग मारतातें भुजनि चापिले
लगाइ छतियां ॥

४८

चितवत क्यों नरी तेरो चितवत लागतु कहा ।
एकनिपे झगरि दानु मागतु हरि तूं इतनेहु कों
अति कठिन महा ॥
सरध ग्रीव करि डग सूधे करि मुख पढ़उत करि
निरखि नयन भरि करति हहा ।
इनहु कों कितनोये कीजे प्यारी धोंधोको प्रभु
हेरो चतुर चहा ॥

४९

नयन तेरे अति रस माते अरुण अरुण डारे
लगत सुहाते ।
कबहुं लजात कबहुं अनखात कबहुं फुलि पियसन
मुख चितवत इतराते ॥
कबहुंक इकटक देखि रहत कबहुं आगु नहो
मुरि मुसिकाते ।
रसिक प्रीतम सङ्ग निशदिन विलसत नेकु नहो
सकाते ॥

५०

खेलतमें को काको गुसैयां ।
हरि हारे जीते श्रीदामा वरवसही कत करत रुसैयां ॥
जाति पाति हमते वड़े नाहो ना हम वसत तु
ह्मारी छैयां ।
अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे गैया ॥
रुचि करे तासों को खेले रहे बैठि जहां तहां
सब गोइयां ।
सूरश्याम प्रभु खेल्योइ चाहत दावदियो करि
नन्द दुहैयां ॥

५१

खेलत श्याम प्यारिके वाहेर व्रज लरिका सङ्ग
सोहत जोरी ।
ते सेइ आपुते सेइ सब बालक अति अज्ञान
सबको मति भोरी ॥
गावत हांक देत किल कारत दूरि देखति नन्दरानी ।
अति पुलकित गद गद मृदुवाणी मन मनहर
यिसिहानी ॥
माटी ले हरि मेलि दई मुख तबहो यशोदा जानो ।
माटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लङ्गर्यो ठानो ॥
लरकनि कों तुम सब दिन झूठ बात मोसों कहा
कहोग्यो ।
मैं माटी नहि खाइ मैया मुख देखो निवहो गो ॥
वदन उघारि दिखायो त्रिभुवन घन घननदीसुमेर ।
नम शशी रवि मुख भीतर है सब सागर धरणी फेर ॥

यह देखत जननी मन व्याकुल बालक
मुखका आहि।
नयन उघारि वदन हरि मूंघो माता मन अवगाहि॥
झूटे लोग लगावत मोकों माटी मोहि न सोहावै।
सूरदास सब कहति यशोदा व्रजलोग निद है भावै॥

५२

कहत नन्द जसुमति सुनि बात।
अब अपने मन सोचकरत कित जाके त्रिभुवन
पति सो तात॥
गर्ग सुनाई कही जो बानी सोई सोई प्रकट
होत हो जात।
इनतें और नहीं कोउ समरथये इहे सबही के नाथ॥
मायारूप मोहनी लाई डारे भुले सबे ए गाथ।
सूरश्याम खेलतें आये माखन मांगत दे माहाथ॥

५३

तबहि यशोदा माखन ल्याई।
मैं मथिके अवही धरि राख्यों तुमहि काज मेरे
कुंवर कन्हाई॥
मागि लेहु येही विधि मोसों मो आनें तुम खाहु।
बाहिर कबहुं कछु जिनि खेहाड़ो टिलागि मो काहु॥
तनक तनक कछु खाहु लाला मेरे ज्यों वदि
आवे देह।
सूरश्याम अबहोहु सयाने वरिनके मुख खेह॥

५४

प्रथम करो हरि माखन चोरो।
ग्वालनि मनइच्छा पूरण करि आपु भजे हरि
व्रज कि खोरो॥
मन मन इहो विचार करत प्रभु व्रज घर घर
सब गांउ।
गोकुल जनम लयो सुखकारण सबके माखन खांउ॥
बालरूप जसुमति मोहि जानें गोपन मिलि
सुखभोग।
सूरदास प्रभु कहत प्रेम सो ये मेरे व्रजलोग॥

५५

सखा सहित गये माखन चोरो।
देख्यो श्याम गवाक्ष पन्थह्वे गोपी एक मथति
दधिभोरो॥
हेरि माथनी धरि माटतें माखन हो उतरात।
आपु गयोकमोरो मांगन हरि पाइयो घात॥
बैठे मइनिसहित घरसूनें माखन दधि सब खाये।
छूछी छाड़ि मटुकिया दधिकी हंसि सब
बाहिर आये॥
आयगयो करलियें कमोरो घरतें निकसो ग्वाल।
माखन कर दधिमुख लपटाने देखि रहो नन्दलाल॥
कहं आये व्रजबालकन सङ्ग माखन मुख लपटानो।
खेलततें उठि भज्यो सखा यह येहि घर
आर छपानो॥
भुज गहिलियो कान्ह एक बालकनिकरे
व्रजकी खोरी।
सूरदास ठगि रहो ग्वालिनी मन हरि लियो अजोरि॥

५६

चकृत भई ग्वालिनि तनु हेर्यो।
माखन छाड़ि गई मथि वैसेहि तवतें कियो अवेर्यो॥
देखे जाइ मटुकिया रीतिमें राख्यो कहुं हेरि।
चकृत भई ग्वालिनि मन अपने ढूंढत घर फिरिफेरि॥
देखति पुनि पुनि घरके वासन मन हरि लियो
गोपाल।
सूरदास प्रभु रसभरी ग्वालिनी जान्यो हरिके ख्याल॥

५७

व्रज घर घर प्रकटी यह बात।
दधि माखन चोरी कति लै हरि ग्वालसखा सङ्गगात॥
व्रजवनिता यह सुनि मनहरषित सदन हमारे आवे।
माखन खात अचानक पाए भुज भरि उरहि छुआवे॥
मनही मन अभिलाष करत सब हृदय करति
यह ध्यान।
सूरदास प्रभुकों घरतें लदेहै माखन खान॥

५८

ग्वालिनि घर गये जानो सांझको अंधेरो।
मन्दिरमें गये समाइ ह्यासल तव लखिन जाइ
देहमेंह रूप कहो को अहे निवेरो॥
दीपक अइदान कखा भुजा च्यार प्रकट धखो देखत
भई चकृत ग्वालि इतउतकों हेरो।
श्यामहृदय अति विशाल माखन दधि विद्जाल
मनमोह्यो नन्दलाल वाल कहोवेरो॥
युवती अति भई विहाल भुजभरि दै अङ्कमाल
सूरदास प्रभु कृपालड़ाख्या तनवोरो।
कम परसों करले लगाइ महरिपै गइ लिवाइ
आनन्द उरमें नजाइ वातहै अनेरो॥

५९

जसुमति धौं देखिआनि आगेह्वेले पिछानि वहि
आनहि ल्याइ कुंवर आनकौंका तेरो।
अवलोंमें करो कानिसह्यो दूधरह्यो हानि अजहुं
जियजानि मानि कान्ह है अनेरो॥
दीपकह्यो धखो वारि देखत भुज भइ च्यारि हारिहों
धरति करति दिन दिन कोफेरो।
देखियत नहि भवन माझ ते सोइतन तैसो सांझ
छलसों कछु करत फिरत महरि को जटेरो॥
गोरस तन छोट रहि शोभा नहो जात कहोत
मानो जल जमुन विम्ब उड़गन पथ फेरो।
उरहन नहि देहु काहि कहे तूं इतनो रिसाइ
नाहों व्रजवास सासु ऐसो विधि मेरो॥
यशोदा निरखे कुमार मोपो वरने निहाइ भूलो
भ्रमरूप मानो आनकोउ हेरो।
मनमें विहसत गोपाल भक्तपाल दुष्टसाल जानेको
सूरदास चरित काहा केरो॥

६०

महरि तुम मानहुं मेरी वात।
ढूंढ़ि ढूंढ़ोरि गोरस सब घरकों हखो तुम्हारे तात॥
कैसे कहति लयासी केते ग्वाल कांध दैलात।
घर नहि पिवत दुध धोरोको कैसे तेरे खात॥
असम्भव बोलन है आई ढिट ग्वालिनो प्रात।
एसो नहो अब गरो मेरो कहावनावति बात॥
कहा मै कहो कहति सङ्कुचतिहों कहा
देखाउ गात।
जै गुणबढ़े सूरके प्रभुके ह्यालरि काहो जात॥

६१

गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घर।
देखो जाय मथति दधि ठाढ़ो आपु लगी खेलन
द्वारे पर॥
फिरि चितइ हरिदृष्टि परिगये बोलि लये
हरवें सूनेवर।
लिये लगाय कठिन कुचके विच गाढ़े चापि रह्यो
अपने कर॥
उमगि अङ्ग अङ्गिया उरदरको सुधि विसरो
तनको तेहि औसर।
तव भये श्याम वरष द्वादशके रोझि लई
युवती वा छविपर॥
मन हरि लियो तनकसेह्वे गये देखि रहो
शिशुरूप मनोहर।
लै माखन मुंख धरति श्यामके सूरज प्रभु रतिपति
नागरवर॥

६२

ग्वालिनि उरहनके मिस आई।
नन्दनन्दन तनमन हरिलोन्हो विन देखे छिन
रह्यो न जाई॥
सुनहु महरि अपने सुतके मुख कहा कहोंकेहि
भांति वनाई।
जौनि फारि हार गहितो स्यो इन वातनि कहा
होत वड़ाई॥
माखन खाइ खवावत ग्वालनि जो उवख्यो सो
दियो लुटाई।
सुनहु सूर चोरी सहिलोन्हो अब कैसे सहिजाति
ढिटाई॥

६३

कबहि करण गयो माखन चोरी ।
जानतिहौं जु कटा छति हारी कमलनयन मेरो इतनक दोरी ॥
दै दै दगाबुलाइ भुवनमें भुजभरि भेटति उरज कठोरी ।
उर नखचिन्ह देखावति डोलति श्याम चतुर भयो तुम अति भोरी ॥
ओरहनके मिस आवति है नित चितै रहे जनु चन्द चकोरी ।
सूर सनेह ग्वालि मन अटक्यो अन्तर प्रीति जाति नहि तोरी ॥

६४

हा कहीं हरिके मुख तोसों ।
सुनहु महरि अबही मेरे घरजे रङ्ग कीन्हे मोसों ॥
मैं दधि मथति अपने मन्दिर गये तहां येहि भांति ।
मो सों कह्यो बात सुनि मेरो मैं सुनिकें मुसिक्याति ॥
बांह पकरि चोली गही फारी भरि लीन्हो अङ्कवारि ।
कहत न बनैं सकुचकी बातें देखौ हृदो उघारि ॥
माखन खाइ निदरिनोको विधि यह तेरे सुखको घात ।
सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुचति कह्यो न जात ॥

६५

ऐसे हाल मेरे घरमें कीन्हे हैाले आइहो तुम हिये पकरके ।
फोरे सब वासन घरके दधिमाखन खायो जोउ बच्योढ़ाख्यो रिसकरिके ॥
लरिका छिरकि मही सों देखो उपज्यो पूत सपूत महरिके ।
बड़ोगाढ़ घर घर हो जुगनिको ढूक ढूक कियो सर्वनिय करिके ॥
पारिस पाट चलत तर पाएहीं ल्याइ तुमहीपें पकरिके।
सूरदास प्रभुकों ऐसे राखो यशोदा जैसे रखिये गजमद कोउ करिके ॥

६६

श्याम सब भाजन फोरि पराने।
हांक देत दैठतहै पैला नेकन मनहि डराने ॥
सीके छोरि मारि लरिकनिको माखन दधि सब खाइ।
भवन मच्यो दधि कादोलरि करि वेरित पाये जाइ ॥
सुन जसुमति सबहीके लरिका तेरो सो कहुं नाहि।
हाटनि वाटनि गलिन कहु कोउ चलि नहि सकत डराहि ॥
रितु आको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फागु।
रोकि रहत यहि गलि सांकरी टेढ़ी बांधत पाग ॥
बारेतैं सुतये ढगलाये मनही मनहि सिहानि।
सुनहुं सूर ग्वारिनिकी बातें सकुचि सहरि पछितानि ॥

६७

दे मैया भवरा चकडोरी।
जारलेहु आरेप राख्यो काल मोलिल राखी कोरी ॥
लआये हसि श्याम तुरतहीकें देखि रहे रङ्ग रङ्ग बहु टोरी।
मैया विना और को ल्यावै बार बार हरि करत निहोरी ॥
बोलि लये सब सखासङ्गके खेलत कान्ह नन्दको पौरी।
ते सेइ हरि ते सेइ व्रजबालक कर भवरा चकरिनकी जोरी ॥
देखति जननी यशोदा यह सुखि विहसति बार बार मुखमोरी।
सूरदास प्रभु हसि हसि खेलत व्रजवनिता डारति तृण तोरि ॥

६८

कान्ह उठे अति प्रातही तन खेलो लागि लागो।
प्रिया प्रेमके रसभरे रति अन्तर खागो ॥
श्याम उठत विलोकिकें जननी तब जागो।
सुन्दर वदन विलकिकें अङ्ग अङ्ग अनुरागो ॥

माता बुझति सुबलकों बलि गई मैरे बारे।
कहा आजु अचरजु कियो तुम उठे सवारे॥
झारि जल दतवन दियो छवि पर तनुवास्यो।
उत्तम जल ले प्रेमसों रुतदिन पखास्यो॥
करि मुखारी अतुरइ नागरि रसछाके।
सूरश्याम ऐसी दशा त्रिभुवन वस जाके॥

६९

उत वृषभान सुता उठी यह भाव विचारे।
रैनिविहानो कठिन सों मनमथ बलडारे॥
ग्रीवमोति लरि तोरिकें अचरा सों बाध्यो।
इहै हांनो करि लियो हरि मनु अनुराध्यो॥
जननी उठि अकुलाइके क्यों राधा जागी।
कहो चली उठि भोरही सो वैन सभागी॥
अब जननी सो उनही रवि करनि प्रकाशो।
तुहु उठति काहे नहो जानै ब्रजवासी॥
आप उठी आंगन गइ फिरि घरही आइ।
कबधों मिलहे श्यामकों पल रह्यो ना जाइ॥
फिरि फिरि अजिरहि भवनही तनवेली लागी।
सूरश्यामके रस भरी राधा अनुरागी॥

७०

सुनिरी माता कालिही मोति लरी गंवाइ।
सखिनि मिले यमुना गइ धों उनहि चुराइ॥
कीधों जलही में गइ यह सुधि नहि मेरे।
तबतैं पछितातिं तहा कहति नहीं डर तेरे॥
पलक नही निशि कहुंलगो मोहि सपतरो तेरो।
यहि डरतें मैं आजुही अति उठी सवेरो॥
महरि सुनत चकृत भइ सुख ज्याव न आवै।
सूर राधिका सुख भरी कोउ पारन पावै॥

७१

धन्य कान्ह धन्य राधा गोरी।
धनि वह भाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल
तवला नवजोरी।
धनि यह मिलनि धन्य यह वैठनि धन्य अनुराग
नहो रुचि योरी।
धनि यह अरस परसर छवि लुटनि महाचतुर
मुख भोरे भोरी॥
प्यारी अङ्ग अङ्ग अवलोकति पिय अवलोकत
लगत टगोरी।
सूरदास प्रभु रीझि थकित भये नागरी
घर डारत तृण तोरी॥

राग सूही

श्याम निरखि प्यारी अङ्ग अङ्ग।
सकुचि रहति सुख तन नहो चितवनि जेइ वसत
रहत अनन्त अनङ्ग॥
चपल नयन दीरघ अनिआरे हावभाव नाना
गति भङ्ग।
वारो मीन कोटि अम्बुजगन खञ्जन वारत कोटि
कुरङ्ग॥
लोचन नहि ठहरात श्यामके कबहु अङ्ग
हैना मुख रङ्ग।
सूरदास प्रभु यो प्यारी वस ज्यो वस डोर
फिरत सङ्ग सङ्ग॥

बिलावल

सुनहि महरि तेरो लाडिलो अति करत अचगरी।
यमुन भरण जहं हम गइ तहं रोकत डगरी॥
शिरते नीर ढराइ दै फोरी सब गगरी।
मुड़गे दइ फटकाहिकें हरि करतहैं लङ्गरी॥
नितप्रति ऐसेहि ढङ्ग करै हमसों कहै धगरी।
अब वसवास नही बने यह तुव ब्रजनगरी॥
आपु गयो चढ़ि कदमको चितवत रहै सगरी।
सूरश्याम ऐसे सदा हमसों करै झगरी॥

२

जो सुख श्याम प्रिया सङ्ग कीन्हो।
सो युवती अपनोइ करि लीन्हो॥
दुविधा छूटे कछु नहि राख्यो।
अति आनन्द वचन मुख भाख्यो॥
दुहे कहाति तबको अवलोके।
सकुचि हंसी नागरी सङ्ग पीके॥

नयन कोर पिय छ्दनि हाख्यो ।
उनि पहिलेहि पीताम्बर धाख्यो ॥
सूरदास यह लीला गावै ।
हरिपद शरण अच्छ पद पावै ॥

३

नाना रङ्ग उपजावत श्याम ।
कोउ रीझति कोउ खीजति बाम ॥
काहुके निशि बसत बनाइ ।
काहु सुख छियो आवत जाइ ॥
बहु नायक ह्वै विलसत आप ।
जाकों शिव पावै नहि जाप ॥
ताकों ब्रजनारी पति जानै ।
कोउ आदर कोउ अपमानै ॥
काहुसों कहि आवत सांध ।
रहत और नागरी घर माझ ॥
कबहुं रैनि सब सङ्ग विहात ।
सुनहु सूर ऐसे नन्दतात ॥

४

अब युवतिन सों प्रगट श्याम ।
अरस परस सबहिन यह जानो हरि लुबधि
सबहिनके धाम ॥
जादिन जाके भवन न आवत सो सो मनम
यह करति विचार ।
आजु गये औरहि काहुके रिस पावति कहि
बड़ लबार ॥
यह लीला हरिके मन भावति खण्डित वचन
कहत सुख होत ।
सांझ बोल दै जात सूरप्रभु ताके आवत
होत उदोत ॥

५

ललिताकों सुख दै गयो श्याम ।
आजु बसेगेबेनि त ह्यारे प्राण पियारो हो तुम बाम ॥
यह कहिके अनतहि पगुधारे बहु नायकके
भेद अपार ।
सांझ सास आवन कहि आये सोंह बहुत करि
नन्दकुमार ॥
बहु बैठी मार गहरि जोवति एक एक पल
बीतत एक जाम ।
सूरश्याम आवनकी आसा सेज सम्बारति
आकुल काम ॥

६

ज्वाब नहो पिय आवहो क्यों कहा ठगावै ।
मैतबहोको बकतिहों कछु आजु भुलावै ॥
हा नाहि नहो कहतहो मेरो सों काहे ।
आये क्यों चक्रत भये मोकों रिस दाहे ॥
कहां रहे का सों बन्यातहइ पगुधारो ।
सूरश्याम गुण रावरे हिरदे बिसारो ॥

७

काहेकों कहि गये आइ है काहे झूठी सोंहे खाये ।
ऐसे ने जाने नहि तुमकों जी गुण करि तुम
प्रगट दिखाये ॥
भलो करि दरसन यह दीन्हो जनम जनमके
ताप नशाये ।
तब चित ये हरि ने कचि रातन तुमको
हिरदे माझ बसाये ॥
सत्य कहत तोसहो भूल्यो इतनेहि सब
अपराध छमाये ।
सूरदास सुन्दरी सयानी हंसि हंसि लीन्हो
हरि अङ्ग मिलाये ॥

८

नयन कोर धरि हरिके प्यारो बसकीन्हो ।
भावकख्यो अखि आलको ललिता लखि लीन्हो ॥
तुरत भयोरि सुन्दरो कैह्नै हंसि कण्ठ लगायो ।
भलो करी मन भावतो एसेहु में पायो ॥
भवन गई गहिबाह लै निशि जागी जानै ।
अङ्ग शिथिल निशिश्रम भयो महो मनसाते ॥

अंग सुगन्ध मरदत किवौ तुरतहि नहवाये ।
अपने कर अङ्ग पोंछिकें मनसाध पुराये ॥
चीर आभूषण अङ्ग दै बैठे गिरिधारी ।
रुचि भोजन प्रियकों दियो सूरज बलिहारी ॥

९

रह छवि अङ्ग निहारत श्याम ।
कबहुंक चुम्बन देत उरज धरि अति सकुच
तितनु वाम ॥
सनमुख नयन न जोरत प्यारी निलज भए पिय ऐसे ।
छाहा करति चरण कर टेकति कहा करत ढङ्गनैसे ॥
बहुरि धाम रसभरे परस्पर रति विपरीति बड़ाई ।
सूरश्याम रतिपति विह्वल करि नारि रही मुरझाई ॥

१०

पिय प्यारी तनु श्रमित भये ।
सकुचि उठि नागरी पट लीन्हो श्याम लज्जाइ गये ॥
सावधान रति अन्तर भर पिय प्यारी तननहि हेरत ।
नागरी कुटिल कटाक्षनि हेरति भ्रुकुटि वङ्कत फेरत ॥
एसी गुणविनि तुमहि सिखाये तीर निकट
कसि दही ।
सूर कहति पिय सो चिरवाणी आजु तुमहि
मैं चीन्हो ॥

११

सारङ्ग सुत प्रति तनयाके तटठारे नन्दकुमार ।
बहुत तपत जारासमै सविता ताकी सुतासङ्ग
करत विहार ॥
गुड़ाकेश जननी पति वाहन ता सुतके
अङ्गसमै सिङ्गार ।
चन्द योहश्रोर आट हंसदे व्याल कमलवती सविचार ॥
एक अघ भोओरवता उपाष्ठ चन्दोदवे कमलमझार ।
सूरदास यह युगल रूपकों रे मन राखि
सदा उरधार ॥

१२

देखि सखि पांच कमल द्वै शम्भु ।
एक कमल व्रज उरराजत निरखत नयन अचम्भ ॥
एक कमल प्यारी कर लीन्हे कमल सुकोमल अङ्ग ।
युगल कमल सुतकमल विचारत ग्रीलित कबहुं भङ्ग ॥
षड़जम कमल मुख सनमुख चितवत बहुविधि
रङ्ग तरङ्ग ।
तिनमें तीनि सोमवसी वसतीनि सुकश्यप अङ्ग ॥
जेइ कपिल सनकादिक दुर्लभ जिनहो निकसो गङ्ग ।
तेइ कमल सूर नित्य चिन्तत निपट निरन्तर सङ्ग ॥

१३

देखि सखि च्यार चन्द एक ठौर ।
निरखति बैठि नित वनि प्रियसङ्ग सूरसुताकी ओर ॥
द्वै शशि श्याम नवल घन सुन्दर द्वै कीन्हे विधि गोर ।
तिनके मध्य च्यार सुकराजतद्वै फल आठ चकोर ॥
शशि शशिसङ्ग प्रवाल कन्द अलि अरुझि रह्यो
मन मोर ।
सूरदास प्रभु अतिरति नागर बलि बलि युगल
किशोर ॥

१४

देखि री प्रकट द्वादश मीन ।
षड़ इन्दु द्वादश तरनि शोभित विसल उड़गन तीन ॥
षठ् अष्ट अम्बुज कीर षड़सुख कोकिलासुर एक ।
दश दोइ विद्रुम दामिनी षटति नवध्यान विशेष ॥
त्रिवली षट् श्रीफल विराजत परस्पर वरनारी ।
व्रजकुंवरि गिरिधर कुंवर पर सूरजन बलिहारि ॥

१५

देखि सखि तीस भान ईकठौर ।
ता उपर चालीस विराजत रुचि न रहि कछु और ॥
धरते गगन गगनतें धरती ताबिचरहे विस्तार ।
गुण निर्गुण सागरकी शोभा विनु रवि भयो भुनसार ॥
कोटिक कोटि तरङ्गे उपजत जो गजगति चितलाउ ।
सूरदास प्रभु अकथ कथाकों पण्डित भेद बताउ ॥

१६

रवि हरि रिपुकौं न छपावति।
मेरु सुतापति ताके पति सुता ताकौं क्योन मनावति॥
हरि वाहन तवोहन उपमा सोतै धरे हृढ़ावति।
नव अरु सात बीस तोहि सोहत काहे गहरु लगावति॥
सारङ्ग वचन कह्यो करि हरि सों सारङ्ग वचन
न भावति।
सूरदास प्रभु दरस बिना तुव लोचन नीर बहावति॥

१७

महोदधितनया सुत रिपुगति ममनो सुनि
वृषभान दुलारी।
दादुर रिपु रिपुपति है पढाई सो चितवत बिहारी॥
अलिवाहन रिपुवाहन रिपुको तपति भई अतिभारी।
सोति सम्भारि प्रभु खिदित है हौं बलिजाउ तिहारी॥
मारुत सुतपति रिपुपति पल्लोता सुत नारो बिसरो।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकों को हटन्हा
तिह प्यारी॥

१८

एहि तेरे वृन्दावन बाग।
सुनि राधिका कदम्ब विटपको साख एक अमो
फल लाग॥
श्याम अरुण कछु अधिक प्रीत छविवर निजहि
नहि अङ्ग विभाग।
अति सुपक्क मुरलीके बरसत चुइ चुइ परत
उमगि अनुराग॥
व्रजवनिता बरवारि कनकमय रोके रहत सुधा
सुरनाग।
तुव प्रताप कुड्लक तन सुन्दरि सुकमनि
मर्कट कोकिल काग॥
सै मालिनि जतन निज तज गयो सोचत सुहृथ
परे कर दाग।
सूर सुश्रम उठि भेटि परस्पर पिउ पोयुष
पाये बरभाग॥

१९

जलसुत प्रीतमसुत रिपुबन्धव आयुध आनन
विलखु भयोरी।
मेरु सुतापति वसत जहांपै कोटि प्रकाश
रिसाइ गयोरी॥
मारुत सुतपति अरिपुरवासी पति वाहन
भोजन न सुहाई।
हरसुतवाहन असन सनेहो मानहु अनल
देह दौलाई॥
उदधिसुतापति ताक लाहतता वाहन कसे ससुभावे।
सूरश्याम मिलि धर्म सुवन रिपुता अब तारहि
सलिल बहावै॥

२०

हरिसुत पावक प्रकट भयो।
मारुतसुत वन्धव पितु प्रोहित ता प्रतिपालहि
काढ़ि लयो॥
प्रीति पतिताको फनिताहनता वाहन घनसुतलनयो।
मीनसुतासुत तात कहतहैं तापरकासत सकल कयो॥
शशि सङ्ग सरोज कलोको तातें मेरे मनमाझ टयो।
शैलसुताको रूप न आवत तादिन कों लिय
नयन लयो॥
सारङ्गसुता वाके सुत को हेतु ता सुत सों
सुखनाथ हयो।
सूरदास निरन्तररविके अस अजहुं न मोहन
दरस दयो॥

२१

मिलवहु प्रथिक मिचहि आनि।
जलजसुतके सुतको रुचिते भई रसको हानि॥
उदधिसुतासुत अवलि उरपर इन्द्र आयुध जानि।
गिरिसुतापति तिलक शर करु हतत साथक तानि॥
पिनाकोसुत तासु वाहनभच्छको भच्छ बखानि।
शाखामृगरिपु मलयजहु कतहुं तासन जानि॥
धर्म्मसुत अरिके शुभ इच्छ तजी शिर धरि पानि।
सूरदास विचित्र विरहिनि चूक मन मन मानि॥

कहियो अति अचला दुख पावै ।
हिरन पठनपति प्रचेत ज्यों है बार बार समुझावै ॥
सारङ्गारि सुतापति रिपुवारिपु तारिपु तजनहि ज्यावै ।
हरिवाहन वाहन घतिघाइकता सुत आनि वचावै ॥
सुररिपु गुरुवाहन तारिपुता चढ़ि भेषु दिखावै ।
सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलनकों विरहि नितपति
बुझावै ॥

२२

कहांनो मन राखिये विरमाई ।
हफटक शिवधर नैन न लागत श्यामसुता
सुत धरणि आई ॥
हरिवाहन इव तासु सहोदर रतिपति उदित
मुरछि महि जाई ।
गिरिजापति रिपुनखसिख आवत तास
सुधापिय कथा सुनाई ॥
विरहिनि विरह आपु वसकीनों लेव
कमल जिनु पाइ बुलाई ।
बेगे मिलो सूरके स्वामो उदधितनयापति
मिलिहैं आई ॥

२३

गौरिपु तारिपु तासुत आयुध प्रीत मतहानि नारे ।
सो विरचि सभव जात न तैतहां रहे प्राण हमारे ॥
सो बरजाहो गवनकियो हठि खादल वधर सयल ।
सुनि नन्दतात सुख जोवति कन मलाइ अति प्याल ॥
सोरभये पशुवन्धन छूटे ज्यों विरहिनि रति भाने ।
इहि विधि मिलहि सूरको स्वामी चतुर होइ
सो जाने ॥

२४

सोवति राधा लिखति नखनि मही वचन कहत
कण्ठ जलतास ।
छिति पर कमल कमल पर कदली कदली
पङ्कज कियो प्रकाश ॥
तापर चलि सारङ्ग सारङ्गपति सारङ्गरिपु
कियो ले कुलवास ।
तहं अरि पत्य पिता जुग उदित खारिज विम्ब
रङ्ग भव आस ॥
सारङ्ग सुखकें परत अम्बु ढरि मानहु मिव
पूजति तपत विनाश ।
सूरदास प्रभु विनु हरिहर रिपु दाहत अङ्ग
दिखावत वास ॥

२५

हरिमें हरि नख कहि जुगये ।
हरि दरसत मुदित उदित हरि हरि
व्रज हरि जु लये ॥
हरि रिपु तारिपु तारिपुके सुत हरि हरि
विनु अधिक वय ।
हरि तनया सोधित जलदह महं हरि अभिमान
गंवाए ।
अब हरि वदनको या कुविजा हरि सूरदास
मन भाए ॥

२६

सखोरी हरि विनु दुख है भारो ।
सिन्धक सुतह भूषण निकट जैसे तैसो
गति भइ हमारो ॥
शिखरवधू अरि काहे निवारति पुहप धनुसके विशेष ।
चक्षु श्रवा उरहार चासतें अछि नन्दतिया वपुरेख ॥
घट असु असनसमें सुख आनन अमी गलित जैसे शेष ।
जलधर व्योम आवकत मुंदत नैन होड़ बदलेख ॥
द्विजपति प्रभु मोहि आनि मिलावहु हरत
आरति जानि ।
जैसे हारिकवन्ध प्रकट भयो हरि आनन्द रतिमानि ॥
षट् आनन वाहन काननमें घनरजनी तहंवाढ़ी ।
सूरदास मिलि रसिकशिरोमणि सुनिवा
त्रिक पिककाढ़ी ॥

२७

श्रीनव नागरी प्यारी, तु श्रीवृन्दावनकी रानी ।
विहारिणी लाड़िली प्यारी, तेरो को रति
जगत बखानि ॥

छन्द

जगतमे जगिमगि रह्यो जसविनु कृपा केसे बुझिये।
अभिमान अन्ध अनेक कर्म्मो ताहितें नहि सुझिये॥
करो कृपा परम उदार मोहि बारम्बार सुनाइये।
बलिजांउ श्रीवृषभानुनन्दिनी सुजस तुम्हारो गाइये॥

२८

श्रीनवनागरी प्यारी, तेरो मोतिन माग सम्वारी।
श्रीविहारीन लाड़िलो, तैसोये पहिरन झुमकसारी॥

छन्द

सारी श्रोभीहि फूलेल सोंवे प्रकटवेनो देखिये।
धसो सीस सुमेरतें मानों भंवर पाति विसेखिये॥
ललित कटिपर लाल लेहंगा नीलकञ्चुकि कसतनो।
प्रथम जोवन जोति तनको जात नहो कविपे भनो॥

२९

श्रीनवनागरी प्यारी, हे चन्द्रवदनो हे मृगनयनो।
विहारिन लाड़िलो प्यारी, ते सोये चञ्च कतन
शुकपिकवेनो॥

छन्द

वाणो सो पिक शुक नासिका प्यारो अधरविम्व-
विलासिनो।
कनककुण्डल अलवा झलके कपोलमें मृदुहासिनो॥
ललित मुखभर पानवोरो नासिका मुक्ता चरे।
चिवुक सांवल विंदुको छवि कौन विय सरभर करे॥

३०

श्रीनवनागरो प्यारो, तेरो विन्दो जगमग ताई।
विहारिन लाड़ि प्यारी, यह छवि मोपे वरनो
न जाई॥

छन्द

वरनो न जाय यह छवि मोपे निरखि
श्याम सरावहो।
दशन दामिनी अवररात लाल अति सुख पावहो॥
गोर माल विशाल लोचन वरणो अतिछवि राजहो।
मोह काम कमान मानो वान मनमथ साजहो॥

३१

श्रीनवनागरो प्यारो, तेरे छोटो छोटो लरगज मोतो।
विहारोन लाड़िलो प्यारो, तैसोये वीच जङ्गालो पोतो॥

छन्द

पोतपुञ्ज जरावचोको रहो उरपर जगमगो।
हे अंसपर मख तूलकोंदा दृष्टि जिनि ओर को लगे॥
हेकर वांकन जड़ित दोउ चारुचुरो विराजहो।
रतनजड़ित अमोल सुन्दरो अङ्गुरोयन छवो छाजहो॥

३२

श्रीनवनागरो प्यारो, तेरे पाय नुपुर भनकार।
विहारिन लाड़िलो प्यारो, तैसोये मधुरो चरण
विहार॥

छन्द

मधुरो चरण विहार यह गति राजहंसहि अरपिये।
जघन सघन सरोज भारो देखि सिंह कटि उरपिये॥
नितम्बिनो किङ्किनो प्यारो निकटहो नोवोवनो।
झवाझलके देखि कोउ रोझि वहे श्यामल घनो॥

३३

श्रीनवनागरो प्यारो, तु गियतन देखि मुरि
मुसिकानो।
विहारिन लाड़िलो प्यारो, उनवंसोहु निरत न जानो॥

छन्द

न जानि वंशो गिरत करतें पोतपट सखि भौ पस्यो।
रहे जैसे चित्र केसे पगन पुहमीतें टस्यो॥
भुकि जात कछु अनगातको सुधि अङ्ग अङ्ग
शोतल भए।
नृपति राजकुमारहो सखि भुजाभरि भामिनो गहे॥

३४

श्रीनवनागरो प्यारो, तेरे सुवस वसे जु वान्हाई।
विहारिन लाड़िलो लालन, अङ्ग अङ्ग रहे अरुझाई॥

छन्द

अङ्गो अङ्ग लाल लुभाई राखे रसिक शिरमुकुटमणि।
गुण रूप शोल सुहाग सुन्दरि ओर सखि
नृपवत मणि॥

व्रजराज नवलकिशोरके कांउ श्रार चित
नहो आवही ।
बलि जाउ श्रीवृषभानुनन्दिनो तोहि वेणु बजावही ॥

१५

श्रीनवनागरी प्यारी, तोकुं श्याम मनोहर वोलो ।
विहारिन लाड़िली प्यारी, तुं उठि चलि नवल
किशोरी ॥

छन्द

उठि चलि नवल किशोरी राधे नवललसे बुलावही ।
सुन्दर श्याम सुजानहों सखि बार बार कहावही ॥
छाड़ि मान सम्भारि प्यारी बार बार मनावही ।
बलि जाउ श्रीवृषभाननन्दिनो तो हित मोहि
पठावही ॥

१६

श्री नवनागरी प्यारी, जस तेरो हि पिय मनभावे ।
विहारिन लाड़िलो प्यारो, से जस आपुहि
श्रीमुख गावे ॥

छन्द

गाय तो जस आपे श्रीमुख तुहो तनमन रमिरही ।
धन्य तुं धनप्राणजीवन सपत करि मोसों कही ॥
अब करो विविध विहार भामिनी एतो
रगर न कोजिये ।
बलि विष्णुदास विचित्र जोरो लोचननि सुख दोजिये ॥

१७

व्रजको रोति अनोखो रा माई ।
जो कोउ नन्दभवनमें आवे ताको मनहरि
लेत कन्हाई ॥
कण्ठ वधना मुख माखन सोहे तनको कछा
कहों जु निकाई ।
घुटरुन चलत छांहको पकरत किलकत हंसत
खेलत अङ्गनाई ॥

मात यशोदा लेति बलैया मनमें मोदवढ़ो
न समाई ।
प्रभु कल्याण गिरिधरकी यह छवि पलकको
ओट सही नही जाई ॥

१८

हरि मूरत विनु देखि कल न परे ।
जा दिनते मेरो दृष्टि परे मेरे नैनते टरते नटरे ॥
श्यामसुन्दर मनमोहन ललना प्राणजोवनधन
क्यों विसरे ।
रसिक गोपाल सनेह न छूटे देह सुरति
सखो कौन करे ॥

१९

भोजन भयो भावते मोहन ।
तातोइ जेइ जाहुगे गोहन ॥
खोर खण्ड खाचरो सम्वारो ।
मधुर महेरो गोपनि प्यारो ॥
राइ भोग लियो भात पसाई ।
मूंग रहरो होंगुलमाई ॥
सद माखन तुलसो दे छायो ।
घृत सुवास आचारनि लायो ॥
पापर बरो आचार परम सुचि ।
अद्रक अरुनीवुं अनिह्वे हे रुचि ॥
सूरन करि तरि सरसतोरई ।
सिमसांगरी झमकि झोरई ॥
भरता भटा खटाइ दानो ।
भाजो भलो भांति दस कोनो ॥
सागुच नाम रुसा चोराई ।
सोरा अरि सरि सोसर साई ॥
वंधुवा भलो भांति रचि राध्यो ।
हो गु लगाई लाई दधा साध्यो ॥
मोड़ पर पर सांगफरो चुनि ।
ठेढ़ो डेड़ सखों किलये पुनि ॥
कन्दूरो और ककोरा फोरे ।
कचरो चार चहंड़ा सौरे ॥

बने बनाय करेला कीन्हे ।
लोन लगा तरत तरि लीन्हे ॥
फूले फूल सहिजना छौंकि ।
मनरुचि होइ नाजके औंकि ॥
फूल करील कली पाक करित्रम ।
फरी अगस्ति वारी अम्रत सम ॥
अरुइहि आँवलो दइ खटाई ।
जीवत कटुर सजात लटाई ॥
पैठा बहुत प्रकारनि कीन्हे ।
तिलनी सबै स्वाद हरि लीन्हे ॥
खीरा राम तुरैया तासे ।
अरु बिन रुचि अङ्कुर जिय जामे ॥
सुन्दरुप रतालू रातो ।
तरि है लीन्हो अवही तातो ॥
ककरी कचरा अरु कचनाख्यो ।
सरसनि मोन निखाद सम्बाख्यो ॥
कछुक भाति केरा करि लीन्हो ।
दे करो बहरदा रङ्ग भीन्हो ॥
बरी बरिल अरुवरा बहुत विधि ।
खारे खाटे मीठ पयोनिधि ॥
पानी ना राइ तौ पकौरी ।
उभकौरी मुगछी सुठि सौरी ॥
अम्रतइ डर हरइ रससागर ।
बेसन सालन अधिको नागर ॥
खाटो कटो विचित्र बनाई ।
बहुत बार जेंवत रुचि आई ॥
रोटी रुचिर कनिक बेसन करि ।
अजवाइनसैंधो मिलयो धरि ॥
अवहि अङ्गा करि तुरत बनाई ।
जो भजि भजि ग्वालनि सङ्ग खाई ॥
मांड़ो मांड़ि दुलरै चुपरी ।
बहु घृत पाइ आपुही उपरी ॥
पूरीसपूरक वौरो कौरो ।
सदल सउज्जल सुन्दर सौरी ॥

लुचइ ललित लापसी सोहै ।
स्वाद सुवास सहज मन मोहै ॥
मालपुवा माखन दधि कीन्हे ।
ग्राइ असित रविसामर लीन्हे ॥
लावन लाड़ लागत नीके ।
सेव सुहारी घेवर घीके ॥
गुंझागुन्दे गाल मसूरी ।
मेवा मिले कपूरन पूरी ॥
अम्रो सम सुन्दर सजल अन्दरसो ।
उपर कनो अजनु जनु बरसो ॥
बहुत जलेब जलेबी गोरी ।
नहिन घटत सुधातें थोरी ॥
देखत हरषत होत है समो ।
मनहु बुदबुदा उपजे अमो ॥
फेनी घुरि मिली पयसङ्गा ।
मिस्री मिश्रोत भई एकरङ्गा ॥
साज्यो दह्यो अधिक सुखदाई ।
ता उपर फूलि मधुर मलाई ॥
खोवा खोइ अवटिन्हे राख्यो ।
सुहै मधुर मीठो रस चाख्यो ॥
वासौंधो सिखरिन अति सांधो ।
मिले मिरचि मेटति चकचौंधो ॥
काछि छवीली धवौ धुंगारी ।
झरहै उठत झारको न्यारो ॥
इतने जतन यशोदा कीन्हो ।
तब मोहन बालक सङ्ग लीन्हो ॥
बैठे आइ हंसत दोउ भैया ।
प्रेम मुदित परुसति है मैया ॥
थार कटोरा जरित रतनके ।
भरि सब सालन विविध जतनके ॥
पहिले पनवारा परुसायो ।
तब आपुन कर कौर उठायो ॥
जेंवत रुचि अधिको अधकैया ।
भोजन बहु बिसरत नहि गैया ॥

सीतल जल कपूर रस रचयो।
सो मोहन निज कर रुचि अचयो ॥
महरि मुदित मन लाड लडावे।
तै सुख कहां देवको पावे ॥
धरित छींगड़वा जल ल्याइ।
भयो सुनु खरिकाले आइ ॥
पोरे पान पुराने वीरा।
खात खात टुति दांतनि हीरा ॥
मृगमद कनक कपूर कर लीन्हो।
बांटि बांटि ग्वालनिकों दीन्हो ॥
चन्दन और अरगजा आन्यो।
अपने कर बलके अङ्ग वान्यो ॥
ता पाछे आपनहु लायो।
उबर्यो बहुत सखनि पुनि पायो ॥
सूरदास देखो गिरिधारी।
बोलि दइ हंसि उठ निथारी ॥
यह जी बनार सुनै जो गावे।
सो निसु भक्त अभय पद पावै ॥

४०

देखि सखी व्रजतें वन जात।
राहि निज सुमति सुतको छबि गौर श्याम
हरि हलधर गात ॥
नीलाम्बर पीताम्बर ओढ़े शोभा कछु कही
नहि जात।
युगल जलद युग तड़ित मनहु मिलि परस
परस जोड़तहै नात ॥
सीस मुकुट मकराकृतकुण्डल झलकत विवि
कपोल इहि भांति।
मनहु जलद युगल रवि ता पर चन्द्रधनुषकी कान्ति ॥
कटि काछनी कर लकुट मनोहर गोचारण
चले मन अनुमानि।
ग्वालसखा विच श्रीनन्दनन्दन बोलत वचन
मधुर मुसकानि ॥

चिते रही व्रजकी युवती सब आपुसही में
करत विचार।
गोधनवृन्द लये सूरज प्रभु वृन्दावन गये करत विहार ॥

४१

अघासुरका वध।

नन्दसुत लाड़ि खहो सब व्रज जीवन प्राण।
बार बार माता कहे हो जागहु श्याम सुजान ॥

ध्रुव

जसुमति लेति बलाइ भोर भयो उठो कन्हाई।
सङ्ग लिये सब सखा द्वार ठाढ़े बल भाई ॥
सुन्दर वदन देखाइये हरो नेनके ताप।
नयनकमल मुख धोइये कछु करो कलेउ आप ॥
माखन रोटी लेहो सरस दधि रंनि जमायो।
षट्रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो ॥
मोसों लीजै मागिके जोइ जोइ भावे ताहि।
सङ्ग जेवहु बलराम तुमहो रुचि उपजावहु मोहि ॥
तब हंसि चितये श्याम सेजतें वदन उघार्यो।
मानहु पयनिधि मथत फेन कटि चन्द्र उजार्यो ॥
सखा सुनत देखन चले मानहु नेन चकोर।
युगल कमल जनु इन्दु पर हो बेठि रहे अति भोर ॥
तब उठि आये कहा मात जल वदन पखार्यो।
बोलि उठे बलराम श्याम क्षत उठ्या सरार्यो ॥
दाउ जू कहि हंसि मिले बांह गहो बेठाई।
माखन रोटी सद दह्यो हो जेवत रुचि उपजाई ॥
जल अचया मुख धोइ उठे बल मोहन भाई।
गाइ लइ सब घेरि चले बन कुंवर कन्हाई ॥
टेर सुनत बलरामजी आये बालक धाइ।
ले आयो सब जोरिकेंहो घरते बछरा गाइ ॥
उखनि कान्ह सों कहो आजु वृन्दावन जेये।
यमुनातट तृण बहुत सुरभिगण तंहा चरेये ॥
ग्वाल गाइ सब ले गये वृन्दावन समुहाई।
अतिहि सघन वन देखिकेंहो हरषि उठे सब गाई ॥
कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभिगण जोरि चलावत।
कोउ कोउ इरा देत परस्पर श्याम सिखावत ॥

अन्तरयामी कहत जिय यह मोहि शिखावत टेरि ।
कान्ह कहत अबकें गह हो पुनि बोलौ जो फेरि ॥
कोउ मुरली कोउ बेणु शब्द शृङ्गी कोउ पूरै ।
कृष्ण कियो मन ध्यान असुर एक, बरो बस्यो अघूरै ॥
बालबछरु बनि राखि हौं एक बेर लै जांउ ।
कछुक जनाउ आपुन पोहो अवनी रह्यो सुहाउ ॥
असुर कुलहि सङ्घारि धरनीके भार उतारौ ।
कपट रूप रचि रह्यो दनुज येहि तुरत पछारौ ॥
गिरि समान धरि अगमतन बैठ्यो वदन पसारि ।
मुख भितर बन घन नदी हो मायाछन्द करि भारि ॥
बैठ गये मुख ग्वाल धेनु बछरा सब लीये ।
देखि माया वन भूमि रहे तृणद्रुम कृषि कीये ॥
कहन लगे सब आपुमे सुरभि चरै अघाय ।
मानहु पर्व्वत कन्दराहो मुख सब गये समाय ॥
सब मुख गये समाये असुर तब चोंच सङ्कोर्‍यो ।
अन्धकार इमि भयो मानो निशि बादर जोर्‍यो ॥
अतिहि उठे अकुलाइकें ग्वाल बछ सब गाई ।
त्राहि त्राहि कहि कहि उठे हो परे कहा हम आई ॥
घोर घोर कहि कान्ह असुर यह कन्दल माहो ।
अनजानत सब परे अघा मुखभितर माही ॥
जिय त्याग्यो यह सुनतही अबको सके उबारि ।
यातें दूनो देह धरी तब असुर न सक्यो सम्भारि ॥
शब्द कर्‍यो आघात अघासुर टेरि पुकार्‍यो ।
रह्यो अधर दोउ चापि बुद्धि बन सुरति पसार्‍यो ॥
ब्रह्मद्वार शिर फोरिकें निकसि गोकुल राई ।
बाहिर आवहु निकसि कोहो मे करि लियो सहाई ॥
बालक बछरा धेनु सबे अति मनहि सकाने ।
अन्धकार मिटि गयो देखि जहं तहं चतुराने ॥
आये बाहिर निकसिकै मन सब किये हुलास ।
हम अज्ञान कत डरतहे हो कान्ह सदा मई पास ॥
धन्य कान्ह धनि नन्द धन्य जसुमति महतारी ।
धन्य लयो अवतार कूखि धनि जिहि देतारी ॥
गिरि समान तनु अति अगम पन्नगको अनुहारि ।
तुम देखत पल एकमेहो मार्‍यो दनुज प्रचारि ॥

हरि हंसि बोले बैन सङ्ग जो तुम नहि होती ।
तुम सब कियो सहाय भयो तब कारण मोती ॥
हमहु तुमहु मिलि बैठिके वन भोगी करे जाई ।
बंशीवट भोजन बहुत हो जसुमति दयो पठाई ॥
ग्वाल परम सुख पाई कोटि मुख करत प्रशंसा ।
कहा बहुत जो भयो सपूतये कुहवंसा ॥
चढ़ि विमान सुर देखही गगन रहे भरि छाई ।
जै जै धुनि नभ करनहे हो हरषि पुहुप बरसाई ॥
ब्रह्म सुनी यह बात अमर घर घरनि कहानी ।
गोकुल कीन्हो जनन कौन यह मै नहि जानी ॥
देखो इनको खोज लै सोच पर्‍यो मनमाहि ।
सूरश्याम ग्वालनि लिये चले बंशीवटको छाहि ॥

वस्त्रहरण

ब्रह्म-मोहनलीला

बिलावल

हरष भये नन्दलाल बैठ तरु छाइकी । भव
बंशीवट अति सुखद और द्रुमपाश चहुं है ।
सखा लये तह गये धेनु वन चरत कहुं है ॥
बैठि गये सुख पाइकें ग्वालबाल लये साथ ।
कांवरि भोरी लये सखाहो आनि नवायो माथ ॥
आनन्द दये मधु छाक तुरत वृन्दावन आये ।
विजन सहस्र प्रकार यशोदा बने पठाये ॥
श्याम कह्यो वन चलतही माता सों समुझाई ।
इततैवे आये सबे हो देखतही सुख पाई ॥
कान्ह देखि मधु खाक फुलक अङ्ग अङ्ग बढ़ायो ।
हरि हंसि बोलत बैन प्रेम जननी पहुंचायो ॥
नीके पहुंचे आय तुम भलो बन्यो संयोग ।
बार बार कहि सखनि सोंहो आजु करें सुखभोग ॥
बनभोजी बिधि करत कमलके पातम गाये ।
तोरि पान पलास सरस दो नावहु लाये ॥
भांति भांति भोजन धरे दधि लवनी मिष्टान ।
बन फल लये मंगायकें हो लागे रुचि करि खान ॥

वन भोजन हरि करत सङ्ग मिलि सुवल सुदामा ।
श्याम कुंवर प्रसेन महर सुत अरु श्रीदामा ॥
कान्ह सबनि मिलि खातहैं ले लै कौर छिड़ाय ।
औरनि देत बुलाइकें हो उहकु आपु सुख नाय ॥
ब्रह्मा देखि विचारि सृष्टि कोउ नई चलाई ।
मोहि पठयो जेहि सौं पिताहि कछु केहौं जाई ॥
देखौं धौं यह कौनहैं बाल वछ हरि लेउं ।
ब्रह्मलोक लै जाउगो हो येहि बुद्ध करि दुख देउं ॥
अन्तरयामी नाथ तुरत विधि मनकी जानी ।
बाल है दिये पठै धेनु वन कहां हिरानी ॥
जहां तहां वन ढुंढ़िकें फिरि आये हरि पास ।
सखा सबनि बैठारि कैहो आपुन गये उदास ॥
हरि लै बालक वछ ब्रह्मलोकहि पहुचायो ।
फिरि आवें जो कान्ह कछु कोउ नही बतायो ॥
जान्योई सबमै तबै ब्रह्मा ले गयो हराय ।
प्रभु तबहो रङ्गन तेहि रूपकोहो बालक वछ बनाय ॥
तात कीन्ह और ब्रह्म हृदिनाल उपायो ।
अपनीं करि तेहि जानि कियो ताको मन भायो ॥
उचाटन मारण समर्थ मह हरि कीनो ध्यान ।
अनजानि विधि वह करी हो लये रचे भगवान ॥
उहे बुद्धि उहे प्रकृति उहे पौरुष तन सबकै ।
वहै नाम वहै भेष धेनु वछरा मिलि रबकै ॥
श्याम कह्यो सब सखनि कौं ल्यावहु गोधन फेरि ।
सन्ध्याको आगम भयो हो ब्रज तन हांको घेरि ॥
सुनत ग्वाल लै धेनु चली ब्रज वृन्दावनतें ।
कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वालहि मनतें ॥
मध्य किये लै श्यामकों सखा भये चहुं पास ।
ब्रज धेनु आगे दियें हो आवत करत विलास ॥
बाजत वेणु विषाण सब अपने रङ्ग गावत ।
मुरली धुनि गोरभि चलत पग धुरि उड़ावत ॥
मोर मुकुट शिर सोहई मनहु चन्द कन सौत ।
आसपास नाचत सखा हो विच हरि गावत गौत ॥
देखि हरषि ब्रजनारो श्याम पर तन मन वारति ।
एकटकरूप निहारि रहो मेटति चित आरति ॥
कहां कहे छवि आजुको मुख मण्डित खुरधूरि ।
मानहु पूरण चन्दमा हो कुहु रह्यो आपुरि ॥
गोकुल पहुचे जाय गये बालक अपनो घर ।
गोसुत अरु नरनारि मिलि अति है करि आदर ॥
प्रेमसहित वे मिलत हो जो उपजाये आजु ।
जसुमति मिलि सुतसों कहति हे रैनि करत
कि हि काजु ॥
मै घर आवन कह्यो सखा सङ्ग कोउ न आवे ।
देखत वन अति अगम डरौंवि मोहि डर पावे ॥
बार बार डर लाई के ले बलाई पक्ति ताय ।
कालिहुते वैइ सबै हो ल्यावहि गाई चराय ॥
यह सुनिकें हरि हंसे कालि मैरो जाय बलैया ।
भुख लगी मोहि बहुत तुरत हो दे कछु मैया ॥
माखन दीनो हाथकें यह तब लो तुम खाहु ।
तातो जल है धामको हो तनक तेल सो न्हाहु ॥
तब जसुमति गहि बांह धेहे हरि ले नहवाये ।
रोहिणी करि जेंवनारि श्याम बलराम बुलाये ॥
जेवत अति सुख पावहो परुतति माता हेत ।
जेइ उठे अचवन लियो हो दुहुं करबीरा देत ॥
श्याम हो नींदे देखि माता रचि सेज बिछायो ।
ता पर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढ़ायो ॥
अध मर्द्दन विधि गर्व्व हरत करत न लागी बार ।
सूरदास प्रभुके चरितको पावत कोउ न पार ॥

२

ब्रजकी लीला देखि गर्व विधि को गयो। ध्रुव
त्रिभुवन नायक आनि भये गोकुल औतारी ।
खेलत ग्वालनि सङ्ग रङ्ग आनन्द मुरारि ॥
घर घरतें छाके चली मानससरोवर तोर ।
नन्दनन्दनके सङ्ग चलेहो बालक सखा अहीर ॥
भोजन सकल मंगाई सखनिके आगे राख्यो ।
खाटे मिठे स्वाद सबै रस लै लै चाख्यो ॥
रुचि सौं जेवत ग्वाल सब लै लै आपुन खात ।
भोजनको सब स्वाद लहो कहत परस्पर बात ॥

देखत गण गन्धर्व्व सकल सुरपुरके वासी।
आपुसमें वे कहत हंसत येई अविनाशी॥
देखि सब अचिरज भये कह्यो ब्रह्म सो जाई।
जाको अविनासी कहैं हो सो ग्वालनि सङ्ग खाई॥
येहि सुनि ब्रह्म चल्यो तुरत वृन्दावन आयो।
देखि सरोवर सलिल कमल तोहि मध्य सोहायो॥
परम सुभग तमुना बहै तहां रहै त्रिविध समीर।
पुष्प लताद्रुम देखि कैंहो थकित भयो मति धीर॥
अति रमणीय कदम छांह रुचि परम सोहाई।
राजत मोहन मध्य अवलि बालक छवि पाई॥
प्रेममगनह्वे परस्पर भोजन करत गोपाल।
लावहु गोसुत हेरि कैंहो प्रभु पठये द्वै ग्वाल॥
वन उपवन सब ढूंढ़ि सखा हेरि फिरि आये।
बछरा भये अदृष्ट कैहु खोज तुमहि पाये॥
सब सखा बैठे रहो मैं देखा धों जाई।
बछहरण हरि जानि जिय हो आप गये बहराई॥
जब गोविन्द गये दूरि बालनि हर्‍यो विधाता।
लैहे तुरत मंगाई आयके जेहो ताता॥
ब्रह्मलोक ब्रह्मा गयो ले बालक बछरा सङ्ग।
प्रभुको लोला गमो नहो विधि कियो सर्व्व अति अङ्ग॥
तब चिन्तामणि चितै चित्त येक बुद्धि विचारी।
बालक बछ बनाई रचे ओहो अनुहारी॥
करत कुलाहल सब गये व्रजघर अपने धाई।
अति आदर करि करि लियेहो अपनी अपनी माई॥
ब्रह्मा कियो विचार माई निज गोकुल देखौं।
करि है शोक सन्ताप जाइ पितामाताहि पेखो॥
आये तहं विधि नाचते घर घर देख्यो आई।
सन्ध्या समे होत कौतुहल जहां तहां दुहि गाई॥
को यह गोकुल और किधौ मैंहो भ्रम भूल्यो।
येहि अविनाशी होहि ज्ञान मेरो भ्रम भूल्यो॥
अन्तरयामी जानि धौं हरे बछ ले आई।
जगत पितामह संभ्रमो हो गये लोक फिरि धाई॥
देख्यो जाइ जगहि बाल गोसुत जहं राख्यो।
विधि मन चकृत भयो बहुरि व्रजकों अभिलाख्यो॥

छिनु भूतल छिनु लोकमें छिनु आवै छिनु जाई।
एसेहि करत बरष दिन बीते थकित भये विधि पाई॥
तब जान्यो हरि प्रकट ज्ञान चितमें जब आयो।
धिग् धिग् मेरो बुद्धि कृष्ण सों वैर बढ़ायो॥
ले गोसुत गोपाल शिशु शरण गयोह्वो साथ।
चारिहु मुख अस्तुति करे प्रभु क्षमा मोहि अपराध॥
अम जानतहो करो तुमहि सौं मैं बरिआई।
ये मेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवनके राई॥
ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति सम्भारि।
शरण गये राखत सदा हो औगुण सकल बिसारि॥
ज्यों खद्योत बिजहि ताहि क्यों तिमिर न सावै।
दीपक बहुत प्रकाश तरणी सम क्यो कहि आवै॥
मैं ब्रह्मा एक लोकको ज्यो मूलरि फल जीव।
प्रभु तुम्हारे ये करोंल प्रतिहो कोटि ब्रह्मा अव शिव॥
मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया।
मिथ्या है यह देह कहोक्यों हरि बिसराया॥
तुमि बिनु जान जीव सब उतपति प्रलय समाहि।
शरण मोहि प्रभु राखिये हो चरणको छांहि॥
कीजि सलि व्रजरेणु देहु वृन्दावन वासा।
मांगो इहै प्रसाद और नाहो मेरे आशा॥
जोइ भावे सोइ करोनता सलिल द्रुम गेह।
ग्वालवालको भृत्यकरो हो मनहि सत्यव्रत देह॥
जो दरशन नर नाग अमर सुरपति हु न पायो।
खोजत युगपरे बीति अन्त मोहन देखायो॥
यह व्रजपारम नित्य है मैं अब समुझो आइ।
वृन्दावन रजरङ्के रहों मोहि ब्रह्मलोक न सोहाई॥
भवगत बार बार शेष ग्वालनिक गांउ।
आजुनियो कछु जानिभक्त करि मेदर पुरांउ॥
अब मेरे निजु ध्यान वहै रहो रूढ़नित खाई।
और विधाताको दिये होमें नहि छाड़ों धाई॥
तब प्रभु बोले आप वचन मेरो अवमानो।
और कहि विधि करो तुम हिर्ता कोन सयानो॥
तुम ज्ञाता कर्म धर्मके तुभते सब संसार।
मेरी माया अति अगम कोहो कोउ न पावे पार॥

श्रीमुखवाणी कहत विलम्ब अब ने कु न लावहु।
ब्रजपरिक्रमा करहु देहके पाप नशावहु॥
तुरत जाहु कहि लोककों विधिकीनो मनुहार।
ब्रह्मा करि अस्तुत चले हो हरि दीनो उरहार॥
धनि बकरविकि वान जिनहि तें दरसन पाये।
उरमेरो भयो धन्य कृष्ण माला पहिराये॥
धनि जसुमतिजि निवसकिये अविनाशी अतोरि।
धनि गोपी जिनके सदन हो माखन खात मुरारि॥
मथुरा आदि अनादि देहधरि आपुन आये।
धनि देवि वसुदेव पुत्र मागि तुम पाये॥
च्यारि वदनमे कथा कहों तुम्हारि महिमा गाई।
सहसा जन निसदिन रटे होत उनगाद माई॥
गाइ चराती ग्वालव प्रेम करत देहि ध्यान लगायो।
तें ब्रजवासिन सङ्ग रहत अति प्रेम बढ़ायो॥
बृन्दावन ब्रजको महत्त्वका पेंवर न्यों जाई।
चतुरानन पद परसिके हो गयो लोक सुख पाई॥
हरि लीहो अवतार पार सारद नहि पावे।
सतगुरु कृपा प्रताप कछुकता तेकहि आवे॥
सूरदासकि से कहे महपिति न अवतार।
शेष सहसमुख जपत सदा हो शिव न पावत पार॥

२

माधोज जोजनथें बिगरे।
सुनि कृपान करुणामय कबहु प्रभु नहि चित्त धरे॥
जोसि सुजो जननी जठरमत शत अपराध करे।
तउतन यहत तोषि पोषि चित विकसित अङ्कभरे॥
द्विज रसना नादलि दुखित होत तबतो रिस
काहि करे।
कमिकतको भाव सुशील सुशीतल रिपुतन तापहरे॥
धरणी घंसि हल हतन क्षयोकरि वेर बोज सचरे।
सो सनमुख सहित सतोगुण ससिवह फरणि फरे॥
करे नकरण अस्त आज कहि कहि विधि चरण परे।
यह कलिकाल बनत नहि मोसो सूर शरण हि धरे॥

अथ कालीदमन लीलावली

बिलावल

नारद कहि समुझाइ कंस नृपराजकों।
तब पठयो ब्रजदूत पुहुपके काजकों॥ ध्रुव
तब पठयो ब्रजदूत सुनी नारद सुखवाणी।
बारबार विधिराज कंसमुख अस्तुति मानी॥
धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मन्त्र दियो मोहि।
दूत चलायो तुरतही हो अवहि जाइ ब्रजजोहि॥
यह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मगायो।
पत्र दिया लिखि हाथ कह्यो बहु भांति जनायो॥
कानि ककन नहि आवही तो तुमकों नहि चैन।
सीर नवाइ करजोरि कें हो चलेउ दूत सुनिबैन॥
तुरत पठायो दूत नन्दघर हो मैं पायो।
कमल पुहुंपके भार कंसनृप वेगि मगायो॥
कालि न पहुंचे आइके तब बसि हो ब्रजलोग।
गोकुलमें जे सुख किये हो ते करि हो भोग॥
जो न पठावहु पुहुप कहोगि तेतो मोकों।
ठारेंगे नृप तेरे वसन उपहो नहि ओकों॥
यह जानु गोपनि समेत पकरि मगावहु कालि।
पुहुप बेगि पठाये बने हो जोरे वसो ब्रजपालि॥
यह सुनि नन्द डराइ अतिहि मन सन अकुलाने।
यह कारज क्यों होइ का नं अपनो करि जाने॥
और महर सब बोलिकें ले कैसो करे उगाइ।
कालि प्रात ब्रजमारि है हो बांधि सबनि ले जाइ॥
बन मोले को नाम धर्यो कहि पकरि मगावन।
तातें अतिभयो सोच अलगत मुनि सोहि भगवन॥
यह सुनि सिरनाये सबनि मुखहि न आवे बात।
कह्यो कहा अब कीजिये हो कैसे मिटि है घात॥
के बालकनि मगाइ जाहि ले आन भूमि पर।
वरु मिको नेजाइ श्याम बलराम बचे धर॥
मुहरि सबे ब्रजनारिसों कहि पुछति कोउ पाउ।
जनमहितें करवर टरीहो अबके नही बचाउ॥
कोसकहै दे दे दाम नृपति जितनो धन चाहे।
कोउ कहे जैये शरण सबे मिलि वुधि अवगाहे॥

यैहो सोचत सब परिहरे कहु नहो निरवरे।
व्रज भीतर नन्द भवनमैं हो घरघर इह विचरे ॥
अन्तरजामि जानि नन्दसों बूझत बात।
कहा करत हो सोच कहो कछु मोसों तात ॥
कहा कहों मेरे लाड़ले कहत बड़ो सन्ताप।
मथुरापतिके जिया कछु हो तुम पर उपज्यो पाप ॥
कालीदहके पुहुप मांगि पठये हमसो वांन।
तबतें मो जिय सोच जबहि तें बात परो सुनि ॥
जो नहि पठवहि कालिहो तौ गोकुल देउ लगाइ।
मो समेत नन्द तुम हो कालिहो लेइ बंधाइ ॥
यह कहि पठयो कंस तबहि तें सोच पर्‍यो मोहि।
प्रथम पूतना आई बहुत दुःखदे जु गइ तोहि ॥
तृणावर्तके घात तें बहुत बच्यो दुख पाय।
सकटा केसो तें बच्यो हो अब काकरे सहाय ॥
अघा उदर तें बच्यो बहुत दुख सह्यो कन्हाइ।
वका रह्यो सुखवाइ तहा भयो धर्म सहाइ ॥
इतने करवर है टरे देवनि करे सहाय।
तबतें अब गाढ़ो परोहो मोको कछु न सुहाय ॥
बाबा तुम हो कहत कौनधों तोहि उबारे।
सोइ व्रज भीतर प्रकट कंस गहिकेस पछारे ॥
यह जब हो हरि सों सुनो नन्द मनहि पति आई।
गगन गिरत जो सङ्गरह्यो हो सो करिलेइ सहाई ॥
नन्दहि यह समुझाइ कह उठि खेलन धाये।
जहं व्रजबालकहु हे तुरत तहं आपुन आये ॥
गोपसुतनिसों यह कह्यो खोन खेद मगाइ।
श्रीदामा यह सुनतहो हो घरतें ल्यायो जाइ ॥
सखा परस्पर मार करें कोउ कांनि नमाने।
कौंरवड़ो को छोट भेद भेदा नहि आने ॥
खेलत यमुनातट गये आपुहि ल्याये ठारि।
श्रीदामाके हाथ तें लै वे गेंद कालीदह डारि ॥
श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा।
कहा भयो जो नन्द बड़े तिनके तुम ढोटा ॥
खेलनमें कहा छोटबड़ो हमहु महरके पूत।
गेंद दियोहो पे बनेहो छाड़ि देहु मति धूत ॥

तुमसों धूत्यो कहा करों धयो नहि देखो।
प्रथम पूतना नारिका सकटा सुर पेख्यो ॥
तृणावर्त्त पटक्यौं शिला अघा वका सन्धारि।
तुम तादिन सङ्गहो रहे अवधूत कहन सम्भारि ॥
ठेटे कहा बतात कंसको कमल देहु अब।
कालिहि पठये मांगिहै पुहुप अब लै देहो जब ॥
बहुत अचगरी जिनि करौ अजहुं तजो झरारि।
पकरि कंस लै जाइ गो हो कालिहि परे सम्भारि ॥
कमल पठाई कोटि कंसको दोष निवारो।
तुम देखत पुनि जाउ कंस जीवत धरि मारो ॥
फेंट लियो तब झटकिकै चढ़े कदम पर जाई।
सखा हंसत ठाढ़े सबहो मोहन गये पराई ॥
श्रीदामा चलो रोइ जाइ कहों नन्द आगे।
गेंद लेहु तुम अहि मोहि डर पावन लागे ॥
यह कहि कूद पार सलिल कीने नटवर साज।
कोमल तनु धरिके गयेहो जहां सोवत अहिराज ॥
येहि अन्तर नन्दघरनि कह्यो हरि भूखे ह्वै हैं।
खेलततें अब हि भूख कहि मोहि सुनै हैं ॥
अति आतुर भीतर चल्यो जीवन कारण आप।
छींक सुनत कुसगुन कह्यो हो कहा भयो यह पाप ॥
आजिर चलो पछि तात छींक को दोष निवारण।
मांजारी गई काटित बहि निकसत हो वारण ॥
जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबै लगाय।
कुसगुण आजु बहुत भये हो कुशल रहे दोउ भाई ॥
श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई।
आतुर आये नन्द घरहि बूझत दोउ भाई ॥
नन्दघरनी सों यों कहत मोकों लगत उदास।
यह अन्तर कूदि तहं गयेहो जहं कालीको बास ॥
देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय सोवत।
बैठो तहं अहि नारि उरा बालकके जोवत ॥
भागि भागि सुत कौनको अति कोमल तेरो गात।
एक फूकको नहो तूं हो विष ज्वाला अति तात ॥
तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देहि जगाई।
आयो देखत बाहि कंस मोहि दियो पठाई ॥

कंस कोटो जर जांहि मेरे लखो एक फुकार।
कह्यो करि फिरि जाहि तुंहो बालक सुकुमार॥
येहि अन्तर सङ्ग सखा जाइ व्रज नन्द सुनायो।
हम सङ्ग खेलत श्याम जाइ दह माझ धसायो॥
बूड़ी गयो उचक्यो नहीं ता वीतहि बड़ो बेर।
कूदि पस्यो चढ़ि कदम तेंहो खबरिन करो सबेर॥
याहि याहि करि नन्द सुनत दौरे यमुनातट।
जसुमति सुनि यह बात चली रोवति तोरति लट॥
व्रजवासी नरनारी सब गिरत परत चले धाई।
बूढ़यो कान्ह सबनि सुनोहो अति आकुल मुरझाई॥
जहं तहोरो पुकार कान्ह विनु भयो उदासी।
कौन काहि सों कहै अतिहि आकुल व्रजबासी॥
नन्द यशोदा अति विकल परत यमुनामे धाई।
और गोप उपनन्द मिलिहो बांह पकरि ले आई॥
धेनु फिरोति विललावि वछ थन कोउ न लगावै।
नन्द यशोदा कहत कान्ह विन कौन चरावै॥
यह सुनि व्रजबासी सबै परे धरणी अकुलाई।
हाय हाय करि कहत सबैहो कान्ह रह्या कहां जाई॥
नन्द पुकारत रोई बुढ़हि मोकों छड़ायो।
कछु दिन मोह लगाई जाई जल भीतर मखायो॥
यह कहिकों धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराई।
नन्दघरनी तब देखि कोंहो कान्हहि टेरि बुलाई॥
निठुर भये सुत आजु तातको छोहन आरति।
यह कहिके अकुलाइ जलहि भीतरकों धावति॥
परति जाइ यमुना सलिल गहि आनति व्रजनारी।
नेक रहो सब सरहि गोहो कोहै जीवन हारि॥
श्याम गयो जल बूड़ि वृथा धृत जीवन जगको।
शिरफोरति गिरिजालि आभूषण तोरति अङ्गको॥
मूरछि परो तन सुधि गइ प्राण रहो कछुं जाय।
सुधर आए धाइ कोंहो जननी गइ मुरझाय॥
नाक मूंदि जल सोचि जननी करि टेखो।
बार बार झझकोरो नेकटन धरत न हेखो॥
कहत उठि राम सो वनहि तज्यो लघु भ्रात।
कान्ह तुमहि विन रहत नहिहो तुमसो क्यो रहि जात॥

अब तुमहु जिनि जाहु सखा एक देहु बताई।
कान्हहि आवै जाहि आजु अन्धसेरि कराई॥
छाक पठाउ जौरि कै मन शोकसमाज।
घृत कछु खायो नहो हो भुखेहै गइ सांझ॥
कबहुं कहति वन गये कबहुं कहि बरहि बतावति।
कहं खेलतेहो लाल टेरि यह कहति बुलावति॥
जागि परो दुख मोहि तें रोवत देखे लोग।
तब जान्यो हरि दहगिस्यो हो उपयोग
हरि वियोग॥
धून घून नन्दहि कह्यो और कितने दिन जोहो।
मरत नहो मोहि मारि बहुरि व्रजवासी हो कोहो॥
ऐसे दुखमें मदन सुख मन करि देखहु ज्ञान।
आकुल धरणी गिरि परे हो नन्द भये विनु प्राण॥
हरिके अङ्गज बन्धु तुरतहो पिता जगायो।
माताकों परबोधि दुहुनि धीरज धरवायो॥
मोहि दुहाइ नन्दको अबहो आवत श्याम।
नाथि नाग ले आइहै हो तब कहियो बलराम॥
हलधर कह्यो सुनहि नन्द जसुमति व्रजवासी।
वृथा मरत केहि काज मरं क्यों वह अविनाशी॥
आदिपुरुष मैं कहत हो गये कमलके काज।
गिरिधरको तुम हरत हौ हो ब छुटे बनि शिरताज॥
अभो अविनाशी आहि धरो धीरज अपन मन।
कालो छेदे नाक लोये आवत नृत्यत फन॥
कंसहि कमल पठाइहो कालोहि पढ़दे दीप।
एक घरी धीरज धरो हो बैठो सदतरु नीप॥
सुनिहो अहिकी नारी श्याम अहि क्यों न जगावै।
बालक बालक करति कहा पति क्यों न उठावै॥
कहा कंस कहा डर यह अबहुं दिखाउ तोहि।
दे जगाई मै कहत हों तुं नहि जानति मोहि॥
से जानति हों बने फुंक एकमे जरि जहै।
छोटे मुख बड़ो बात कहत अबहो सरि जै है॥
छोहन गति तोहि देखि मोहि काको
बालक आहि।
जगपति सों सरवर करोहो तु बपुरो को आहि॥

बपुरो मोसों कहति तोहि बपुरो करि डारो।
एक लात सों चांपि खसम तेरे कों मारो॥
सोवत काहु न मारिये बलि आई यह बात।
खगपति कों भेंटी कियाहो कहति कहा तु बात॥
तुमहि विधाता भये और कर्त्ता कोउ नाही।
अहि मारोगे आपु तन कसे तन चलिबाहो॥
कहा करों कहत न बने अति कोमल सुकुमार।
देतो अबहि लगाइ केंहो जरि बरिहै हो छार॥
तुं धों देहि जगाइ तोहि दोख कछु नाही।
परो कहां तोहिहारि पाप अपने जरिजांही॥
हमको बालक कहनिहै आप बड़ेको नारि।
बादतहै बिनु काजही हा ब्रुथा बढ़ावति रारि॥
तुंहो न लेहि जगाइ बहुत जो कहत ढिटाई।
फुलि मरिहै पछि ताहि मात पित तेहो भाई॥
अजहुं फिरि करि जाहि तूं मरि लहे सुख कौन।
पांच बरसको सात कोहो आगे तोकों हेन॥
भिर कोनोरो दे गारि आपु महि जाइ जगायो।
पगसों चांपो पूछ सबे औ सात भुलायो॥
चरण मसकि धरणी दलो उरग गयो अकुलाई।
कालो मनमे तब कहाहै यह आयो खगराई॥
देख्यो नैन उघारि तहां बालक एक ठाढो।
विषधर भटको पुंछि पटकि सहसो कन काढो॥
बार बार जन घात करि विष ज्वालाको भारो।
सहसो फनि फनि फूंकरहो नेकन तनहि लगारि॥
तब कालो मन कहत पूंछि चांपो येहि मेरो।
मन मन करत विचार लेन याको मे घेरो॥
दाव पद्यो अहि जागिके लियो अङ्ग लपटाई।
चरण लपेटे शिखा लोंहो यहि अति करो ढिटाई॥
कहति उरगको नारो गव आतहो करि आयो।
आइ पहुंच्यो काल वस्य पग दतहि चलायो॥
अहि नारिनसा यह कहो मोहि समसरि कोउ नाहि।
एक पूंक विषज्वाल कहो जलड़ मर जरि जाहि॥
गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतहो तनु बिलाख्यो।
हाय हाय करि उरग बारहो बार पुकाख्यो॥
शरण शरण अब मरतहो मे नहि जान्यो तोहि।
चढ़ चढ़ात अङ्ग फुठहो हो राखु राखु प्रभु मोहि॥
शरण शरण धुनि सुनत लियो प्रभु सङ्कचाई।
छमहु मोहि अपराध न जाने करो ढिटाई॥
ब्रजमे कृष्ण अवतार होत जानो प्रभु आज।
बहुत कियो फणघात मेंहो वदन दिखावन लाज॥
रह्यो आनि इहि ठौर गरुड़को त्रास गोसांई।
बहुत कृपा मोहि करो दरस दोना जगसांई॥
नाक फारि फनपर चढ़े कृपा करो देवराई।
फन फन प्रति प्रति चरण धरेहो नृत्यत हरस बढ़ाई॥
धन्य कृष्ण धनि उरग जानिजन कृपा करि हरि।
धन्य धन्य दिन आज दरससों पाप गये जरि॥
धन्य कंस धनि कमल य धन्य कृष्ण अवतार।
बड़ो कृपा उरगहि करोहो फण प्रति चरण विहार॥
शेष करत जिय गर्व अखण्डको भार शोस धरि।
पूरण ब्रह्म अनन्त नामको सके पार करि॥
फनफन प्रति अति भार भर अमित अन्त मे गात।
उरगनारो कर जोरि केंहो कहति कृष्णसों बात॥
देखत ब्रज नरनारो नन्द यशोदा समेत सब।
सङ्कर्षण सों कहत सुनहा सुत कान्ह नहो अब॥
येहि अन्तर जल कमल विच उढ़ग्रा कछु अकुलाई।
रोवतते बरजे सबे हो मोहन अग्रज भाई॥
आवतहैं यह श्याम पुष्प कालो शिर लाने।
मात पिता ब्रज दुखित जानि हरि दरसन दोने॥
नृत्यत कालो फननिपर दिव दुन्दुभि बजाई।
नटवरवपु काछेरहे हो सबदेखो वह भाई॥
आरत देखे श्याम हरस कोना ब्रजवासो।
सोंकसिन्धु गयो उतरिन्धु आनन्द प्रकाशो॥
जलबूड़त नौकामिले ज्यों तन होत आनन्द।
त्यों ब्रज जन हुंलसे सबेहो आवत है नन्दनन्द॥
सुत देखत पितु मात रोम गदगद पुलकित भये।
उर उपज्यो आनन्द प्रेमजल लोचन दुहु गये॥
दिव दुन्दुभि बजावहो फनप्रति नृत्यत श्याम।
ब्रजवासो सब कहत है हो धन्य बलराम॥

सुर असुर लाखनों सहित जे सुनि मुख गाई।
बड़ी कृपा यह उरगको हो ऐसी काहु न पाई॥
कृपा करी प्रह्लाद खम्भते प्रकट भये तब।
कृपा करी गजराज गरुड़ तजि धाइ गये जब॥
द्रुपदसुताकों करी कृपा वसन समुद्र बढ़ाइ।
नन्द यशोदाहि जो कृपा हो सोइ कृपा अङ्गराइ॥
चरणचिह्न दरशन करत गहिः है तेरे पाइ।
उरग दीपकों करि यत्नाहो कह्यौ करहु सुख जाइ॥
प्रभु याते सुख कहा जो चरण फन फन प्रति परसे।
रमा हृदे जो वसन सुरसरी शिरवहे हरसे॥
जनम जनम पावन भयो फन पदचिह्न धराई।
पाइपह्यो उरगिनी हित हो चल्यो दीप समुद्राई॥
काली पठयो दीप सुरनि सुरलोक पठाये।
आपन आये निकसि कमल सब तटहि धराये॥
जलतें आये प्रकाश तब मिले सखा सब आई।
मातपिता दोउ धाइकें होलीनो कण्ठ लगाई॥
केरि जन्म भयो काह वाहन लोचन भरि आये।
जहां तहां व्रजगोपनारी आतुर हो धाये॥
रुदन भरि भरि मिलत है मनोति धन पाय।
मिलो धाइ रोहिणी जननी चुम्बति लेति बलाय॥
सखा दौरिकें मिलगये हरि हमपर रिसकरि।
धनि माता धनि पिता धन्य सोदिन जेहि अवतरि॥
तुम व्रजजीवन प्राणहो यह सुनि हंसे गोपाल।
कूंदिकार चढ़ि कदम तेंहो यह तुम देखत ये ख्याल॥
कालो ल्याये नाथि कमलताहो लदाये।
तैसो कहि स्वये श्याम प्रकट सो हमहो दिखाये॥
कंस मरेगवि बिसनब भइ हम मानी व्रजराज।
सिदेनि कोक्षीना भलोहो कहावड़ो गजराज॥
हरि हलधर तब मिले हंसे मन हो मनदोउ।
बन्धु मिलत सब कहत भेद नहि जाने कोउ॥
माता पिता व्रजगोप सोंहररि कह्यो नन्दलाल।
आजुरहो वसि सब इहांहो मेटहु दुख जञ्जाल॥
सुनि सब हित सुखकियो आजु वरिये यमुनातट।
शीतल सलिल सुगन्ध पवन सुखतरु वंशीवट॥
नन्दघरतें मिष्टान बहुत षट्‌रस लिये मगाइ।
महर गोप उपनन्दजिहो सबकों दियो बढ़ाइ॥
दुखकिन्हो सब दुरितुरत सुखदियो कहागइ।
हरस भये सबलोग कंसके भय बिसराइ॥
कमलकाय व्रजमारतो कितनों लेइ गलाइ।
नृपगजको अवतार कहा होप्रकट्यो सिंहकहाइ॥
नन्द कह्यो करि काल कंसकों कमल पठावहु।
और कमल जलधरहु कमल कोटिक दे आवहु॥
यह कहियो मेरो कह्यो कमल पठाये कोटो।
कोटि है कमल हाँ धरे हो यह विनती एक कोटि॥
अपने सम जे गोप कमल तेहि साथ चलाये।
मन सबके आनन्द कहो जलतें वचि आये॥
खेलत खात अन्हातही वासर गयो विहाय।
सुरश्याम व्रजलोगकों हो जहां तहां सुखदाय॥

अथ चीरहरण-लीला

बिलावल

नन्दनन्दवर गिरिवरधारी।
देखत रीझी घोषकुमारी॥
मोर मुकुट पीताम्बर काछे।
आवत देखे गायन पाछे॥
कोटि इन्दु छवि वदन विराजे।
निरखि अङ्गप्रति मनमथ लाजे॥
रविशत छवि कुण्डल नहि तुले।
दमन दमक दूति दामिनो भूले॥
नैनकमल मृगशावक मोहै।
शुकनासा पटकों कोहै॥
अधर विम्बफल पटतर नाहो।
विद्रुम अरु बन्धुक लजाहो॥
देखत रीझि रहो व्रजनारी।
गह गेहको सुकृति बिसारी॥
यह मनमें अनुमान कियो तब।
जप तप संयम नियमकरें अब॥

बारबरस वितांहि मनावति ।
नन्दनन्दन पति देव सुनवति ॥
तनलमें तप साधन कोजें ।
शिवसों मागि कृष्णपति लीजें ॥
बरस दिवस को नेम लियो सब ।
रुद्रहि सेवहु मनवचक्रम अब ॥
दृढ़ विश्वास व्रतहिको कीन्हो ।
गौरीपतिपूजा मन दीन्हो ॥
षड़दशसहस्र जुरी सुकुमारी ।
व्रत सबतिरोंके तनु धारी ॥
प्रात उठै यमुनाजल खोरें ।
सीतभीत कहां आदि न मोरें ॥
पतिके हेत नेम व्रतसाधें ।
शङ्करसों यह कहि अवराधें ॥
कमल पत्र तू मौन चढ़ावे ।
नैन मुंदि यह ध्यान लगावे ॥
हमको पति दीजें गिरिधारी ।
बड़े देव तुम हो त्रिपुरारि ॥
और कछु नहि तुम सों मागी ।
कृष्ण हेत यह कहि पां लागी ॥
ऐसे हि करत बहुत दिनबीते ।
प्रभु अन्तरजामी मनचीते ॥
यक दिवस आपुन आये नहां ।
तब तरुणी अस्नानकरति अहां ॥
वसन धरे जलतीर उतारी ।
आपुन जलपैठो सुकुमारी ॥
कृष्णयह अस्नान करें जहां ।
सबके पाछे आपुन है तहां ॥
मोहत पाढ़ि प्रेम अतिबाढ़ो ।
चकृत भइ युवती फिरि ठाढ़ो ॥
देखे नन्दनन्दन गिरिधारी ।
व्रतफल प्रकट भये वनवारी ॥
सकुचि अङ्ग जल बैठि लुकावे ।
बार बार हरि अङ्गमनावे ॥

लाज नाहि आवत है तुमको ।
देखत वसन विना सब हमको ॥
हंसत चले तब नन्दकुमार ।
कोयनि सुनवति करति पुकार ॥
हार चोर लै चले पराइ ।
हांकि दियो कहि नन्द दुहाइ ॥
मारि सब भूषण तब भागी ।
श्याम करन अब ढिटोलीलागी ॥
मागी कहां बचोगे मोहन ।
पाछें आइ गइ तु अगोहन ॥
तनको सुधि सम्भार कुछ नाही ।
वसन आभूषण पहिरत जांही ॥
चोर कढ़्यो कञ्चुको कन्द छूटे ।
लेतन वसन तहार नरटुटे ॥
प्रेम सहित सुख खीझत जाही ।
झूंठे बार बार पछिताही ॥
गइ सबै त्रिय नन्द महरघर ।
जसुमति पासगइ सब दरदर ॥
देखहु महरि श्यामके गुण ।
जैसे हालकरे सबके उन ॥
बोली चोर हार दिखराये ।
आपुन भाजि इतहिको आये ॥
यमुनातट कोउ जान न पावे ।
सङ्ग सखा लये पाछे धावे ॥
सुतको बरजहु हो नन्दरानी ।
गिरिधर करत भलो नहीं वाणी ॥
लाज लगति एक बात सुनावति ।
अञ्चल छोरि हियो दिखरावति ॥
यह देखत हंसि उरि जसोद ।
कछु रिस कछु मनमें करि मोद ॥
आइ गये तेहि समय कन्हाई ।
बांह सही ले तुरत दिखाई ॥
तनक तनक कर तनक अङ्गुरिया ।
तुम यौवन मर नवल बहुरिया ॥

जाहु घरहि तुमको मैं चीन्हो ।
तुमरी जाति जानि मैं लीन्हो ॥
तुम चाहति साई होन येहै ।
और बहुत व्रज भितर लैहै ॥
बार बार कहि कथा सुनावति ।
इन बातनि कछु लाज न आवति ॥
देखोरो ये भाव कन्हाई ।
कहां गई तवकी तरुणाई ॥
महरि तुमहि कछु दोषन नाहो ।
हमको देखि देखि मुसुकाहो ॥
इन के गुण कैसे कोउ जाने ।
और करत औरै धरि टानै ॥
देन उरहनों तुमको आई ।
नीकी पहिरावनि हम पाई ॥
चली सबै युवती घर घरको ।
मनमे ध्यान करति है हरिको ॥
वरस दिवस तप पूरण कीनो ।
नन्द सुवनको तनमन दीनो ॥
प्रातहोत यमुना फिरि आई ।
प्रथम रहे चढ़ि कदम कन्हाई ॥
तीर आइ युवती भई ठाढ़ी ।
उर अन्तर हरि सों रति बाढ़ी ॥
कहो चलै यमुना जल खोर ।
अङ्ग अङ्ग आभूषण सब छोरै ॥
चोली छोरै हार उभारै ।
करसों शिथिल केश निरवारै ॥
इत उत चितवति लोग निहारै ।
कहो सबनि अब चीर उतारै ॥
वसन आभूषण धरे उतारो ।
जल भीतर सब गई कुमारी ॥
मागशीर कोभो तन मानों ।
षड़ ऋतुके गुण सम करि जानों ॥
बार बार बूड़े जलमाहो ।
नेकहुं जलको डरपत नाहो ॥

प्रातहुते एक जाम नहाहो ।
नेम धर्महो मे दिन जाहो ॥
इतनो कष्ट करै सुकुमारो ।
पतिके हेत गोवर्द्धनधारो ॥
अति तप करत देखि गोपाल ।
मनमे कह्यो धन्य व्रजबाल ॥
हरि अन्तरयामी सब जाने ।
कौन कौनको यह सेवा मानै ॥
व्रतफल इनहि प्रकट दिखराउ ।
बसन हरो लै कदम चढ़ाउ ॥
तन साधे तपकियो तुमारो ।
भजो मोहिं कामातुर नारो ॥
सो रहस हस गोपाल सुकुमारो ।
सबके वसन हरे बनवारो ॥
हरत वसन कछु वार न लागो ।
जल भीतर युवती सब नागो ॥
भूषण वसन सरे हरि ल्याये ।
कदम डार जहां तहां लटकाये ॥
ऐसो नोपद्रुम विस्तारा ।
चौत हार धोंकि तु कह जारा ॥
सब समाने तरु प्रति डारा ।
यह लीला रचि नन्दकुमारा ॥
हार चीर मानहु तरु फूल्यो ।
निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो ॥
नेम सहित युवती सब नाहो ।
मन मन सविता विनै सुनाहो ॥
मुंदे नैन ध्यान उरधारै ।
नन्दनन्दन पति होई हमारै ॥
रवि करि विनै शिवहि मन दीन्हो ।
हृदे माझ अवलोकन कीन्हो ॥
त्रिपुर दशर्नं त्रिपुरारि त्रिलोचन ।
गौरीपति पशुपति अघमोचन ॥
गरल-अशन अहिभूषणधारी ।
जटाधरन गङ्गा-शिरधारी ॥

करति विनय यह मागति तुमसों ।
करहु कृपा हंसिकै आपुनसों ॥
हम यावै सुत जसुमतिको पति ।
इहै देहु करि कृपा देवरति ॥
नित्य नेम करि चली कुमारी ।
एक हम तनकों छिमजारी ॥
ब्रजललना कह्यो नीर जड़ाई ।
अति आतुर ह्वै तटकों धाई ॥
जलतें निकसि तरुणी सब आई ।
चीर आभूषण तहां न पाई ॥
सकुच गई जल भीतर धाई ।
देखि हंसे तरु चढ़ कन्हाई ॥
बार बार युवती पछितांहि ।
सबके वसन आभूषण नाही ॥
ऐसे कौन सब लै भाग्यो ।
लेतहुं ताहि विलम्ब न लाग्यो ॥
माघ तुषार युवती अकुलाही ।
ह्यां कहु नन्द सुवन तौ नाही ॥
हम जानहि यह बात बनाई ।
अम्बर हरि लै गयो कन्हाई ॥
हो कहुं श्याम विनय सुनि लीजै ।
अम्बर देहु कृपा करि जो जै ॥
थर थर अङ्ग कम्पति सुकुमारी ।
देखि श्याम नही सके सम्भारी ॥
येहि अन्तर प्रभु वचन सुनायो ।
व्रतके फल दरशन सब पायो ॥
कहा कहति मोसों ब्रजबाल ।
माघ शीत कत होति बिहाल ॥
अम्बर जहां बताउ तुमको ।
तो तुम कहा देहुगी हमकों ॥
तनमन अर्पण तुमही कीनो ।
मो कछुइ तोसों तुमही दीनो ॥
और कहा तजू लेहो हमसों ।
हम मागति हैं अम्बर तुमसों ॥

यह सुनि हंसे दयाल मुरारि ।
मेरो कह्यो करो सुकुमारी ॥
जलते निकसि सब तट आवहु ।
तबही मलै तुम अम्बर पावहु ॥
भुजा पसारि दीन ह्वै भावहु ।
दोउ कर जोरि जोरि तुम राहहु ॥
सुनहु श्याम एक बात हमारी ।
नगनि कहुं देखिये न नारी ॥
यह मति आप कहां धो पाई ।
आजु सुनी यह बात नवाई ॥
ऐसी साध मनहि मे राखहुं ।
यह वाणी मुखतें जिनि भाषहु ॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई ।
विना वसन क्यो देहि दिखाई ॥
पुरुष जाति तुम यह का जानो ।
हा हा यह मुखतें जिनि आनो ॥
तौ तुम पैठोहो जलहि सब ।
वसन आभूषण नाहि चहति अब ॥
तबहि देउ जब वाहिर आवहु ।
बिनु वाहिर आए नहि पावहु ॥
कत हो शीत सहति सुकुमारी ।
सकुच देहु जलहीमे डारी ॥
कह्यो कदम व्रत करनि तुमारी ।
अब कह लज्जा करति हमारी ॥
लेहु न आनि आपने व्रतकों ।
मै जानत या व्रतके व्रतकों ॥
नीकें व्रतकीनों तनुगारी ।
व्रत ल्यायो धरि गिरिवरधारी ॥
तुम मनकामन पूरण करिहों ।
रास रङ्ग रचि रतिसुख भरिहों ॥
यह सुनिके मन हरस बढ़ायो ।
व्रतकों पूरण हम फल पायो ॥
छाड़हु तुम यह टेक कन्हाई ।
नीर माझ हम गई जड़ाई ॥

आभूषण सब आपुन हो लेहो ।
चीर कृपा करि हमकों देहो ॥
हाहा लागै पांइ तुम्हारे ।
पाप होत है जारिन मारे ॥
आजहु ते हम दासी तुम्हारी ।
कैसे अङ्ग दिखावै नारी ॥
अङ्ग दिखाए हि अम्बर पैहो ।
नातरु वैसे हि द्योसङ्ग वैहो ॥
मेरे कहे निकसि सब आवहु ।
खोये हि हमकों भलो मनवेहु ॥
मुहावरी तरुणी मुसुकाही ।
यह आपुन खोरी करि साही ॥
मोइ बोइ कही सो तुमको सोहै ।
आजु तुम्हारे पचुतर कोहै ॥
हमरी पति सब तुम्हारे हाथा ।
तुमहि कहो ऐसी ब्रजनाथा ॥
तपतनु गारि कियो जेहि कारण ।
सो फल लग्यो नौपतरु भारन ॥
आवहु निकसि लहु पढ़ भूषण ।
यह लागे हमको सब दूषण ॥
अब अन्तर कत राखति हमसों ।
बार बार कहत हो तुमसों ॥
गोपिनो सुनि यह बात विचारि ।
अयतो टेक परे वनवारी ॥
चलहु न जाइ अब लीजे ।
लाज छारि उनको सुखदीजे ॥
जलतें निकसि तीर सब आइ ।
बार बार हरि हरसि बुलाइ ॥
बैठि गइ तरुणी सकुचानी ।
देहु श्याम हम अतिही लजानी ॥
छाड़ि देहु यह बात सयानी ।
देसे हि करी कही हो वाणी ॥
करहु कुच अङ्ग ढांकि भइ ठाढ़ी ।
वदन नवाइ लाज अति बाढ़ी ॥
देव श्याम अम्बर अवतारा ।
हाहा दासी सब तिहारी ॥
ऐसे नहीं वसन तुम पावहु ।
बांह उठाइ अङ्ग दिखरावहु ॥
कह्यो मानि युवतिन कर जोरे ।
पुनि पुनि युवती करति निहोरे ॥
धन्य धन्य कहि श्रीगोपाल ।
निश्चय व्रतकी से ब्रजबाल ॥
आवहु निकट लेहु सब अम्बर ।
चोली हरे मुरलि पटम्बर ॥
निकट गइ सुनिके यह वाणी ।
तरुणी नगन अङ्ग अकुलानी ॥
भूषण वसन सबनिको दीने ।
नियके कहत कृपा हरि कीने ॥
चीर अभूषण पहिरे नारी ।
कह्यो तबहि ऐसे गिरिधारी ॥
तब हंसि बोले कृष्णमुरारि ।
मै पति तुम मेरी सब प्यारी ॥
तुमहि हेत यह वपु व्रजधार्यो ।
तुम कारण बैकुण्ठ विसार्यो ॥
अब व्रतकरि तुमनहो तनगारो ।
मैं तुम ते कहुं होत न न्यारो ॥
मोहि कारण तुम अति तप साध्यो ।
तनमनकरि मोकों अवराध्यो ॥
जाउ सदन अब सब ब्रजबाल ।
अङ्ग परसि मेटेहु तुडाल ॥
युवतिन विदा दइ गिरिधारी ।
गइ घरनी सब घोषकुमारी ॥
वस्त्रहरणलीला प्रभु कीन्हो ।
व्रज तरुणिन व्रतको फल दीन्हो ॥
यह लीला श्रवणनि सुनि भावै ।
औरनि सिखवै आपुन गावै ॥
सूरश्याम जनके सुखदाई ।
हृदताइमें प्रकट कन्हाई ॥

विलावल

वसन हरे सब कदम चढ़ायो ।
सोरह सहस्र गोप-कन्यकिके अङ्ग अभूषण सहित चुरायो ॥
अति विस्तार नीपतरु तामें लेले जहां तहां लटकायो ।
मागि अभरण बार बार प्रति देखत छवि मनही अटकायो ॥
लीलाम्बर पटाम्बर सारी श्वेत पीत चुनरी अरुणायो ।
सूर श्याम युवतिन व्रत पूरणको फल कदमडारि फललायो ॥

राग सूही

आपु कदम चढ़ि देखत श्याम ।
वसन आभूषण सब हरि लिन्हे विना वसन जल भीतर वाम ॥
मुंदति नैन ध्यान धरि हरिको अन्तरयामी लीन्हो जानि ।
बार बार सवितासों मागति हम पावै पति सारङ्गपानि ॥
जलते निकसि आइ तट देख्यो भूषण चीर तहां कछु नाहि ।
इत उत हेरि चकृत भइ सुन्दरी सकुचि गइ फिरि जलही माहि ॥
नाभि पर्य्यन्त नीरमें ठारी थर थर अङ्गकम्पन सुकुमारी ।
को ले गयो वसन आभूषण सूरश्याम और प्रीति विचारि ॥

विलावल

खोजत जात माखन खात ।
अरुण लोचन भौंह टेढ़ी बार बार जम्भात ॥
कबहुं रुनुझुनु चलत घुटरुण धूर धूसर गात ।
कबहुं झुकिकों अलक खैंचत लेन जलभरि यात ॥
कबहुं तोतर बोल बोलत कबहुं बोलत बात ।
सूर हरिको निरखि शोभा निमिष तजत न मात ॥

२

माखन तनिक दे री माय ।
खेलत घुटरु फिरत आँगन धावत चरण चलाय ॥
सुन्दर दंतिया अति विराजत बोलत हैं तुतराय ।
मोर मुकटकी शोभा निरखत सूर वलि वलि जाय ॥

३

आज सुफल सखी जनम हमारो ।
नयन भरि देखोरी नन्ददुलारो ॥
वाम कपोल वाम भुज दीने ।
अधर मधुर मुरली कर लीने ॥
नयन कुरङ्ग सुपरस मामिख्यो ।
आजु हरि हम अपनो करि लेख्यो ॥
नाद वेद सङ्गीत सुनावे ।
चलत भुवनसिर शिखर डुलावे ॥
जनम जनमकी पूरी मेरी आशा ।
श्रीजगन्नाथ मुख देख्यो माधोदासा ॥

४

वलिगइ बालरूप मुरारि ।
पांयउ पैजनी रटन रुनुझुनु नचावति नन्दनारी ॥
कबहुं हरिकों लाइ अङ्गुरिया चलन सिखावतिधारि ।
कबहुं हृदे लगाइ हित करि लेति अञ्चल डारि ॥
कबहुं हरिको चिते चुम्बति कबहुं दिखावति गारी ।
कबहुं नेकरि पाछे दुवारति इहां नहीं वनचारि ॥
कबहुं अङ्ग भुज लय लावति राई लोन उतारि ।
सूर सुरमुनि सबै मोहे निरखि यह अनुहारि ॥

५

नन्दरायजूके द्वारे भोरहि उठि पहाउ ।
निरवधि आनन्द सूरति निरखि नेन सिराउ ॥
उज्ज्वल तन थोरी थोंदि राता अम्बर सोहै ।
अरुण घनतें निकसि पूरण चन्दको छवि कोहै ॥

ब्रह्म घनीभूत पूत कर अङ्गुरिया लायो ।
मन्द मन्द चलन सिखवति लोचन फल पायो ॥
रिद्धि सिद्धि निद्धि सहित रमा टहल करति फिरे ।
अर्थ धर्म्म काम मोच्छ भीख भिखारीन परे ॥
नन्दजू कहत कहा मागत हौं टेरि सुनाउ ।
नन्ददास नन्दलालको लेकु उत्तोर न पाउ ॥

६

खेलत श्याम ग्वालन सङ्ग ।
सुनि हलधर अरु श्रीदामखेलत नाना रङ्ग ॥
हाथ तारी देत भाजत सवे करि करि होड़।
बरेमे जू हलधर श्याम तबही चोट लागि गोल ॥
तब कह्यो मै दोरि जानत बहुत बल मो गात ।
मेरी जोरीहे श्रीदामा हाथ मारे जात ॥
वोलि तबे उठे श्रीदामा जाहु तारो मारि ।
आगे हरि पाछे श्रीदाम विरयो श्याम हङ्कारि ॥
जागि कैसे रह्यो ठाढ़ो कुवत कहा तु योहि ।
सूरश्याम खोझि सखनि सों मनै हौं कीनो तोहि ॥

७

मैया मै नही माखन खायो ।
ख्याल परेये सखा सबे मिलि मेरे मूह लपटायो ॥
देखि तुही छोके पर भाजन उंचे धर लटकायो ।
हौं जु कहत नान्हे कर मेरे सो कैसे करि पायो ॥
मुख दधि पोंछि बुद्धि एक कोनो दोना पाछे दुरायो ।
डारि साची मुसिकाति यशोदा श्यामहि
कण्ठ लगायो ॥
बाल विनोद भाव करि मोह्यो माता मनहि
रिझायो ।
सूरदास कह जसुमतिको सुख देवनि दुर्लभ गायो ॥

८

देखो माइ या बालको बात ।
बन उपवन सरिता सब मोहे देखत सांवल गात ॥
मारग चलत अनीत करत हरि हटि करि
माखन खात ।
पीताम्बर वह शिरतें उठत अच्छर दे मुसिकात ॥
तेरी सौंह कहा कहु' यशोदा उरहत देह लजात ।
जब हरि आवत तेरे आगे सकुचनिकह्यो न जात ॥
कौन कौन गुण कहो श्यामके नेकन काहु डरात ।
सूरश्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहाये बात॥
नेक मेरे बारे बान्ह छाड़ि दे मथनिया ।
देखि देखि मुख लेति नन्दजूकी रनिया ॥
कण्ठ बघुली सोहे नाक न थुनिया ।
नेननतें नोर मानों मोतिनके मनिया ॥
नेकु रह्यो देउ माखन मेरे प्राण धनिया ।
आरि जिनि करो मेरे छगन मगनिया ॥
सुरनर मुनिन कहुके ध्यान न आवनिया ।
सूरसुत देखि रानी भूलि धाम धनिया ॥

———*———

प्रथम खण्डोक्त

वर्णानुक्रमिक राग-रागिणी-सूची

अकारादिक्रमिक प्राचीन संस्कृत शास्त्र-सूची

(१ले खण्डमें वर्णित)*

* २रे खण्डमें भी यह नाम उद्धृत हुए हैं।

१ले, २रे और ३रे खण्डकी अकारादि वर्णानुक्रमिक नामसूची ।